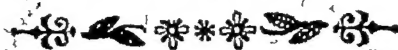
ANUBHOOTA CHIKITSA SAGARA.

SECOND PART.



A Magazine

OF

WELL—TRIED

Ayurvedic Medicines

BY

PANDIT GANGA PRASAD
DADHICH TRIPATHI
Ayurveda–Panchanan
and
Member of the Ayurveda Vidya—Pitha,



AJMER,

VEDIC PRESS.

FIRST EDITION

1908

To be had of the author, Ajmer.

Price 3–8 Rupees only.

संस्कृतशब्दानुक्रमणिका ।



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

मारवाड़ीशब्दोंकी अकारादिअनुक्रमणिका।

अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

हिन्दीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

गुजरातीशब्दोंकी अकारादिअनुक्रमणिका ।

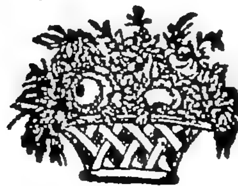




अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

मरहटीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धक-

वङ्गालीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

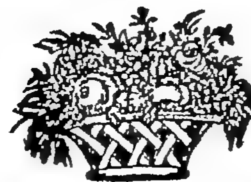
पञ्जाबीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके–

तैलङ्गीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

द्राविडीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

कर्नाटकीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके–

अरबीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके–

फारसीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।





THE ALPHABETICAL

INDEX OF THE LATIN WORDS OF THE ANUBHUTA CHIKITSA SAGAR.

THE ALPABETICAL

INDEX OF THE ENGLISH WORDS OF THE ANUBHUTA CHIKITSA SAGAR

Words.	No.	Words	No.
Rice	509	Sweet melon.	549
Root of Piper longum,	329	Sweet marjoram,	117
Rock salt.	574	Teak. T.	523
Rose wood	533	Teak tree.	523
Ruby,	399	Three leaved pine.	554
Rusa oil grass	452	Three lobed kidney bean	410
Rust of iron.	466	Tin.	467
Sago palm. S	398	Tinnevelly senna.	585
Sal ammoniac	236	Togari wood of madras.	380
Salep	567	Tooth brush tree.	473
Salep	568	Topaz.	339
Saltpetre	569	Torn leaved caryota	398
Sampeen wood.	310	Tow cok of China.	443
Sappan wood	310	Trailing coldenia ×	596
Sapphire.	306	Trailing eclipta. ×	372
Sea cocoa nut	295	True custard apple of West-	
Sebestan.	546	Indies	447
Senna.	585	True monk's hood.	495
Sensitive plant	455	True mustard.	446
Shaddock	303	Turkois.	345
Silicate of alumina. ×	576	Turmeric. ×	589
Silk cotton tree	526	Utrasum bead tree. U.	450
Silver.	439	Vermillion. V.	601
Shrubby capsicum.	391	Vine	276
Singhara nut.	538	Vinegar ×	534
Siris tree	529	Vitriol white	582
Sissoo.	533	Water caltrop × W	538
Soop stone	511	White cotton tree.	523
Sour lime	301	White dammar. ×	555
Spiked millet.	569	White datura	278
Spiny bamboo	474	White goose foot.	484
Spreading hog weed.	336	White wax	383
Spur pepper ×	391	Wild cherry of the Himalayas.	311
Sugar	521	Wild turmeric.	592
Sulhate of copper.	387	Wolves bane aconite.	495
Sulpheret of iron.	571	Yellow arsenic Y.	588
Sunn.	514	Yellow sulphide of arsenic.	588
Sunn hemp. ×	514	Yellow zedoary	592
Surinam medlar	349	Yellow wax	383
Sweet flag.	468	Zinc Z	431
Sweet lime of India.	498	Zinc ore.	432
Sweet marjoram.	393	Zinc oxide ×	[illegible]

संख्या (२७३)

(सं०) दूर्वा, शतपर्वा, सहस्त्रवीर्या, अनंता ।

ारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ोवड़ी	दूब	धो	दूर्वा	दूर्व्वा	दूब, घा	नक्षगरिके

ाविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
चैअरुहंपि-लु	करीगरिके			Cyuodon Dactylon Panicum D	Creeping panic grass or Doorwa Couch grass

स्थान—दूब हिन्दुस्थानमें सब ठौर होतीहै ।

प्रयोग—(१) यह–मधुर, शीतल, स्निग्ध और कषेलीहै (२) इसका ाला रस ग्राही है (३ नकसीर बन्ध करनेके लिये इसका ताजा रस सुंघाते (४) घावका रुधिर बन्ध करनेके लिये इसको पीसके लेप करना चाहिये ५) आमातिसार मिटानेके लिये दूबको सोंफ और सोंठके साथ ओटाके पेलातेहैं (६) दूबके रसमें सफेद चन्दनका बूरा और मिश्री मिलाके पिलाने ने रक्तप्रदर मिटताहै (७) श्वेत दूबका रस पिलानेसे पित्तकी वमन मिटतीहै सको पैरोंकी अंगुलियोंके घाव पर लेप करना चाहिये (६) दूबको काली मेरचके साथ पीसके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (१०) इससे जलंधर और र्वांग जलमय शोथ मिटताहै (११) हरी दूबके रसका लेप करनेसे आंख ा दूखना और गीडोंका बहुत आना मिटताहै (११) मूत्रमें रुधिर आनेको ाकनेके लिये दूबको मिश्रीके साथ पीस छानके पिलाना चाहिये (१२) इस रसमें अतीसके चूर्णको दिनमें दो तीन वेर चटानेसे शरीरसे आनेवाला ्वर छूटताहै (१३) इसके काथके कुल्ले करनेसे मसूड़ोंके छाले मिटतेहैं (१४) पदंशके बढ़जानेसे सब शरीरमें जो चाठे पड़ जातेहैं उनको मिटानेके लिये बकी जड़का काथ पिलाना चाहिये (१५) इसकी जड़का काथ मूत्रवर्द्धकहै १६) इसका हिम या काथ पिलानेसे रक्तार्श का रुधिर बन्ध होताहै १७) दूबको घोट दूधमें छानके पिलानेसे मूत्र सम्बन्धी अंगोंकी दाह मिटती (१८) दूबकी ७॥ मासे जड़को महीन पीस दहीके साथ चटानेसे पुराना

मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१६) श्मशानमें उत्पन्नहुई दूबकी जड़को सूतसे लपेटकर हाथमें बांधनेसे सब प्रकारका ज्वर छूटताहै (२०) दूब और चूकेको बराबर ले पानीमें पीस ललाट पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटतीहै (२१) इसका रस चांवलोंके धोवणके साथ पीनेसे पित्तकी वमन मिटतीहै (२२) इसके रस से सिद्ध कियाहुआ तेल व्रणनाशक है (२३) इसके रसकी नस्य देनेसे नकसीर बन्ध होताहै (२४) इसके रसके लगानेसे खुजली मिटतीहै (२५) इसके रससे तेल बनाके मर्दन करनेसे खुजली और दाद मिटताहै (२६) दूब और हलदीको पीसके लेप करनेसे खुजली, पांव और दाद मिटतेहैं (२७) शीतपित्त में भी यह लेप उपकारीहै।

संख्या (२७४)

(सं०) देवदारु, शिवदारुः, भूतहारि, भवदारुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजावी	तैलङ्गी
देवदारू	देवदार	देवदार (रु)	देवदार	देवदारु	दिआर	देवदारि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	देवदारि	म्यजरैतुलोजिन		Cedrus Deodara. Pinus Deodara.	Deodar Himalayan cedar

स्थान—देवदारूके वृक्ष हिमालयके पश्चिमोत्तर भागमें अर्थात् अफगानी स्थान और विलोचीस्थानके उत्तरमें और दोली नदी (जो अलक नंदामें गिरतीहै) के पूर्वतक होतेहैं।

पहिचान—इसके वृक्ष बहुत बड़े और बहुत ऊँचे होतेहैं इसमें से एक प्रकारका चेपदार द्रव निकलताहै उसके निकालनेकी यह रीतिहै—जिसमें तीन चार सेर जल माता हो ऐसी एक चौड़े मुंहकी हंडी लेके जमीनमें गाड देतेहैं और जिसमें १२, १३ सेर जल माताहो ऐसे एक घड़ेके पैदेमें छोटे २ छेद कर उसमें देवदारुकी लकड़ीके छोटे २ टुकड़े भर उसके मुंह पर एक ढकन ढक उसपर कपड़ मिट्टी कर देतेहैं पीछे इस घड़े को जमीनमें गड़ी हुई हंडी

पर जमाके उन दोनोंके कपड़ मिट्टी करदेतेहैं पीछे टुकड़े भरेहुए उस घड़ेके चारों तरफ कंडे (छाणे) और छोटी २ लकड़ियें चुनके उनमें अग्नि लगा देतेहैं ४ से ८ घंटे तक अग्नि लगी रखते हैं उस समयमें उन टुकड़ोंमें से वह द्रव निकलके जमीनमें गडी हुई हंडीमें चला जाताहै, एक सेर टुकड़ोंमें ढाई छटांक द्रव और सवाचार छटांक कोयले बैठतेहैं। सवा छः सेर लकड़ीमें से सेर भर द्रव निकलताहै ।

(१) देवदारू–पचनेमें हल्की, स्निग्ध, तिक्त, उष्ण, पाकमें चरपरी और रूक्षहै (२) इसकी लकड़ी पेटकी वातपीड़ा मिटानेवाली, पसीना लानेवाली और मूत्रवर्द्धकहै ज्वर, अफारा, पित्तशोथ, जलंधर और मूत्र सम्बन्धी रोगोंमें उपकारीहैं (३) इन सब रोगोंको मिटानेवाली जो २ औषधियेंहैं उन २ के साथ देवदारूको मिलाके देना चाहिये (४) फोड़े और त्वचाके रोगोंमें इसके द्रवका लेप करना चाहिये (५) देवदारूका तेल पिलाने और लगानेसे पारेके उपद्रवोंसे बिगड़ा हुआ रुधिर सुधर जाताहै (६) इसका तेल पिलानेसे त्वचाके दूसरे रोगभी मिटतेहैं (७) देवदारूकी लकड़ीको पानीके साथ घिसके कनपटियोंपर लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (८) देवदारूकी लकड़ी कड़वी होतीहै (९) यह बद्धकोष्ठ, अर्श और फुफ्फुस सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये अच्छीहै (१०) इसके तेलकी पौनेचारमासे की मात्रा देनी चाहिये (११) इसके पत्ते और छोटी डालियोंमेंभी इसके तेल जैसे गुणहैं (१२) देवदारु और इंद्रायणको पीस गर्म करके लेप करनेसे कफसे पैदा हुआ गलगंड मिटताहै (१३) इसके २॥ मासे चूरणकी ५ मासे गुड़ या शक्करके साथ गोली बनाके छातीकी पीड़ावालेको देना चाहिये इसमें सोंठ मिला देनेसे इसकी शक्ति बढ जातीहै (१४) इसके क्वाथमें गोमूत्र मिलाके पिलानेसे अंडवृद्धि मिटतीहै (१५) इसके साथ चित्रकको पीसके लेप करनेसे श्लीपद मिटताहै (१६) इसको गोमूत्रमें पीनेसे श्लीपद मिटताहै (१७) इसके चूरणको बकरीके मूत्रकी भावना देकर घृतके साथ उसका सेवन करनेसे नेत्ररोग मिटता है ।

—— ०० ——

संख्या (२७६)

(सं०) देवदाली, वेणी, गरागरी, वृत्तकोशा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
विंदाल	सौनैया	कुकड़वेल्य	देवडंगरी	पीतघोषा	सौनैया	दाउरडंमि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
-	देवताळ	-		Luffa echinata L. Bindoal	Bristly luffa

स्थान—विन्दालकी वेलें गुजरात, सिन्ध, पुर्निया और ढाका आदि कई देशोंमें होतीहैं ।

प्रयोग—(१) विन्दालका डोडा जलंधरकी एक उत्तम औषधीहै (२) यह अच्छा विरेचकहै (३) यह कड़वा होताहै (४) इसके फलके भीतरके कड़वे तन्तु या जालेका हिम या फांट सर्पके काटे हुएको पिलातेहैं (५) विसूचिका के हरेक विरेक के पीछे यह हिम पिलाना चाहिये (६) पित्त ज्वर में इसके हिमका सब शरीर पर लेप करना चाहिये (७) कामला रोगवाले के शिरपर इसके हिमका लेप करना और पिलानाभी चाहिये (८) इसका क्वाथ पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (९) इसकी जड़ कानमें बांधने से रात्रि ज्वर छूट जाताहै (१०) इसको पुराने गुड़में मिला लम्बी वत्ती बना के गुदामें रखनेसे रक्तार्श मिटताहै (११) इसको ओटाके बफारा लेनेसे अर्श मिटताहै (१२) इसको पानीमें भिगो मल छानकर दो बूंदें नाकमें टपकाने से जल वहकर आधाशीशी मिटतीहै (१३) ऐसे ही २, ३ बूंदें नाकमें डालनेसे कामला रोग मिटताहै (१४) इसको और सैंधेनमकको कांजीसे पीसके लेप करनेसे अर्शकी शूल मिटतीहै (१५) इसके क्वाथ या हिमसे गुदाको धोनेसे अर्श पैदा नहीं होतेहैं (१६) इसके पचांगके चूर्णकी दूध या पानीके साथ महीने तक फक्की लेनेसे पांडुरोग मिटताहै (१७) इसके २ फलोंको आधपाव जल में रात्रिभर भिगो प्रातःकाल मल छानकर पिलानेसे उपदंश मिटताहै (१८) इसके तोले भर चूर्णकी फक्कीसे गर्भस्राव होजाताहै इसलिये गर्भवतीको नहीं देनी चाहिये (१९) यह रस और पाकमें कड़वी, चरपरी, उष्ण और वाम

कहे (२०) अर्श, कफ, शोफ, कामला, आम, ज्वर, कास, अरुचि, श्वास, हिचकी, पांडु, क्षय, कृमि, भूतबाधा, विष और मूषेके विषको मिटातीहै (२१) इसकी जड़=सारक और कड़वी होतीहै और गुल्म, कृमि, कफ शूल, अर्श, कामला और बादीको मिटातीहै ।

संख्या (२८०)

(सं०) द्राक्षा, गोस्तनी, स्वाद्वी, मधुरसा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दाख	किसमिस	धराख	कालेद्राक्ष	किसमिस	दाख	द्राक्षा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
द्राक्षे(चों)	द्राक्षेहण्णु	जबीब अंनब	मवीज(सूखे) अंगूर(तर)	Vitis Vinifera.	The vine The grape Raisins

स्थान—इसकी बेलें हिन्दुस्थानके बहुतसे बागोंमें लगाई जातीहैं ।

पहिचान—इसके सुगन्धयुक्त हरे पुष्प लगतेहैं, अलग२ देशोंमें अलग २ ऋतुओंमें दाखें पकतीहै । बिन बीजवाली दाखको किसमिस कहतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह–स्निग्ध, सारक, मधुर और ठण्ढी होतीहै (२) तृषा, शरीरकी उष्मा, कास, स्वरभंग और राजयक्ष्माको मिटातीहै (३) यह कठोर भागको कोमल करतीहै (४) काली दाख उष्ण और रूक्षहै (५) बिन बीजकी दाखभी कठोर भागको कोमल करतीहै और फोड़े फुन्सियोंको पकाती है (६) मुनका बहुत पाचक, रुधिरको शुद्ध करने और बढ़ानेवालीहै (७) इसकी लकड़ीकी राखको पानीमें घोलकर पीनेसे मूत्राशयमें पथरीका पैदा होना बन्ध होजाताहै (८) इसका लेप करने और पिलानेसे अंडकोषकी बादीकी शोथ बिखर जातीहै(९)अर्शकी सूजनके लिये भी यही उपचार लाभकारीहै (१०) कच्ची दाखकारस ग्राहीहै(११)गलेके रोगोंमें इसके रसके गंडूष कराना बहुत अच्छा है (१२) इसका शर्बत बनाके पीनेसे शरीरमें ठण्ढाई होतीहै (१३) पित्तज्वर और उसकी तृषा मिटानेके लिये इसका शर्बत पिलाना चाहिये (१४) मूत्र

और मूत्रनालीके पित्तसम्बन्धी विकार मिटानेके लिये इसका शर्बत पिलाना चाहिये (१५) पित्तसम्बन्धी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसके शर्वतमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलाना चाहिये (१६) मंदाग्नि, आमातिसार, अतिसार और जलंधर सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इनको मिटानेवाली औषधियों को इसके शर्वतके योगसे देना बहुत लाभकारी है (१७) वंसतऋतुमें काटीहुई इसकी टहनियोंमें से एक प्रकारका मद निकलताहै जो त्वचाके रोगोंकी चिकित्सामें काम आताहै और दुखतीहुई आंख पर भी लगाया जाताहै (१८) अंगूरके रससे सिरका बनाया जाताहै (१९) अजीर्ण और शूल मिटाने के लिये अंगूरका सिरका पिलाना चाहिये (२०) विसूचिकामें भी इसका प्रयोग करना अच्छाहै (२१) इसके सिरकेमें नमक डालके पिलानेसे वमन होतीहै (२२) इसका रस पिलानेसे दाह और तृषा मिटतीहै (२३) इसके रसमें चन्दन घिसकर मलनेसे बहुत पसीना आना बन्ध होजाताहै (२४) दाख और आंवलेका कल्क खानेसे पित्तज्वरकी दाह मिटतीहै (२५) इसके रसमें शक्कर मिलाकर पीनेसे पित्तशूल मिटतीहै (२६) दाख और अडूसेका क्वाथ बनाके पीनेसे कफकी शूल मिटतीहै (२७) इसके रसमें हरड़का चूर्ण और गुड़ मिलाके पिलानेसे पित्तगुल्म मिटताहै (२८) दाख शक्कर और हरड़के चूर्णकी फक्की ठण्ढे पानीके साथ लेनेसे पित्तज हृद्रोग मिटताहै (२९) दाख और मिश्रीको पीस दहीके पानीमें मिलाके पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३०) दाख और आंवलोंको उवाल पीस मधु मिलाके चटानेसे ज्वरयुक्त मूर्च्छा मिटतीहै (३१) इसकी लकड़ीकी भस्मको सिरकेमें मिलाकर लगानेसे कुत्तेका विष उतरताहै (३२) पथरी मिटानेके लिये इस ६ मासे भस्मको गोखरू के रसमें मिलाके पिलाना चाहिये (३३) दाखके रसकी नस्य देनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (३४) इस रसको नाकके द्वारा पीनेसे तृषा मिटतीहै (३५) इसके रसमें हरड़का चूर्ण मिलाके पीनेसे गलग्रन्थी मिटतीहै (३६) दाखके क्वाथसे कुल्ले करनेसे मुखरोग मिटताहै ।

संख्या (२८१)

(सं०) द्रोणपुष्पी, कौडिन्यः, चवपत्रा, द्रोणा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मुंढापार्ती	गूमा,गोमा	कुबो	कुम्भा	घलघसा	गुमा	येनुगतुम्मि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	हेतुम्बे			Leucas linifolia	

स्थान—दद्दगल (गूमा) के पौधे हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह पचनेमें भारी, मधुर, रूक्ष, उष्ण, चरपरी, सलौनी कड़वी, वात पित्त बढानेवाली और रेचक होतीहै (२) कफ, आम, कामला, शोथ, तमक, श्वास, अरुचि, मंदाग्नि, पक्षाघात और कृमिको मिटातीहै (३) इसके पत्ते मीठे, कड़वे, रूक्ष, पचनेमें भारी, पित्तकारक और रेचकहैं। कामला, शोथ, प्रमेह और ज्वरको मिटातेहैं (४) इसके पत्तोंका पुटपाक कर नमक मिलाके खिलानेसे ज्वर छूट जाताहै (५) इसके पत्तोंका ताजा रस पिलानेसे मस्तक-पीड़ा और सर्दीका असर मिटजाताहै (६) इसके पत्तोंके रसमें मिरच मिलाके पिलानेसे विषमज्वर छूटताहै (७) पत्तोंके रसका अंजन करनेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै (८) इसके रसके अंजनसे कामला रोग मिटताहै ॥

संख्या (२८२)

(सं०) श्वेतधत्तूरः, उन्मत्तः, कितवः, धूर्त. ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सफेदधतूरो	सफेदधत्तूरा	धंतुरो	पाढराधोतरा	श्वेतधुतूरा	धतूरा	तोल्लाउम्मिते

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	विलियमदूट-कुरिणिक		तातूराहसफेद	Datura Alba.	White Datura

स्थान—सफेद धतूरा हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होताहै ।

पहिचान—इसका पेड़ ८, ६ फुट तक ऊंचा होताहै ।

प्रयोग—(१)धतूरा कषैला, मधुर, कड़वा, उष्ण, भारी, चरपरा और अग्निदीपकहै (२)इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान करानेसे ऐसा तेज श्वास मिटताहै कि जिसमें बांइटे आतेहों (३) इसके पत्तोंका सार क्षय रोगमें १ रतीभर दिया जाताहै जिससे दुःखसे श्वास आना मिटताहै (४) इसका लेप और पुल्टिस बांधनेसे हड्डीकी पीड़ा मिटतीहै (५) गाठियासे फूली हुई जोड़ों-पर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (६) इसके पत्तोंका लेप करनेसे मेदकी आमाशयकी गांठें मिटतीहैं (७) बाहिरके अर्शपर इसके पत्तोंका लेप करना चाहिये (८) श्वासमें और पुराने हृद्रोगमें छातीपर इसका लेप करना चाहिये (६) स्त्रियोंके दूधका निकास बन्ध करनेके लिये इसके पत्तोंको स्तनोंपर बांधतेहैं (१०) इसमें से एक तत्व निकाला जाताहै जो दुःखती हुई आंख पर लगाया जाताहै (११) धतूरे के पत्तों के रस के प्रयोगसे आंखकी पुतली फैल जातीहै (११) घावके कारणसे जो हनुस्तम्भ होजाय उस पर धतूरेके पत्ते बांधने चाहियें (१२) जिस घाव पर गहरा पीप या छिछड़े जम गयेहों उसको गुन गुने पानीकी धारसे धोके दिनमें ३, ४ बेर धतूरेके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (१३) धतूरेके अर्कका पृष्ठ वंश पर मर्दन करनेसे बांइटे बन्ध होजातेहैं (१४) उन्माद रोग मिटानेके लिये धतूरेका प्रयोग बहुत अच्छाहै (१५) अपस्मार (मिरगी) और बुद्धि भ्रंश होनेके पूर्वरूपमें जो मस्तकपीड़ा होतीहै उसको मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै (१६) उक्त रोगोंको मिटानेके लिये धतूरेकी जड़के चूरणका १ रतीका ८ वां भाग देना चाहिये पीछे धीरे धीरे १॥ रती तक बढ़ा देना चाहिये (१७) अपस्मार और उन्माद मिटानेके लिये धतूरेके पत्तोंका रस रोगीका बल आदि विचारके देना चाहिये (१८) स्नायु और गठिया सम्बन्धी रोगोंमें कष्टसे स्त्री धर्म होनेमें उपदंशकी पीड़ामें और गहरे घावोंमें धतूरेका प्रयोग बहुत उपकारीहै (१९) मानसिक रोग प्रतिश्याय, सहित ज्वर, मस्तिष्कके उपद्रव, अतिसार, कृमि सम्बन्धी त्वचाके रोग मेदकी गाठोंकी पीड़ा और स्तनोंकी सोथ आदि रोग धतूरेके प्रयोगसे मिटतेहैं (२०) धतूरेके बीजोंको पीस

गोली बनाके दांतकी खोखलमें रखनेसे दांतकी पीड़ा मिटतीहै (२१) धतूरेका १ तोला रस ताजे दहीमें मिलाके बारीसे आनेवाले ज्वरको वेग आरम्भ होनेके कमसे कम दो घंटे पाहिले पिलाना चाहिये (२२) धतूरेके सारकी १ रतीके १६ वें भागकी मात्रा देनेसे गृध्रसी मिटतीहै परन्तु इसकी मात्रा धीरे २ आध रती तक बढ़ा देना चाहिये (२३) धतूरेके तेलका मर्दन करनेसे गठिया और पांव मिटतीहै (२४) धतूरेके पत्ते और चांवलोंके आटे का पुल्टिस बनाके बांधनेसे नारू जल्दी निकल जाताहै (२५) इसी कामके लिये कभी २ धतूरेके पत्तेको चूंसतेभी है (२६) धतूरेमें बहुत विषहै (२७) इसकी अधिक मात्रा लेनेसे मनुष्य प्रलाप करने लग जाताहै (२८) इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान बहुत कम किया जाताहै और कियाभी जाताहै तो केवल रोग मिटानेके लिये किया जाताहै (२९) इसके गीले पत्ते लेप और पुल्टिसके काममें आतेहै (३०) इसके बीज कई रोग मिटानेवाली दूसरी औषधियोंके अच्छे सहायक हैं (३१) इसकी जड़भी इसी रीतिसे काममें लाई जातीहै (३२) पागल कुत्ता काटनेके पीछे, जो मनुष्य भड़क जाताहै उसके भड़कन पैदा होनेके पहिले उसको इस रोगकी दूसरी औषधियोंमें इसकी जड़ मिलाकर देना चाहिये। इससे वह मनुष्य प्रलाप करने लगताहै और उन्मत्त हो जाताहै जैसे कि कभी कभी पागल कुत्तेके विषसे हो जाया करताहै। इसके देनेमें पूरी सावधानी रखना चाहिये और इसकी पूरी मात्रा देनी चाहिये। कुत्तेके विषसे भड़कजानेके बाद इस औषधिका देना वृथाहै (३३) गठियाकी सूजनपर धतूरेके पत्ते रख उनके ऊपर एरण्डके पत्ते बांध देना चाहिये (३४) पैरोंके पसीने मिटानेके लिये इसके पत्तोंको पानीमें पीसके लेप करना चाहिये (३५) इसके २, ३ बीज नित्य निगलनेसे पुरानी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (३६) इसके बीज और कालीमिरच दोनों बराबर ले पीस उड़दके बराबर गोली बनाके सोंफके अर्कके साथ नित्य लेनेसे पुराना प्रमेह मिटताहै (३७) इसके स्वरसमें मधु मिलाके चटानेसे कीड़े मरतेहैं (३८) इसके रससे बनाये हुए तेलका मर्दन करनेसे जूएं मरतीहै (३९) इसकी जड़ कमरमें बांधे रहनेसे विना समय गर्भका गिरना बन्ध हो जाताहै (४०) इसके पंचांग के ३ तोले रसमें तिल सरसों और अलसी इनका एक एक तोले तेल डाल मंद आंचसे पका उसका मर्दन

कर एरण्ड या आकके पत्ते गर्मकर उसपर बांधनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै (४१) इसके बीजोंकी भस्म बनाके उसकी ४ मासे जवानको और ४ रत्तीकी मात्रा बालकको देनेसे शीतज्वर छूटताहै (४२) इसके पत्तेको तपाकर बांधनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै (४३) रविवारके दिन उखाड़ेहुए धतूरेको दाहिने हाथमें बांधनेसे ज्वर छूटताहै ।

संख्या (२८३)

(सं०) कृष्णधत्तूरः, शिवः, सचिवः, कनकाह्वयः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कालोधतूरो	कालाधतूरा	काळोधुंतरो	काळाधोत्रा	कालधुतूरा	कालाधतूरा	नल्लउमेत्त

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
करप्पूमत्त	कारिउमत्ते		तातूराहसि-याह	Datura fastuosa D Huminatu	Black Datura

स्थान—काले धतूरेके पेड़ हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें और निकम्मी ठौरमें होतेहैं ।

प्रयोग—(१) श्वेत धतूरेसे काले धतूरेमें अधिक गुण होतेहैं (२) पागल कुत्तेके काटनेसे मनुष्य बहुधा ४० दिन पीछे भड़क जाताहै इसलिये भड़कनेके पहिले उसकी चिकित्सा करनी चाहिये, अर्थात् काटनेके १५ वें दिनसे २० वें दिनके भीतर २ उसकी चिकित्सा करनी चाहिये उसकी यह रीतिहै कि उसको काटनेके पीछे १५ वें दिनके प्रातःकालके ६ बजे चाहकी लकड़ीके कोयलोंके ७॥ मासे चूरणकी फक्की देनी चाहिये जिससे उसको धतूरेका जहर नहीं चढे, इसके आधघंटे पीछे उसको काले धतूरेके पत्तोंका २॥ तोले रस पिलादेना चाहिये, फिर थोड़ी देर पीछे उसको ताड़का गुड़ या और कोई चीजें खिलादेना चाहियेकि जिससे उसको वमन न हो, फिर उसको रस्सीसे बांधके दुपहर तक ४ या ५ घंटे धूपमें रखना चाहिये जिससे वह आदमी धीरे २ उन्मत्त होजायगा और पागल कुत्ते जैसी कई चेष्टा करने लग-

यगा जब ये लक्षण दीखने लगें तो यह प्रगट होजाताहै कि इस मनुष्यको अवश्य पागल कुत्तेने काटाहै और यह नैरोग्य भी होजायगा फिर दुपहर पीछे ठण्ढे जलकी कई मटकियें उसके शिरपर डालना चाहिये, इससे उस रोगीको बड़ा क्लेश होताहै, पीछे उसको बेंगन और चणेका पथ्य देना चाहिये जो तुमको भड़के हुए मनुष्यकी चिकित्सा करनी होवे तो तुम उसके शिरके सामनेके भागको छुरीसे छीलके रुधिर निकालदो और उस ठौर काले धतूरेके पीसे हुए पत्तोंका मर्दन करो और पत्तोंका रस उसको पिलावो (३) इसके ताजे पत्तोंका रस मर्दन करने या पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे पीड़ायुक्त शोथ मिटजातीहै (४) पत्तोंके ताजे रसका आंख पर लेप करनेसे आंख दुःखती रहजातीहै ललाई फट जातीहै शोथ और दाह मिटजातीहै (५) इसके सूखे पत्ते और टहनियोंका धूम्रपान करनेसे श्वासके वेग मिटतेहैं (६) बांइटे मिटानेके लिये इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान कराना चाहिये इसका अधिक धूम्रपान करानेसे उस मनुष्यको चक्कर आने लगतेहैं और निर्बलता होजातीहै (७) पागल कुत्तेके काटनेसे भड़के हुए मनुष्यके लिये धतूरेके बीजोंका प्रयोग अच्छा है (८) विसूचिकामें इसकी केसरका प्रयोग करना चाहिये (९) इसकी सूखी हुई जड़का धूम्रपान करानेसे श्वास मिटताहै (१०) पत्तोंके ताजे रसकी १ या २ बूंद कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (११) इसके पत्तोके रसका लेप या मर्दन करनेसे छोटे जोड़ोंकी सूजन, गठिया, पेशीका बढाव और उसकी शोथ मिटतीहै (१२) इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे स्त्रियोंके स्तनोंकी शोथ बिखर जातीहै (१३) जिस स्त्रीके अधिक दूध होनेसे स्तनमें गांठ होजानेका भय हो तो उसके दूधको रोकनेके लिये स्तनपर इसके पत्ते बांधना चाहिये (१४) इसके पत्ते बांधनेसे पीड़ा मिटतीहै (१५) इसके बीज पुरुषार्थ बढानेके लिये काममें आतेहैं (१६) पुरानी खांसी मिटानेके लिये इसके पत्तोंका धूम्रपान कराना चाहिये (१७) इसकी चौथाई रती सूखी जड़को पानमें रखके खिलानेसे उपदंश सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (१८) इसके १५ फलोंके सूखे बीजोंको पीस गायके १० सेर दूधमें औटा उसका दही जमा बिलो घी निकाल कर उसको वीर्य्य सम्बन्धी अंगोंपर दिनमें दो वेर मर्दन करनेसे और २ रती घी पानमें लगाके दिनमें एक वेर खिलानेसे

नपुंसकता मिटतीहै और पुरुषार्थ बढताहै (१९) पत्तोंके रसको घी निकाले हुए दूधमें मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२०) पत्तोंके गाढे किये हुए रसका लेप करनेसे कर्णमूलकी शोथ मिटतीहै (२१) इसके पत्तोंको पानीमें ओटा पुल्टिस बनाके सादे और पीपदार फोड़ोंपर वांधनेसे उनकी पीड़ा घट जातीहै और वे जल्दी पक जातेहैं (२२) इसके बीज अकलकरा और लौंगोंकी गोलियां बनाके खिलानेसे पुरुषार्थ बढताहै (२३) धतूरेके पत्ते और हलदी का लेप करनेसे स्त्रियोंके स्तनकी पित्त शोथ मिटतीहै (२४) धतूरेके पत्तोंका रस "बेलेडोना" की ठौर काममें आताहै (२५) इसके पुष्पोंको सुखा पीस चने प्रमाण गोलियां बना एक गोली नित्य खानेसे पुरुषार्थ बढताहै (२६) इसके पत्ते, नागरवेलके पान और काली मिरच प्रत्येक गिनतीमें बराबर ले पीस उड़द समान गोलियां बना दिनमें दो वेर एक २ गोली देनेसे ज्वर छूट जाताहै (२७) इसके बीजोंकी एक मासे भस्म नित्य ७ दिनतक खिलानेसे पसीना आना बन्ध होजाताहै (२८) इसके बीजोंके चूर्णकी ४ चांवलभर मात्रा ज्वर चढने के एक घंटे पहिले देनेसे शीतज्वर छूटताहै (२९) इसके पुष्पोंके चूर्णको घी और मधुके साथ चटानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (३०) इसके बीजोंके चूर्णकी आधी रतीसे एक मासे तक मात्रा सात दिन तक देनेसे पुस्तवाय (हथेली और पगतलीमें पसीना) आना मिटताहै ।

संख्या (२८४)

(सं०) धर्मन, रक्तकुसुमः, गोत्रपुष्पः, धन्वनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धामण	वामन धामिन	धागण	धामण	धामनागाछ	धागन	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Grewia tiliaefolia. G arborea	

स्थान—धामणके वृक्ष हिमालयमें यमुनासे नेपाल तक मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें ब्रह्मा और सीलोनमें होतेहैं ।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ३०,३५ फुटकी होतीहै । इसकी पेदड़ खड़ी और सीधी होतीहै उसकी गुलाई ४,५ फुटकी होतीहै इसकी छाल आध इंच मोटी और खरदरी होतीहै इसकी कोमल डालियोंपर या पत्तोंपर रुंए होतेहैं। इसके मटर जितने बड़े फल लगतेहैं फागुनमें इसके पत्ते गिर जातेहैं फिर पीछे चैत्रमें नवीन आजातेहैं ।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं और जेठसे आसोज तक इसके फल पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) धर्मन— चरपरा, उष्ण, कषेला, ग्राही, मीठा और रूक्ष है (२) इसकी अंतर छालको दरगच पानीमें भिगो मल छान गाढा चेप निकाल उस ५ तोले चेपमें चीनाकके २ तोले आटेको मिलाके खिलानेसे आमातिसार मिटताहै (३) इसकी लकड़ीके चूर्णकी फकी देनेसे वमन होती है (४) अहिफेनके विषको उतारनेके लिये इसकी लकड़ीके चूर्णकी फकी देके वमन कराना चाहिये (५) कौंचकी फलीको छूनेसे जो दाह और खुजली होजातीहै उसको मिटानेके लिये इसकी छालका लेप करतेहैं (६) इसके छोटे फल जो अच्छे खट्टे होतेहैं वे खानेके काममें आतेहैं ।

संख्या (२८५)

(सं०) धवः, धुरंधरः, कषायः, धवलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धो,धोकड़ो	धावा, धौ	धावड़ो	धावड़ा	धाउयागाछ	धौ,कहुवा	नारिंजचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	सिरिबरु			Anogeissus latifolia. Conocarpus latifolia	

स्थान—यह मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, हिमालयमें रावीसे पूर्वकी

और मेलघाट, गोदावरीके ऊपरके भाग और राजपूताना आदि कई देशोंमें होता है।

पहिचान—इसका वृक्ष बड़ा और सुंदर होताहै, इसके पत्ते चौड़े और दोनों ओर से तीखे होतेहैं, इसका फल पकजानेपर चिकना और चमकदार हो जाताहै। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै, यह साफ, कुछ पीला, कभी२ मधुके रंगका जैसा और इसमें मैल मिलजानेसे भूरे रंगका और बबूलके गोंदसे अधिक चेपदार होताहै। यह चैत्रमें इकट्ठा किया जाताहै।

प्रयोग—(१) यह-कड़वा कषेला पित्तकारक, रोचक, दीपन, मधुर और शीतलहै (२) विसूचिकामें इसका प्रयोग बहुत लाभकारीहै (३) इसके गोंदको दरदरा पीस घीमें तल खांडमें जमाके खिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (४) इसके पुष्प और सेमरका गोंद बराबर ले औटा के पिलानेसे अतिसार मिटताहै (५) पांडु, प्रमेह, कफ, पित्तार्श और वातके रोगोंको मिटाताहै (६) इसका फल ठण्ढा, मीठा, कषैला, रूक्ष, मलस्तंभक और वातलहै (७) इसके प्रयोगसे कफ और पित्तके रोग मिटतेहैं (८) इसकी जड़ कड़वी, कषेली, पित्तकारक और दीपनहै।

संख्या (२८६)

(सं०) धातकी, धातुपुष्पी, धावनी, अग्निज्वाला।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
धावडाफूल	धावई	धावणी	धायटी	धाइफुल	फुल्लधाययुंदे	आरेपुव्वु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Woodfordia floribunda. Grislea tomentosa	

स्थान—धायके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सबठौर होतेहैं।

पहिचान—इसका बड़ा झाड़ होताहै इसके लम्बी फैलनेवाली डालियें लगतीहैं, इसके पत्ते एक दूसरेके सामने लगतेहैं। इसके पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं। इसकी उंचाई १० फुट या इससे भी कुछ अधिक होतीहै।

फूलने फलनेका समय— माघसे चैत्र तक इसके पुष्प लगतेहैं इसकी कलियें और पत्ते रंगतके काममें आतेहै इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै वह पानीमें फूल जाताहै इसको "धावड़ी" गोंद कहतेहैं। हाडोती और मेवाड़में इस गोंदका संग्रह बहुत करतेहैं।

प्रयोग—(१) यह चरपरी, उष्ण, शीतल, कषेली और स्तंभिनीहै इसके सूखे पुष्प उत्तेजक और ग्राहीहैं (२) अतिसार और आमातिसार मिटानेके लिये इसके सूखे पुष्पों के ७॥ मासे चूर्णकी मट्ठेके साथ फक्की देनी चाहिये (३) रक्तप्रदर मिटानेके लिये इसके पुष्पोंको मधुके साथ चटाना चाहिये (४) घावोंका पूय बंध करनेके लिये और उनमें अंकुर पैदा करनेके लिये उन पर इसके पुष्पोंका चूर्ण बुरकाना चाहिये (५) पित्तके रोग मिटानेके लिये रोगीके मुंहमें तिल्लीका तेल भरके उसके शिरमें तालूकी ठौर पर इसके पत्तोंका रस लगा देना चाहिये इससे वह तेल पित्तको सोसके पीला हो जाताहै जब वह तेल पीला होजाय तब उस तेल को मुंहमें से निकालके फिर दूसरा तेल मुंहमें भरलेवे जब तक तेल मुंहमें पीला पड़ता जाय तब तक यह क्रिया करते रहना चाहिये। जब तेल पीला होना बन्ध होजाय तब छोड़ देना चाहिये (६) इसके पुष्प ठण्ढे ग्राही और उत्तेजकहैं (७) इसके पुष्पोंका शर्बत पिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (८) पुष्पोंके क्राथमें मधु मिलाके पिलानेसे रक्तप्रदर मिटताहै (९) पुष्पोंका शर्बत पिलानेसे दाह मिटतीहै (१०) पुष्पोंका क्राथ ३ दिन पिलानेसे रक्तप्रदर मिटताहै (११) इसके पुष्पोंका बहेडे जितना कल्क खिलानेसे प्रदर रोग मिटताहै (१२) इसके पुष्पोंका गुलकंद बनाया जाताहै (१३) इसके चूर्णको अलसीके तेलमें मिलाकर लगानेसे अग्निदग्ध व्रण और मर्माश्रित नाड़ीव्रण और विषैल कीड़ोंके दंशके व्रण मिटतेहैं।

संख्या (२८७)

(सं०) धान्यकं, छत्रा, कुस्तुम्बरी, कुनटी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धणो	धानियां	धाणा	धणे	धानियाँ	धनियां	दानियालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कोत्तमल्लि	कोत्तमीर		किशनीज़	Coriandrum Sativum.	Coriander

स्थान—धनियां हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै यह अलग २ देशों में अलग २ ऋतुओंमें खेतोंमें बोया जाताहै।

पहिचान—इसके गुल्मकी ऊंचाई २, २॥ फुट होतीहै, इसके पत्ते कोमल और कटवां होतेहैं, इसकी टहनियां और पत्तोंमें सुगंध होतीहै, इसके पुष्पोंका रंग सफेद होताहै।

प्रयोग—(१) धनियां-मीठा, शीतल, कषेला, पित्तनाशक, दीपन, लघु, ग्राही, रोचक, हृद्य, नेत्रोंको हितकारीहै घबराहट और पेटकी वादीको मिटाता है। मूत्र, बल और पुरुषार्थको बढाताहै (२) सूखा धनियां या इसका तेल पेट की शूलको मिटाताहै (३) इसको चबानेसे श्वासकी दुर्गंध मिटतीहै (४) इसको सेककर चबानेसे अतिसार मिटताहै (५) उष्णकालके दिनोंमें जो ठंढाई बनाके पिया करतेहैं उसमें धनियां मिलाना चाहिये (६) यह श्वासरोग में अच्छा उपकारीहै (७) शीतलामें आंखमें जो व्रण होजातेहैं उनको इसके काथसे धोतेहैं (८) नेत्रके सफेद भागकी पुरानी सूजन मिटानेके लिये नेत्रों को इसके काथसे छांटतेहैं (९) मदिराका मद और दुर्गंध कम करनेके लिये इस को काममें लातेहैं (१०) इसको और जौको पीस पुल्टिस बनाके देरीसे अच्छी होनेवाली सूजनपर बांधतेहैं (११) मस्तककी स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटानेके लिये इसका लेप करतेहैं (१२) पुराने फोड़े और अदीठपर इसका पुल्टिस बांधते हैं (१३) इसके हिम फांट या काथके कुल्ले करनेसे बच्चोंके मुंहके सफेद छाले मिटतेहैं (१४) भिलावेका तेल लगानेसे शरीरमें जो दाह, सूजन और छोटी २ फलाइयां होके बड़े २ घाव पड़ जातेहैं उनपर इसके गीले बूटेका रस लगातेहैं (१५) धनियेंको दूध और मिश्रीके साथ ओटाके पिलानेसे रक्तार्शका रुधिर बंध होताहै (१६) इसको सेक, कूट, फटक, गुली निकालके खिलानेसे शरीरमें ठण्ढाई और उत्तेजना पैदा होतीहै (१७) पित्तके रोगोंमें धनियेका प्रयोग किया जाताहै (१८) इसका हिम पिलानेसे बच्चोंकी शूल मिटतीहै (१९) इसका ७ मासे अवलेह नित्य लेनेसे मस्तकपीड़ा, भंवल और चक्कर मिटतेहैं

(२०) धनियां चबानेसे गलेकी पीड़ा मिटतीहै (२१) इसको सिरकेके साथ पीसके लेप करनेसे गंज मिटतीहै (२२) इसको औटाकर पीनेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिरका वहना वन्ध होताहै (२३) धनियां हृदयका बल बढाताहै (२४) धनियां और आंवलोंको रातभर भिगो उनको प्रातःकाल घोट छान मिश्री मिलाके पिलानेसे गर्मीकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२५) इसके चबाने से भिड़का विष शान्त होजाताहै (२६) धनियां और चांवल रात्रिमें भिगो प्रातः-काल उनका क्वाथ कर मधु मिलाके पिलानेसे अंतरदाह और पित्तज्वर मिटता है (२७) इसका कल्क वनाके खानेसे दाह शान्त होतीहै (२८) धनियां, नेत्रवाला और पाठके क्वाथसे वनाया हुआ भोजन खिलानेसे अतिसार, दाह और तृषा मिटतीहै (२९) इसका और सोंठका क्वाथ पिलानेसे पाचनशक्ति वढतीहै (३०) धनियां, सोंठ और एरण्डकी जड़का क्वाथ पीनेसे आमवात मिटतीहै (३१) धनियेंके पानीमें मधु और मिश्री मिला के पिलानेसे रोगसे पैदा हुई तृषा मिटतीहै (३२) इसको रातभर पानीमे भिगो उसको घोट छान मिश्री मिलाके पिलानेसे अंतरदाह मिटतीहै (३३) शीतपित्तके समय इसका क्वाथ पिलाना वहुत लाभकारीहै (३४) गर्भवती स्त्रीकी वमन वन्ध करनेके लिये इसके कल्क और मिश्रीको चावलोंके पानीमें मिलाके पिलाना चाहिये (३५) वालकोंका कास और श्वास, मिटानेके लिये चांवलोंके पानी के साथ धनियां और मिश्री पीसके पिलाना चाहिये (३६) धनियां और जौका सत्तू नित्य लगानेसे कंठमाला मिटतीहै (३७) इसका अर्क सिरकेमें मिलाके लगानेसे भिड़का विष उतरताहै (३८) ३॥ मासे धनियेंमें १० मासे वूरा मिलाके खानेसे जोड़ोंकी पित्तकी पीड़ा मिटतीहै (३९) धनियां पीसके लगानेसे मस्से और तिल मिटतेहैं धनियेंके हरे पत्तों को कोथमीर कहतेहैं इस की चटनी वनातेहैं और कई शाकोंमें डालतेहैं। १०० तोले हरे धनियेंका अर्क खैंचनेसे ६ मासेसे तोलेभर तक उड़नेवाला तेल निकलताहै।

———oo———

संख्या (२८८)

(सं०) धूनराजः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मस्तंगी	मस्तिकी		रूमीमस्तंगी	रूमिमस्तकी		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
			मस्तगी	Pistacia Lentiscus	The mastic tree or Mastiche

स्थान—रूमी मस्तिकीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं।

पहिचान—इसके वृक्षमें एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ निकलताहै जो पीले रंगका चमकदार और हल्की उत्तम सुगंधयुक्त होताहै इसको रगड़ने से या अग्निकी ऊष्मा देनेसे इसकी सुगंध बढतीहै।

प्रयोग—(१) मस्तकी ग्राही, कफनाशक और पौष्टिकहै रक्तप्रदर प्रमेह और दंत रोगको मिटातीहै यह बहुधा सालब मिश्रीके साथ दीजातीहै (२) दांतोंकी रक्षा और श्वासको सुगंधित करनेके लिये इसको मुँहमें रखतेहैं (३) धातु बढानेवाली औषधियोंके साथ इसका प्रयोग किया जाताहै (४) यह उत्तेजक और मूत्रवर्द्धकहै (५) एक मासे मास्तिकीको १॥ तोले कंदकी चासनीमें मिलाके दिनमें दो बेर चटानेसे मुंहसे लाळका गिरना बन्ध होजाताहै।

संख्या (२८९)

(सं०) धूम्रपत्रा, कृमिघ्नी, गृध्राणी, गृध्रपत्रा, स्त्रीमलापहा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कीडामार	कीडामारी	कीडामारी	गंधाणी			गाड़िछेकद्दुपाकु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
आडुतिडा-पाले(इ)				Aristolochia bracteata.	The bracteated Birthwort

स्थान—कीड़ामार यमुना और गंगाजीके किनारों पर और दक्षिण आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै, यह काली मिट्टीकी पृथ्वीमें बहुत होतीहै।

पहिचान—इसका हरेक अंग बहुत कड़वा होताहै।

[illegible] कड़वी, उष्ण, रोचक, दीपन, और कृमिना-
[illegible] की नाभिपर बांधनेसे उसका बद्धकोष्ठ मि-
[illegible] एरंडका तेल डालके पिलानेसे पेटकी शूल
[illegible] तोड़नेसे कीड़े मरजातेहैं (५) इसका काथ पिला-
[illegible] जाताहै (६) इसके पत्ते समुद्रफलके बीज,
[illegible] न सबको पीसके सब शरीरपर मर्दन करनेसे
[illegible] छूट जाताहै (७) इसकी जड़के चूर्णकी
[illegible] का मुख सुकड़ जाताहै (८) इसके पत्तोंको
[illegible] के कीड़े मरतेहैं (९) इसके सवा तोले प
[illegible] नीमें डालके दो तीन घंटे पड़ा रक्खें फिर उ-
सको मसल छानके [illegible] ले तककी मात्रा देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर मिटजाताहै (४) इसके २ ताजे पत्तोंको थोडे पानीमें पीस २४ घंटोंमें १ बेर पिलानेसे मरोड़ीके साथ दस्तका होना बन्ध होजाताहै (११) कीड़ोंके कारणसे जो बच्चोंके आंतोंमें उपद्रव होजातेहैं उनको मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये (१२) विरेचनके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये।

संख्या (२९०)

(सं०) नरसारः, नवसारः, चूलिकालवणं, विदारणः।

ारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ोसादर	नवसादर	नवसार	नवसागर	निशादल	नसादर	नवक्षारमु

ाविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नवद्वार	नवसागर	नोशदर	नोशादर कानी	Ammonium Chloride	Sal. Ammo iac

प्रयोग—(१) नोसादर, तीक्ष्ण, पाचक, सारक और अत्यन्त उष्ण है (२) पेशियोंकी सूजन पर इसका लेप करतेहैं (३) नारूकी सूजन पर इसका लेप करना चाहिये (४) इसके खिलानेसे नारू मिटताहै श्वासकी नलीके रोगोंको मिटानेके लिये इसका पानमें रखके खिलाना चाहिये (५) ५ से १० रती तक इसकी मात्रा देनेसे आधाशीशी मिटतीहै (६) इसकी १। मासे की मात्रा तीन २ घंटे के अन्तरसे तीन वेर देनेसे मस्तककी स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटतीहै (७) यकृत्के पित्त शोथमें नोसादरका प्रयोग बहुत उपकारीहै (८) ग्वाँरपाठेकी गिर पर नोसादर बुरकाके खिलानेसे तिल्ली मिटतीहै (९) स्वरभंग मिटानेके लिये इसको कुलिंजनके साथ पानमें रख के खिलाना चाहिये (१०) अडूसेके क्वाथ पर इसको बुरकाके पीनेसे कुत्ताखांसी मिटतीहै (११) इसको गोखरूके क्वाथमें बुरकाके पीनेसे मूत्रकी नली के रोग मिटतेहैं (१२) इसको कुटकीके साथ पीसके कनपटी और ललाट पर लेप करनेसे अधाशीशी मिटतीहै (१३) इसकी ५,५ रतीकी मात्रा दिन में ३,४ वेर देनेसे यकृत् सम्बन्धी कई रोग मिटतेहैं (१४) इसका लेप करनेसे कंठकी सूजन बिखर जातीहै (१५) इसकी ज्वार जितनी मात्रा रूई में लपेट, दांतोंके नीचे दबाके लाळ टपकानेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१६) नोंसादर और हलदी मिलाके सूंघनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१७) इसको महीन पीसकर अंजन करनेसे मोतिया बिन्द मिटताहै (१८) ३ रती नोसादर और २ काली मिरचको पीसके बारीके दिन देनेसे ज्वर छूटताहै (१९) इसको मधुमें मिलाके लेप करनेसे सफेद कोढ मिटता है (२०) २ रती नोसादर और दो रती कालेदानेको पानीके साथ पीसके नाकमें टपकानेसे आधाशीशी मिटतीहै (२१) नोसादर और फिटकरी दोनोंको महीन पीसके अंजन करनेसे नेत्र रोग मिटतेहैं (२२) इसको तेलमें पीसके लगानेसे विचर्चिका मिटतीहै (२३) इसको हरतालके पानीके साथ पीस कर दंशपर लगानेसे विच्छूका विष उतर जाताहै (२४) इसको सिरकेमें पीसके गरारा करानेसे कंठमें चिपी हुई जोंक गिर जातीहै (२६) इसकी १॥ मासेकी मात्रा मूलीके जलमें मिलाके पिलानेसे या मूली और तिल बराबर पीसके बांधनेसे तिल्ली मिटजातीहै (२७) नोसादर, सोहागा और चूना बराबर ले हथेलीमें

मलकर सुंघानेसे विच्छूका विष उतर जाताहै (२८) इसको तेलमें गलाकर लेप करनेसे सफेद कोढ मिटताहै ।

संख्या (२६१)

(सं०) नलः, पोटगलः, पुष्पमृत्युः, मृदुच्छदः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
नरसल	नरसल	नाली	देवनळ	नल	नरसल	किक्कस.

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	देवनल			Phragmites Roxburghii Arunda karka.	

स्थान—नरसल—छोटी नदी और नालोंके किनारोंपर और आर्द्रभूमिमें होतीहै । इसकी ऊंचाई ८ से १२ फुटतक होतीहै ।

नरसलके गुण—यह मीठी, कड़वी, कषेली, उष्ण, शीतल, रोचक, दीपन, वीर्य्यवर्द्धक और मूत्रशोधक है । योनिरोग, दाह, विसर्प, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरविकार, कफ, हृद्रोग, वस्तिशूल और रक्तपित्तको मिटाती है । इसकी जड़को पीस तेलमें मिला कुछ उष्णकर मर्दन करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै ।

संख्या (२६२)

(सं०) नवमाल्लिका, अतिमोदा, ग्रैष्मी, नवमालिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
		नेवरी	नेवाळी	बासतीफल		विरजाजि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	जाजि			Jasminum arborescens J montanum	The Aratrans jasmine.

स्थान—यह दक्षिण हिन्दुस्थानके उष्ण और नीचे पहाड़ोंमें और कमाऊंसे बंगालतक और सीलोन आदि बहुतसे देशोंमें होतीहैं।

प्रयोग—(१) नवमल्लिका, शीतल, मधुर, लघु, वीर्यमें उष्ण और रसमें कड़वीहै। मासिक धर्मके कई उपद्रवोंमें इसके प्रयोग किये जातेहैं (२) गाढ़े चेपदार कफसे जो श्वासकी नली रुक जाती है उसकी रुकावट मिटाने के लिये इसके ७ पत्तोंके रसमें कालीमिरच, और लहसन आदि दूसरे उत्तेजक पदार्थोंको मिला, पिलाके वमन कराना चाहिये (३) छोटे बच्चेके लिये इसके आधे पत्ते और अगस्तिके ४ पत्तोंके रसमें १ रत्ती कालीमिरच और १ रत्ती सूखा सोहागा मिलाके मधुके साथ चटाना चाहिये (४) इसके पत्ते थोड़े कड़वे, ग्राही, बलवर्द्धक और पेटकी शूल मिटानेवालेहैं (५) इसमें से एक प्रकारका उड़नेवाला तेल निकाला जाताहै।

संख्या (२६३)

(सं०) नागकेशरः, किञ्जल्कं, कनकाह्वम् चाम्पेयम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
केसर	नागकेशर	नागकेसर	नागकेसर	नागेश्वर	नागकेसर	नागकेसरालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नागकेसरं	नागकेसर,री			Mesua Ferrea M Speciosa	Cobra's saffron

स्थान—नागकेशरके वृक्ष पूर्वी बंगाल, पूर्वी हिमालय, आसाम ब्रह्मा, दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन आदि हिन्दुस्थानके कई भागोंमें बोये जातेहैं।

इसके कोमल फलके नीचे चरपरी सुगंधवाला राल जैसा एक पदार्थ लगताहै और इसकी छाल या जड़में छेद करनेसे भी वही पदार्थ निकलता है इसके पुष्पोंकी कलियें रंगतके काममें आतीहैं।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं असाढ और श्रावणमें कुछ लाल और सख्त पड़ेहुए फल लगतेहैं।

प्रयोग—(१) नागकेशर-थोड़ी उष्ण, लघु, कड़वी, रूक्ष और कफ

नाशकहै और इसके सूखे पुष्प ग्राही हैं (२) आमाशय की पीड़ा, तृषा, आमाशयकी दाह और अधिक पसीना आना आदि रोगोंको मिटानेके लिये काममें आतेहैं (३) रक्तार्शका रुधिर बन्ध करनेके लिये नागकेशर और शक्करको पीस मक्खनमें मिलाके लगाना चाहिये (४) इस लेपको पगथली पर लगानेसे पैरोंकी दाह मिटतीहै(५) इसको चटानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होजाताहै (६) जिसके बहुत कफ गिरता हो उसको नागकेशरके चूर्णकी फक्की देनी चाहिये (७) नागकेशर और इसके पत्तोंको पीस सर्पके दंश पर लेप करनेसे विष उतरताहै (८) नागकेशरके वृक्षकी छाल थोड़ी ग्राहीहै (६) इसके वृक्षकी छालको सोंठके साथ देनेसे पसीना आताहै (१०) इसके बीजोंके तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै (११) इस तेलको घाव पर लगानेसे घाव भर जाताहै (१२) पामा और त्वचाके दूसरे रोग मिटानेके लिये इस तेलका मर्दन करना चाहिये (१३) पांव और बिगड़ेहुए जिन घावोंमेंसे दुर्गंध युक्त पीप निकलता हो उसपर इसका तेल लगाना चाहिये (१४) शरीरको कृश करनेवाले रोग छूटनेके पीछे की निर्बलता मिटानेके लिये इसकी छाल और जड़का प्रयोग करना चाहिये (१५) नागकेशरके चूर्णको छाछके साथ पीने और तक्रोदन भोजन करनेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (१६) तीसरे महीनेमें गर्भ गिरनेका भय होवे तो इसके चूर्णमें मिश्री मिलाकर दूधके साथ फक्की देनी चाहिये ।

संख्या (२६४)

(सं०) नागदमनी, नागपत्रा, नागपुष्पी, मदघ्नी, दुर्धर्षा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कालीनगद	नागदौन	नागदमनी	नागदवणा	नागदना	नागदौन	०

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	नागदमनी			Artemisia vulgaris A Indica.	Indian worm wood Flea bane

स्थान—यह बहुधा हिन्दुस्थानके पहाड़ोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१) नागदौन-कड़वी, उष्ण, और चरपरीहै निर्बलताके

कारणसे पैदा हुई रगोंकी ऐंठन या वांइटे मिटानेके लिये इसके पत्ते और कोंपलोंका काथ पिलातेहैं (२) फोड़ोंके भी इसी काथका वफारा देतेहैं (३) छोड़ २ के आनेवाले ज्वरको मिटानेके लिये इसका काथ पिलातेहैं (४) इसके काथसे मन्दाग्नि मिटतीहै (५) इसके काथपर हींग बुरकाके पिलानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं (६) दालचीनीके साथ इसका काथ करके पिलानेसे पेटका दर्द मिटताहै (७) इसका काथ पिलानेसे बच्चोंकी खांसी मिटतीहै (८) इसका अर्क बच्चोंके शिरपर चुपड़नेसे उनकी कंपवायु मिटतीहै (९) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसके काथमें मधु मिलाके पिलातेहै (१०) शतावर के साथ इसका काथ करके पिलानेसे बल वढताहै (११) यकृत्के रोग मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसका लेप करना चाहिये और उनकेही काथका वफारा देना चाहिये ॥

संख्या (२९५)

(सं०) नागरङ्गः, ऐरावत, त्वग्गंध, नारङ्गः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजावी	तैलंगी
नारगी	नारंगी,संतरा	नारंगीलिंबु	नारिंग	नारागीलेवु	नारंगी	किच्चलिपरड्ड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
आरंजिप्पलं	कित्तळेहसु		नारग	Citrus Aurantium	Orange

स्थान—नारंगीके वृक्ष हिन्दुस्थानके वहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं ।

फूलने फलने का समय—हिन्दुस्थानमें वहुधा मार्गशीर्षसे फागुन तक नारंगी पकतीहै, परंतु नागपुरमें नारंगीके एक प्रकारके ऐसे वृक्षहैं जो बारह महीनेमें दो वार फलते फूलतेहैं अर्थात् माघमें पुष्प निकलके जो फल लगतेहैं वे फागुन और चैत या वैशाखमें पकतेहैं और जो अषाढमें पुष्प निकलके जो फल लगतेहैं वे काती से पोष तक पकतेहैं यह दो प्रकारकी होतीहै । एक खट्टी और दूसरी मीठी, जिस नारंगीका छिलका पतला और चिकना हो और

जितनी अधिक बडी हो उतनी ही सबसे अच्छी होतीहै नारंगीके वृक्षके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

प्रयोग—(१) नारंगी–उष्ण, खट्टी, पचनेमें भारी, सारक, मीठी, रूक्ष, हृद्य, रोचक, दीपन और पाचनहै (२) नारंगीकी फांकका छिलका पेटकी शूल मिटाताहै और बल बढाताहै । यह साधारण मंदाग्नि और सब शरीर की निर्बलताको इसी कामकी दूसरी औषधियोंके योगसे मिटाताहै (३) नारंगीके छिलकेका हिम, फांट, क्वाथ और शरबत काममें आतेहैं (४) नारंगीके पुष्पोंका खैंचा हुआ २॥ या ५ तोले अर्क पिलानेसे वांइटे मिटतेहैं (५) स्नायु जालकी ऐंठन और स्त्रियोंके आवेशका रोग मिटानेके लिये नारंगीके पुष्पोंका खैंचा हुआ अर्क पिलाना चाहिये (६) पीनेकी चीजोंको स्वादिष्ट करनेके लिये नारंगीके पुष्पोंका शरबत काममें आताहै (७) नारंगीका छिलका और पुष्प उष्ण और रूक्ष होतेहैं (८) नारंगीकी गिरी ठंढी और रूक्ष होतीहै (९) सर्दीके कारणसे जो ज्वर हुआ हो और जिसमें खांसी कफ हो उसको मिटानेके लिये थोड़ी २ नारंगी खिलानी चाहिये (१०) नारगीकी फांकका गूदा निकाल उस पर बूरा बुरका उसको सेक कर खिलानेसे ज्वर और खांसी आदि रोग मिटतेहैं (११) इसका अर्क पिलानेसे पित्तके विकार मिटतेहैं (१२) इसका शरबत पिलानेसे पित्तका अतिसार मिटताहै (१३) नारंगीकी खटाई उपद्रव नहीं करतीहै (१४) इसके छिलकेका चूर्ण चटानेसे वमन मिटतीहै (१५) इसके क्वाथमें हींग बुरकाके पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (१६) नारंगीका पुल्टिस बांधनेसे त्वचाके रोग जैसे कि शरीरपर एक प्रकार के दाद जिनके भीतरका भाग सफेद होता है और ऊपर खरूंट रहताहै वे मिटते हैं (१७) नारंगी विषको और दुर्गंधसे जो उपद्रव होतेहैं उनको मिटाती है (१८) नारंगी का खैंचा हुआ अर्क पीने से उत्तेजना बढतीहै और चित्त प्रसन्न होताहै (१९) चिरायते के अर्क में नारंगी का शरबत मिलाके पीनेसे रुधिर शुद्ध होताहै (२०) ज्वरकी तृषा मिटानेके लिये जलमें थोड़ा नारंगीका शरबत मिलाके पिलाना चाहिये (२१) नारंगीकी फांकपर सोंठ बुरकाके खिलानेसे भूख बढतीहै (२२) नारंगीके छिलके का क्वाथ पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (२३) उष्णकालमें नींबूके शरबतकी अपेक्षा

नारंगीका शरबत पीना अच्छाहै क्योंकि इससे कोई उपद्रव नहीं होताहै और नींबूके शरबतसे हानिकारक विसूचिका होनेका भयहै (२४) नारंगीकी छालका क्वाथ पिलानेसे पेटकी बादीकी पीड़ा मिटतीहै (२५) इस क्वाथपर सोंठ और कालानमक बुरकाके पिलानेसे मंदाग्नि और अफारा मिटताहै (२६) नारंगीकी गिरको सेकके बिगड़े हुए फोड़ेपर बाधतेहैं (२७) नारंगीके ताजे छिलके को मुंहपर मलनेसे मुखदूषिका मिटतीहै (२८) इसके छिलके को पीसके जलके साथ मर्दन करनेसे एक प्रकारकी फुन्सियां मिटतीहैं ।

संख्या (२८९)

(सं०) नागवल्ली, ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागलता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नागरबेल	नागरबेल	नागरवेल्य	नागवेल	पानगाछ	नागरबेल	तमलपाकु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वेत्तिले	विल्लेदेले		तम्बोल	Piper Betle Chavica Betle	Betel leaf

स्थान—नागरबेल हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण और अधिक आर्द्र भागों में बोई जातीहै । इसकी मुख्य तीन जातेहैं, बंगला, संची और कपूरी ।

प्रयोग—(१)नागरबेलके पान-कड़वे, चरपरे, मधुर, सलौने, कषेले, रोचक, तीक्ष्ण, सारक, बल्य, हृद्य, दीपन, पाचक और त्रिदोषनाशकहै पान बहुधा बीड़ी बनाके खानेके काममें आतेहैं । कई मनुष्य इनमें चूना, कत्था, सुपारी रखके और कई इनके सिवाय लोंग, जायफल, इलायची, भीमसेनी कपूर आदि कई प्रकारके सुगन्धित पदार्थ रखकर खातेहैं पानबीड़ा खानेसे एक प्रकारकी उत्तेजना और चित्त प्रसन्न होताहै जिनके पान खानेका व्यसन होजाताहै उनको नहीं खानेसे बायढ़ आने लग जातीहै और एक प्रकारकी निर्बलता प्रतीत होतीहै (२) पान पेटकी बादी मिटानेवाला उत्तेजक और ग्राही है इससे श्वासमें मिठास होजाताहै। बोली स्पष्ट होजातीहै और मुखकी

सब प्रकारकी दुर्गंध मिट जातीहै (३) यह पुरुषार्थ बढाताहै व कफके रोगोंमें नागरवेलके पानोंका प्रयोग बहुत अच्छाहै (४) इसके रसमें खांसी मिटाने वाली औषधियोंको खरल करके गोलियां बनाके देनेसे खांसी मिटतीहै (५) पानकी डंडीके ऊपर तेल चुपड़के बालककी गुदामें देनेसे दस्तकी रुकावट मिटजातीहै (६) बच्चेका आध्मान मिटानेके लिये भी यह प्रयोग किया जाताहै (७) कनपटियों पर नागरवेलके पान बांधनेसे मस्तककी वायुकी पीड़ा मिटतीहै (८) मांसपिंडोंकी सूजन और पीड़ा मिटानेके लिये उन पर पानको तेलसे चुपड़ अग्नि पर तपाके बांधना चाहिये (१०) स्तनों पर नागर वेलके पान बांधनेसे दूधका संचार मिटजाताहै (११) बिगड़े हुए फोड़ों पर पान बांधना चाहिये (१२) इसके फलको मधुके साथ चटानेसे खांसी मिटतीहै (१३) गर्भ रहना बन्ध करनेके लिये इसकी कोमल जड़ोंको काली मिरचके साथ पीसके प्रयोग करना चाहिये (१४) पानोंका ३॥ मासे उष्ण किया हुआ अर्क दिनमें २,३ बेर पिलानेसें ज्वरका आना बन्ध होताहै (१५) बच्चेका अजीर्ण मिटानेके लिये पानका अर्क पिलाना चाहिये (१६) स्त्रियोंका आवेशका रोग मिटानेके लिये पानका अर्क दूधमें मिलाके पिलाना चाहिये (१७) पानके अर्कमे कपासकी जड़की लुगदी बना उसमें हीरेको रख कपड़ मिट्टी देके गजपुटकी आंच देनेसे हीरेकी भस्म हो जातीहै(१८)बच्चोंका प्रतिश्याय और हृदय सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये पानको तेलसे चुपड़ आगसे तपाके उसको छातीपर रख फिर उसके ऊपर ५, ७ पान रखकर पट्टी बांधदेना चाहिये (१९)इसी प्रयोगसे बच्चेकी खांसी और कठिनतासे श्वास लेना मिटजाताहै हृदय और यकृत्में जो रुधिरका जमाव हो वह बिखर जाताहै और अन्य रोगभी मिट जातेहैं (२०) पेटकी शूल मिटानेके लियेभी उक्त रीतिसे पान बांधने चाहियें (२१)आर्द्र पृथ्वी और देशके दूषित जल वायुसे होनेवाले विकार पान खानेवालेके नहीं होतेहैं(२२)निर्बल मनुष्योंको पानका सेवन कराना चाहिये(२३)यह सब शक्ति आर्द्र पानोंमें होतीहै सूखजानेसे सब जाती रहतीहै क्योंकि इनमें उड़नेवाला एक तेलहै उसमें रोग मिटानेवाली ये सब शक्तियें हैं (२४) पानका अर्क भभकेमें खेंचनेसे इसका तेल अर्कके ऊपर तैर आताहै । इनमेंसे दो प्रकारके पीले तेल निकलतेहैं एक भारी और दूसरा हलका । इन तेलोंमें पान-

कीसी एक विशेष भांतिकी सुगंध होतीहै परन्तु हल्के तेलमें अधिक सुगंध होतीहै (२५) पानोंमें से एक प्रकारका क्षार और लवण निकालतेहैं वे कुछ कड़वे होतेहैं और उनके सेवनसे मुंहसे पानीका वहना वढ जाताहै हृदयका धड़कना कम हो जाताहै और विरेचन लग जाताहै (२६) आंखमें पानके अर्ककी बूदें डालनेसे उसकी बादीकी पीड़ा मिटजातीहै (२७) मस्तिष्कमें रुधिरके जमावको बिखेरनेके लिये पानका अर्क सुंघाना चाहिये (२८) पान खानेसे तृषा कम पड़ जातीहै (२९) पानका रस उत्तेजकहै (३०) पानके रसका अजन करनेसे रतोंधा और आंखके सफेद भागके रोग मिटतेहैं (३१) गलेकी पीड़ा मिटानेके लिये पानपर कड़वा तेल चुपड़ अग्निसे तपाकर बांधना चाहिये(३२)श्वासकी नलीको शुद्ध करनेके लिये बंगला पानका प्रयोग वहुत अच्छाहै(३३)पानकी जड़ और मुलहटीको पीस मधुके साथ चटाने से प्रतिश्यायसम्बन्धी रोग मिटतेहैं (३४) गवैये लोग अपनी राग साफ करने और सुधारनेके लिये इसकी जड़ चूंसा करतेहैं (३५) पानके रसको मधुके साथ चटानेसे बच्चोंकी सूखी खांसी मिटतीहै (३६) पानोंके शर्बतमें दूसरी चरपरी चीजें अर्थात् उष्ण वेसवार मिलाके या उष्ण वेसवारके साथ पानका शरवत वनाके ढाई ढाई तोले दिनमें तीन वेर पिलानेसे सव शरीरकी निर्बलता मिटतीहै (३७) इसके रसमें कबूतरकी बींट मिलाके पिलानेसे गर्भस्राव बन्ध होजाताहै (३८) तांबूल भक्षण करनेसे जृम्भाका वेग रुकताहै (३९) इसका शरवत पीनेसे हृदयका बल वढताहै कफ और मन्दाग्नि मिटतीहै ।

संख्या (२७९)

(सं०) नाडिका, नाडीशाकः, नाडीकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	पटुआसाग	नालानीभाजी	नाडीशाक	नालिताशाक	पटुशाक	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Corchorus olitorius	Jem's mallow

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै ।

प्रयोग—(१) इसको सूखी या गीलीको जला उस भस्मको थोड़ी मधुके साथ चटानेसे तिल्ली आदि यंत्रोंके वहावकी रुकावट मिटजातीहै (२) इसके पत्तोंका हिम या फांट पिलानेसे ज्वरकी दाह मिटतीहै (३) इसके पत्तोंका हिम पिलानेसे बल बढताहै (४) तीव्र आमातिसार मिटनेके पीछे भूख लगाने और शक्ति बढानेके लिये इसका प्रयोग निरुपद्रव उपकारीहै (५) इसके तीन रती चूर्णमें तीन रती हल्दी मिलाके फकी देनेसे तीव्र आमातिसार मिटताहै (६) इसके पत्ते शाकके काममें आतेहैं ॥

संख्या (२९८)

(सं०) नारिकेलः, उच्चतरुः, जटाफलः, तृणराज ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नारेल	नारियल	नालीयर	नारळी,नारळ	नारिकेल	नारियल	टेंकाइचद्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तेंगाइ	तेंगिनमर		नारगील	Cocus nucifera.	The cocoanut palm. Cocoanut

स्थान—इसके वृक्ष सिन्धके नीचेके भाग बंगाल और मैसोर आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

फूलने फलने का समय—उष्णकालमें इसके पुष्प लगतेहैं । भादवेसे कार्तिकतक इसके फल पकतेहैं ।

इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै । नारियलकी डाढी और पत्तोंकी डंडियोंमेंसे एक प्रकारका रंग निकलताहै ।

प्रयोग—(१) नारियल—पचनेमें भारी, स्निग्ध, शीतल, वृष्य, बल्य, रस और विपाकमें मधुर, हृद्य और मदकारकहै । नारियलका कच्चा खोपरा ठण्ढा होताहै (२) इसके पुष्प ग्राही होतेहैं (३) नारियलकी ताजी गिरी मेंसे निकाला हुआ तेल काडमछलीके तेलकी ठौर काममें आसक्ताहै (४)

नारियलका दूधिया पानी अच्छा स्वादिष्ठ, ठण्ढा और शान्ति करनेवालाहै (५) इसको ज्वरमें पिलानेसे ज्वरकी तीव्रतासे पैदा हुई घबराहट मिटती है (६) इसके पिलानेसे अधिकतृषा मिटतीहै (७) मूत्रसम्बन्धी उपद्रवों को मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै (८) इसकी मात्रा नियत नहींहै इसके सेवनसे रुधिर शुद्ध होताहै (९) इसका अधिक सेवन करनेसे अंडकोषमें पानी भरकर शोथ पैदा होजातीहै (१०) कच्चा खोपरा ठण्ढा, शरीरको पुष्ट करनेवाला और मूत्रवर्द्धक है (११) पक्का खोपरा कड़ा और पचनेमें भारी होताहै (१२) पक्के खोपरेको महीन कूट थोड़े जलसे पीस दबाके निचोड़नेसे एक दूध जैसा पदार्थ निकलताहै उसका स्वाद दूधसे बहुत मिलता हुआ होताहै और दूधकी ठौर काममें आसकताहै। इस दूधको आध पावसे पावभर तक दिनमें दो तीन बेर पिलानेसे शरीरकी निर्बलता और बिगड़ी हुई दशा मिटतीहै (१३) कफक्षयके प्रारम्भमें इस दूधका पिलाना बहुत उपकारीहै (१४) इस दूधको काफीमें गायके दूधकी ठौर काममें ला सकतेहैं(१५)इसकी अधिक मात्रा लेनेसे यह सारकपनका काम करताहै और कभी २ अधिक विरेच लगा देताहै इसलिये इसको एरंडके तेल और दूसरे उत्क्लेद करने वाले (जी मचलानेवाले) विरेचनकीठौर काममें लातेहैं (१६) पक्के खोपरेका नारिकेल खंड बनातेहैं जिसके सेवनसे मंदाग्नि, हृदयकी पुरानी दाह और क्षैन रोग मिटताहै (१८) नारेलीके टुकड़े कर उनको हंडीमें भर पाताल यन्त्रसे उनका चौवा निकालतेहैं वह दादके ऊपर लगानेके काममें आताहै (२०) नारियल के तेलसे एक सफेद बड़ा साबुन बनताहै जो मोलमें सस्ता पड़ताहै। इसका पलस्तर और लेप बनातेहैं (२१) पक्के खोपरेमें से निकाले हुए दूधमें तेल डाल ओटाकर एक प्रकारका तेल बनातेहैं उसको अग्निसे जले हुए पर और गंज पर लगातेहैं (२२) इसकी गिरीको कूट पानीमें ओटाके तेल निकालते हैं या गिरको महीन पीस किसी यंत्रमें दबाके तेल निकालतेहैं परन्तु यह तेल मूंगफली और तिल्लीके तेलसे गुणमें हल्का होताहै खोपरेमें से निकाला हुआ अपक्क तेल नहीं खिलाना चाहिये (२३) इसकी सवा सवा तोलेकी मात्रा दिनमें तीन बेर दे सकतेहैं, यह मर्दन करनेसे जल्दी सूख जाताहै (२४) इस तेलमें आमलीके बीजोंका तेल मिलाके या बड़ी कालीमिरच मिलाके गठिया

की सूजन पर लगाना चाहिये (२५) इस तेलके लगानेसे बाल बढ़तेहैं, या जिसके बाल खिरते हों उसको चाहिये कि यह तेल बालोंके लगाया करे (२६) ज्वर छूटनेके पीछे या शरीरको निर्बल करनेवाले रोगों में जिस के बाल खिरतेहों उसको चाहिये कि यह तेल बालोंके लगाया करे (२७) मेद रोगवालेको यह तेल पिलाना चाहिये (२८) इसके पिलानेसे कीड़े मरतेहैं (२९) जिसको दस्त लगतेहों उसको भूखा रख इस तेलको गर्मकर कुछ शक्कर मिलाके पिलाना चाहिये (३०) खांसीवालेको खोपरेका दूध बनाके पिलाना और खोपरा खिलाना चाहिये (३१) फैफड़ेके रोगोंमें बहुधा ये दोनों प्रयोग अच्छे उपकारीहैं (३२) यंत्रमें दबाके निकाले हुए तेलसे खोपरेका जलके साथ निकाला हुआ दूध अच्छाहै और इस दूधके सेवनसे कफक्षयके १०० रोगियोंमें से कम से कम ६६ रोगी अच्छे होजातेहैं और उनका शरीर पुष्ट होजाताहै (३३) विना प्रयोजन बहुत दिनों तक इसका लगातार सेवन करनेसे पाचनशक्ति बिगड़ जातीहै और अतिसार होजाताहै (३४) जहरी सर्पों के काटेहुए मनुष्योंको इस तेलका सेवन कराना चाहिये (३५) इसका खैंचाहुआ ताजा रस शान्ति और मूत्रवृद्धि करताहै (३६) इसकी कोमल जड़ और सोंठको ओटा छान, नमक बुरकाके पिलानेसे ज्वर छूट जाता है (३७) नारियलकी शाखाके नीचेके भागमें बाहिरकी ओर रूई जैसा एक कोमल हल्के भूरे रंगका पदार्थ चिपका रहताहै उसको नारियलकी रूई कहते हैं उसको रुधिर बन्ध करनेके लिये घाव, चोट और जोंकके डंक, पर लगातेहैं (३८) इसकी जड़ मूत्रवर्द्धकहै और गर्भाशयके रोगोंमें उपकारीहै (३९) इस की जड़के क्वाथके कुल्ले करानेसे गलेका दर्द मिटताहै (४०) इसके पत्तों की भस्म और इसका क्षार औषधीके प्रयोगमें काम आतेहैं (४१) नारियलकी डाढी ओटाके भोजन किये पहिले पिलानेसे पेटमेंसे पिटाट निकल जातीहै (४२) नारियलके कच्चे फलका रस खट्टी डकार और पकाशय की दाहको मिटाताहै (४३) नारेलीका चौवा लगाने से पांव और त्वचाके दूसरे कृमि सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (४४) विसूचिकाकी तृषा मिटानेके लिये नारियलका जल पिलाना चाहिये (४५) विसूचिकाकी वमन दूसरी औषधियोंसे बन्ध नहीं होवे तो नारियलका जल पिलानेसे अवश्य बन्ध होजातीहै (४६) ताजे खोपरेमें

से निकालेहुए तेलकी मात्रा २० से ३० बूंद तक दिनमें तीन वेर देना चाहिये पीछे इसको धीरे २ पौने चार मासे तक वढा देना चाहिये (४७) खोपरेकी भस्म अम्लपित्तको मिटातीहै और पाचनशक्ति बढातीहै (४८) इसके वृक्षमें से एक प्रकारका मीठा मादक रस निकाला जाताहै वह बहुत शान्तिकारक और सारकहै (४९) यह रस गर्भवती स्त्रीको हर सप्ताहमें दो तीन वेर लगा-तार ९ महीने तक देते रहनेसे गर्भमें वालकका रंग पलट जाताहै अर्थात् काले रंगके मा वापोंके वालकका रंग पक्का होजाताहै और पक्के रंगवालोंके वालकका रंग गौरा और गौरे रंगवालों के वालकका रंग विलायतियों जैसा हो जाताहै (५०) नारियलके पुष्पोंके गुलकंदमें खस और सफेद चन्दनका बूरा और कुछ पानी मिलाके पिलानेसे पित्तज्वर में बहुत लाभ होताहै, वमन मिटतीहै, कलेज में शीतलता (ठंढाई) होती है, अतिसार, आमातिसार और मुखपाक मिटताहै (५१) नारियलकी डाढीकी भस्मको पानीमें घोल उस नितरे हुए पानीको पिलानेसे हिचकीका आना बन्ध होजाताहै (५२) चोटकी पीड़ा मिटानेके लिये और चोटकी गांठकी शोथ उतारनेके लिये उसपर महीन कूटीहुई पुराने नारियलकी गिरमें चौथा भाग पीसीहुई हल्दी मिला गर्मकर पोट-ली बांधके सेक करना और उसीको बांध देना चाहिये (५३) नारेलके पानी की नस्य लेनेसे सूर्यावर्त मिटताहै (५४) दूध पीनेवाले वालककी माको नारियल की गिर ७ दिन खिलानेसे उस वच्चेको शीतला कम निकलतीहै (५५) वालक होनेके पीछे गर्भाशयमें पीड़ा होती हो तो खोपरा खिलाना चाहिये (५६) नारेलीके टुकड़ोंका पाताल यंत्रसे जो तेल निकालतेहैं उसको नारेलीका चौवा कहतेहैं । यह त्वचाके रोगोंमें काम आताहै (५७) इसके १ तोले ताजे तेलमें एक मासा सैंधानमक मिलाके नस्य देनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै। नारियलकी १०० तोले गिरीमेंसे ३० से ५० तोले तक तेल निकल-ताहै यह तेल सफेद और मीठा होताहै इसके ताजे तेलमें अच्छी सुगन्ध आ-तीहै यह थोड़े दिनोंके पीछे विगड़ जाताहै परन्तु साफ करनेसे जल्दी नहीं बिगड़ताहै ।

संख्या (२६६)

(सं०) अब्धिनारिकेल ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जहरी नारेल	दर्याई नारियल		जहरी नारेल			समुद्र पुर्टेकाय

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
			नारगील नारजील	Lodoicea sechellarum Lodoicea seychellarum	The sea cocoanut. The double or marine cocoanut.

स्थान—दर्याईनारियलके वृक्ष मैडेगैस्करके उत्तर पूर्वके शिसुली समूहके दो तीन पहाड़ी टापुओंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष बड़ा होताहै इसके शिर पर १२ से २० तक बड़े पत्ते होतेहैं इसके २० से २५ सेर तक बहुत बड़ा फल लगताहै जो बहुत वर्षोंमें पकताहै ।

प्रयोग—(१) दर्याई नारियल विषनाशक और बल बर्द्धकहै (२) इसकी गिरीको स्त्रीके दूधमें घिसके दिनमें दो वेर देनेसे मोतीजरा छूटताहै (३) इसकी गिरीका लेप करनेसे मसूड़ोंके रोग मिटतेहैं (४) इसको कुचीलेकी जड़के साथ मिलाकर पिलानेसे बच्चोंकी शूल मिटतीह (५) इसको पानीमें पीस कर पिलानेसे हैजेकी दस्त और उल्टी मिटतीहै (६) इसके कच्चे फलका पानी पीने या कच्चे दर्याई नारियलकी गिरी खानेसे पित्तके विकार मिटतेहैं (७) भोजनके पीछे इसकी कच्ची गिरी खानेसे खट्टी डकारें आना बन्ध होताहै (८) इसका पका-हुआ फल-सारकहै (९) यह फल जब तक कच्चा रहताहै तब तक इसके भीतरका चेपदार गूदा खानेके काममें आताहै (१०) इस वृक्षके अन्तका ऊपरका भाग खानेके काममें आताहै (११) उपदंशकी टांकी पर इसका लेप करतेहैं (१२) इसकी एक मासा गिरी पीसके पिलानेसे सब प्रकारके विष उतरते हैं ।

संख्या (३००)

(सं०) नाही ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	नाही	कडवीनई	कडवीनाई			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Corallocarpus epigoca Bryonia epigoca.	

स्थान—नाहीकी बेलें पंजाब, सिन्ध, गुजरात और दक्खन प्रायद्वीपमें बैलगांव तक होतीहैं ।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होतीहै एक मीठी और दूसरी कड़वी । इसकी जड़की मोठाई और लम्बाई सब ठौरसे एकसी नहीं होतीहै यह बांझ करेले की जड़से बहुत मिलतीहै और शलगमसे बहुत बड़ी होतीहै उसपर ऊपरसे कुछ पिलास लियेहुए सफेद कुछ उठेहुए गोल चक्कर होतेहैं । यह स्वादमें कड़वी चेपदार और खट्टी होतीहै जब इसको काटतेहैं तब इसमें से गाढ़ा रस निकलताहै वह तुरन्त गोंद जैसा कड़ा होजाताहै । इसके पत्ते नागरबेलके पत्तों जैसे होतेहैं कड़वीके फल झड़बे से कुछ बड़े और मीठीके फल नींबू जैसे होतेहैं उनका रंग जर्द कुछ श्याही लिये होताहै जड़मेंसे एक प्रकारका कंद निकलताहै उसकाभी रंग फलों जैसा होताहै इसके पुष्पोंकी ...रीसी लगतीहै इसका फल मेघकी गरजकी आवाजसे फटताहै और तब ... उगताहै इसके फलको गरजफल कहतेहैं ।

प्रयोग—(१) नाही—कड़वी, कषैली, वामक, रेचक और उष्णहै (२) रुधिरको शुद्ध करके उपदंश मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै । इसके ४ मासे चूर्णकी फकी दिनमें एक बेर देनी चाहिये (३) उपदंशकी पिछली अवस्थामें इसकी ४ मासेकी फकी दिनमें एक बेर ८-१० दिन तक देनेसे मल के एक या दो ढीले दस्त होके उपदंशकी चांदी मिट जातीहै (४) जीरा, प्याज और नाहीके कंदको एरंडके तेलमें पीसके लेप करनेसे पुरानी गठिया

मिटतीहै (५) इसकी जड़के चूर्णकी फकी लेनेसे और उसको घिसके सर्प के दंश पर लगाने से सर्प का विष उतरता है (६) वायविड़ंग और इसके चूर्णकी फकी देनेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (७) कड़वीनाहीका कंद वामक, रेचक और शोथ नाशकहै (८) मीठी नाहीके फलोंका शाक बनातेहैं (९) कड़वी नाहीके कंदको घिसकर पीने और लगानेसे शोथ उतरतीहै ।

संख्या (३०१)

(सं०) निकोचकं, जलगोजकं, सकोचं, चारुफलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चिलगोजा	चिलगोजा				नेज़े	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
			चिलगोज़ा	Pinus Gorardiana.	The Neosia or Edible pine

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिमालयमें कुनवारसे पश्चिमकी ओर और गढ़वालमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ३०–४० और कभी ५०–६० फुट ऊंचा होता है इसकी पेंदड छोटी और सीधी होतीहै और गुलाईमें ६–७ कभी कभी १२ फुट होजातीहै । यह वृक्ष ८—१० फुट ऊंचा बढ़जानेके पीछे इसमें शाखा फूटतीहैं, इसके गहरे हरे रंगके पत्ते और चिकनी शाखा लगतीहैं और भूरे रंगके गोले लगतेहैं उनमें फल रहतेहैं । ये गोले पकजाने पर ६–९ इंच लम्बे होजातेहैं इसकी जड़के पासकी मध्यरेखा ४–५ इंच लम्बी होतीहै । इसके फल एक इंच लम्बे, गोल और एक ओरसे कुछ चिपटे होतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—जेठ अषाढ़में इसके पुरुष पुष्प लगतेहैं, फलो के तिखूंटे गोले दूसरे वर्षमें भादवे और आसोजमें पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) चिलगोजा–पचनेमेंभारी, स्निग्ध, वृष्य, बृंहण, उष्ण

मीठा और वल्यहै (२) इसकी मींगीको पीस, लेप करके तपानेसे वादीकी पीड़ा मिटतीहै (३) इसकी मींगी खानेसे शरीरका आलस्य मिटताहै और फुरती बढ़तीहै (४) इसके तेलको क्षत और पिटिकापर लगानेसे वे शीघ्रतासे भरजातेहैं (५) इसके तेलके लगानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (६) इसकी मींगी और मुनक्का एक दिनरात पानीमें भिगो थोड़ा बूरा मिलाके खानेसे शरीरकी निर्बलता मिटतीहै (७) इसकी मींगीको आटेमें मिला रोटी बनाके खातेहैं । एक मनुष्य एक वृक्षके फलोंसे शीतकाल बिता सकताहै। इसके बीजों में से एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै वह औषधिकी रीतिपर काममें आताहै । इसके राल जैसे पदार्थमें से एक प्रका'का तेल निकलताहै ।

संख्या (३०२)

(सं) निम्बः, अरिष्टः, सर्वतोभद्रः, पिचुमन्दः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नीम	नीम	लिंबड़ो	कडु लिंब	निम	निम नीम	वेमु वेपचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वेपम्मर	बेवु, बेवुमरा		नीब	Melia Azadirachta. A Indica.	The Neem or Margosa tree

स्थान—निम्बके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुत से भागोंमें बहुधा लगाये जातेहैं और अपने आप उगतेहैं ।

पहिचान—नीमका वृक्ष ४०,५० फुट या इससेभी ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ छोटी सीधी और उसकी गुलाई ६ से ८ फुट तक होतीहै इसकी छोटी शाखाके अंतमें ९ से १५ इञ्च लम्बी बहुतसी सींकें लगतीहैं उनके ९ से १३ तक पत्तोंके जोड़े लगतेहैं पत्ते कटवां कंगूरेदार किनारेके और मुड़वां अनीके एक ओरसे कुछ चौड़े और एक ओर से तंग और हरे रंगके होतेहैं । इसके सफेद पुष्पोंकी मंजरी लगतीहै उसमेंसे रात्रीमें मधु जैसी तीव्र गंध आतीहै। उसके बहुतसे हरे बीज लगतेहैं वे पकनेपर पीले पड़जातेहैं । उनकी गिरी मीठी होतीहै । फलमें एक खाना और

एक बीज होताहै इसके फलको मारवाड़ीमें " निंबोली " कहतेहैं इसके पुराने पत्ते सब गिर जानेके पाहिलेही फाल्गुन चैत्रमें नवीन पत्ते निकल आतेहैं। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै जो कड़वा नहीं होताहै और ठण्डे पानीमें भलीभांति गल जाताहै, यह गोंद साफ उजला और कहरवेके रंगका होताहै इसके छोटे २ टुकड़े होतेहैं। नीमकी छाल और गोंद रंगतके काममें आतेहैं।

फूलने फलनेका समय— फाल्गुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगतेहैं अषाढ़ श्रावणमें निंबोलियां पकतीहैं।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंमेंसे कड़वा, चरपरा, गहरापीला, नहीं उड़नेवाला और बहुत बुरे स्वादवाला तेल निकलताहै। तेल निकालनेके लिये निंबोलीमेंसे मींगीको निकाल उसको महीन कूटके पानीमें ओटानेसे तेल ऊपर तैर आताहै या इसकी मींगीको घाणीमें डालके पेरनेसे तेल निकल आताहै (२) बिगड़े हुए घावों पर यह तेल लगानेसे उनकी शिथिलता मिटकर वे मिटजातेहैं (३) स्त्रियोंका दूध बन्ध करनेके लिये नीमके पत्तोंका कल्क बनाके उनके स्तनों पर लेप करतेहैं (४) नीमकी छालमेंसे एक कड़वा तत्व निकालतेहैं जो ज्वर छुड़ानेमें बड़ा प्रबलहै (५) जो ज्वर छुड़ानेवाली दूसरी औषधियां ज्वर नहीं छुड़ा सकें तो नीमकी छालका अष्टमांश या दशांश काथकर निरंतर रहनेवाले ज्वरको छुड़ानेके लिये हर घंटेमें देना चाहिये (६) फोड़े और त्वचाके रोगोंपर दुष्ट और दुर्गंधयुक्त वायुका असर नहीं होनेके लिये नीमके पत्तोंका पुल्टिस बांधतेहैं या नीमकी डाली उस मकानके दर्वाजेपर बांध देतेहैं (७) बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसकी छालका काथ दिनमें ३ बेर पिलातेहै (८) नीमकी छालका काथ पिलानेसे ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै और पेटके कीड़े मरतेहैं (९) नीमकी अंतरछालके चूर्णकी फकी देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (१०) इसके बीजोंका तेल लगानेसे जूएं, लीखें मरतीहैं (११) पित्तीवालेके इसके तेलका मर्दन कराना चाहिये (१२) बच्चोंके ऐसे फोड़े कि जो नीचेसे हरे रहतेहैं और ऊपर खुरंट आजातेहैं उनपर इस तेलको लगाना चाहिये (१३) थोड़े वेगवाले शीतज्वरको मिटानेके लिये नीमकी अंतरछालका काथ दिनमें २ बेर पिलाना चाहिये (१४) जो बिगड़ेहुए फोड़े दूसरी औषधियोंसे नहीं मिटतेहैं उनपर नीमके

पत्तोंका पुल्टिस बांधतेहैं (१५) इसके तेलका मर्दन करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (१६) कोढ़ और त्वचाके दूसरे रोगोंमें नीमके पत्तोंके ताजे रसका मर्दन करनेसे वहुत लाभ होताहै (१७) १२ वर्ष पर्य्यंत नीमके वृक्षके नीचे रहनेसे पित्तका गलित कुष्ठ मिटताहै (१८) नीमकी कोमल डालियोंसे लगातार दांतुन करनेसे मुखके कई रोग मिटजातेहैं मुख और श्वास शुद्ध और मीठा होजाता है (१९) नीमके पत्तोंको पीस उनकी छोटी २ टिकड़ियां बना मन्द आंचसे घीमें तलते २ जब वे जलजावें तब निकाल देवें और उस घीमें वरावर मोंम डाल पिघलाके पानीसे भरेहुए वरतनमें डाल देवें. जब वह घी जम जावे तब उसको पानीपर से उतारके रख छोड़े। शीतकालमें इसको हाथ पैरों पर लगानेसे कोमल बने रहतेहैं और फटते नहींहै (२०) नीमके पत्तोंको घीमें जला महीन पीस मोंममें मिलाके शिथिल पड़ेहुए फोड़ोंपर लगातेहैं (२१) नीमके तेलकी ३० बूंद से पौने चार मासे तक की मात्रा लेके ऊपर पान चाबनेसे श्वास मिटताहै (२२) नीमकी छालकी भस्मको वहुत वहनेवाले फोड़ों पर लगाना चाहिये (२३) जिस ज्वरमें वांइटे चलते हों या पैरोंमें शीत आगया होवे तो उस दशा में नीमके तेलका मर्दन वहुत उपकारीहै (२४) विसूचिकामें भी इन दोनों उपद्रवोंको मिटानेके लिये इसके तेलका मर्दन वहुत उपकारीहै (२५) नीमकी जो कूट कीहुई ५ तोले अंतरछालको अढ़ाईपाव पानीमें आधे घंटे तक ओटाके छान लेवें, फिर उसी छालको उतनेही पानीमें ओटाके उसका पावभर पानी रखके छान लेवें, फिर इन दोनों काथोंको मिलाके उसमें से पांच पांच तोले काथ दिनमें दो तीन वेर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (२६) इसके पत्तोंका पुल्टिस वांधनेसे और पत्तोंको ओटाके वफारा देनेसे फोड़ोंकी दाह मिटतीहै (२७) दुष्ट पृथ्वी, वायु जलादि और सड़ेहुए फलोंकी दुर्गंधसे जो ज्वर होता है उसको छुड़ानेकेलिये नीमकी छालका काथ पिलाना चाहिये (२८) नीमकी छालका हिम, फांट या काथ यथा दोष पिलानेसे रुधिर शुद्ध होके फोड़े फुन्सी मिट जातेहैं (२९) इसके तेलको पानमें लगाके खिलानेसे या रास्नादि काथमें इसकी ३० बूंदें डालके पिलानेसे वांइटे और कई प्रकारके वायुके वेग मिटतेहैं (३०) गहरी शीतला निकल जाने पर इसके तेलको सब शरीर पर चुपड़ देनेसे वहुत उपकारहोताहै। इस काममें इसका प्रभाव तिल्लीके तेलसे या नारि

यलके तेलसे या कारबोलिकएसिड्से भी बहुत बढ़करहै (३१) त्वचाके ऊपर के मात्र प्रकारके छोटे या दृष्टिमें नहीं आनेवाले कीड़ोंको मारने या उनको दूर करनेके लिये नीमके तेलका मर्दन करना चाहिये (३२) विगड़ेहुए फोड़े या घावोंको नीमके पत्तोंके काथसे धोना चाहिये (३३) नीमके कोमल पत्ते पित्त सम्बन्धी विकारोंको मिटातेहैं (३४) नीमके तेलका मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (३५) पुराना ज्वरातिसार मिटानेकेलिये नीमकी छालका काथ पिलाना चाहिये (३६) नीमकी कोंपल और कालीमिरचको घोट छानके पिलानेसे वारीसे आनेवाले ज्वरका वेग बन्ध होजाताहै (३७) इसकी छाल के काथसे फोड़ेको धोनेसे जहरीली छूतका असर नहीं होताहै (३८) इसके कोमल पत्तोंको पीसके लगातार पिलानेसे कोढ मिटताहै (३६) इसकी कोमल कोंपलोंका बैंगनके साथ शाक बनाके खातेहैं (४०) इसके पत्तोंका वफारा देनेसे मोचकी और गिल्टियोंकी सूजन मिटजातीहै (४१) गठियाकी सूजन मिटानेके लिये नीमके तेलका मर्दन करना चाहिये (४२) इसके पत्तोंको घीमें भून पीस आवश्यकता होतो उनमें फिर घी मिलाके छीछड़ेदार घावोंपर और सड़ीहुई हड्डियोंपर लगातेहैं (४३) नीमके पुराने वृक्षमेंसे जो दूधिया रस निकलताहै उसका सेवन करनेसे रुधिर शुद्ध होकर वल वढ़ताहै (४४) खोपरीपर रगड़ लगजानेसे जो घाव होजाताहै उसपर निंबोलीका तेल लगाना चाहिये (४५) नासूर और पीपवाले फोड़ोंपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे बड़ा लाभ होताहै (४६) नीमकी छालके काथके कुल्ले करनेसे या नीमका तेल लगानेसे मसूड़ोंके असाध्य रोग मिटतेहैं (४७) रात्रीमें नीमके नीचे सोनेसे ज्वर छूट जाताहै (४८) इसके पत्तोंकी भस्मको घीमें मिलाके उन चाट्ठों पर लगातेहैं कि जो नीचेसे लाल रहतेहै और उनके ऊपर सफेद छिलकोंके कई पड़त जमे रहतेहैं (४६) नीमके पत्तोंके काथसे धोनेसे छालोंकी जलन मिटजाती है (५०) इसका तेल लगानेसे या इसके काथसे धोनेसे कच्चे खुरंट उतर जातेहैं (५१) कच्चे फोड़े पर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे या तो व जल्दी पकजातेहैं या उनकी सूजन विखर जातीहै (५२) बैंगन या दूसरे शाकके साथ इसके पत्तोंको छोंकके या शाक बनाके खानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (५३) कोढ़ीके शरीर पर इसके तेलका मर्दन करनेसे बहुत उप-

क्षार होताहै (५४) इसका तेल लगानेसे दाह मिटतीहै (५५) इसके पत्तों को कपड़े और किताब आदिमें रखनेसे उनमें कीड़े नहीं लगतेहैं पत्तोंको बेर २ बदलते रहना चाहिये, क्योंकि इनमें कीड़ोंसे बचानेकी शक्ति कपूर जितनी नहींहै (५६) नीमका दूधिया रस नीममेंसे अपने आप निकलताहै या युक्ति करके निकालतेहैं। अपने आप निकलने वाला दूधिया रस महीन धार से निकलताहै या उसकी बूंदें २ गिरतीहैं यह रस ४ से ७ सप्ताह तक ३ या ४ ठौरसे निकला करताहै यह स्वच्छ सफेद और पतला होताहै किसी २ नीममेंसे हरतीसरे चौथे वर्ष ३-४ बेर रस निकलके पीछे वह वृक्ष सूखजाताहै। जब नीमका मद निकलने वाला होताहै तब उसमें से एक प्रकारका शब्द होने लगताहै जब उसमेंसे मद बहना शुरू होताहै तब वह शब्द बन्ध होजाताहै (५७) मद निकालनेकी रीति–हरेएक वृक्षमेंसे दूधिया रस नहीं निकाला जासकताहै। नदी नाले या तालाबके कनारे जो वृक्ष अच्छे जवान और बड़े होतेहैं उन वृक्षोंकी एक साधारण मोटाईकी ताजी जड़परसे मिट्टी अलग करके उस जड़के बीचमें छेद करके उस ठौर नलिका लगाके अथवा उसकी गोलाईमेंसे आधी काटके उसके नीचे एक पात्र रख देतेहैं उसमें महीन धारसे रस आने लगताहै यह मदभी वैसाही गुणकारीहै जैसाकी अपने आप निकलने वालाहै इस रीतिसे बहुत कम मद निकलताहै अर्थात् २४ घंटोंमें २ से ६ बोतल तक निकलताहै (५८) नीमके इतने अंग औषधिके काममें आतेहैं जैसे नीमकी जड़, पेड़की अंतरछाल कच्चेफल, तेल, बीज, पत्ते, पुष्प, गोंद और दूधयारस आदि। इसके पकेफलको मारवाड़ीमें गुटका कहतेहैं इनकी गीली गिर खानेके काममें आतीहै (५९) नीमके तेलमें मधु मिला उसमें बत्ती भिगोकर कानमें रखनेसे कानका पूय बध होताहै (६०) इसके पत्तोंका बफारा देनेसे कानका मैल निकलके उसकी पीड़ा मिटजातीहै (६१) नीमके पत्तोंको सम्पुटमें रख कपड़मिट्टी लगाके अग्निमें रखदेवें, जब उनकी भस्म होजाय तब निकाल उस भस्मको नींबूके रसमें खरलकर नेत्रांजन करनेसे खुजली और जलन आदि नेत्ररोग मिटतेहैं (६२) पत्तोंका रस निकाल मीठे तेलमें मिलाके नाकमें टपकानेसे मस्तकके कीड़े मरजातेहैं (६३) नीमकी लकड़ीका दांतुन करनेसे दांतोंमे कीड़े नहीं पड़तेहैं (६४) नेत्रपीड़ा मिटानेके लिये इसकी कोमल

कोपलोंका रस निकाल निवायाकर जिस ओर पीड़ा हो उसकी दूसरी ओर के कानमें डालना या दोनों नेत्रोंमें हो तो दोनों कानोंमें डालना चाहिये (६५) इसके पत्तोंका २ मासे खार खानेसे पथरी गलजाती है (६६) नकसीर बन्ध करनेकेलिये इसके पत्ते और अजवाइन दोनोंको महीन पीसके कनपटियों पर लेप करना चाहिये (६७) पत्तोंका रस नेत्र में लगानेसे वांफनीका गलना और दाह मिटतीहै (६८) २ तोले कोमल कोपलोंको पीस छानके १५ दिन तक पीनेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (६९) इसके फूल, फल और पत्ते, ये सब बराबर २ ले पीसके दो मासेसे लेना प्रारंभ करे, पीछे ६ मासे तक बढा लेना चाहिये इस रीतिसे ४० दिन तक लेनेसे सफेद कोढ़ मिटताहै (७०) इसकी ४ मासे छाल जोकूटकर २ तोले गुड़के साथ डेढ पाव पानीमें ओटा आधपाव रखकर पिलानेसे बन्ध हुआ मासिकधर्म फिर होने लग जाताहै (७१) इसकी छालका काथ पिलाने से सिकता और इक्षु प्रमेह मिटताहै (७२) छालका काथ पिलानेसे शीतपित्त मिटताहै (७३) इसका शर्बत पिलानेसे तृषा मिटतीहै (७४) अत्यन्त तृषा को मिटानेके लिये इसके पत्तोंको मिट्टीमें मिला उसका गोला बना, उसको आगमें लालकर पानीमें बुझाकर उस पानीको पिलाना चाहिये (७५) नीम के २१ पत्ते और २१ साबित कालीमिरचों की महीन वस्त्रमें पोटली बांध उस को आधसेर पानीमें डाल, ओटा आधपाव रखकर दोनों समय ७ दिन तक पिलानेसे ज्वर छूटताहै (७६) जिस ज्वरमें दाह हो उसमें इसके कोमल पत्तों को नींबूके रसके साथ पीसके लेप करनेसे दाह मिटतीहै और ज्वर छूटजाताहै (७७) इसके पत्तोंके रसके फेनका लेप करनेसे दाह मिटतीहै (७८) पत्तों का केवल रस अथवा उसमें मधु मिलाके पिलानेसे पेटके कृमि मिटतेहैं (७९) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै (८०) इसके फलोंके तेलका मर्दन करनेसे पक्षाघात मिटताहै (८१) इसके पत्ते और लोद को पानीसे पीस, रस निकाल, गुनगुना कर नेत्रोंमें डालनेसे वातज, रक्तपित्तज, अभिष्पंद आदि कई प्रकार के नेत्र रोग मिटतेहैं (८२) इसके पुष्पोंको छाया में सुखा उनमें बराबर कलमीशोरा मिला, पीसके अंजन करनेसे धुंध और फूली कटके नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै (८३) इसके और बेरीके पत्तोंको पीसके शिरमें

लगा ४ घड़ी पीछे धो डालनेसे बाल लम्बे बढतेहैं । ८४ इसकी अंतर छाल को पीस अद्धोंष्ण गाढ़ा २ लेप करनेसे जोड़ोंकी पीडा मिटतीहैं (८५) इसके पत्तोंका खार लगानेसे कोढ, दाद और खुजली मिटतीहै (८६) इसके पत्तोंको दहीमें पीसके लगानेसे दाद मिटताहै (८७) इसके पत्तोंके कल्कमें घी मिलाके खानेसे शीतपित्त, उदर्द, रक्तपित्त, व्रण, विस्फोटक और कंडू आदि रोग मिटते हैं (८८) नीमके १ मासे तेलकी एक महीने तक नित्य नस्य लेनेसे और उन दिनों में केवल गायका दूध पीने से वली और पलित रोग मिटताहै (८९) नाकके रोगमें यह तेल सुंघाना चाहिये (९०) इसके रससे सिद्ध कियेहुए घीका सेवन करनेसे पद्मनीकंटकरोग मिटताहै (९१) इसके रससे वमन करानेसे पद्मनीकण्टकरोग मिटताहै (९२) इसके बीजों की मींगीके जल भांगरेके रसकी ७ या २१ भावना देके उनका तेल निकाल-का उसकी नित्य नस्य लेनेसे और उन दिनोंमें दूध चांवलोंकी खीरका भोजन करनेसे वली पलित रोग मिटताहै (९३) इसका रस घावमें डालनेसे उसके कीड़े मरजातेहै (९४) जिस गांवके चारों ओर नीमके वृक्ष बहुत होतेहैं उस गांवमें ज्वरादिक कई रोग बहुत कम हुआ करते हैं ।

—— o o ——

संख्या (३०३)

(सं०) महानिम्बः, महोद्रेकः, कार्मुकः, केशमुष्टिः

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बकाण	बकायन	बकान्य	बकाणी निंब	घोडानिम	धेक	पेद्दगानु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पिरुम्मरं	बेट्टद्बेउ			Melia Azedarach M sempervirens	The Persian Lilac. Bead tree.

स्थान--बकानके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं और अपने आप ऊगे हुएभी बहुत मिलते हैं ।

पहिचान—यह प्राय ४० फुट ऊंचा होताहै । इसके पेड़की गुलाई

६—७ फुटकी होतीहै यह सीधी और छोटी होतीहै इसके ऊपर डालियां बहुत फैली हुई होतीहैं और इसकी छाल चौथाई इंच मोटी होतीहै । इस वृक्षके छोटे भाग कुछ रुँएदार होतेहैं । इसकी सींकें ६ से १८ इंच लम्बी और उन पर आमने सामने ३ से ५ या ७ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं । इसके मधुगंधी पुष्प लगतेहैं इसके फलकी मध्य रेखा आधसे पौन इंच लम्बी होतीहै यह पके पीछे पीले रंगका होजाताहै इसमें ५ खाने और ५ बीज होतेहैं शीतकालमें इसके ३-४ महीने तक बिलकुल पत्ते नहीं रहतेहै फागुनसे वैशाख तक यह वृक्ष पत्तोंसे सघनघन होजाताहै उस समय यह सुन्दर दीखने लगजाताहै ।

फूलने फलने का समय—फागुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगते रहतेहैं वसंत ऋतुमें फल पकतेहैं जब तक इसके पत्ते नहीं आते तबतक फल लगे रहतेहैं। उनको बुलबुल आदि कोई जन्तु नहीं खातेहैं । इसके गोंद जैसा कुछ भूरे रंगका चेपदार गोंद लगताहै जो दीखनेमें कैथके गोंद जैसा होताहै इसके पत्तोंमेंसे एक प्रकारका नीला रंग निकाला जाताहै. इसके बीजोंमेंसे नहीं उड़नेवाला तेल निकाला जाताहै जो नीमके तेलसे मिलता हुआ होताहै और उसके गुणभी उससे मिलते हुए होतेहैं यह औषधिके प्रयोगमें बहुत कम आताहै।

प्रयोग—(१) बकायन-शीतल, रूक्ष, कड़वी, ग्राही, कषेली, और चरपरी है । इसकी जड़की छाल, फल, पुष्प और पत्ते उष्ण और रूक्षहैं (२) पेटमें जो तिल्ली और वृक्क आदि यंत्र हैं उनके बहावकी रुकावटको मिटानेके लिये इनका प्रयोग किया जाताहै (३) स्नायुसम्बन्धी मस्तक पीड़ाको मिटानेके लिये इसके पुष्प और पत्तोंका पुल्टिस बांधाजाताहै (४) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (५) उसमें मिश्री डालके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (६) उसमें जोखार डालके पिलानेसे शर्कराश्मरी मिटतीहै (७) अकलकरेका चूर्ण उस रसमें मिलाके पिलानेसे स्त्रियोंका मासिकधर्म शुद्ध होने लग जाताहै (८) इसके रसको गर्मकर लेप करनेसे सर्दीकी सूजन मिटतीहै (९) इसका रस पिलानेसे वे सब उपद्रव मिटतेहैं कि जिनसे सूजन पैदा होतीहै (१०) इसके पत्तोंका क्वाथ स्त्रियोंके आवेशके रोगमें पिलाया जाताहै (११) अतिसार मिटानेके लिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलातेहैं (१२) इस क्वाथमें सोंठ बुरकाके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै

(१३) इसके पत्ते और छालका क्राथ पिलानेसे कोढ और गंडमाला मिटती है, इन पर क्राथका लेप भी करना चाहिये (१४) इसके पुष्पोंका पुल्टिस बांधनेसे घावोंके कीडे मरतेहैं (१५) इसके पुष्पोंको पीसके लेप करनेसे फोड़े फुन्सी और त्वचाके खुजली आदि रोग मिटतेहैं (१६) इसके फलोंमें विष होताहै तब भी ये कोढ और गंडमालाकी चिकित्सामें काम आतेहैं (१७) इसके फलोंकी माला पहिरनेसे संक्रामक रोगोंका असर नहीं होताहै (१८) इसके बीजोंके चूर्णकी फकी लेनेसे गठिया मिटतीहै (१९) इसके बीजों को खुबाणीके साथ पीसके लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (२०) जब कोई एकाएक फैलनेवाला रोग पैदा होताहै उसको रोकनेके लिये दरवाजोंके और बरांडोंके इसके फलोंकी माला बांध देतेहैं (२१) बकाणके वृक्षमें से भी एक प्रकारका दूधिया रस निकलताहै (२२) तिल्लीके ऊपर इसके गोंदका लेप करना चाहिये (२३) इसकी जडका क्राथ पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (२४) इसका स्वाद कड़वा और उत्क्लेद करनेवालाहै (२५) इसकी १० तोले ताजी छालको सवा सेर पानीमें ओटा २॥ पाव रखकर उसमें से सवा २ तोले हर तीसरे घंटे बचेको पिलाना चाहिये कि जबतक उसकी आतों या आमाशय पर स्पष्ट प्रभाव दिखलाई न देने लगे, या ७ दिन तक सांझ सवेरे इतनी २ मात्रा पिलाके पीछे कोई विरेचन देना, इससे किसी २ के कृमिनाशकपनेका प्रभाव कम होताहै (२६) इसके सूखे फलोंको सिरकेमें पीसके पिलानेसे पिटाट और चुरणे (कद्दूदाने) आदि कई प्रकारके कीड़े पेटमेंसे निकल जातेहैं या मरजातेहैं (२७) इनको सिरकेमें पीस लेप करनेसे त्वचाके कृमि-सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (२८) इसके फलकी गिरको खोपरेके तेलमें पीसके शिरके उन क्षतोंपर लगातेहैं कि जो बहुत उष्ण जल, घृत या तेलसे उत्पन्न हुए हों (२९) इसकी छालका शर्बत या द्रवसार फाल्गुन और चैत्रमें नहीं बनाना चाहिये, क्योंकि इन दिनोंमें इसका दूधिया रस वृक्षके ऊपर चढ़ा करताहै इन महीनोंमें इसकी छालमें से निकाले हुए सार और जड़के क्राथसे या जड़के रससे बनाये हुए शर्बतमें मदकारी दोष रहतेहैं (३०) इसकी छाल, पत्ते और फलोंकी अधिक मात्रा लेनेसे एक प्रकारका विष चढ जाताहै जिस से मनुष्य अचेत होके मर जाताहै (३१) इसके ६ से ८ तक बीज खिलाने

खाली उबाक, चाईट और हैजे जैसे लक्षण होके मनुष्य कभी २ मर जाताहै(३२) गंजरोग मिटानेके लिये इसके बीजोंका कडवे तेलमें जलाके लेप करना चाहिये (३३) इसकी दो तोले छाल २ सेर पानीमें ओटा, तीन पाव पानी रख, उस में थोड़ा गुड़ मिलाकर तीन दिन तक पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (३४) इसकी छाल और सफेद कत्था, दोनों बराबर ले चूर्ण बनाके बुरकानेसे मुँहके छाले मिटतेहैं (३५) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटतीहै (३६ पेटपर एरंडका तेल चुपड़ इसके पत्तोंको गर्मकर पेटपर बांधनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (३७) बकानके पावभर पत्तोंमें २ तोले नमक मिला पीस झड़बेरकी बराबर गोलियां बनाके खिलानेसे बवासीर मिटताहै (३८) बकान की मींगी और सोंफको पीस उसमें बराबर बूरा मिला दो मासेकी फकी देनेसे बवासीर मिटताहै (३९) इसकी छालको छायामें सुखा कूट बत्ती बनाके योनीमें रखनेसे वह संकीर्ण होजातीहै (४०) इसके पत्तोंको पीस टिकिया बनाके नेत्रोंपर बांधनेसे पित्तसे पैदा हुआ अभिष्यंद मिटताहै (४१) इसकी एक तोले कोमल कोंपलोंको घोट छानके पिलानेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिरका जाना बन्ध होजाताहै (४२) इसके एकसे ७ तक बीज बढा २ के नित्य देनेसे नारू गल जाताहै (४३) इसके बीजोंको चांवलोंके पानीमें पीस घी मिलाके खानेसे बहुत समयका प्रमेह मिटताहै (४४) इसकी जड़की छाल का कल्क गृध्रसीको मिटाताहै (४५) इसके सारको पानीके साथ पीसके पिलानेसे गृध्रसी मिटतीहै ।

संख्या (२०४)

(सं०) सुरभि निम्बः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मीठानीम	मीठानीम	मिठोलिंबड़ो				

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Murraya koenigii Bergera k.	The curry leaf tree

स्थान—मीठेनीमके वृक्ष हिमालयमें रावीसे सिक्कम तक, आसाम, बंगाल, ब्रह्मा, दक्षिण हिन्दुस्थान और सीलोन आदि बहुत देशों होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष १२ से १५ फुट ऊंचा होताहै इसकी पेड़ छोटी और गुलाईमें १८ इंच तक होतीहै इस वृक्षके हरेक भागमें दुर्गंध आतीहै इसकी छाल पतली, कुछ बैंजनी और भूरेरंगकी होतीहै इसके एक सींक पर १० से २५ तक पत्तोंके जोड़े लगतेहैं इसके सफेद पुष्प लगतेहैं, इसका पका हुआ फल काले रंगका होताहै उसके चेपदार गूदेमें बीज और २ गढ़े रहतेहैं। फागुन और चैत्रमें इसके नवीन पत्ते निकलतेहैं।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं, जेठसे पोषतक इसके फल पकतेहैं, इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै इसके पत्तोंमें से भी अच्छी गंधवाला तेल निकलताहै ॥

प्रयोग—(१) इसकी जड़ छाल और पत्ते बलबर्द्धकहैं और पेटकी शूल मिटातेहैं (२) इसकी छाल उत्तेजकहै (३) इसकी छालको घिसके लेप करनेसे फफोले और खुजली आदि रोग मिटतेहैं (४) इसकी जड़को घिसके विषैल जीवोंके दंशपर लगातेहैं (५) आमातिसार मिटानेके लिये इसके हरे कच्चे पत्ते खिलाने चाहिये (६) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे छोटी २ फुन्सियां मिटतीहैं (७) इसके पत्तोंको पानीमें धोकर या मल छानके पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (८) इसके पत्ते थोड़े उत्तेजकहैं और पेटकी बादी मिटातेहै (९) ज्वर मिटानेवाली दूसरी कड़वी औषधियोंके साथ इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे ज्वर छूटजाताहै (१०) इसके और प्यैपर मिरचके पत्तोंकी चटनी बनाके खानेसे वमन बंध होतीहै (११) इसकी जड़के चूर्णको मधु और नागरबेलके पानके रसमें चटानेसे पित्त बिकार मिटतेहैं (१२) इसकी जड़के क्वाथपर सोंठ बुरकाके पिलानेसे पेटकी बादीकी पीड़ा मिटतीहै (१३) इसके गीले या सूखे पत्ते कढ़ीमें छौंक देनेके काममें आतेहैं।

संख्य (३०५)

(सं०) निम्बूकं, वह्निबीजं दीप्तः दंताघातः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कागदीनींबू	नींबू	कागदीलींबु	निंबू, लिंबू	कागजी लेबु	निंबू	निम्ब पण्डु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
यलिमिच्च पळ	निम्बे हण्णु	लीमू	लीमू	Citrus Medica Var S acida C. acida.	The sour lime.

स्थान—नींबूके वृक्ष हिंदुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

पहिचान—नींबूके पुष्प छोटे होतेहैं। इसका छिलका पतला या मोटा होताहै। जिसके पतला छिलका होताहै उसको कागज़ी नींबू कहतेहैं। और जिसका छिलका मोटा होताहै उसको "गूदडया नींबू" कहतेहैं। नींबूकी केसर चन्दनियां रङ्गकी होतीहै। इसका रस बहुत खट्टा होताहै।

प्रयोग—(१) नींबू—खट्टा, तीक्ष्ण, रोचक, दीपन, पाचक और अग्नि बर्द्धकहै (२) नींबूकी सिकंजी पिलानेसे पित्तकी वमन और दाह मिटतीहै (३) दुर्गंधसे पैदा होने वाले उपद्रवोंको रोकनेके लिये नींबूका सूंघना बहुत अच्छाहै (४) मस्तकपर इसके रसका मर्दन करनेसे पागलपन मिटताहै (५) इसकी गिरको धूपमें सुखाके रोगीके तकियेके नीचे रखनेसे उसके शान्ति होजातीहै (६) स्त्रियोंके आवेशकेरोगसे बढ़ेहुए हृदयके फड़केको कम करनेके लिये नींबूका सवा तोला रस पिलाना चाहिये (७) मच्छर और डांस आदि जीवोंके काटनेसे जो दाह, खुजली और दाफड़ हो जातेहैं उनको मिटानेके लिये नींबूका ताजारस पिलाना चाहिये, (८) नींबूका शर्बत या रस पिलानेसे पित्तकी वमन और तृषा मिटतीहै (९) नींबूकी दो फांकें कर एक २ फांकको गर्म तवेपर तपा तपा के कनपटियोंपर एक घड़ीभर सेक करनेसे गर्मीकी मस्तक पीड़ा मिटतीहै (१०) नींबूके दो भागकर एक भागमें पीसीहुई कालीमिरच और सैंधानमक भरे और दूसरे भागमें मिश्री भरे फिर दोनोंको गर्म करके चूंसनेसे भादवे और आसोजमें आनेवाला आर्त्तवज्वर जिसमें पित्तके वमन आतेहों छूट जाताहै (११) नींबूके रसको लोहेकी खरलमें लोहेके दस्तेसे घोटते २ जब काला पड़जावे तब नेत्रांजन या

नेत्रके आसपासें पतला २ लेप करनेसे नैत्र पीड़ा मिटतीहै (१२) नींबूका शर्वत पिलानेसे पित्तज्वर छूटताहै (१३) इसके रसमें आंवलोंको पीसकर बालोंमें मलनेसे उनका गिरना बन्ध हो जाताहै और लम्बे बढ जातेहैं (१४) प्रतिदिन दादको खुजलकर उसपर इसका रस लगानेसे दाद मिटजाताहै (१५) इसका रस गर्मीकी मंद्राग्निको मिटाताहै (१६) इसका रस नेत्रमें लगानेसे कामला मिटताहै (१७) इसके शर्वतमें दुगुना पानी और लौंग मिरच डालके पीनेसे अरुचि मिटतीहै (१८) इसके रसमें हरे काचकी चूड़ी को महीन पीसके अंजन करनेसे फूली और जाला कटताहै (१९) इसका रस विच्छूके दंशपर टपकानेसे उसका विष उतरजाताहै (२०) इसका शर्वत रुधिरकी दाह और विदग्ध दोषोंको मिटाताहै (२१) इसके ३ छटांक रसका सेर भर बूरेमें शर्वतबनाके वायुकी वमन वध करनेके लिये पिलाना चाहिये (२२) इसके रसमें बूरा मिलाके मस्तक पर लेप कर दो प्रहर पीछे धोडालनेसे खोरा मिटताहै (२३) इसका और प्याजका पोने दो तोला रस मिलाके १४ दिन तक पिलानेसे तिल्ली मिटताहै परन्तु उनदिनोंमें दाल चांवल आदिका द्रव भोजन करना चाहिये (२४) इसके बीजोंकी ९ मासे मींगी और ८ मासे सैंधनमककी फकी देनेसे विच्छूका विष उतरताहै (२५) नीबूके कईतरहके अचार बनाये जातेहैं और कईतरहके अचारोंमें इनके रसकी खटाई डालतेहैं।



संख्या (३०६)

(सं०) करुणः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलपीड़ा आतेहैं।
करसो	कन्ना		एडलिंबू	करुना लेवुरगाछ		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	
				Citrus Medica. Var 2 Lemonum C Aurantium Var Limonum	The lemon.

स्थान—कन्ना हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोया जाताहै कन्नेके छिलके को दबानेसे या भभके में अर्क खींचनेसे उसमें से जो एक प्रकारका तेल निकलताहै उसको Essence of lemon एसेन्स आफ लीमन कहतेहैं ॥

प्रयोग—(१) यह उष्णहै कफ, वायु, आम और मेदके रोगोंको मिटाताहै कन्नेके तीन भाग विशेष करके काममें आतेहैं, एक तो छालका बाहिर का भाग, दूसरा छालका तेल और तीसरा पके हुए फलोंका रस (२) इस की छाल पेटकी शूल और वादीको मिटातीहै (३) इसके शर्बतको जलमें मिलाके पीनेसे शीतलता हो जातीहै (४) निद्रालानेवाले तीक्ष्ण विषोंको उतारनेके लिये इसका रस पिलातेहैं (५) विषैले जीवोंके काटनेसे जो विष चढ जाताहै उसको उतारनेके लिये इसका अर्क पिलातेहैं (६) इसके रसमें कुनेन बुरकाके पिलानेसे पित्तज्वर और बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (७) सायंकालको इसका ताजा रस पिलानेसे वह मंदाग्नि मिटतीहै कि जिस में भोजन करनेके पीछे उल्टी होजाया करतीहै (८) इसके रसमें जोखार और मधु मिलाके पिलानेसे छातीकी पीड़ा, गृध्रसी, कटिशूल और कूले के जोड़की पीड़ा मिटतीहै (९) २॥ तोले नींबू के तिजाबमें १६ गुना पानी मिला उसमें कुछ बूंदें कन्नेके तेलकी डालके इसके रसकी ठौर काममें ला सकतेहैं (१०) कन्नेका रस जल्दी विगड़ जाताहै इसलिये इसके रसको तुरन्त काममें लेलेना चाहिये, इसको बहुत दिनों तक नहीं विगड़ने देनेकी सबसे उत्तम रीति यहहै कि कन्नेका रस निचोकर उसको कुछ देर तक पड़ा रहने देवें जब उसका जमजानेवाला पदार्थ अलग होजाय तब उसको कागज़में छान के काचकी शीशीमें नाली तक भर देवे और उसके ऊपर बादामका या दूसरा मीठा तेल तिरा देवे, अथवा बोतलोंको ओटते हुए पानीमें १५ मिनट
फांके
सेक कर्के फिर उनके काक लगाया जावे तो और भी उत्तम है, अथवा हल्के
भागमें पीर का पानी उड़ाके रसको गाढा कर लेवे, या इसका ऐसी सर्दीमें
भरे फिर दा से इसके पानी का भाग जम जावे और केवल अर्क रह जावे,
तैत्रज्वर पाहले से भी अधिक बलवान् हो जाताहै (११) इसकी जड़की छालका क्वाथ पिलाने से ज्वर छूटताहै (१२) इसके बीजोंकी फकी देनेसे

कीड़े मरतेहैं (१३) इसका रस और बारूद के लगानेसे खुजली मिटतीहै (१४) कन्ने का अचार बनाके खिलाने से तिल्ली कटती है ।

संख्या (३०७)

चकोत्रा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
चकोतरा	चकोत्रा		पपनस		चकोतरा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Citrus decumana.	Paradise apple. 2 The shaddock Pumelo Pompelmos The forbidden fruit

स्थान–ये बंगाल दक्षिण हिन्दुस्थान और संयुक्त प्रदेश आदि देशोमें होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ३०-४० फुट की होतीहै । इसके बड़े पत्ते ६ से ६ इंच तक लंबे होतेहैं इसके बड़े और सफेद पुष्प लगतेहैं । चकोत्रा बहुत बड़ा और गोल होताहै, कभी २ पांच सेरसे दश सेर तक तोलमे होजाताहै इसका छिलका चिकना और थोड़े पीले रंगका होताहै, चकोत्रे दो प्रकार के होतेहैं एककी गिर कुछ सफेद और दूसरेकी कुछ लाल होतीहै । इनकी गिर खट्टी होतीहै देशकाल और पृथ्वीके कारणसे चकोत्रे छोटे बड़े भी होजातेहैं इस वृक्षके बारह महीने ही फल लगते रहतेहैं, पुष्प, कच्चे और पक्के फल, एक साथ लगे रहते हैं ॥

प्रयोग—(१) चकोत्रा शरीरको पुष्ट करने वाला और शीतलहै (२) इसकी छालमें शकर, खट्टा तिजाब और बहुतसा सुगंधित तेल होताहै इसके पत्ते अपस्मार, विसूचिका और सूखी खांसीमें बहुत उपकारीहैं ।

संख्या (३०८)

(सं०) श्वेतनिर्गुण्डी, सिन्दुवारः, सुरसः, सिन्धुकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
सभालू	संभालू	नगड्य नगोड	निर्गुडी	निगि दा-गाछ	सम्हालू	तेल्लवाविली

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वल्लेनोचिल्ल	विळिरुक्कि		पञ्जनकिश्त	Justicia Gendarussa. G Volgaris.	

स्थान—सम्भालूके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं ।

पहिचान—सम्भालू नीले और पिलास लिये हुए नीले पुष्पोंके भेदसे दो प्रकारकी होतीहै । यह रंगतके काममें आतीहै ॥

प्रयोग (१) सफेद निर्गुंडी-कड़वी, उष्ण, रूक्ष, चरपरी, कपेली और अग्नि-वर्द्धकहै (२) इसकी जड़ बलवर्द्धक, ज्वर नाशक और सूखी खांसीको मिटातीहै (३) इसके पत्ते सुगंधयुक्त, चरपरे, बलवर्द्धक और कीड़े मारनेवालेहैं (४) वादी मिटानेवाली कई औषधियोंके इसके पत्तोंके रसकी भावना देके गोलियां बनातेहैं (५) इसके पत्तोंके काथपर पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे प्रतिश्यायका ज्वर, मस्तकका भारीपन और कम सुनना मिटताहै (६) मस्तकपीडा मिटानेके लिये इसके पत्तोंसे तकिया भरके मस्तकके नीचे रखना चाहिये (७) इसके पत्तोंके रसका घावपर लेप करनेसे उसमेंसे सड़ताहुआ पीप निकलना बन्द होजाताहै और कीड़े मरजातेहैं (८) इसके पत्तोंके रसका तेल बनाकर लगानेसे हड्डीके जख्म और गंडमालाके फोड़े मिटतेहैं (९) यह पीड़ा मिटानेवाली, मूत्रवर्द्धक और मासिकधर्मको शुद्ध करनेवाली है (१०) इसके वफारेसे या इसके ओटाये हुए जलमें विठा रखनेसे कमरके नीचेके भागकी वादीकी पीडा मिटतीहै (११) फिर रुधिर आदि कहीं एकत्र होगये हों उनको बिखरनेके लिये इसके पत्तोंको सेक बांधने चाहिये (१२) तेज गाठयासे जोड़ों में पित्तशोथ होगया हो उस भागमें सेकके लिये इसके पत्तोंको ओटाके जबतक सूजन न मिटे तबतक दिन भरे फिर दोर बांधना चाहिये (१३) स्त्रियोंके बालक होने के पीछे तीव्रज्वर पहिलेतो इसके पत्तोंके काथसे स्नान कराना चाहिये (१४) इसके पत्तोंके चूर्णकी फकी जलके साथ देनेसे वारी से आनेवाला ज्वर

छूटताहै (१५) इसके फल के चूर्णकी फकी देनेसे स्नायु और मस्तक सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (१६) जिस स्त्रीको कष्टसे मासिकधर्म होताहो या बहुत कम होताहो उसको इसके बीजोंके चूर्णकी फकी देनेसे मासिकधर्म ठीक होने लगजाताहै (१७) इसकी जड़ कड़वी और ज्वरमें हितकारीहै (१८) इसके पत्तोंके रसका लेप करनेसे त्वचाके रोग और सूजन मिटतीहै (१९) इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान करनेसे मस्तकपीडा और प्रतिश्याय मिटताहै (२०) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (२१) इसके पत्ते, लहसन, चांवल और गुड इन सबको पीस गोली बनाके देनेसे गठिया मिटतीहै (२२) इसके पत्तोंको औटाके बफारा देनेसे ज्वर, प्रतिश्याय और गठियाके रोग मिटतेहैं (२३) इसके सूखे फलोंकी फकी देनेसे कीड़े मरतेहैं (२४) इसके पत्तोंको आगपर तपाके बांधनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (२५) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे ललाटकी पीड़ा मिटतीहै (२६) इसके पत्तोंको कूट टिकिया बनाके कनपटीपर बांधनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२७) इसकी जड और पत्ते पसीना लानेवाले, मूत्र और बलबढाने वालेहैं (२८) इसके पंचांगके रससे तेल बनाके लगानेसे दुष्ट व्रण और नाड़ीव्रण मिटतेहैं (२९) इसके पत्तोंका ताजा रस कानमें डालनेसे कान के कीड़े मरजातेहैं (३०) इसकी जड़ बालकके गलेमें लटकानेसे दांत सुगमतासे निकल आतेहैं (३१) इसके पत्तोंके रससे तेल बना गुनगुना २ मल कर ऊपर इसीके पान बांधनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (३२) इसके बीजों को दांत निकलनेके समय बालकके गलेमें लटकानेसे दांत जल्दी निकलतेहैं (३३) इसके पत्तोंको गर्म करके बांधनेसे बद बिखर जातीहै (३४) इसके क्वाथमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे कफज्वर छूटताहै (३५) इसकी जड़को पानीमें घिसके नस्य देनेसे गंडमाला मिटतीहै (३६) इसका रस लगानेसे कीड़े मरजातेहैं (३७) पहिले थोडा २ घी तीन दिन तक पिलाके फिर इसका स्वरस पिलानेसे नारू मिटताहै (३८) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे उरुस्तम्भ और गृध्रसी मिटतीहै (३९) इसका सेक और लेप करनेसे वातव्याधि मिटतीहै (४०) इसको और मूसली कंदको चिगलनेसे जीभकी पीड़ा मिटतीहै (४१) निर्गुंडीको पीस कर नाभि, बस्ति और योनी पर लेप करनेसे सुखसे प्रसव हो जाताहै ।

संख्या (३०६)

(सं०) नीलानिर्गुंडी, नीलसिन्दुकः, नीलपुष्पी, नीलिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
निर्गुंडी नेगड़	नीलसम्हालू	नीळीनगडय	काळीनिर्गुडी	नीलानिशिन्दा	संभालू	नल्लवाविलि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
करप्पुनाचि	करि-लाकि	असलक अगयद	पंजनकिश्त निगयाह	Vitex Negundo V. arborea	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बंगालसे सीलोन तक सब प्रान्तोंमें सब ठौर बाग और डूगरोंमें होतीहै।

पहिचान—इसका झाड़ २ से ४ फुट ऊंचा होताहै। इसका पेड़ सदैव हरा रहताहै, इसके पत्ते तूरके पत्तों जैसे होतेहैं, एक एक डंठलपर पांच २ पत्ते होतेहैं, जो लम्बे, ऊपरसे नीले और नीचेसे सफेद होतेहैं। इसके पत्ते और कोमल कोंपलोंको मलनेसे उनमें से तीव्रगंध आने लगतीहै, यह दो प्रकार की होतीहै एक सफेदपुष्पोंकी और दूसरी नीले पुष्पोंकी फागुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) नीली निर्गुंडी–तिक्त, रूक्ष, उष्ण, कषेली, चरपरी और सूक्ष्महै (२) इसके पत्ते और कोमल कोंपलोंका काथ पिलानेसे पुरानी गठिया मिटतीहै (३) इसके पंचांगके काथसे ज्वरका आना बन्ध होजाताहै (४) इसके पत्तोंसे तेल बनाके लगानेसे वे फुन्सियां मिटतीहैं कि जो शरीरमें किसी किसी ठौर बहुतसी पास २ हो जाया करतीहैं और बहुधा आपसमें मिल भी जातीहैं (५) पत्तोंका काथ पिलानेसे स्नायु सम्बन्धी मस्तकपीड़ा, पक्षाघात और अर्दित रोग मिटताहै (६) ताजे पत्तोंका स्वरस कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (७) मस्तकके बायें भागमें पीड़ा होवे तो दहनी नकतोड़ीमें और दहने भागमें पीड़ा होवे तो बांई नकतोड़ीमें इसके स्वरसकी पांच २ बूंदे पांच २ घंटेके अंतरसे चार पांच वेर डालनी चाहिये (८) इसकी जड़ कमरमें बांधनेसे सब प्रकारके ज्वर छूटतेहैं (९) एक तोला निर्गुण्डी गायके मूत्रमें

पीसके पीनेसे श्वास, कास और शीतांगवायु मिटतीहै (१०) एक तोला निगुंडी गौघृतके साथ खानेसे कफ, पित्त और वायु मिटतीहै (११) १४ दिन तक मीठे तलके साथ इसका सेवन करनेसे ८४ प्रकारकी वायु मिटतीहै (१२) इसके पत्त पीसके दंशपर लगानेसे कुत्तेका विष उतरताहै ।

संख्या (३१०)

(सं०) नीलमणिः, सौरिरत्नं, नीलाश्मा, सुनीलकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नीलम	नीलमणी	निलम कालु नग	नीलमाणि	नीलवर्णमनि	नीलम	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Saffirus.	Sapphire

नीलमके गुण (१)–यह कड़वी और उष्ण होतीहै श्वास, कास, त्रिदोष, विषमज्वर और अर्शको मिटातीहै । वीर्य्य और अग्निको बढातीहै ।

संख्या (३११)

(सं०) नीली, काला, क्लीतकिका, रञ्जनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नील	नील	गळी	लघुनीली	नीलगाछ	नील	नीलिचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नीली	नीलीगिड़			Indigofera tinctoria.	The indigo plant.

स्थान—यह पंजाबके दक्षिण और पूर्वके भागमें, बंगाल, सिन्ध, दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें बहुत बोई जातीहै ।

पहिचान—इसका गुल्म छोटा होताहै इसकी ऊँचाई प्रायः दो ढाई फुट होतीहै इसकी ३, ४ इंच लम्बी, सीधी, सींकपर ४–६ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं जो सूखनेपर काले पड़जातेहैं। कुछ नीले गुलाबी रंगके २०–७० पुष्पोंकी मंजरियां लगतीहैं। एक डेढ़ इंच लम्बी, मोटी, कुछ गोल और सीधी फलियां लगतीहैं। इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) नील-रेचक, कड़वी, उष्ण, चरपरी, और मारकहै। (२) इसका सत अपस्मार और स्नायु सम्बन्धी उपद्रवमें दिया जाताहै (३) खांसीमें इसको मधुके साथ चटातेहैं (४) यह घावोंके मरहममें मिलाया जाताहै (५) मस्तिष्कके पुराने रोगोंमें इसका प्रयोग किया जाताहै (६) धातुओंके विषको उतारनेके लिये यह एक मुख्य उपायहै (७) नीलके पत्तोंका लेप करनेसे बाल बढ़तेहैं (८) पेटके ऊपर इसका लेप करनेसे अफारा और मूत्राघात मिटताहै (९) अग्निसे या और किसी प्रकारसे जलेहुएकी दाह मिटानेके लिये इसका लेप करतेहैं (१०) संखियेका विष उतारनेके लिये इसकी जड़का काथ पिलातेहैं (११) इसके ताजे पत्तोंके रससे तेल बनाकर लगानेसे अर्श मिटताहै (१२) इसकी जड़को कानमें बांधनेसे सब प्रकारकी ज्वर छूटजातीहै।

संख्या (३१२)

(सं०) पटोलः अमृतफलं, पाण्डुफलः, बीजगर्भः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पटोल	परवल	कड़वापटोल	कडू पड़वल	पटोल	परवल	चेति पोटली

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कोम्बुपुडल	कैपडल			Trichosanthes cucumerina T Incisiosa	

स्थान—परवलकी बेलें हिंदुस्थान और सीलोनमें कई ठौर होतीहैं।

प्रयोग—(१) परवल-कड़वा, चरपरा, उष्ण, भेदक, पाचक, अग्निवर्द्धक ज्वरनाशक और सारकहै (२) इसकी कोमल छोटी डालियें और सूखे हुए फलके छिलके बहुत कड़वे और सारक होतेहैं (३) ये आमा

शय की पीड़ा मिटातेहैं। इनका पांच पांच तोले काथ दिनमें दोवेर देना चाहिये (४) आमाशयके उपद्रवोंको मिटानेकेलिये इसके बीजोंका प्रयोग कियाजाताहै (५) इसके बीजोंके चूर्णकी फक्की देनेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं (६) चिरायतेके अर्कके साथ इसके बीजोंकी फक्की देनेसे ज्वर छूट जाताहै (७) इसकी कोमल टहनियां और फलके सूखे छिलकेको बूरेके साथ ओटाके पिलानेसे पाचन शक्ति बढ़तीहै (८) इसके पत्तोंका अर्क वामकहै (९) इसकी जड़ रेचकहै (१०) इसकी डंडीका काथ पिलानेसे सूखी खांसी तर होजातीहै (११) इसके पंचांग, सोंठ और चिरायतेको ओटा, मधु मिलाके पिलानेसे ज्वर छूटताहै (१२) यह हृदयका बल बढ़ाताहै (१३) इसके पत्तोंको ओटा मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होताहै (१४) यकृत् या सब शरीरपर इसके पत्तोंके अर्कका मर्दन करनेसे निरन्तर रहनेवाला ज्वर छूट जाताहै (१५) इसके पत्ते और फलके रसका मर्दन करनेसे यकृत्में जमा हुआ रुधिर बिखर जाताहै (१६) इनके रसका ललाट पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटतीहै (१७) इसके पके हुए फलोंका अचार बनाया जाताहै। वह बहुत कड़वा होताहै इसलिये उसको अधिक नैरोग्यकारी मानतेहैं (१८) इसका स्वरस लगानेसे इन्द्रलुप्त मिटताहै (१९ पटोल नीमकी छाल और मैनफलका काथ बना उसमें मधु और सैंधानमक मिलाके पिलानेसे वमन होके अम्लपित्त मिटताहै (२०) इसके पत्तोंका यूष बनाके पिलानेसे पित्त और कफज्वर छूटताहै (२१) इसके फलोके यूषसे वातके रोग मिटतेहैं (२२) मलहटीके साथ इसका काथ बनाके गुदाको धोनेसे अतिसार मिटताहै (२३) इसके कल्कसे इसीकी बराबर घी बनाके सेवन करनेसे कफपित्तकी वमन बन्द होतीहै (२४) पटोल और सोंठका कल्क बना उसमें बराबर घी मिला, घी सिद्ध करके सेवन करनेसे कफ और पित्तकी वमन मिटतीहै (२५) पटोल और धनियेंका यूष बनाके पिलानेसे पित्त,कफज्वर छूटताहै (२६) पटोल और अदरकका काथ पिलानेसे पित्त और कफज्वर छूटताहै।

संख्या (३१३)

(सं०) पटोलिका, स्वादुपटोली, ज्योत्स्ना, जाली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
परवल	मीठापटोल	मीठापटोळ	पड़वली	स्वादुपटोल	पटोली	कोम्मुपोट्ल

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कोम्बुपुट्ल	पड़वल			Trichosanthes dioica.	

स्थान—परवलकी वेल उत्तर हिन्दुस्थानमें पंजाबसे आसाम और पूर्वी बंगाल तक होतीहै। इसके कच्चे फलका रंग हरा और पकनेपर पीला या नारंजी हो जाताहै।

प्रयोग—(१) मीठापरवल–मधुर, रोचक, ज्वरनाशक, पौष्टिक, दीपन और पाचनहै (२) इसके पत्ते और धनियेंका क्वाथ पिलानेसे पित्तज्वर छूटताहै। यह क्वाथ सारकहै (३) इसकी जड़ बहुत रेचकहै (४) इसकी जड़का क्वाथ पिलानेसे जलंधर मिटताहै (५) इसके अंकुरोंका क्वाथ बलवर्द्धक और ज्वरनाशकहै (६) इसके कच्चे फलोंका ताजा रस ठंढा और सारकहै (७) रुधिरशुद्ध करनेवाली औषधियोंके साथ इसके कच्चे फलका ताजा रस दिया जाताहै (८) जिस जगहके बाल उड़गये हों वहां इसके पत्तोंका ताजा रस लगाना चाहिये (९) इसकी जड़के कंदका भाग तीव्र विरेचकहै (१०) इसकी बेल कड़वी और निरोगतादायकहै (११) इसके फलका सेवन करनेसे कोढ़ मिटताहै (१२) इसके पत्तोंको आटेमें लपेट घी में तलकर खानेसे बल बढ़ताहै (१३) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये इसके फलोंका शाक और अचार खिलाना चाहिये। इसके फलोंका शाक और अचार बहुत अच्छा बनताहै।

—— o°o ——

संख्या (३१४)

(सं०) पत्तंगं, कुचन्दनं, पट्टरंजनं, पत्रांगम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पतग	पतग	पतंग	पतग	वकम्‌काष्ट	वकग	सेपमानु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शम्गर	पतग			Caesalpinia sappan	Sappan or sampoon wood

स्थान—पतङ्ग के वृक्ष मध्य हिन्दुस्थानमें बोये जातेहैं। और पूर्वी और पश्चिमी मायद्वीपमें मिलतेहैं।

पहिचान—इसकी लकड़ी, फलियों और छालमें से लाल रङ्ग निकाला जाताहै। इसकी जड़मे से पीला रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग-(१) इसकी लकड़ीका क्वाथ पिलानेसे मासिकधर्म शुद्ध होने लगताहै (२) पेटके भीतरकी सूजनको मिटानेके लिये इसका क्वाथ पिलातेहैं और घिसके ऊपर भी लेपकरतेहैं (३) इसका हिम या फांट पिलाने से रुधिर शुद्ध होताहै (४) अतिसार और आमातिसार मिटाने के लिये इसके क्वाथ पर अतीसका चूर्ण बुरकाके पिलातेहैं (५) शक्कर और मधुके साथ इसका लेपकरनेसे पित्तका मुखरोग मिटताहै (६) यह तिक्त, शीतल, रूक्ष, अम्ल, मधुर और कड़वा होताहै (७) वातापित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ्र, कफकी पथरी, रुधिरविकार, भूतबाधा और व्रण को मिटाताहै (८) शरीरके रंगको सुधारताहै। इसमें उत्तम सुगंध होतीहै।

संख्या (३१५)

(सं०) पद्मकं, केदारजं, पद्मकाष्ठं, शीतवीर्यं।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पद्माक(ख)	पद्माक ख)	पद्मकाष्ट	पद्मकाष्ट	पद्मकाष्ठ	पद्माख	पद्मपुचेववा

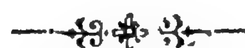
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	पद्मक			Prunus Puddum P cerasoides	The wild cherry of the Himalaya.

स्थान—पद्माकके वृक्ष हिमालयमें गढवालसे सिकम और भूटान तक होतेहैं।

पहिचान—जल, वायु और पृथ्वीके कारणसे यह वृक्ष कहीं साधारण उंचाई का और कहीं बड़ा होताहै, वसंतऋतुमें इसके पत्ते गिर जातेहैं, इस वृक्षके एक प्रकार का गोंद लगताहै, इसके बीजोंमें से कड़वे बादाम जैसा तेल निकलताहै।

फूलने फलनेका समय—आश्विन और कार्तिकमें इसके पुष्प लगते हैं और वसंतऋतुमें इसके छोटे फल लगतेहैं जिनमें पीली, थोड़ी नारंगी या कुछ लाल गिर निकलतीहै।

प्रयोग—(१) पथरी और मूत्रके साथ जो चमकतीहुई रेत निकला करतीहै उसको मिटानेकेलिये इसकी गिर काममें लाई जातीहै (२) पद्माख शीतल, कपेला, कड़वा, पचनेमें हल्का और वातलहै, विसर्प, दाह, विस्फोटक कुष्ठ, कफ, रक्तपित, वमन, अरुचि, तृषा, व्रण, मोह और भ्रमको मिटाताहै और गर्भ स्थापन करताहै।



संख्या (३१६)

(सं०) पनसः, कंटकिफलः, अपुष्पफलदः, स्थूलकंटफलः।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कटहल	कटहर	फणस	फणस	काँटाल	कटहल	पनसचट्टु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
पेलाप्पळं	हलसुमर			Artocarpus integrifolia.	The jack fruit tree.

स्थान—कटहरके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं, इसके वृक्ष सह्याद्रिके जंगलोंमें बोयेहुए और बिन बोयेहुए दोनोंही प्रकारके मिलतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ४०-५० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ छोटी खड़ी और मोटी होतीहै, इसकी छाल बहुत मोटी और उसपर गहरी दरारें होतीहैं। इसकी नई डालियोंके कड़े रूए होतेहैं, इसके पत्ते ऊपरसे चिकने और नीचेसे खरदरे होतेहैं, इसका फल बड़ा, कुछ लम्बा और गिरदार होताहै,

पहिचान—इसका क्षुप दो प्रकारका होताहै एकके नीले पुष्प और दूसरे के लाल पुष्प लगतेहैं । लाल पुष्पके पित्तपापड़ेमें गुण अधिक होताहै ।

प्रयोग—(१) पित्तज्वरको मिटानेकेलिये पित्तपापड़ेका काथ पिलाना चाहिये (२) ज्वर मिटानेवाले कई काथोंकी औषधियोंमें पित्तपापड़ा मिलाया जाताहै (३) कामलारोगमें पित्तपापड़ेका फांट पिलातेहैं (४) इसके पत्तोंके रसका लेप करनेसे हथेली और पगतलीकी दाह मिटतीहै (५) इनके रसमें दूध और शक्कर मिलाके पिलानेसे पाकस्थलीकी दाह मिटतीहै (६) दूषित जल वायु पृथ्वी आदिके कारणसे जो ज्वर होताहै उसको मिटानेके लिये पित्तपापड़ा, कटेली और गिलोयका काथ पिलाना चाहिये (७) पित्तपापड़े और वायविडंगको ओटाके पिलानेसे कीड़े मरतेहैं (८) धनिये और पित्तपापड़ेका काथ पिलानेसे जीर्णज्वर छूटताहै (९) इसका अवलेह बनाके चटानेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (१०) इसका अर्क पिलानेसे खुजली मिटतीहै । (११) इसका काथ पिलानेसे पित्तकी वमन बन्ध होतीहै (१२) इसके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (१३) पित्तपापड़ा शीतल, तिक्त, वातल, लघु और पाकमें चरपरा है पित्त, कफ, रक्तदाह, अरुचि ज्वर, मद, और ग्लानिको मिटाताहै ।

संख्या (३१९)

(सं०) पलाण्डु, नीचभोज्य, सुकन्दकः, यवनेष्टः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कादा	प्याज़	डुंगळी	कादा	पेँयाज	गडा	उल्लिगड्ड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वेंगायं	ईरुल्लि	बसल	प्याज	Allium Cepa.	Onion

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सबठौर बोयाजाताहै परन्तु बड़े शहरोंके आस पास बहुत बोया जाताहै । यह सफेद और लालके भेदसे दो प्रकारका होताहै ।

प्रयोग—(१) यह शीतल, स्निग्ध, अग्निदीपक, पचनेमें भारी, चरपरा, मधुर, कुछ उष्ण, पित्तल, वृष्य और बलकारक है। विषैलकीड़के दंश पर इसका अर्क लगानेसे खुजली और दाह मिटतीहै (२) कांदके बीचका भाग उष्ण करके कानमें रखनेसे कानकी पीड़ा मिटजातीहै (३) ताजे कांदेका अर्क निकाल उष्णकर कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (४) कांदे को ओटानेसे उड़नेवाला चरपरा तेल निकलताहै (५) बिना समयमें रुका-हुआ मासिकधर्म कच्चा कांदा खानेसे फिर होने लगजाताहै (६) इसकी तेज गंधसे सर्प आदि विषैल जन्तु पास नहीं आतेहैं (७) कांदेको कूटके सुंघानेसे अचेतपन और स्त्रियोंके आवेशके रोगका वेग मिटाताहै (८) कांदेको पीसके बिच्छूके दंश पर लेप करनेसे विष उतरताहै (९) त्वचा सम्बन्धी रोगों पर इसका लेप करनेसे दाह और खुजली मिटतीहै (१०) क्षयरोगमें कफ घटाने के लिये इसका रस पिलातेहैं (११) इसको सिरकेके साथ पीसके चटानेसे गलेका रोग मिटताहै (१२) इसका क्वाथ पिलानेसे कफ मिटताहै (१३) कांदेका रस और राईका तेल बराबर मिलाकर मर्दन करनेसे गठियाकी पीड़ा मिटतीहै (१४) कांदेसे पाचन शक्ति बढ़तीहै (१५) कांदेके रसमें घी मिलाके पिलानेसे पुरुषार्थ बढताहै (१६) यह दूसरे पदार्थकी दुर्गंधको मि-टाताहै (१७) यह हवाके उपद्रवोंको मिटाताहै (१८) विसूचिका या ऐसे शीघ्र फैलनेवाले रोगोंके उपद्रवोंसे बचनेके लिये कांदेको पासमें रखना चा-हिये और घरके दर्वाज़ेमें लटका रखना चाहिये (१९) मूत्रवृद्धि करनेके लिये कच्चे कांदेका रस पिलाना चाहिये (२०) इसको सिरकेके साथ पका के खिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (२१) बावले कुत्तेके काटनेसे जो घाव हो-जाताहै उस घाव पर ताजे कांदेका अर्क लगाना चाहिये और उसको कांदेका रस पिलानेसे जल्दी आराम होनेकी सूरत होजातीहै (२२) कांदे खानेवालेके शीतादरोग नहीं होताहै (२३) इसके आधपाव से पावभर रसमें ५ तोले शक्कर मिलाके दिनमें एक बेर पिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (२४) मझोली मोटाईका एक कांदा दो तीन कालीमिरचके साथ दिनमें दो बेर खानेसे दुष्ट वायु आदिसे पैदा हुआ ज्वर छूटजाताहै (२५) कांदेका क्वाथ पिलानेसे

मूत्रकी दाह और पीड़ा मिटतीहै (२६) कांदेको काट उसके कटेहुए भागपर झुभाया हुआ चूना लगाकर विच्छूके दंशपर रगड़ने से विष तुरन्त उतरताहै (२७) कांदेके अर्कका लेप करनेसे विच्छूका विप उतरताहै (२८) कच्चा कांदा खानेसे नींद आतीहै (२६) निर्बलतासे अचेत होनेकी दशामें चैतन्य करनेके लिये कांदेका रस नाककी नथनीके वार २ लगाना चाहिये (३०) कांदे को किसी वरतनमें भरकर फिर उसका मुंह ऐसा मजवूत वन्द करे कि उसमें हवा न आनेजाने पावे, फिर उस वरतनको जहां गाय बंधती बैठतीहो वहां चार महीनेतक गडा रखकर पीछे उसको निकाल उसमेंसे वलाग्निके अनुसार एक कांदा खिलानेसे पुरुषार्थ वहुत वढ़ताहै (३१) एक कांदेमें आधरती अफीम रख उसको भूभलमें सेककर खिलानेसे आमातिसार मिटताहै (३२) मझोली मोटाईके तीन कांदे और एक तोले इन्लीके पत्तोंको पीस गोली वनाके खिलानेसे विरेचन लगताहै (३३) कांदेके ताजे रसको शरीरपर मर्दन करनेसे लूका असर तुरन्त मिटताहै (३४) वच्चेको कांदेकी माला वनाके छातीतक पहिरानेसे लूका असर नहीं होताहै (३५) कांदेको सेक उसका अर्क निकालके पिलानेसे वच्चेके पेटका दर्द मिटताहै(३६) इसका तेल उत्तेजक, मूत्रबर्द्धक और कफानिःसारकहै (३७) ज्वर, जलंधर, प्रतिश्याय और पुरानी खांसीमें कांदेका प्रयोग उपकारीहै (३८) इसके रसमें हींग और कालानमक डालके पिलानेसे शूल और अफारा मिटताहै (३९) इसका रस सुंघानेसे नकसीर बन्ध होतीहै (४०) कांदा और कलौंजी समान भागले चिलममें भर उनका धुआं पीकर मुंहसे लाल टपका देनेसे मसूड़ोंकी सूजन और दंतपीड़ा मिटतीहै (४१) कांदेका रस कानमें डालनेसे कानके कीड़े मरतेहैं (४२) कांदेका रस नेत्रमें लगानेसे नेत्र पीड़ा मिटतीहै (४३) कांदेके रसका मर्दन करनसे गंज मिटतीहै (४४) कांदेको वालकके मूत्रमें पीस तेलमें तलकर वद पर वांधनेसे वद वैठ जातीहै (४५) कांदा खानेसे सर्पका विष उतरताहै (४६) कांदेको शहदमें मिलाके लगानेसे घाव नहीं भरने पाताहै (४७) कांदा और लसणको पीसके लगानेसे कनखजूरेका विष उतरताहै (४८) कांदेके रसमें मधु मिलाके अंजन करनेसे नेत्रपीड़ा नजला आदि रोग मिटतेहै और ज्योति वढतीहै (४९) कांदेका जीरा मलनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (५०)

तिल्ली वालेके गलेमें कांदा लटकानेसे उसका प्रकोप कम हो जाताहै (५१) इसके बीजोंमेंसे सफेद स्वच्छ तेल निकलताहै । प्याज-यूरोप और हिन्दुस्थान वालोंके खानेके काममें आताहै ।

संख्या (३२०)

(सं०) पलाशः, किंशुकः, ब्रह्मपादपः, याज्ञिकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
छिवरो	ढाक टेसू	खाखरो	पळश(स)	पलाशगाछ	पलाश	मोदुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
पेलाशं	मुत्तुगदगिड़			Butea frondosa.	Bastard teak Bengal Keno Butea gum Doury branch Butea

स्थान—ढाकके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष १० वर्षसे अधिक नहीं जीताहै । इसकी ऊंचाई प्रायः ४०, ५० फुट तककी होतीहै । इसकी पेदड़ मुड़ीहुई और बहुधा बेडौल और गुलाईमें ६ से ८ और कभी २ दश से वारह फुट की होजातीहै । इसके थोड़ी मुड़ीहुई शाखें लगतीहैं, इसकी छाल आधेसे एक इंच मोटी थोड़ी भूरी और खरदरी होतीहै इसके नवीन भाग रुएँदार होतेहै । इसके एक एक डंडीपर तीन २ पत्ते लगतेहैं जिनमें बीचका पत्ता प्रायः गोल और आसपास के दोनो पत्ते कुछ लम्बे होतेहैं । इसके पुष्प लाल कुछ पीले और अन्तमें कुछ काले होतेहैं प्रायः आधगज लंबी डंडीपर पुष्पोंकी छड़ लगीरहतीहैं और इनके गिरजानेके पीछे लम्बी चिपटी और पतली फलियां लगतीहैं इसके बीज पतले चिपटे और प्रायः गोल होतेहै उनमें स्वाद और सुगंध बहुत कम होतीहै । इसके पुराने पत्ते पोष और माघमें गिरजातेहैं, चैत्र वैशाखमें नवीन पत्ते आजातेहै ।

फूलने फलने का समय—नवीन पत्ते आनेके पहिलेही नारंजी रंगके पुष्प निकलने लगतेहैं। जेठ और अषाढ़में इसकी फलियां पकतीहै । छुटिया नाग-

पुर, मध्य हिन्दुस्थान, दक्खन, बरोदा और गुजरात आदि देशोंमें छिंउके एक प्रकारका लाल गोंद लगताहै उसको चुनियां, चूनी, खाखरका० ढाकका या पलाशका गोंद और कमरकस कहतेहैं, इसके पुष्पोंमें से पीला रंग निकाला जाताहै। इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) यह कषेला, उष्ण, दीपन, वृष्य, सारक, कड़वा चरपरा स्निग्ध और ग्राहीहै (२) इसके गोदकी ५ रतीसे १५ रती तककी फकी देने से अतिसार मिटताहै। इसमें कुछ दालचीनी मिला देनेसे यह अधिक गुण करताहै (३) चूनी गोंद, दालचीनी और अफीमकी गोली बनाके खिलाने से अतिसार तुरन्त मिटताहै (४) इसका ताजा रस पिलानसे राजयक्ष्मा मिटताहै (५) इसके ताजे रसमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे मुख आदिसे रुधिरका निकलना बंध होताहै (६) इस रसके लगानेसे गलके घाव मिटतेहैं (७) फोड़ोंपर इसका ताजा रस लगाया जाताहै (८) इसका ताजा रस पिलानेसे अतिसार मिटताहै (९) इसके रसमें सोंठ बुरकाके पीनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१०) ज्वरातिसार मिटानेकेलिये इसका रस पिलातेहैं (११) चूनीगोंद, लोद और अफीमका लेप करनेसे आंखका अर्मरोग और मैलापन मिटताहै (१२) इसके बीजोंको पानीमें भिगो छिलका उतार उनकी गिरको सुखा पीस कपड़ छानकर सवा मासेकी मात्रा दिनमें तीन बेर लगातार तीन दिनतक देकर चौथे दिन एरंडका तेल पिलाना चाहिये, इस प्रयोगसे आंतोंके लम्बे कीड़े निकल जातेहैं, जो इनकी गिरकी फकीसे विरेचन होजावे, तो कीड़े नहीं निकलतेहैं। इससे कभी वमन और वृक्कमें जलन होजातीहै (१३) बीजोंकी गिरको पीस मधुके साथ चटानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं और मृदुरेचन भी होताहै (१४) इसके बीजोंको नींबूके रसके साथ पीसके मर्दन करनेसे पांव मिटतीहैं (१५) इनको नींबूके रसके साथ पीसके दाद पर लेप करतेहैं (१६) इसके पुष्पोंका पुल्टिस बनाके बांधनेसे शोथ बिखर जातीहै (१७) पुष्पोंको ओटाके नलोंपर सेक करनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै और मूत्रवृद्धि होतीहै (१८) इनको ओटाके नल और कमर पर बांधनेसे मासिकधर्म खुलासा होने लगताहै (१९) इसके पुष्पोंको ओटाके गोशेकी सूजन पर बांधतेहैं (२०) इसके पत्तोंको गर्म करके बांधनेसे फोड़े फुन्सी बैठ

जातेहैं (२१) इसकी छाल और सोंठको ओटा छानकर पिलानेसे सर्पका विष उतरताहै (२२) अफीमके सतको सफेद करनेके लिये ढाकका कोयला काममें आताहै (२३) इसके बीजोंकी गिरकी दो मासेसे चार मासे तक की मात्रा कीडे निकालनेके लिये दी जातीहै । परन्तु चार वर्ष तकके बच्चेको दो रत्ती तकही देनी चाहिये (२४) इसका गाढ़ा कियाहुआ रस अच्छा ग्राहीहै और इसके गोंदकी ठौर काममें आसकता है परन्तु इसकी मात्रा उससे कुछ अधिक अर्थात् एक मासेसे २॥ मासे तक देनी पड़तीहै (२५) इसके पत्तों का पुल्टिस बांधनेसे गांठ (जैसे अर्श और वद) बिखर जातीहै (२६) इसके गोंदकी २ मासेसे ४ मासे तककी फकी देनेसे आमाशय और मूत्राशयमें से रुधिरका निकलना बन्ध होताहै (२७) इसके गोंदको पानीमें गलाके लेप करनेसे चोटकी और मुखके ऊपरकी असाध्य पित्तशोथ मिटतीहै (२८) इस की जड़की अन्तरछाल को दूधके साथ पिलानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (२९) इसके बीजोंको पीसकर जलके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (३०) इसके पुष्पोंका पुल्टिस बांधनेसे मूत्राशयके रोग मिटतेहैं (३१) इसके गोंदकी फकी देनेसे मंदज्वर छूटताहै (३२) इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे अफारा और शूल मिटतीहै (३३) पुष्पोंको पानीमें ओटाके नाभिके नीचे तरेरा देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (३४) इसके पुष्पोंको ओटाके अंडकोषकी सूजनपर तरेरा देनेसे और इनका फोक बांधनेसे उनकी सूजन उतर जातीहै (३५) इसकी जड़को पानीमें घिसकर वेगके समय नाकमें टपकानेसे मिरगी दूर होतीहै (३६) इसकी सूखीहुई कोंपलें, गोंद, छाल और पुष्पोंको कूट छान उसमें बराबर बूरा मिलाके ९ मासे की फकी दूधके साथ नित्य लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है (३७) इसकी जड़की छालके ७ मासे चूर्णकी पानीके साथ फकी देनेसे अंडवृद्धि मिटतीहै (३८) इसकी कलियों को छायामें सुखा चूर्ण बना उसमें बराबर शक्कर मिला २ से १० मासे तककी फकी १४ दिन तक देनेसे भग संकोचन होतीहै (३९) इसके बीजोंको पीसकर बिच्छूके दंशपर लगानेसे उसका विष उतरताहै (४०) इसके कोमल पत्तोंको नींबूके रसमें पीसके लेप करनेसे दाहज्वर शान्त होताहै (४१) इसके बीजोंके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे कृमि नष्ट होजातेहैं (४२) इसके बीजोंका कल्क तक्रमें मिलाके पीने

से कीडे मरतेहैं (४३) इसके ३ रती बीजोंको थूहरके दूधके साथ पीसके खानेसे पेटके कृमि मरके निकल जातेहैं (४४) इसके पुष्पोंके कल्क या क्वाथ में शक्कर मिलाके पिलानेसे रक्तपित्त मिटताहै (४५) इसके पुष्पोंसे बस्तिपर सेक या स्वेद करनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४६) इसके पुष्पोंको औटा बस्ति पर उस पानीकी धारा देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४७) इसके पुष्पोंके काथमें शक्कर मिलाके पिलानेसे प्रमेह मिटताहै (४८) इसकी जड़को घिसकर कान के नीचे लेप करनेसे गलगंड मिटताहै (४९) इसकी मुंदमुंदी कोंपलोंको सुखा कूटछान, गुड़में मिला, अखरोटकी बराबर गोलियां बनाके एक गोली प्रातःकाल नित्य लेनेसे प्रमेह मिटताहै।

संख्या (२२१)

(सं०) पाटला, अमोघा, फलरुहा, कुबेराक्षी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पाडळ	पाढल, पाडर	पाडल	पाडल	पारुल	पाढळ	कालिगुट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
				Stereospermum suaveolens. Begnonia..	

स्थान—पाडलके वृक्ष हिन्दुस्थानके आर्द्र भागोंमें, हिमालयकी तराई, ट्रैवनकोर और ट्रैनेसरीमतक और सीलोनमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष ३६ से ६० फुटतक ऊंचा होताहै इसकी पेदड़ लम्बी, सीधी, २० फुटतक बढ़जानेपर उसके शाखें फूटने लगतीहैं इसकी गुलाई ६ फुटकी होतीहै इसकी एक से दो फुट लम्बी टहानियो पर २, ३ कभी कभी चार जोड़े पत्तोंके लगतेहैं, जिन में अन्तका पत्ता ३ से ६ इंच लम्बा होताहै। इसके धूमसे या थोड़े किरमची रंगके अतिसुगंधवाले पुष्प लगतेहै। इसके पुराने पत्ते चैतमें गिर जातेहै और उसी महीनेके अन्ततक या वैशाखके प्रारम्भमें नवीन पत्ते निकल आतेहैं। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने फलनेका समय—इसके चैतमें पुष्प आजातेहैं और कार्तिक मार्गशीर्षतक इसके फल पक जातेहैं।

प्रयोग—(१) पाडल-कसैली, कड़वी, रसमें चरपरी और उष्णहै (२) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधु में मिलाके चटाने से हिचकी मिटतीहै (३) यह शीतल, मूत्र और बलवर्द्धकहै (४) यह बहुधा दूसरी औषधियोंके साथ मिलाके दीजातीहै (५) इसकी भस्मसे पानक्षारका पानी बनाया जाताहै (६) चमड़ी को जलाने वाले लेपोंमें इसकी भस्म मिलाई जातीहै (७) इसके फलोंके रस में मधु और सुवर्णभस्म मिलाके पिलानेसे सब प्रकारकी हिचकी बन्ध होतीहै (८) इसके फल और पुष्पोंके चूर्णकी पानीके साथ फकी देनेसे हिचकी मिटतीहै (९) इसके साथ सोंठको पीस कुछ गर्मकर ठंढा करके पिलानेसे गर्भवतीका वातपीड़ा मिटतीहै (१०) इसके काथसे बनायेहुए कड़वे तेलके लगाने से दग्धव्रण, व्रणस्राव, दाह और विस्पोटक मिटतीहै।

संख्या (३२२)

(सं०) पाठा, अम्बष्ठा, स्थापनी, अविद्धकर्णी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पाठ	पाठ	कालिपाठ	पहाडमूल	चक्रपाठा	पाडा	चिरतुद्दी

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	अगलुशोंठि			Cissampelos Pariera C hernandifolia.	False Pareira Brava.

स्थान—पाठकी बेलें सिन्ध और पंजाबसे सीलोनतक और शिमलेके नीचे भी होती हैं।

पहिचान—इसका छोटा भाड़ होताहै। वह बेलकी भांति वृक्षोंपर चढ़ताहै। इसकी पेदड़ छोटी होतीहै जिसमेंसे कई लम्बी शाखें निकलतीहैं वे वृक्षोंके लिपट जातीहैं। इसके पुष्प पुरुष और स्त्रीजातिके भेद से अलग २ होतेहैं।

फूलने फलनेका समय---फागुनसे आसोजतक इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) पाठ उष्ण, चरपरी, कड़वी, पचनेमें हल्की और तीक्ष्ण है (२) इसकी सूखीहुई जड़ और छाल थोड़ी बलवर्द्धक है (३) मूत्राशय की पीड़ा युक्त पुरानी सूजनको मिटानेके लिये इसका काथ या सार बनाके देना चाहिये (४) इसके पत्ते शीतल होतेहैं और गांठपर बांधे जातेहैं (५) औषधिके प्रयोगमें इसकी जड़ही बहुधा काममें आतीहै । यह कुछ कड़वी होतीहै (६) इसकी जड़के चूर्णकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (७) पथरीवाले रोगीको इसकी जडका काथ पिलातेहैं (८) इसकी जड़को घी के साथ घिसकर पिलानेसे विष उतरताहै (९) इसके पत्ते और जड़का शर्बत बनाके पिलानेसे खैनरोग मिटताहै (१०) इसकी जड़का काथ पिलानेसे आमाशयकी पीड़ा और निर्बलता मिटतीहै (११) विगड़े हुए घाव और हड्डियोंके व्रणोंपर इसकी जड़का लेप करतेहैं (१२) सर्प और बिच्छूके दंशपर इसकी जड़का लेप करतेहैं (१३) इसकी जड़के काथमें मधु मिलाके पिलानेसे खांसी मिटती है (१४) जड़के काथपर पीपलका चूर्ण बुरक के पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१५) अतीसके चूर्णकी फकी देके ऊपर इसकी जड़का काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१६) कोयलकी जड़को इसकी जड़के साथ औटाके पिलानेसे जलन्धर मिटताहै (१७) पाठकी जडके प्रयोगसे मूत्रवृद्धि होके मूत्राशयकी पुरानी सूजन मिटजातीहै (१८) इसका प्रयोग करनेके लिये बहुधा इसका काथ बनाके या गाढा सार बनाके देतेहैं (१९) जिस स्त्रीकी योनी निकल जावे उसको इसके काथसे धोनी चाहिये और उस स्त्रीको इसका काथ पिलाना चाहिये (२०) इसकी जडको चांवलोंके पानीके साथ पीसके पीनेसे अंतर्विद्रधी मिटतीहै (२१) इसकी जड़को पीसके गर्भवती स्त्रीकी नाभि, वस्ति और भगपर लेप करनेसे उसके बच्चा सुखसे पैदा होजाताहै ।

संख्या (३२३)

(सं०) पातालगरुडी, तिक्तांगा, दृढकाण्डा, मेचकाभिधा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	छिरेटा	वासनवेल	तानीचावेल	शिलिन्दा	छिरेटा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Cocculus villosus	

स्थान—सिन्ध, पंजाब, दक्खन, मद्रास और बंगाल आदि निर्जल देशों में इसकी बड़ी बेलें होतीहै ।

पहिचान और फूलने फलने का समय--इसके तन्तु बड़े दृढ होतेहैं इसके छोटे फलोंके झूमके लगतेहैं वे पकनेपर काले होजातेहैं इसकी जड़ कड़वी होतीहै, इसके पत्तोंके स्वरससे पानी जम जाताहै और उसका हरा रंग होजाताहै। माघ और फागुनमें इसके पुरुष और स्त्रीजातिके पुष्प अलग २ लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) पातालगरुड़ी (छिरेटा)–वृष्य, मधुर, रोचक, तिक्त और तृप्तिकारक है (२) इसके पत्तोंके रसको पानीमें डालनेसे वह जम जाता है, इस जमेहुए पानीको शरीरके ऊपर लगानेसे दाह मिटतीहै (३) इसमें मिश्री मिलाके खानेमे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४) इसकी ताजी जड़के २॥ छटांक काथ में बकरीका ढाई छटांक दूध मिला उसपर कालीमिरचोंका कुछ चूर्ण बुरकाके प्रातःकालके समय पिलानेसे गठिया और उपदंश सम्बन्धी पुरानी पीड़ा मिटतीहै (५) इसकी जड़ उष्ण, सारक और पसीना लाने वालीहै (६) यह उशबेकी भांति रुधिरको शुद्ध करके शरीरकी पीड़ा और व्रणादिकको मिटादेतीहै (७) इसको किणगचकी गिरके साथ पानीमें पीसके पिलानेसे बच्चोंके पेटकी पीड़ा मिटतीहै (८) पित्तसम्बन्धी मन्दाग्निमें इसके ६ मासे चूर्णमें सोंठ और शर्करा मिलाके देना चाहिये (९) ज्वर मिटानेवाली कड़वी और चरपरी चीजोंके साथ इसको मिला, गोली बनाके देनी चाहिये (१०) इसमें गिलोय जैसा कड़वापन और बलकारक शक्तिहै (११) इसको पीस गर्म करके लेप करनेसे शिरकी पीड़ा मिटतीहै (१२) इसको पानीके साथ पीसके पिलानेसे स्नायु रोग मिटताहै ।

संख्या (३२४)

(सं०) पारदः, रसधातुः, रसेन्द्रः, चपलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पारो	पारा	पारो	पारा	पारा	पारा	पारदमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पादरस	पादरस	जीबक़	सीमाब	Hydrargyrum	Mercury

पारेमें नाग, वंग, मल, अग्नि, चपलता, पर्वतका विष और अग्निका नहीं सहना, ये सांसर्गिक दोषहैं, इन्हींको कई आचार्य सात कंचुकी कहतेहै इन सांसर्गिक दोषोंको दूर किये विदून पारेका भक्षण करनेसे शरीरमें कईप्रकारके रोग होजातेहैं । इस वास्ते इसको शुद्ध करना चाहिये ॥

तप्तखल्वकी रीति—जमीनमें गढा खोदके उसमें बकरीकी मेंगनी और नाजके तुस डाल, उनकी भूभल पर लोहेकी खरल रखनेसे जब वह उष्ण हो जावे उसको तप्तखल्व कहतेहैं । पारेके संस्कार करनेके लिये उसको इस खरलमें मर्दन करना (घोटना) चाहिये, जिन औषधियोंके साथ पारा घोटा जावे उनमेंसे हरेक औषधि पारेका सोलहवां हिस्सा लेनी चाहिये ।

पारेको सूक्ष्म रीतिसे शुद्ध करनेकी रीति—(१) नागदोष दूर करनेके लिये ईंट और हल्दीके चूर्णके साथ (२) वंग दोष दूर करनेके लिये इन्द्रवारुणी और अङ्कोलके चूर्णके साथ (३) मलसम्बन्धी दोष मिटानेके लिये अमलतासके गूदेके साथ (४) अग्निदोष मिटानेके लिये चित्रककी जड़की छालके साथ (५) चंचलपन मिटानेके लिये काले धत्तूरेके रसके साथ (६) पर्वतके विषसम्बन्धी दोषको मिटानेके लिये सोंठ, मिरच पीपल और त्रिफलाके चूर्णके साथ (७) अग्निका नहीं सहना मिटानेके लिये गोखरूके चूर्णके साथ, इस रीतिसे हरेक दोष दूर करनेके लिये उक्त दोषोंको मिटानेवाली जो औषधियां हैं उनके साथ पारेको तप्तखरलमें जम्भेरीका रस डाल २ के एक एक दिन घोटना चाहिये और उष्णकांजी (उष्ण धान्याम्लक)

या सिरकेसे धोते जाना चाहिये ॥ अथवा घी ग्वार, चित्रककी जड़की छाल, ऊभी कंटाली, राई और त्रिफला, इन सबके काथके साथ तप्तखरलमें पारेको, तीन दिनतक मर्दन करके उक्त रीतिसे धोलेनेसे इसके सब दोष दूर हो जातेहैं ॥

पारेको स्वेदन करनेकी रीति—जितने प्रकारके अन्न मिल सकें उन सबके तुस अलग करके उनको जलकी हंडीमें डाल रक्खे जब वह जल खट्टा होजाय तब नागरमोथा, गोरखमुंडी, शखाहुली, साटा, मच्छेछी, सहदेवी, सतावर, सर्पाक्षी, हरड़, बहेड़े, आंवले, काली कोयल, हंसराज और चित्रक, इनमेंसे जो २ औषधी मिलजावे उनको कूटकर उस खट्टे पानीमें डाल देवें । इसको धान्याम्लक कहतेहैं इसको पारेका स्वेदन करने और धोनेके काममें लाना चाहिये, जो इसके बनानेका योग नहीं बने तो इसकी ठौर सिरका काममें लाना चाहिये। सोंठ, मिरच, पीपल, नोंन, राई, हलदी, हरड़, बहेड़, आंवले, अदरक, सहदेवी, गंगेरन, चौलाई, साटा, मेंढासिंगी, चित्रक और नोसादर इनमें से जितनी औषधियां मिल जावें उनको उक्त कांजीसे पीस कपड़े पर इनका एक अंगुल मोटा लेपकर उसमें पारेको बांधकर उक्त कांजीसे भरी हुई हांडी के बीचमें उस पोटलीको लटकाके मंद अंचसे तीन दिन तक स्वेदन करना चाहिये, और जो आवश्यकता हो तो उस हंडीमें कांजी फिर डाल देना चाहिय । अथवा सोंठ, मिरच, पीपल, नोंन, कलमीशोरा, चित्रक, अदरक और मूली, इनमेंसे हरेक औषधि पारेका सोलहवां भाग ले उक्त रीतिसे पीस कपड़े पर एक अगुल मोटा लेपकर उसमें पारको बांध उक्त रीतिसे तीन दिन तक स्वेदन कर फिर उसमें से पारेको निकाल तप्तखरलमें डालकर धूमसा ईंट, दही, गुड़, नोंन, राई ये हरेक चीजें पारेका सोलहवां भाग ले उसमें डाल जम्बेरीके रसके साथ तीन दिन तक मर्दन करके उक्त कांजीसे धो लेना चाहिये ।

मर्दन करनेकी रीति—ईंट, हलदी, ऊनकी भस्म और धूमसेके साथ उक्त खरलमें जम्बेरीके रससे एक या तीन दिन तक मर्दन करके वैसेही धो लेना चाहिये । इस पारेको नींबूके रसमें डालके दिन भर धूपमें पड़ा रखना चाहिये ॥

पातनकी रीति—तीन भाग पारेको नीबूके रसमें एक भाग तांबेके चूर के साथ इतनी देर तक खरल करे कि जबतक उसकी गोली बन जावे फिर उस गोली को खरल कर हंडीके पेंदे में बिछा उस हंडी के मुँह पर जलसे भरी हुई दूसरी हंडी रख कपड़मिट्टी लगा चूल्हे पर चढ़ाकर, चार पहर तक मंद आंच देवे, ठंढी होनेके पीछे उसकी खाम खोल उस हंडीके लगेहुए पारेको उतार लेवे, अथवा तिगुने पारेमें एक भाग नीलातूथा और सोनमक्खी मिला मर्दनकर गोला बना डमरुयंत्रसे उडालेवे, इसको गाढे कपड़ेमें कईवेर छान २ के इसकी फालस निकाल कर शुद्ध करलेवे, इन रीतियोंसे शुद्ध किया हुआ पारा औषधिके काममें लाने योग्य होजाताहै।

षड्गुण गंधक जारण करनेकी रीति—ऐसे शुद्ध कियेहुए पारेमें कच्छपयंत्र, अथवा नलिकायंत्र, अथवा रससिंदूर बनानेकी रीतिसे ६ गुणा गंधक जारण करदेना चाहिये। कच्छपयंत्र बनानेकी यह रीतिहै कि मट्टीका एक कूंडा ले उसके बीचमें खड़ीकी एक इंच ऊंची डोली बना, उसके बीचमें एक सरावा जमादेवे, उस सरावेमें शुद्ध गंधक बिछा उसमें शुद्ध कियाहुआ पारा रख उसको पीसेहुए गंधकसे ढककर उसपर लोहेकी एक बडी कटोरी औंधी ढक, नमक और कंडकी राख महीन पीसकर उससे उसकटोरी और कूंडेकी सन्धिको बन्धकर पानीसे भरेहुए बरतनमें उस कूंडेको आधा डूबाहुआ रखकर उस कूंडेमें अग्नि भर देना चाहिये। अग्नि बुझ जानेपर उसकी खाम खोलकर देखना चाहिये कि उसमें से कितना गंधक जला, जैसे २ गंधक जलता जावे वैसे २ गंधक फिर डाल दियाकरे। ऐसे ६ गुणा गंधक जला देनेसे वह षड्गुण गंधक जारण किया हुआ पारा कहलाताहै। यह अंतर्धूमकी रीतिहै। बहिर्धूमकी रीति यह है कि सिकता यंत्रमें एक सरावा रख उसमें पारा डाल उसपर थोड़ा गंधक बुरका देवे जब वह गंधक पिघलकर जलने लगे तब थोड़ा २ गंधक बुरकाता रहे, ऐसे ६ गुना गंधक जल जावे तब उसमेंसे उस पारेको निकाललेवे। अथवा छाणे (कंडे) की भूभलपर एक सरावा रख उसमें कड़वी तूंबीके बीजोका तेल और मकोयका रस ये दोनों बराबर डाल उनमें पारा और गंधक डाल दूसरे सरावेसे बन्ध करके उसपर थोड़ीसी अग्नि जला देवे जब वह ठंढा होजाय तब उसको खोलकर देखेंकि वे तीनों चीजें अर्थात् तेल रस और गंधक

जल गयेहैं या नहीं, जो वे बिलकुल नहीं जल होवे तो फिर वैसेही बन्ध करके आंच देवें, जो उनमें से थोड़ी बहुत बाकी रहगई होतो वे तीनों चीजें फिर डालके वैसेही आंच देवे, इस रीतिसे जबतक ६ गुना गंधक नहीं जल चुके तबतक उक्त तेल और रस ये दोनों गंधकके साथ डालतारहे इस रीतिसे भी पारेमें ६ गुना गंधक जलाया जाताहै ।

केवल पारा औषधिके प्रयोगमें बहुतही कम आताहै। बराबर शुद्धगंधकके साथ अथवा दुगुने गंधकके साथ इसकी कजली बनाके काममें लातेहैं। जिस रोगको मिटानेवाली जो औषधिहै उसमें इसकी कजली मिला देनेसे उसकी उस रोग को नाश करनेवाली शक्ति बहुत बढ़ जातीहै इसलिये ऐसा कोई भी रोग नहीं है कि जिसको पारा नहीं मिटा सके। पारद भस्म, हरगौरी, मकरध्वज और हेमगर्भ आदि रस बनानेकी विधि यहां नहीं लिखनेका कारण यहहै कि जबतक ये रस गुरूके सामने नहीं बनाये जावें तबतक इनका बनाना बहुत कठिन और असंभवहै। क्योंकि ऐसा लिखाहै—"अध्यापयन्ति यदि दर्शयितुं क्षमन्ते सूतेन्द्रकर्म्मगुरवो गुरवस्त एव। शिष्यास्त एव रचयन्ति गुरोः पुरो ये शेषाः पुनस्तदुभयाभिनयं भजन्ते" इसका अर्थ यहहै कि पारेके कर्म्मका गुरू वहही है जो पारेके संस्कार करके दिखला देवे और शिष्य वहहीहै जो गुरूके सामने पारेके संस्कार कर लेवे। बाकी वे दोनों नाम मात्रके गुरु शिष्यहैं ॥

संख्या (३२१)

(सं०) पारिजातकः, प्राजक्तः, रागपुष्पी, खरपत्रकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
हारसिंगार	हारसिंगार	शियाली	शिवली	पालतेमाँदार		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Nyctanthes Arbortristis scabrita scabra	

स्थान—हारसिंगारके वृक्ष हिमालय और तराईकी घाटियोंमें, मध्य हिन्दु-

स्थान—ब्रह्मा और सीलोनमें होतेहैं और बहुधा बागोंमें बोये जातेहैं।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसके पुष्प सायंकालको खिलतेहैं और प्रातःकाल होने पर गिर जातेहैं। इसका बड़ा गुल्म या छोटा वृक्ष १५,२० फुट ऊंचा होताहै। इसके कुछ सफेद रुए होतेहैं, इसके पुराने पत्ते माघमें गिर जातेहैं और चैत वैशाखमें नवीन आजातेहैं, इसके बहुधा वर्षा-ऋतुमें पुष्प लगतेहैं परन्तु बारह महीनेही लगते रहतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके पुष्पोंका क्वाथ पिलानेसे गठिया मिटतीहै (२) जीर्णज्वर मिटानेके लिये पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (३) मद आंचसे इसके पत्तोंका क्वाथ बनाके पिलानेसे किसी औषधिको न मानने-वाली गृध्रसी मिटतीहै (४) पित्तविकार मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाके पिलाना चाहिये (५) इसी रसमें मधु मिलाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (६) मुनक्का और इसके पत्तोंका फांट पिलानेसे पित्तज्वर मिटताहै (७) इसके पत्तोंके रसमें नमक डालके पिलानेसे पटके कीड़े मरतेहैं (८) इसके पत्तोंका रस पित्तकारक, सारक, कुछ कड़वा और बलवर्द्धकहै (९) इसके पत्तोंका फांट बच्चोंको पिलानेसे पसीना होके ज्वर उतर जाताहै (१०) इसके पत्तोंका हिम पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (११) इसके ताजे पत्तोंको दाल या कढी बनाते समय उनमें डालतेहैं (१२) इसके खानेसे बल बढताहै (१३) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे उदक्‌ प्रमेह मिटताहै (१४) इसके सफद पुष्पों की डंडी अलगकर उनमें दुगुना बूरा मिला, शीशीमें भरकर ४० दिन कोठे पर रख देवें। इस गुलकंद का २ तोले नित्य प्रातःकाल खानेसे हृदयका बल बढताहै और गर्मीका होलदिल मिटताहै (१५) इसकी कोंपलें और ७ काली-मिरच, पीस छानके पिलानेसे मासिकधर्ममें अधिक रुधिरका जाना बन्ध होता है (१६) इसके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे दाद मिटताहै (१७) इसकी छालको तेल, कांजी और सैंधे नमकके साथ पीसकर लेप करनेसे नेत्ररोग मिटतेहैं (१८) इसके एक तोले बीज और ३ मासे कालीमिरचको पीस छान गोलियां बनाकर ३ मासे तक मात्रा शीतल जलके साथ देनेसे अर्श मिटताहै (१९) इसके सुगंधयुक्त पुष्पोंमें से सुगंधित तेल और पीला रंग निकाला जाता है।

संख्या (३२२)

(सं०) पारिभद्रः, पालाशः, रक्तपुष्पः, प्रभद्रकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
फरहद	फरहद	पांडेरवा	पागरो	पालिदामादार		वारिजमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कल्याणमुरंगे	हालवाण-दमर			Erythrina Indica.	Indian coral tree Mochi wood

स्थान—फरहदके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर होतेहैं, और बहुधा बागोंमें बोये जातेहैं।

पहिचान यह एक साधारण ऊंचाईका शीघ्रतासे बढनेवाला वृक्षहै। यह दो प्रकारका होताहै एक बोया हुआ और दूसरा अपने आप उगनेवाला। इसकी पेदड़ सीधी होतीहै। जबतक यह वृक्ष जवान होताहै तबतक बहुधा इसकी पेदड़ में कांटे लगे रहतेहैं बोये हुएके कांटे नहीं होतेहैं। इसकी छाल पतली, कुछ पीली या कुछ नीली और चमकदार होतीहै इसमें कुछ सफेद दगारें होतीहैं। वसंतके प्रारम्भमें इसके पुराने पत्ते गिरकर फाल्गुन चैत्रमें नवीन निकल आतेहैं। इसकी एक डंडी पर तीन पत्ते लगतेहैं इसके पुष्पोंका रंग लाल होताहै।

फूलने फलने का समय—माघ, फागुनमें इसके पुष्प लगतेहैं। और वैशाखसे अषाढ तक इसकी फलियां पकतीहैं। अपने आप उगनेवालेकी फली २ से ३ इंच और बोये हुएकी फली ६,७ इंच लम्बी होतीहै। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै, इसके सूखे लाल पुष्पोंमेंसे लाल रंग निकाला जाताहै। इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै।

प्रयोग—(१) यह—कषेला, चरपरा, उष्ण, रोचक, अग्निवर्द्धक और पाकमें कटुहै (२) पित्तविकार मिटानेके लिये इसकी छालका हिम पिलाना चाहिये (३) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) इसके पत्तोंका ५ तोले रस पिलानेसे पेटके कीड़े निकल जातेहै (५) विरेच-

नके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये (६) उपदंश सम्बन्धी घातहै। मिटानेके लिये उनपर इसके पत्ते बांधने चाहियें (७) इसके पत्तोंपर कालको का तेल चुपड उनको तपाके बांधनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (८) इसकी अन्तर छाल पर घृत चुपड़ उसपर दीपककी लोयसे कज्जल पाड़के आंखके भीतर और नीचेकी पलकपर अंजन करनेसे उसमेंसे पानीका बहना बन्ध हो जाताहै (९) आंखके सफेद भागके रोग मिटानेके लिये इसके पत्तोंके ताजे रसका लेप करना चाहिये (१०) उक्त ७ वें प्रयोगके अजनसे बांफनीके रोग मिटतेहैं (११) इसके पत्तोंका ताजा रस कानमें डालनेसे कर्णपीड़ा मिटतीहै (१२) इसके पत्तोंके क्वाथके गंडूष करनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै (१३) इसकी जड़को स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे बालक सुखसे और शीघ्रतासे पैदा हो जाताहै (१४) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे कृमि रोग मिटताहै ।

संख्या (३२३)

(सं०) पालक्यं, पालक्या, चीरितच्छदा, छुरिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पालखो	पालक	पालख- नोभाजी	पालख (क)	पालशाक	पालक	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
x		इस्फ़ानाख	इस्फनाख़	Spinacia oleracea. S tetrandra. Beta maritima. B Vulgaris	Indian or garden spinach Beet root.

स्थान—पालकका शाक हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोया जाताहै ।

प्रयोग—(१) पालक–शीतल, पचनेमें भारी, विष्टंभी, सारक, पिच्छल, कुछ चरपरा, मधुर, ग्राही, और वातलहै (२) इसके बीज शीतल और सारकहैं (३) ये कष्टसे श्वास आनेको मिटातेहैं (४) पित्तके उपद्रव मिटानेके लिये ठंढे जलके साथ इसके बीजोंकी फक्की देनी चाहिये (५) मूत्रकी पथरीको मिटानेके लिये इसका ताजा रस पिलाना चाहिये (६) खट्टे पालकके बीजोंको पीस छानके योनि में मलनेसे उसका ढीलापन मिटताहै । इसके बीजोंमेंसे गाढा तेल निकलताहै ।

संख्या (३२४)

(सं०) पाषाणभेदः, अश्मघ्नः, शिलाभेदः, कृच्छ्रहरः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पाखाणभेद	पाखाणभेद	पाषाणभेद	पाषाणभेद	पाथरचुनी	पाषानभेद	पाषाणभेदि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पाषाणभेदि	पाषाणभेदि	-		Colous aromaticus C. Amboinicus	Country Borage

स्थान—पाषाणभेद हिन्दुस्थानमें सब ठौर बागोंमें बोया जाताहै ।

पहिचान—इसकी सुगन्ध उत्तमहै और स्वाद चरपरा होताहै ।

प्रयोग—(१) पाषाणभेद–शीतल, कड़वा, कषैला, मधुर, तिक्त, सारक, और वस्तिशोधकहै । श्वास, पुरानाकास, अपस्मार और बांईटोंके रोगमें काम आताहै (२) इसका क्वाथ पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (३) बच्चोंके पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें शक्कर मिलाके पिलाना चाहिये (४) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे पुरानी मंदाग्नि मिटतीहै (५) इसके पत्तोंका बहुत रस पीनेसे नशा आजाताहै (६) इसके पत्तोंका रस ग्राही है (७) पत्तोंके रसमें सोंठ बुरकाके पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (८) आंखके बाहिर चारों ओर पत्तोंके रसका लेप करनेसे उसके सफेद भागकी पीड़ा मिटतीहै (९) मूत्राशयके रोग मिटानेके लिये पाषाणभेदका क्वाथ पिलाना चाहिये (१०) स्त्रियोंकी योनिके स्राव आदि और पुरुषके मूत्र सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इसके क्वाथमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (११) इसका क्वाथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र और पथरी मिटतीहै (१२) इसके क्वाथमें मधु और शिलाजीत मिलाके पिलानेसे पित्ताश्मरी मिटतीहै । इसके पत्तोंको मक्खन और रोटीके साथ खातेहैं ।

संख्या (३२५)

(सं०) पिच्छिला, अंभःफला, पाटला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बी, बिही	बिही	बिही	सफरजन	बिहिदाना	बहिदाना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
			बेह	Cydonia vulgaris Pyrus Cydonia.	The quince

स्थान—यह अफगानिस्थान आदि देशोंमें पैदा होतीहै। पेशावरकी घाटी कश्मीर सिकम भूटान और खासिया पहाड़ कांगड़ामें इसके पेड़ बहुत बोये जातेहैं।

पहिचान—इसके सफेद लाल पुष्प लगतेहैं। पंजाबमें जेठ अषाढ़में इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंका हिम या काथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२) बिहीदानेको भिगो उनका चेप निकाल उसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रनालीकी दाह मिटतीहै (३) चार मासे बिहीदानेका चेप निकालके पिलानेसे सूखी खांसी तर हो जातीहै (४) धातु पुष्ट करनेवाली औषधियोंकी फकी लेके ऊपर इसके चेपका शर्बत पीनेसे धातु पुष्ट होताहै (५) बिहीदानोंको रातभर पानीमें भिगो प्रातःकाल उनका चेप निकाल मिश्री मिलाके पिलानेसे बालक जवान और वृद्ध मनुष्यका अतिसार मिटताहै (६) ईशरबोलकी फकी देके ऊपर इसका चेप पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (७) इसका शर्बत पिलानेसे गलेके छाले मिटतेहैं (८) पित्तज्वरकी तृषा और दाह मिटानेके लिये इसके बीजोंको मुंहमें रखना चाहिये (९) बिहीका मुरब्बा खिलानेसे यकृत् और हृदयकी निर्बलता मिटतीहै (१०) बिहीका लेप करनेसे पित्तके छाले और अग्निसे जलेहुएकी दाह मिटतीहै (११) औषधिकी चरपराहट कम करनेके लिये उसको इसके शर्बतके साथ चटातेहैं या पिलातेहैं (१२) इसका मुरब्बा खिलानेसे बार बार दस्तकी शंकाका होना बन्ध हो जाताहै (१३) इसका शर्बत पिलानेसे पित्तकी वमन बन्ध होतीहै (१४) इसका पानी पीनेसे वमन और तृषा मिटतीहै (१५) इससे पित्तकी प्रकृतिवालेका उदरका बल बढताहै इसका पकाहुआ फल मीठा कुछ खट्टा और रसदार होताहै और इसका मुरब्बा बनातेहैं। यह खानेके काममें आताहै।

संख्या (३२६)

(सं०) पिप्पली, मागधी, कृष्णा, चपला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पीपल	पीपर(ल)	लिंडीपीपर	पिंपळी	पिपुल	पीपल	पिप्पल्लु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तिप्पलि	हिप्पालि	दारफिलफिल	पीपलदराज	Piper longum Chavica. Roxburghii	Long pepper

स्थान—पीपल-हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें नैपालके पूर्वसे आसामके पूर्व, कासियापहाड़ और बंगाल तक, पश्चिमकी ओर बम्बई अहाते तक, दक्षिण की ओर ट्रैवन्कोर और सीलोन तक होतीहै ॥

फूलने फलनेका समय—श्रावण, भादवेमें इसके पुष्प लगतेहैं, पौष तक फल पकतेहैं ॥

प्रयोग—(१) पीपल—दीपन, वृष्य, पाकमें मधुर, अत्यन्त उष्ण, चरपरी, स्निग्ध, पचनेमें लघु, पित्तल, रेचक, उत्तजक, पेटकी वायुकी पीड़ा मिटाने वाली, रुधिर शुद्ध करनेवाली और सारकहै (२) कफ, गलेका भारीपन, श्वास, मन्दाग्नि और पक्षाघात आदि रोगोंमें बहुत उपकारीहै (३) नई पीपलों से पुरानी पीपलें अधिक गुणकारीहैं (४) पीपलका चूर्ण मधुके साथ चटाने से कफ, श्वास, गलेका भारीपन, हिचकी और निद्रानाश मिटताहै (५) पीपल, पीपलामूल, कालीमिरच और सोंठ इन सबको बराबर ले चूर्ण बना यथादोष, बल, एक मासे से ४ मासे तककी फकी देनेसे या मधुके साथ चटानेसे प्रतिश्याय और गले का भारीपन मिटताहै (६) वर्द्धमान पिप्पलीके प्रयोगसे रक्त शुद्ध होके शरीरका बल बढताहै और विषमज्वर छूटजाताहै, उरुस्तम्भ और पुरानी खांसी मिटजातीहै और तिल्ली आदि पेटके भीतरके बढ़ेहुए यंत्र अपनी २ योग्य दशामें होजातेहैं (७) वर्द्धमान पिप्पलीके प्रयोगकी यह रीतिहै-कि रोगीकी शक्तिके अनुसार पहिले दिन ३ पीपलको आधपाव दूध और आधपाव जलमें डालके अग्निपर चढ़ा देवें जब पानी जलजावे तब उसको अग्नि परसे उतार, ठण्ढा

कर दूधमेंसे पीपलोंको निकाल, रोगीको खिलाके ऊपर वह पिलादेवे, जो उसकी शक्ति होवे तो ३ पीपल और छटांकभर दूध और छटांकभर जल उक्त रीतिसे नित्य बढ़ाते हुए जबतक आवश्यकता हो सेवन करावे जब बढ़ानेकी आवश्यकता नहीं रहे तब वैसेही उनको घटादेवे और घटाके ३ तक लाके छोड़ देवे. परन्तु किसी २ को दूधसे बद्धकोष्ठ होजाताहै अर्थात् मल गाढा होके गांठें बंध जातीहैं, इस लिये उसका मल ढीला रहनेका उपाय करते रहना चाहिये (८) पीपलको पानीमें घिसके अंजन करनेसे मूर्च्छा मिटतीहै (९) मूर्च्छा मिटानेवाली कई प्रकारकी नस्यकी ओषधियोंमें पीपलका योग किया जाताहै (१०) पीपल और सोंठके योगसे तेल बनाके मर्दन करनेसे उरुस्तंभ और गृध्रसी मिटतीहै (११)पीपल कफकी गांठोंको बिखेरतीहै (१२) तिल्ली और यकृतमेंसे उनके रसके बहावकी रुकावटको मिटातीहै (१३) मधुके साथ पीपलका चूर्ण चटानेसे पाचनशक्ति बढ़तीहै (१४) यह पुरुषार्थ बढ़ातीहै, मूत्रवृद्धि करतीहै और कष्टसे मासिकधर्म्म होनेको मिटातीहै (१५) पक्षाघात, छोटे जोड़ोंकी सूजन, कमरकी पीड़ा और इसी प्रकारके दूसरे रोगोंमें पीपल और पीपलामूलका प्रयोग बहुत उपकारीहै (१६) रतौंधा मिटानेके लिये आंखमें पीपलका अंजन करना चाहिये (१७) पीपलको घिसके विषैल जीवोंके दंशपर लगाना चाहिये (१८) प्रतिश्यायसे जिसकी छाती कफसे भर गईहो उसको पीपलके काथमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (१९) पीपल, कालीमिरच और सोंठके चूर्णकी फकी देनेसे हाथपैरोंका ठंढापन और निर्बलता मिटतीहै (२०) पेटके कृमि निकालनेके लिये पीपलका प्रयोग करना चाहिये (२१) कालेनमकके साथ पीपलके चूर्णकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (२२) मधु और पीपल चटानेसे ज्वरके पीछेकी ऊष्मा मिटजातीहै (२३) बच्चा होनेके पीछे रुधिरको रोकनेके लिये पीपलके चूर्णको घीमें चटाना चाहिये (२४) बच्चेका प्रतिश्याय मिटानेके लिये पीपलके चूर्णको मधुमें चटाना चाहिये (२५) पीपलको पानीसे पीसके लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२६) पीपलके चूर्णकी नस्य देनेसे सर्दीकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२७) इसके कल्कको दूधके साथ पीनेसे प्रवाहिका मिटतीहै (२८) इसका चूर्ण मधुके साथ चाटनेसे रक्तपित्त मिटताहै (२९) इसके चूर्णमें शक्कर मिलाके फकी देनेसे हिचकी बन्ध होतीहै (३०)

पीपलके बेर थूहरके दूधकी २१ भावना देकर १ या २ पीपल खिला देनेसे उदर रोग मिटतेहैं (३१) पीपलके पलासके खारकी भावना देके उसका सेवन करानेसे गुल्म, प्लीह और मंदाग्नि मिटतीहै (३२) कंठ शुद्ध होनेके लिये इनका चूर्ण मधुके साथ चटाना चाहिये (३३) घी और मधुमें इसका चूर्ण मिलाके मुखमें रखनेसे दंतशूल मिटतीहै (३४) एक भाग पीपल और दो भाग हरड़को जलके साथ पीस बत्ती बनाके आंखमें फेरनेसे तिमिर, अर्बुद और पटल दूर होताहै और नेत्रस्राव बन्ध होताहै (३५) पीपलको चिलममें भरकर तमाखू की भांति पीनेसे पुरानी खांसी मिटतीहै (३६) पीपलका चूर्ण कुछ गर्म दूधकेसाथ लेनेसे दूध बढताहै (३७) पीपल और बचके चूर्णकी फक्की देनेसे सूर्यावर्त मिटताहै (३८) पीपलका कल्क, गुड़ और दूध इनसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे अम्लपित्त मिटताहै (३९) दूधमें इसका कल्क और घी डाल गर्म करके पिलानेसे मंदाग्नि और उदरके रोग मिटतेहैं (४०) दूधमें पीपलका चूर्ण डालकर पिलानेसे प्लीह मिटताहै (४१) पीपलके सेवनसे नपुंसकता मिटतीहै (४२) पीपल और आंधीझाड़ेके चूर्णकी नस्य देनेसे कंठ कुब्ज सन्निपात मिटताहै (४३) इसके चूर्णकी दुगुने गुड़में गोली बनाके देनेसे जीर्णज्वर और मंदाग्नि मिटतीहै (४४) पीपलके कल्क से घृत सिद्ध करके उसका सेवन करानेसे राजयक्ष्मा और क्षयरोग मिटताहै (४५) पीपल और अद्रक को बेर २ चाब २ के थूकनेसे और गर्म जलसे कुल्ले करनेसे हनुस्तम्भ मिटताहै (४६) इसके और कंटालीके चूर्णको मधु और आंवलेके रसके साथ चटानेसे या शक्करके साथ फक्की देनेसे हिचकी मिटतीहै (४८) गोमूत्र और एरंडके तेलमें पीपलका चूर्ण डालके पिलानेसे कफ और वातसे पैदा हुई गृध्रसी मिटतीहै (४९) छाछमें पीपलका चूर्ण और मधु डालके पिलानेसे प्लीहोदरी को लाभ होताहै (५०) वर्द्धमान पिप्पलीका मधुके साथ सेवन करनेसे उरुस्तम्भ मिटताहै (५१) बकरीके दूधके साथ पीपलके दो मासे चूर्णकी फक्की देनेसे पुरानी प्रवाहिका मिटतीहै ।

—— o o ——

संख्या (३२७)

(सं०) गजपिप्पली, गजोषणा, चव्यजा, श्रेयसी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजावी	तैलङ्गी
गजपीपल	गजपीपल	गजपीपर	गजपिंपळी	गजपिपुल	गजपीपल	गजपिप्पलि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
यानैतिप्पालि	गजहिप्पालि			Scindapsus officinalis Pothos D	

स्थान—गजपीपल हिन्दुस्थानके वहुतसे भागोंमें और विशेष करके दक्षिण हिन्दुस्थानमें होतीहै ।

पहिचान—इसकी वेल वृक्षोंपर चढतीहै । इसकी जड़ मोटी होतीहै ।

प्रयोग—(१) गजपीपल–उष्ण, चरपरी, कड़वी, रूक्ष, तीक्ष्ण, कषेली ग्राही, अग्निवर्द्धक, उत्तेजक, कीड़े मारनेवाली और पसीना लानेवालीहै कफ, वादी, अतिसार, श्वास, कृमि, कंठरोग, कास और ज्वरको मिटातीहै। मलका शोधन करतीहै । स्तन, कर्णपाली और इन्द्रीको वढातीहै (२) इसके चूर्णकी फक्की देनेसे पेटकी वादीकी पीड़ा मिटतीहै (३) इसके चूर्णको पानमें रखके खानेसे श्वास मिटताहै (४) इसके चूर्णको अदरखके रस और मधुके साथ चटानेसे कफके रोग मिटतेहैं (५) आमकी गुठलीके साथ इसको घिस, गर्म करके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (६) इसको घिस, गर्म करके लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (७) इसके रसमें कालीमिरच मिलाके पिलानेसे साधारण विषैल सर्पका विष उतरताहै (८) इसके रसमें करेला मिलाके सर्पके दंशपर लेप करना चाहिये ।

संख्या (३२८)

(सं०) जलपिप्पली, शारदी, तोयपिप्पली, मत्स्यादनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वगाली	पंजावी	तैलङ्गी
जलपीपल	जलपीपरि	रतवेलियो	जलपिंपळी	काँचडादाम	जलपीपल	नेलपिप्पलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पोडुदले	नीरहिप्पलि			Commelina salicifolia	

प्रयोग—(१) जल पीपल पचनेमें हल्की, शीतल, रूक्ष, ग्राही, कषेली, चरपरी, रोचक और मुख शुद्ध करनेवालीहै। हृदय और नेत्रोंको हितकारीहै। रक्त, दाह, व्रण, अतिसार, श्वास, तृषा, विष, घबराहट, ज्वर भ्रम, मूर्च्छा और रुधिरविकारको मिटातीहै। वीर्य, अग्नि और वादीको बढातीहै और पारे के दोषको मिटाती है (२) इस के कोमल पत्ते और डालियोंका एक छटांक क्वाथ बनाकर बच्चोंको दिनमें दोबेर पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (३) बच्चा होनेके पीछे स्त्रियोंको इसका क्वाथ पिलाने से लाभ होताहै (४) इसका रस मूत्रकृच्छ्र, वृक्ककी और जोड़ोंकी पीड़ाको मिटाताहै।



संख्या (३२६)

(सं०) पिप्पलीमूलं, ग्रान्थिकं, कटुमूलं, कोलमूलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पीपलामूल	पीपलामूल	पीपरीमूल	पिंपळमूळ	पिपुलमूल	पिप्पलापूल	पिप्पलिवेरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तिप्पिलिमूलं	हिप्पालिमूल				Root of piper longum

प्रयोग—(१) पीपलामूल—दीपन, पाचन, भेदन, उष्ण, तीक्ष्ण, चरपरा, पचनेमें हल्का, रूक्ष और रोचक है (२) पक्षाघात, धनुस्तंभ और अपस्मारमें पीपलामूलका सेवन बहुत उपकारीहै (३) बच्चा होनेके पीछे आंवलको गिरानेके लिये पीपलामूल का क्वाथ पिलातेहैं (४) मासिकधर्मके उपद्रवके कारणसे जिस स्त्रीके खांसी हो उसको पीपलामूलका सेवन कराना चाहिये (५) ज्वरमें अधिक तृषा लगती होवे तो इसको मुंहमें रखना चाहिये (६) शोथ मिटानेकेलिये पीपलामूलका लेप करना चाहिये (७) पीपलामूल को सेक

उसका चूर्ण बनाके मधुके साथ चटानेसे गठिया मिटतीहै (८) बच्चेके फुप्फुसके रोगमें पीपलामूलके आधी रती चूर्णको मधुके साथ चटाना चाहिये। इससे कफ निकलने लगताहै (९) इसका चूर्ण गुड़के साथ देनेसे बहुत दिनोंसे नष्ट हुई निद्रा आने लग जातीहै (१०) इसको पीसके दूध और अदूसेके रसमें मिलाकर पीनेसे ऊर्द्धवात मिटतीहै ।

———०:———

संख्या (१३०)

(सं०) पियालः, प्रियालः, चारः, सन्नकद्रुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चारोली	चिरोंजी	चारोली(ळी)	चारवृक्षबीज	पियाल	चिरोली	सारपप्पु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
सारपरुप्पु	चारेपप्पु	हब्बुस्सिमना	नुकूलेख्वाजा	Buchanania latifolia.	

स्थान—चिरोंजीके वृक्ष हिमालयमें सतलजसे पूर्वकी ओर और हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण और शुष्क भागोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ४०,५० फुट ऊंचा होताहै । इसकी सीधी पेदड़की गुलाई ४ फुटकी होतीहै । इसकी छाल १ इंच मोटी गहरी सफेद या कुछ काली और खरदरी होतीहै । इसके पत्तेके नीचे बीच की नस लंबे रेशमी रुओंसे ढकी हुई होतीहै । इसके पत्ते ६ से १० इंच लम्बे होतेहैं वे उष्णकाल में प्रायः सब गिर जाते हैं और थोड़े दिनों पीछे नवीन पत्ते निकल आते हैं पूरे बढेहुए पत्ते गहरे हरे रंगके होतेहैं । इसका पकाहुआ फल आधइंच लम्बा और काले रंगका होताहै । इसका छिलका कठोर होताहै। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

फूलने फलनेका समय—पोषसे फागुनतक इसके पुष्प लगतेहैं । चैत्र वैशाखमें इसके फल पकतेहैं, बहुधा ज्येष्ठमें वृक्षसे तोड़ लिये जातेहैं । चिरोंजीमेंसे पीले रङ्गका मीठा और नैरोग्यकारक आधा तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) चिरौंजी-पचनेमें भारी, चरपरी, खट्टी पाकमें मधुर, स्निग्ध, शीतल, विष्टंभी, वृंहण और वृष्यहै (२) इसका गोंद अतिसारको मिटाताहै (३) गर्दनकी पेशियोंकी सूजन पर इसका तेल लगाया जाताहै (४) चिरौंजीके खानेसे कलेजे, फैफड़े और मस्तककी सर्दी मिटतीहै (५ औषधियोंको स्वादिष्ट करनेके लिये उनमें चिरोंजी मिलाई जातीहै (६) यह सारक है। इसको दूसरी सारक औषधियोंमें मिलानेसे उनकी सारकशक्ति घट जातीहै (७) मिश्रीके साथ इसकी फकी लेनेसे प्यास कम हो जातीहै (८) ज्वर मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसका प्रयोग करने से ज्वरकी ऊष्मा और शरीरकी दाह कम होजाती है (९) ताजी चिरौंजी स्वादिष्ट, बलवर्द्धक और स्वास्थ्यकारकहै (१०) इसका तेल बादामके तेलकी ठौर और यह बादामकी ठौर काममें आसकती है (११) दूधमें इसकी खीर बनाके खातेहैं (१२) चिरौंजीके खानेसे या तिल और चिरौंजीको भैंसके दूधके साथ पीसके खानेसे भिलावेकी सूजन मिटतीहै (१३) चिरौंजीको तेलके साथ पीसके मर्दन करनेसे मकड़ीका विष दूर होताहै (१४) यह उष्णहै (१५) इसको सेकके खातेहैं (१६) इसके मींगी सूधे फलोंको पीस धूपमें सुखाके रख छोड़तेहैं उनको आटेमें मिला रोटी बनाके खातेहैं।

संख्या (३३१)

(सं०) पीतमूली, गान्धिनी।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रेवतचीनी	रेवतचीनी	रेवचीनी	रेवाचीनी	रेउचिनि	रेओंदचीनी	चीनगङ्घ

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
भेट्टिकिलगु	रेवंचिन्नि	रावद	रेवन्द	Rheum emodi R. Anstrale R emodium.	Bhubarb Gamboge (K 171)

स्थान—रेवतचीनीके वृक्ष नैपाल और सिक्कममें होतेहैं।

पहिचान—इसका पेड़ ५–६ फुट ऊंचा होताहै, इसकी जड़ मुड़ी हुई

या गोल, आकार और मुटाईमें कई प्रकारकी होतीहै, इसका स्वाद कड़वा और शोषक होताहै ।

प्रयोग—(१) रेवतचीनी—कड़वी, चरपरी, मृदुरेचक और बलकारक है । यह अजीर्ण, अतिसार मन्दाग्नि, अरुचि विद्वंध. शीतपित्त और दुष्ट व्रणों को मिटातीहै (२) हिमालयकी रेवतचीनी रेचक होतीहै । रेवतचीनीसे किसी २ को विरेचन हो जाताहै (३) इसकी डंडीको कालीमिरचके साथ पीसके चटनी बनातेहैं (४) इसमें मिस्सी मिलाके मंजन करनेसे दांत साफ और दृढ़ रहतेहैं (५) पानीसे पीसके इसका दानों कंधोंके बीचमें लेप करने से बादीका होलदिल मिटताहै ।

संख्या (३३२)

(सं०) पीलुः, गुडफलः, स्रंसी, विरेचनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जाल	पीलु	खारीजाल्य	लघुपीलु	पीलुगाछ	पीलु	वरगोंगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	गोनुमर	अराक	दरख्तेमिस-वाक	Salvadora persica. S Wightiana	The tooth brush tree Mustard tree of scripture

स्थान—जालके वृक्ष हिन्दुस्थानके अधिक शुष्क भागोंमें होतेहैं अर्थात् पंजाब और सिन्धसे पटने तक, दक्खनकी ओर कोकन, सर्कार और सीलोन के उत्तरभाग तक होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ३०-४० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेदड़की उंचाई ८, १० फुटकी और गोलाई ४-५ या ६-८ फुट तक होतीहै । इसकी पेदड़ बहुधा मुड़ीहुई होतीहै और उसके फैलीहुई बहुतसी शाखें लगतीहैं इसके अन्त की डालियां झुकीहुई रहतीहैं, पेदड़की छाल सफेद या कुछ भूरे रंगकी होतीहै। इसके पत्ते चैत्रमें गिर जातेहैं और उनके पीछेही नवीन पत्ते निकल आतेहैं, ये कुछ गोल और नोकदार होतेहैं परंतु देश भेदसे आकारमें बदल जातेहैं

इसके कुछ हरे सफेद पुष्प लगतेहैं और छोटे गिरदार, कुछ हरे पीले रंगके फल लगतेहैं वे पकनेपर लाल रंगके होजातेहैं ।

फूलने फलनेका समय—कातीसे वैशाख तक इसके पुष्प लगतेहैं । अलग अलग देशोंमें अलग २ ऋतुमें इसके फल पकतेहैं । इसके पत्ते और बीजोंमेंसे बहुत सुगंधित तैल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) पीलू चरपरा, कषेला, मधुर, खट्टा, सारक और दीपन है (२) यह पेटके यंत्रोंकी रुकावट और पेटकी पीड़ाको मिटाताहै, और मूत्र-वर्द्धकहै (३) सर्पका विष उतारनेके लिये इसकी गीली लकड़ीको घिस उस में सोहागा मिलाके पिलाना चाहिये । इसकी सूखी लकड़ीमें गुण बहुत कम रहताहै (४) पीलू रेचकहै (५) इसकी टहनीकी छाल उष्ण और चरपरी होतीहै (६) मंदज्वरमें इसकी छालका काथ पिलाना चाहिये (७) यह उत्ते-जकहै (८) इसका सवा छ छ तोले काथ दिनमें दो वेर पिलाना चाहिये (९) इसकी कोमल टहनियें और पत्ते चरपरे होतेहैं और सब प्रकारके विष उतारनेके लिये काममें आतेहैं (१०) इसके पत्तोंके रसके लेप से मसूड़ोंका रोग मिटताहै (११) इसके पत्तोंके रसको उष्ण करके लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (१२) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड़ आगसे तपाके गठियाकी सूजन पर बांधना चाहिये (१३) इसकी जड़की छाल चरपरी होतीहै उसको बांधने से छाला होजाताहै (१४) इसकी लकड़ीका दांतुन करनेसे दांत साफ और दृढ़ बने रहतेहैं और पाचनशक्ति बढतीहै (१५) इसके पत्तोंको गोमूत्रके साथ पीस लेपकर उसके ऊपर पान बांधनेसे कंठमाला मिटतीहै (१६) इसके तेलमें बत्ती भिगोके गुदामें रखनेसे अर्श मिटताहै (१७) इसकी कोमल टहनियां और पत्ते शाकके काममें आतेहैं (१८) इसके छोटे लाल फल खानेके काममें आतेहैं । इनमें अच्छी सुगंध होतीहै और राई जैसा स्वाद आताहै ।

संख्या (२३१)

(सं०) महापीलुः, मधुपीलुः, राजपीलुः, महाफलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बड़ी जाल	बडा पीलु	मोटी जालय	थोर पीलु	बड पीलु	वडी पीलु	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लटिन	अंग्रेज़ी
				Salvadora Oleoides S. Indica	

स्थान—बड़े पीलूके वृक्ष सिन्ध पंजाब और राजपूताना आदि कई देशों के रेतीले जंगलोंमें होतेहैं ।

पहिचान—यह वृक्ष २०,२५ फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ छोटी बहुधा मुड़ीहुई और गुलाईमें ५,६ फुटकी होतीहै यह वृक्ष बड़ा होनेपर बहुधा खोखला होजाताहै। इसकी छाल चौथाई इंच मोटी और सफेद रंगकी होतीहै। चैत्रतक इसके नवीन पत्ते आजातेहै, इसके छोटे पत्ते बहुधा गहरे कुछ हरे भूरे रंगके होतेहैं परन्तु पूरे बड़े होनेपर उनका रंग पलट जाताहै। इसकी शाखें खाखी या कुछ लाल भूरे रंगकी और कड़ी होतीहै, इसके पुष्प कुछ हरे सफेद रंगके होतेहं, इसके फल छोटे होतेहैं पकनेपर पीले रंगके और सूखनेपर गहरे भूरे या लाल रंगके होजातहैं ।

फूलने फलनेका समय—फागुन और चैत्रमें इसके पुष्प लगतेहैं और ग्रीष्म ऋतुके प्रारम्भमें इसके फल पक जातेहैं ।

प्रयोग—(१) बड़ा पीलु-मधुर, वृष्य, रोचक और दीपकहै (२) इसका फल ठंढा और मीठा होता है और पुरुषार्थ बढानेवाली औषधियों के साथ काममें आताहै (३) इसका फल इकट्ठा खानेसे मुखमें चरपराहट और छोटे छाले होजातेहैं (४) इसके बीजोंका तेल उत्तेजकहै (५) इसका मर्दन करनेसे गठियाके रोग मिटतेहै (६) बच्चा होनेके पीछे स्त्रियोंके इस तेलका मर्दन करनेसे बहुत लाभ होताहै (७) इसकी जड़की छालको पीसके लेप करनेसे छाला हो जाताहै (८) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे विरेचन लगताहै (९) चौपायोंको इसके फल खिलानेसे दूध बढ़ताहै और मीठा होताहै (१०) इसके फलोंको संग्रह करके सुखा रखतेहै। इसके बीजोंमेंसे तेज नीले रंगका मक्खन जैसा गाढ़ा तेल निकलताहै ।

संख्या (२३४)

(सं०) पुत्रजीवः, गर्भकरः, यष्टीपुष्पः, अर्थसाधकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जीयापोता	जीयापोता	पुत्रजीवक	पुत्रजीव	जियापुता	जियोपोता	पुत्रजीवमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पुत्रजीवि विरै (इ)	पुत्रजीवि			Putranjiva Roxburghii P sphaerocarpa.	

स्थान— जीयापोताके वृक्ष हिमालय के नीचेके भागसे कमाउंमें पूर्व और दक्षिणकी ओर पीगू ओर सीलोन तक होतेहैं ।

पहिचान—यह वृक्ष ४०,५० फुट ऊंचा होताहै. इसकी पेड़ सीधी और खडी होतीहै, उसकी गुलाई ४ से ५ कभी कभी ६ फुटकी होतीहै। इसकी छाल आध इंच मोटी, भूरे रंगकी और चिकनी होतीहै। चैत्रमें इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं वे गोल और कुछ लम्बे होतेहैं । इसके पुरुष और स्त्री जातिके पुष्प लगतेहैं, पुरुष जातिके पुष्प छोटे और पीले रंग के होते हैं । इसका फल ऊपर से चिकना श्वेत प्राय आध इंच लम्बा और बहुत कठोर होता है इसमें एक खाना होताहै उसमें बीज निकलताहै ।

फूलने फलने का समय—फागुनसे वैशाखतक इसके पुष्प लगतेहैं पोषसे जेठतक फल पकतेहैं ।

प्रयोग-(१) पुत्रजीव-पचने में भारी, रूक्ष, शीतल, मधुर, चरपरा और सलौना होताहै (२) गर्भ धारण करने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है (३) यह कफ वात और वीर्य्यको बढाताहै, नेत्रोंको हितकारीहै । मल मूत्रको अलग २ करता है । पित्त दाह और तृषाको मिटाता है (४) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटता है (५) प्रतिश्याय मिटानेके लिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये (६) इसके बीजोंकी माला बनाके बच्चों को पहिनातेहैं (७) इसकी छालको पानीसे पीसके लेप करनेसे पीड़ायुक्त फोड़े और गांठे मिटतीहैं (८) इसकी ४ मासे छाल पीसके दूधके साथ पिलानेसे उग्र विषकी

शान्ति होतीहै (६) इसका रस सरसों के तेल में मिलाकर पीनेसे श्लीपद रोग मिटताहै। इसके वीजों की गिरमें से जो तेल निकलता है उसमें सड़ी हुई गंध आती है।

संख्या (३३५)

(सं०) पुदीनः, व्यंजनः, वांतिहारी, रुचिष्यः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पोदीनो	पोदीना	फो(दि)दीनो	पुदिना	पुदिना	पुदीना	पुदीना

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पुदीना				Mentha sylvestris	Mint.

स्थान—पोदीना हिन्दुस्थान में वहुधा वागों और घरोंमें, घमलों में लगाया जाता है।

प्रयोग—(१) पोदीना— रोचक, मधुर, भारी, हृद्य और ग्राहीहै। जिस काम में पेपरमेंट आता है उसी काममें पोदीनाभी आताहै (२) पोदीनेका क्वाथ पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटती है (३) इसके पत्तों को मधुके साथ चटाने से अतिसार मिटताहै (४) गठियाकी पीड़ा मिटाने के लिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (५) सर्दीकी ज्वर को मिटाने के लिये सोंठ और पोदीनेका क्वाथ पिलाना चाहिये (६) ज्वर वाले रोगीके मुंहका स्वाद सुधारनेके लिये इसकी चटनी वनाके खिलाना चाहिये (७) वमन वन्ध करनेवाली औषधियोंमें पोदीना मिलाया जाताहै (८) इसके ताजे पत्तोंकी सुगंधसे मूर्च्छा मिटतीहै और उनके रसका लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (९) वच्चोंके पेटकी पीड़ा मिटानेके लिये पोदीनेका हिम पिलाना चाहिये (१०) हृल्लास मिटानेके लिये पोदीनेके अर्कपर छोटी इलायची का चूर्ण वुरकाके पिलाना चाहिये (११) पोदीनेके चूर्णका मंजन करनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै (१२) इसका शर्वत पिलानेसे ज्वरकी उष्मा कम हो जातीहै और घवराहट मिट जातीहै (१३) पोदीने और कालीमिरचको घोट

छान मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (१४) पोदीना–उत्तेजकहै और कामला रोगको मिटाताहै (१५) पोदीनेको बूरेके साथ चबानेसे हिचकी बन्ध होतीहै (१६) पोदीनेका अर्क पिलानेसे रुधिरका जमाव बिखर जाताहै (१७) सूखे पोदीनेको पीसके फकी लेनेसे रुधिरका जमना बन्ध होजाताहै (१८) पोदीनेको खाने और लेप करनेसे बिल्लीका विष शान्त होताहै (१६) पहाड़ी पोदीनेको औटाके पिलानेसे बालक होनेके पीछेकी गर्भाशयकी पीड़ा मिटती है ।

संख्या (३३६)

(सं०) रक्तपुनर्नवा, वैशाखी, शोफघ्ना, रक्तपुष्पिका । श्वेतपुनर्नवा, श्वेतमूला, दीर्घपत्रिका, सितवर्षाभूः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
साटो	सांट	साटेड़ी	घेंटुली	पुन्या	इटसिट	अडिकमामिडि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मुक्कुरुट्टइ	कोम्मे	रतेबाह्	इस्पिम्तुमह राई	Boerhaavia diffusa. B procumbens	The spreading hog weed

स्थान—साटा हिन्दुस्थानमें सब ठौर होताहै ।

पहिचान—यह श्वेत, लाल और नीले पुष्पोंके भेदसे तीन प्रकारका होताहै ।

प्रयोग—(१) इसकी जड़का क्वाथ सारक, मूत्रवर्द्धक, कृमिनाशक और शीतलहै (२) इसकी जड़के चूर्णमें शकर मिलाके फकी देनेसे सूखी खांसी तर होजातीहै (३) इसकी जड़के ३ मासे चूर्णमें ४ रती हल्दी मिलाके देनेसे श्वास मिटताहै (४) इसकी अधिक मात्रा देनेसे वमन होतीहै (५) इसकी जड़ बहुत वामकहै (६) इसके पत्ते और कालीमिर्चोंको घोट छानके पिलाने से मूत्रवृद्धि होके मूत्रकृच्छ्र मिट जाताहै (७) इसके पंचांगको पीसके जलंधर के रोगीके पेटपर लेप करना चाहिये (८) गांठके ऊपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (९) सर्वांग जलमय शोथको मिटानेके लिये चिरायता, सोंठ और साटेकी जड़का क्वाथ पिलाना चाहिये (१०) कामला रोग में जिसके

सर्वांग जलमय शोथ होवे तो शोथको मिटानेवाली औषधियोंमें साटेकी जड़ मिला, उनसे तेल बनाके उसपर मर्दन करना चाहिये (११) साटेके हिममें जोखार मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१२) कासयुक्त श्वासको मिटानेके लिये इसकी जड़का काथ पिलाना चाहिये और उस रोगीका धूम्रपान (तमाखू पीना) बन्ध करदेना चाहिये (१३) इसकी जड़का २॥ या ५ तोले काथ पिलानेसे बांइट मिटतेहैं (१४) सूखे साटेके फांटमें शोरा डालके पिलानेसे जलंधर मिटताहै (१५) जलंधरके प्रारंभमें साटेके पत्तोंके शाकसे रोटी खिलाना चाहिये (१६) साधारण निर्बलता और शोथ मिटानेके लिये साटेकी जड़को पानीमें पीसके पैरोंपर लेप करना चाहिये (१७) इसके पत्तोंके रसको दूधमें मिलाके पिलानेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१८) सफेद साटेकी जड़को छायामें सुखा, पानीमें घिसकर अंजन करनेसे वांफनीका गलना और पलकोंकी खुजली मिटतीहै (१९) इसकी जड़का चूर्ण पानमें रखके खानेसे कास और श्वास मिटताहै (२०) इसकी जड़ और सोंठको इसीके रसमें पीसके बांधनेसे स्नायुक मिटताहै (२१) इसकी जड़की मात्रा दूधके साथ देनेसे पित्तज चातुर्थिक ज्वर छूट जाताहै (२२) इसकी जड़ और सैंधा नमक दोनों बराबर ले कल्क बनाके घृतके साथ चटानेसे गुल्म रोग, और मधुके साथ चटानेसे जलोदर मिटताहै (२३) इसकी और वायवरणेकी जड़के पिलानेसे अपक्व विद्रधि मिटतीहै (२४) इसकी जड़को दूधके साथ घिसके अंजन करनेसे खुजली, मधुके साथ नेत्रस्राव, (आंखका झरना) घृतके साथ फूला, तेलके साथ तिमिर रोग, और कांजी या बकरीके मूत्रके साथ अंजन करनेसे रतौंधा मिटताहै (२५) इसकी जड़को छायामें सुखा चूर्ण कर घृतमें मकरो बासी पानीमें गोली बना उसको पानीके साथ घिसकर अंजन करनेसे परवालोंका आना बन्ध होताहै (२६) रविवार के दिन उखाड़ी हुई इसकी जड़को चबानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२७) पीपलके साथ खानेसे भूख लगतीहै (२८) दूधके साथ खिलानेसे शरीर पुष्ट होताहै (२९) शकरके साथ देनेसे पित्त गल जाताहै (३०) पानके साथ खानेसे स्तंभन होताहै (३१) सहदेईके साथ पित्त मिटाताहै (३२) खैरके कल्कके साथ हड फूटनी मिटातीहै (३३) सुपारीके साथ खानेसे कोढ मिटताहै (३४) गो घृतके साथ अंजन करनेसे दुख-

ती हुई आंख अच्छी होजातीहै (३५) पवांड़के बीजोंके साथ खानेसे दाद मिटताहै (३६) जल भांगरेके रसके साथ खानेसे प्रदर मिटताहै (३७) जीरेके साथ खानेसे पेटकी दाह मिटतीहै (३८) इसके पत्तोंके रससे इसकी जड़को पीसके बांधनेसे स्नायुक (नारू) की पीड़ा मिटतीहै (३९) इसके पत्ते और आंधी झाड़की टहनियोंको पीसके मलनेसे विच्छूका विष उतरताहै (४०) २ तोले पुनर्नवा नित्य दूधके साथ पीवे ऐसे ६ महीने तक लगातार पीनेसे आयु बढतीहै। लाल फूलके साटेसे सफेद फूलके साटेमें गुण अधिकहै।

संख्या (२३७)

(सं०) पुन्नागः, पुरुषः, तुंगः, देववल्लभः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सुलतानचंपा	सुलतान	पुन्नाग	उडी	पुनॉगाछ		पुन्ने

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पुन्ने	होन्ने			Calophyllum inophyllum	The Alexandrian laurel

स्थान—पुंनागके वृक्ष ओडीसा दक्षिण हिन्दुस्थान सीलोन, ब्रह्मा और हिन्दुस्थान भरमें बहुत करके समुद्रके किनारे बोये जातेहैं। इसको समुद्रके किनारेकी सूखी वालू रेतकी पृथ्वी बहुत अच्छी मानतीहै।

फूलने फलनेका समय—वर्षमें ६ महीनेसे अधिक समय तक इसके पुष्प और फल लगतेहैं। यह एक वर्षमें दो वेर फूलता और फलताहै।

प्रयोग—(१) पुन्नाग—मधुर, शीतल और पित्त नाशकहै (२) इसके फलोंमेंसे जो तेल निकाला जाताहै वह गठिया पर लगाया जाताहै (३) शिथिल पड़े हुए फोड़ों पर इसके राल जैसे पदार्थका लेप करतेहै (४) इसके गोंदकी फकी देनेसे अथवा इसके फल खिलानेसे वमन और विरेचन होतेहै (५) इसके गोंद को-जो छाल और पत्तोंपर चिपका रहताहै-पानीमें डालनेसे उसका तेल पानीपर

तैर आताहै । इसको दुखती हुई आंख पर लगातेहैं (६) इसका वृक्ष मूत्र- वर्द्धकहै (७) इसके पत्तोंको पानीमें भिगो सूजी हुई आंख पर बांधतेहैं (८) इसकी मींगीका तेल लगानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहैं (९) इसकी छाल ग्राहीहै (१०) छालके चूर्णकी फकी देनेसे शरीर के भीतरके किसी भागमेंसे वहता हुआ रुधिर बन्ध होजाताहै (११) इसकी छालको घिसके लगानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहैं (१२) इसकी छालका रस रेचकहै (१३) इसमेंसे एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ निकलताहै, वह कुछ पीलापन लिये हरे रंगका होताहै, उसमें अच्छी सुगंध आतीहै । माघ और श्रावणके महीनेमें इसके फल इकट्ठे किये जातेहैं । इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ६० तोले तेल निकलताहै वह सुगंध युक्त और धुंधले हरे रंगका होताहै ।

संख्या (३३८)

(सं०) पुष्करमूलं, श्वासारिः, पुष्कराह्वयं, पुष्करजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पोखरमूल	पोखरमूल	पोकरमूल	पोखरमूल	पुष्करमूल	पोहकरमूल	पष्कमूलमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पुष्करमूल	पुष्करमूल	कुस्त	कुश्ना	Costus speciosus	.

स्थान—पुष्करमूल हिन्दुस्थानमें हरेक ठौर होताहै परन्तु बंगाल कान २ और कारोमण्डलमें आर्द्र और छायादार ठौरमें बहुत होताहै ।

प्रयोग—(१) यह कड़वा, ग्राही और पाचक होताहै । प्रतिश्याय सम्बन्धी ज्वर, श्वास, कास, त्वचाकेरोग और वात कफके कई रोगोंमें काम आताहै । पोखरमूल पुष्टाईकी औषधियोंमें मिलाया जाताहै (२) व्रणको शुद्ध करनेके लिये इसके क्वाथसे धोना चाहिये (३) व्रणपर इसका चूर्ण बुरकानेसे कीड़े मरतेहैं (४) इसका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे निर्बलता मिटतीहै (५) मज्जा सम्बन्धी पीड़ा मिटानेके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये (६) पोखरमूल

का मुरब्बा बनाके खानेसे शरीर निरोग होजाताहै और भूख बढतीहै (७) पोखरमूल, जोखार और मिरच इनके कल्कको गर्म जलके साथ लेनेसे श्वास और हिचकी बन्ध होतीहै (८) इसको महीन पीसके मलनेसे अधिक पसीना आना बन्ध होताहै (९) इसका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे श्वास, कास, हिचकी और हृद्रोग मिटताहै (१०) पोखरमूल और सहिंजनेके बीजोंके चूर्णसे बालकके पेटके कृमि (चुरणे) मिटतेहैं ।

संख्या (३३९)

(सं०) पुष्परागः, पीतमणिः, पीतस्फाटिकः, गुरुरत्नम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पुखराज	पुखराज	पुखराज	पुष्पराजमणि	पोखराज	पुखराज	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	पुष्पराग			Topaglo	Topaz.

गुण—(१) यह खट्टा, शीतल, पचनेमें लघु और दीपन होताहै। विष, वमन, कफ, वात, मंदाग्नि, दाह, कुष्ठ, रुधिरविकार और अर्शको मिटाताहै । आयु, शरीरकी कान्ति और बुद्धिको वढाताहै ।

संख्या (३४०)

(सं०) पुष्पाञ्जंन, पुष्पकेतु, कौसुमं, कुसुमाञ्जनम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
घोलेका जल	जस्तकेफूल	पुष्पाजन	जस्ताचेंफूल	पुष्पाजन	जिस्तदा फुल्ल	पुष्पाञ्जनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Zinci oxydum	Zinc oxide

गुण—(१) यह शीतल, स्निग्ध और नेत्रोंको हितकारीहै। पित्त, हिचकी, दाह, विष, कास, ज्वर और नेत्रके सब रोगोंको मिटाताहै।

संख्या (३४१)

(सं०) पूगफलं, उद्वेगं, क्रमुकं, घोंटाफलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तलङ्गी
सुपारी	सुपारी	सोपारी	सुपारी	सुपारि	सुपारी	पोक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पाक	आडिके	फूफल	पोपल	Areca Cat[illegible]	[illegible]

स्थान—सुपारीके वृक्ष बंगाल, आसाम, सिलहट, पश्चिमी घाट मैसोर, कनारा, मलबार और दक्षिण हिन्दुस्थान आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह बहुत जातिकी होतीहै जिनमें सफेद और लाल मुख्यहै।

प्रयोग–(१) सुपारी-पचनेमें भारी, रूक्ष, कषैली, शीतल, दीपन, पाचन, रोचक, मधुर, स्निग्ध और कुछ सारकहै। कची सुपारी बहुत ग्राही होतीहै और अतिसारको मिटातीहै (२) बिगड़े हुए फोड़ोंको सुपारीके काथसे धोतेहैं (३) दांतोंके मंजनके लिये सुपारीकी राख काममें आतीहै (४) निर्बलतासे पैदा हुए अतिसारको मिटानेके लिये सुपारीका चूर्ण ५ रतीसे एक मासेतक हर तीसरे चौथे घंटेमें देना चाहिये (५) मूत्रसम्बन्धी उपद्रवोंमें सुपारी बहुत उपकारीहै (६) सुपारी पाकके खानेसे स्त्रियोंके योनी और रज सम्बन्धी बहुत रोग मिटतेहैं (७) सूखी सुपारीको चावते रहनेसे शरीरपर एक प्रकारकी उत्तेजना और प्रसन्नता पैदा होतीहै (८) दूधकेसाथ सुपारीके चूर्णकी सवा तोलेसे २ तोलेतक फक्की देनेसे गोल और चिपटे कीड़े मरतेहैं (९) इसके पाकसे नसोंका बल बढ़ता है (१०) इसका लेप करनेसे आंखकी सूजन मिटतीहै (११) इसके कोमल पत्तोंका रस निकाल तेलके साथ मर्दन करनेसे कमरकी स्नायु पीड़ा मिटती है (१२) इसके चूर्णके मंजनसे अथवा इसके छोटे २ टुकड़े करके मुंहमें रखनेसे मसूड़ोंसे रुधिरका निकलना बंध होजाताहै (१३) इसके चूर्णकी

पोटली बांधकर योनिमें रखनेसे उसमेंसे पानीका बहना बंध होजाताहै (१४) कोई सुपारी ऐसी होतीहै कि जिसका चबाके उसका रस निगलानेसे बहुधा कानोंमें एक प्रकारकी चित्त प्रसन्न करनेवाली उष्णता प्रतीत होने लगतीहै और कोई ऐसी होतीहै कि जिसका रस निगलनेसे गले और छाती में ऐठन मालूम होने लगतीहै और मुंहसे बहुतसा पानी पड़ने लगताहै (१५) इसकी अंतरछालकी फक्की देनेसे पेटमेंसे पिटाट निकल जातीहै (१६) सुपारीके ४ मासे चूर्णको मक्खनके साथ चटानेसे पेटके कीड़े निकल जातेहै (१७) रेतीले जंगलमें लम्बी सफर करते वक्त तिसको मिटानेके लिये सुपारीके टुकड़े मुखमें रखने चाहिये (१८) सुपारीके कोयलेकी राख एक भाग और चाक मिट्टी ३ भाग मिलाके मंजन करनेसे दांत साफ रहते हैं (१९) गीली कच्ची सुपारी बहुत ग्राही होतीहै। जब इसको धूपमें सुखातेहैं तो इसका ग्राहीपन कुछ कम पड़जाताहै। इसके बीचका श्वेत भाग थोड़ा मीठा होताहै (२०) कच्ची बिनसूखी सुपारीमें एक प्रकारका पदार्थ रहताहै जिससे अधिक सुपारी खानेसे कुछ समयके लिये चक्कर आने लगतेहैं (२१) सुपारीका सार बड़ा ग्राहीहै (२२) सुपारी और हल्दीके चूर्णमें शक्कर मिलाके फक्की देनेसे वमन बन्ध होतीहै (२३) सुपारी और खैरके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे क्षौद्र प्रमेह मिटताहै (२४) इसका चूर्ण बुरकानेसे उपदंश मिटताहै (२५) सुपारी और बड़ी इलायची इन दोनों की भस्मको बुरकानेसे मुखपाक मिटताहै (२६) नागरबेलके पानमें कुछ चूना, कत्था लगाके उसमे इलायची, लौंग और सुपारीके टुकड़े रख, बीड़ा बना चाबके उसका रस निगलनेसे जी मचलाना बन्ध होताहै। आमाशयकी शक्ति और भूख बढ़तीहै (२७ पक्की सुपारियोंको मिट्टी या कलईदार पात्रमें कुछ घंटों तक औटानेसे चेपदा और राल जैसा सार निकलताहै, उसको अपने आप सुखाके या औटाके गाढ़ा करलेना चाहिये।

संख्या (३४२)

(सं०) पृथ्वीतैलं।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सलेट तेल	मिट्टीका तेल				मिट्टीका तेल	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Petroleum	Kerosine

स्थान—यह तेल हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर निकलताहै।

प्रयोग—(१) इस तेलका मर्दन करनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै (२) कपूर और गंधक बराबर ले उनको इस तेलमें पीसके लगानेसे दाद मिटता है (३) इसका फोया भरके व्रणपर बांधनेसे उसके कीड़े मरजातेहैं (४) यह जलानेके काममें आताहै(५)इसका धूंआं श्वासके साथ पेटमें जानेसे फुफ्फुसको विगाड़ताहै (६) इसकी तीक्ष्ण ज्योति नेत्रोंको हानि कारकहै।

संख्या (३४३)

(सं०) पृश्निपर्णी, कलशी, धावनी, गुहा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पिठवन	पीतवन	नहानो समेरवो	पिठवण	चाकुले	पिठौनी	कोलपोन्न

द्राविड़ी	कर्नाटकनी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंगरेजी
				Uraria lagopoides Doodia L.	

स्थान—पिठवन—नैपाल और बंगालसे ब्रह्मातक और हिन्दुस्थानके बहुतसे दूसरे भागोंमें होतीहै।

प्रयोग—(१) यह वृष्य उष्ण, मधुर, सारक, चरपरी, कड़वी, कुछ खट्टी और पचनेमें हल्की होतीहै। दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, तृषा, वमन कास, उन्माद, व्रण, वातरोग और त्रिदोष आदि रोगोंको मिटातीहै(२)पिठवन दशमूलकी औषधियोंमेंहै और बहुधा दूसरी औषधियोंके साथ काममें आतीहै

(३) यह वारीसे आनेवाले ज्वरको रोकतीहै (४) निर्बल मनुष्यको इसकी जड़का क्काथ पिलाना चाहिये (५) इसकी जड़ और मिश्रीको ओटाके पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (६) इसकी जडको दूधके साथ ओटाके गर्भवती स्त्रीको सातवें महीनेमें पिलानेसे वालक पैदा हो जाताहै (७) इसका नाभि वस्ति और योनीपर लेप करनेसे वालक सुखसे शीघ्र पैदा होजाताहै ।

संख्या (३४४)

(सं०) पेरुकं, दृढवीजं, मांसलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजावी	तैलंगी
जामफल	जामफल अमरूद	जामफळ	पेरु		अमरूद	गोय्या

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कोय्या	शीवे	कमुसरा	अमरूद	Psidium Gwyana. Var pyroferum Var pomiferum	Guava.

स्थान—जामफलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर वोये जातेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष छोटा होताहै । यह ५—७ वर्षका होनेके पीछे इसके फल लगने लगतेहैं और प्रायः ६,७ वर्षतक फलताहै पीछे यह सूख जाताहै । यह दो प्रकारका होताहै ।

प्रयोग—(१) इसका फल ग्राहीहै (२) कच्चे जामफल खिलानेसे अतिसार मिटताहै (३) इसकी जड़की छाल ग्राही होतीहै (४) वच्चेका पुराना अतिसार मिटानेके लिये इसकी सवा तोले जड़को १५ तोले जलमें ओटा ७॥ तोले रख, ६—६ मासेतक दिनमें दो तीन वेर पिलाना चाहिये (५) जिसकी गुदा वाहिर निकलतीहो उसकी गुदापर गाढ़ेकिये हुए इस क्काथका लेप करना चाहिये (६) इसके पत्ते इससे कुछ कम ग्राही होतेहैं (७) इसके पत्तोंको पीस उनका पुल्टिस बनाके विगड़े हुए घावपर वांधतेहैं (८) इसके पत्तोंके क्काथके गंडूष करनेसे मसूड़ोंकी शोथ मिटतीहै (९) विषूचिका वालेको (१०) इसके पत्तोंका क्काथ पिलानेसे वमन और विरेचन वन्ध होजातेहै

इसका पका हुआ फल गारक होताहै (११) इसकी जड़की छाल या कोमल पत्तोंका क्काथ पिलानेसे पुराना अतिसार मिटताहै (१२) इसके कोमल पत्ते, अनारकी कली और बंबूलके पत्तोंका फांट करके पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (१३) कच्चे जामफलको ओटाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१४) जामफल सफेद या कुछ लाल गिरवाले चमकदार और पीली पतली छालके अच्छे होतेहैं। ये खाने और शाक बनानेके काममें आतेहैं।

संख्या (३४५)

(सं०) पेरोजं, हरिताश्म, पेरजम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पिरोजो	फिरोजा	पीरोजो	पेरोज	पेरोजा	फिरोजा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	पेरोज	फीरोजज	फीरोजा	Turchesina Turchina.	Turkois Turkois.

गुण—(१) यह कषेला, मधुर, दीपन और सारकहै, शूल, भूतबाधा और स्थावरः जंगम और कृत्रिम विषको मिटाताहै।

संख्या (३४६)

(सं०) प्रवालः, विद्रुमः, लतामणिः, भौमरत्नम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मूगा	मूंगा	परवाळा	प्रवाल पोंवले	मुगा, पला	मूंगा	पगड़मु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पवळ	हवळवु	मरजान्	मरजान्	Corallium rubrum	Coral Red coral.

प्रवालको शुद्ध और भस्म करनेकी रीति—इसके छोटे छोटे टुकडे कर कपड़ेकी थैलीमें बांध, कांजी, नींबूके रस, गोमूत्र और दूधमें क्रमसे एक

एक एक पहर स्वेदन करना चाहिये, फिर उसमेंसे निकाल उष्ण जलसे धो, सरावेमें अग्निसे लाल कर ग्वारपाठेके और चौलाईके रसमें क्रमसे सात सात वेर बुझानेसे इसकी भस्म हो जावेतो ठीक, नहीं तो ग्वारपाठेकी गिर और इसको सराव सम्पुटमें कपड़मिट्टीसे बन्दकर गजपुटके आंचमें फूंक देना चाहिये।

प्रयोग--(१) प्रवाल - मधुर, खट्टा दीपन, रोचक और पाकमें लघुहै और शरीरको पुष्ट करताहै (२) क्षय, पांडु, श्वास, कास, ज्वर मेद, रक्तपित्त भूतादिबाधा, विष और नेत्ररोगोंको मिटाताहै। वीर्य और कान्तिको बढाताहै (३) मूत्रसम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (४) इसको मक्खन और मिश्रीके साथ चटानेसे रैन रोग मिटताहै (५) शरीरको पुष्ट करनेके लिये मलाईके साथ इसका सेवन करना चाहिये (६) ३ मासे घिसे हुए लाल चन्दन पर प्रवाल भस्म बुरकाके चटानेसे रक्तार्श मिटताहै (७) ६ मासे काले तिलोंके साथ प्रवाल भस्मका सेवन करनेसे मूत्रातिसार मिटताहै (८) इसको मधु और पीपलके साथ चटानेसे जीर्णज्वर छूटजाताहै (९) मूत्रकी रुकावट मिटानेके लिये एक रती मूंगा पानीमें घिसके पिलाना चाहिये (१०) पके हुए केलेकी साथ प्रवाल भस्मका सेवन करनेसे क्षयरोग मिटताहै (११) दूध और मिश्रीके साथ पित्तका प्रकोप मिटताहै (१२) पानमें रखके खानेसे खांसी मिटतीहै (१३) प्रवालके चूर्णका मंजन करनेसे दांत निर्मल और दृढ रहतेहैं (१४) त्रिफला और मधुके साथ चटानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१५) घृत और मिश्रीके साथ चाटनेसे धातु पुष्ट होतीहै (१६) धारोष्ण दूधके साथ लेनेसे रक्तप्रदर मिटताहै (१७) अदरकके रसमें मिश्री और प्रवालभस्म मिलाके चटानेसे शुष्क कास मिटताहै (१८) तुलसीके रसमें चूहेकी मींगनी और प्रवालभस्म मिलाके अंजन करनेसे रतौंधा मिटताहै (१९) इसको चांवलोंके धोवनके साथ पीनेसे कफका मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२०) प्रवाल और मिश्रीको महीन पीसके अंजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढतीहै (२१) इसको महीन पीसके बुरकानेसे घावसे रुधिरका निकलना बन्ध होताहै (२२) इसकी जड़को पानीके साथ पीस पावोंपर उसका लेप करके थोड़े समय पीछे धोडालनेसे वे कोमल बने रहतेहैं।

ी छाल या
इसके

संख्या (३४७)

(सं०) प्रियंगुः, गोवंदनी, कांता, फलिनी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
फूलप्रियगु	फूलप्रियंगु	घउला	गहुला गहुला	प्रियगु		प्रेंकणमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	प्रेंकणगिड़			Aglaia Roxburghiana.	

स्थान — प्रियंगुके वृक्ष पश्चिम प्रायद्वीपमें कोकन और मिदनापुरसे दक्षिणकी ओर सीलोन तक होतेहैं ।

पहिचान इसके फलकी मध्यरेखा पौन इंच होतीहै । इसके पांच पांच कभी सात २ और कभी तीन २ ही पत्ते लगतेहैं ।

प्रयोग — (१) यह शीतल, कड़वी और कषेली होतीहै वमन, दाह, पित्तज्वर, रुधिरविकार, शरीरकी दुर्गंध, पसीना, गुल्म, तृषा, विष, मोह, भ्रम कुष्ठ, प्रमेह, मुखके चिकनेपन, बादी और मेदको मिटातीहै । मुखकी कान्ति, बल और वीर्य्यको बढ़ातीहै (२) इसके बीज मीठे, शीतल, रूक्ष, कषेले, ग्राही, पचनेमें भारी, बलवर्द्धक, आध्मानकारक पित्त और कफ नाशकहै (३) इसके फल खानेसे अतिसार मिटताहै और शरीरका बल बढ़ताहै (४) इसके पत्तोंको पानीमें भिगो मल छान मिश्री मिलाके पिलाने से मूत्रनाली की दाह मिटती है (५) इस के पत्तोंका फांट पिलाने से शरीरकी दाह मिटतीहै (६) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै ।

संख्या (३४८)

(सं०) प्लक्षः, पर्कटिः, प्लवङ्गः, दृढप्ररोहः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पाकड	पाखर, पाकर	पीपर	पिंपरी वृक्ष	पाकुड	पिलखन	जुव्वि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कल्ला-लेमर	बसरि			Ficus infectoria F venosa	

स्थान—पाकड़ के वृक्ष बंगाल, आसाम, ब्रह्मा, मध्य हिन्दुस्थान आदि हिन्दुस्थानके बहुतसे देशोंके जंगल और पहाड़ोंमें होतेहैं ।

पहिचान—यह वृक्ष ४०-५० फुट ऊंचा होता है, इसकी पेदड़ छोटी और आकारमें बेडौल होती है, इसकी छाल सफेद और साफ होतीहै । इसके पत्ते चमकदार होतेहैं । इसके फलकी मध्यरेखा चौथाई इंचतक होतीहै जब फल पक जाताहै तब उसका रंग सफेद होजाताहै पतझड़में इसके पत्ते गिर जातेहैं, माघसे चैत्रतक नवीन पत्ते निकल आतेहैं ।

फूलने फलने का समय—वैशाख जेठ तक इसके फल पकतेहैं । आगामी वर्षमें जबतक इसके नवीन फल नहीं आने लगतेहैं तबतक वे वृक्षके लगे रहते हैं ।

प्रयोग—(१) पाकड़-कषेला, चरपरा और मधुरहै। शोथ, दाह, पित्त, कफ, रक्तपित्त, मूर्छा, भ्रम और प्रलापको मिटाता है (२) इसकी छालके क्वाथ के गंडूष करनेसे मुंहमें से पानीका बहना बन्ध होजाता है (३) छालके क्वाथ से व्रणको धोनेसे साफ होजाताहै (४) इसके क्वाथकी पिचकारी योनीमें देनेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (५) इसके अंकुरोंका शाक बनाया जाताहै ।

संख्या (३४६)

(सं०) बकुलः, चिरपुष्पः, मकुलः, मधुगंध ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मौरसली	मौलसरी	बोलसरी	बकुली	बकुलगाछ	मौलसरी	पोगड़, पोगड़ा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
महळंगरं	पगडेमर पगड़			Mimusops Elengi	Surinam medlar.

स्थान—मोरसलीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं ।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—यह वृक्ष ४०–५० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ छोटी होतीहै, इसके बारह महीनेही पत्ते बने रहतेहैं । इसके पूरे बढ़हुए पत्ते चिकने होवेहैं । उष्णकालमें इसके अच्छी सुगंधवाले छोटे २ बहुतसे पुष्प लगतेहैं उनके गिर जानेपर फल लगतेहैं जो प्राय एक इंच लंबे और ऊपरसे साफ होतेहैं, पकनेपर पीले रंगके होजातेहैं, इनमें कुछ मीठी गिर और एक बीज निकलताहै । इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै । इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै ।

प्रयोग—(१) मोलसरी–शीतल, मधुर, कषेली, विषनाशक और हृद्य है (२) इसका कच्चा फल ग्राहीहै । इसको मुंहमें चबाते रहनेसे दांत दृढ़ हो जातेहै (३) इसकी छाल ग्राही होतीहै (४) इसके काथके गंडूष (कुल्ले) करनेसे मसूड़े और दांत दृढ हो जातेहैं (५) इसकी छालका हिम पिलानेसे मूत्राशय और मूत्रकी नालीकी झिल्लीका निस्राव बन्ध होजाताहै (६) छाल का काथ पिलानेसे ज्वर छूट जाताहै (७) इसके फल और पुष्पोंका दूसरी ग्राही औषधियोंके साथ काथ बनाके उससे चांदी और घावोंको धोतेहैं (८) पुष्पोंके चूर्णको सूंघनेसे नाकमेंसे बहुतसा दूषित जल बहके मस्तकपीड़ा मिटजातीहै (९) स्त्रियोंके गर्भ रहनेके लिये इसकी छालका प्रयोग बहुत किया जाताहै (१०) भभके में इसके पुष्पोंका अर्क निकालते हैं वह बहुत सुगंधयुक्त और उत्तेजक होताहै (११)इसके बीजोंको पीस बत्ती बनाके गुदामें देनेसे स्वाभाविक बद्धकोष्ठ मिटताहै (१२) बच्चोंका बद्धकोष्ठ मिटानेके लिये इसके बीजोंकी मीगी की बत्ती देनी चाहिये जो आवश्यकता होतो इस बत्तीमें पुराना घी मिला देना चाहिये, इस बत्तीको गुदामें देनेके १५ मिनट पीछे मलकी कठोर गांठें दस्तके साथ निकल जातीहैं (१३) इसके पकेहुए फलकी गिर कुछ मीठी और ग्राही है इसलिये पुराने आमातिसारको मिटानेकेलिये काममें आतीहै (१४) इसके फलका लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१५) इसकी लकड़ीके कोयलों का मंजन करनेसे दांत साफ और दृढ रहतेहैं (१६) इसके फलकी गुठली मुंहमें रखनेसे दांत दृढ होजातेहैं (१७) इसकी छालके चूर्णमें बराबर बूरा मिलाके फक्की देनेसे गर्भाशयसे पानीका बहना बन्ध होताहै (१८) इसके

पुष्प मधुर, शीतल, कपैले, स्निग्ध, ग्राही, विषद और वातलहैं (१६) इसके फलोंका मुरब्बा बनाया जाताहै। इसके बीजोंको यंत्रमें दबाके तेल निकालतेहैं। उस तेलसे भोजनके पदार्थ बनाये जातेहैं। इसके पुष्पोंमेंसे उड़नेवाला तेल निकलता है।

संख्या (३५०)

(सं०) बदरी, कंटकी, कर्कन्धूः, वक्रकण्टः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बोरड़ी, बोर	बेर वृक्षका पेड़	बोरडी	बेरीचेझाड	कुलगाछ	बेर	गांङ्गेच ट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
यलन्दै	यलचीगिड़	नबूक्	कुनार	Zizyphus jujuba Z. mauritiana.	The Indian jujube or chinese date Zizyphus

स्थान—बेरीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं और अपने आप भी उगतेहैं।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसका वृक्ष ३० से ५० फुट ऊंचा होताहै। इसकी पेदड़ छोटी, खड़ी परंतु बहुत सीधी नहीं होतीहै, इसकी गुलाई ६ से ८ और कभी कभी १० फुटकी होतीहै, इसकी बहुतसी शाखें चारों ओर फैलतीहैं। इसकी छाल आधइंच मोटी गहरी, भूरी और प्रायः काले रंगकी होतीहै, उसमें छोटी २ दरारें होतीहैं, जो छालके पार निकल जातीहैं, फागुन और चैत्रमें इसके पुराने पत्ते गिरते जातेहैं और नवीन निकलते जातेहैं। अषाढ़ श्रावणमें इसके पत्ते दुबारा निकलतेहैं बहुधा चैत्रसे जेठ तक इसके पुष्प लगा करतेहैं परन्तु दूसरी ऋतुओंमें भी पुष्प लगतेहैं मृगशिर से फागुन तक इसके फल पकतेहैं। इसकी डालियोंके अन्तके भाग लटक जातेहैं, इसकी छोटी और बड़ी टहनियोंमें दो दो कांटे लगतेहैं उनमें एक सीधा और दूसरा मुड़ा हुआ होताहै। इसके पत्ते ऊपरकी ओरसे बहुधा गहरे हरे रंगके और चिकने होतेहैं और नीचेकी ओरसे कुछ सफेद होतेहैं आकारमें कुछ लम्बे, गोल होते

हैं। इसके कुछ हरे पीले पुष्प लगतेहैं। इसके फल गोल और कुछ लम्बे हरे रंगके होतेहैं ये पकजानेपर नारंजी या लाल रङ्गके होजातेहैं, फलोंकी गुठली कठोर होतीहै और उसमें बहुधा दो मींगी निकलती हैं। इसके एक प्रकार का गोंद और लाख लगतीहै। इसकी छालमेंसे लाल रग निकाला जाताहै। इसकी मींगीमेंसे तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) बेर – मीठे, कषेले, खट्ट, रोचक, उष्ण, ग्राही, पचनेमें भारी और कुछ सारकहैं (२) रूक्षता (खुश्की) और थकावट मिटानेके लिये पुराने बेर खिलाने चाहियें। ये पचनेमें लघुहैं (३) पित्तसम्बन्धी रोग मिटानेके लिये इनकी मींगी खिलानी चाहिये (४) मिश्रीकी चासनी में लौंग और बेरकी मींगी मिलाके चटानेसे खाली होवइ या जी मचलाना मिटताहै (५) ज्वरमें पित्तकी तृषा मिटानेकेलिये इसकी मींगी और मलहठीके चूर्णको थोड़ा२ मुंहमें डालते रहना चाहिये (६) धूपमें सुखाये हुए बेर और इसीकी जड़को औटाके पित्तज्वरमें पिलाना चाहिये (७) पेमली बेर खानेसे रुधिर शुद्ध हो जाताहै (८) आधे पकेहुए बेरोंके नोंन, मिरच और जीरा लगाके खानेसे पाचन शक्ति बढ़तीहै (९) इसकी छालका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१०) ज्वर मिटानेकेलियेभी छालका काथ पिलाना चाहिये (११) ब्राह्मीके साथ इसकी जड़की छालका काथ बनाके पिलानेसे प्रलाप मिटताहै (१२) पुराने घात और फोड़ोंपर छालका चूर्ण बुरकातेहैं या लेप करतेहैं (१३) मूत्र निकलते समय जो पीड़ा होतीहै उसको मिटानेकेलिये इसके पत्तोंको पीस नल, इन्द्री और पीठके नीचे कमरमें लेप करना चाहिये (१४) अतिसार मिटानेके लिये कच्चे बेर खिलाना चाहिये (१५) गूलर और बेरीके कोमल पत्तोंको पीसके लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (१६) फोड़े, पीपदार फोड़े और अदीठको जल्दी पकानेके लिये इसके कोमल पत्ते और टहनियोंको पीस गर्म करके लेप करना चाहिये (१७) इसकी और बंबूलकी जड़की छालका हिम, फांट या काथसे कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (१८) इन दोनोंका क्वाथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१९) उपदंशसे या रसकपूर आदि औषधिसे जो मुखपाक होताहै उसको मिटानेके लिये उक्त दोनोंकी छालके हिम, फांट या काथसे कुल्ले करातेहैं (२०) इसके

पत्तोंको पीस कनपाटियों पर लेप करनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (२१) इसके और नीमके पत्तोंको पीसके लगानेसे बाल बढ़तेहैं (२२) इसके कोमल पत्तोंको नींबूके रसके साथ पीसके लेप करनेसे दाहज्वर छूटताहै (२३) इसके पत्तोंके कल्कमें सेंधानमक मिला उसको घीमें तलके खिलानेसे स्वरभंग, श्वास और कास मिटताहै (२४) इसके पत्तोंपर मैनसिलका लेपकर धूपमें सुखा दूधमें भिगोके उनका धूम्रपान कराने से कास और कुत्ताधांसी मिटती है (२५) इसके और नीमके पत्ते पीसके लगानेसे नासूर मिटताहै (२६) इसके ३ मासे पत्ते और २ मासे जीरा पानीसे पीसके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (२७) बेरकी गुठलीकी मींगीको गुड़के साथ खानेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै (२८) इसके पत्तोंको पीसके मलनेसे पुस्तक्षाय मिटतीहै (२९) इसकी कोमल कोपलोंको दहीके साथ पीसके कई वेर मलनेसे अग्निदग्धका दाग मिटताहै (३०) बेरकी गुठली के बाहिर के भागको गुड़के साथ खानेसे सब प्रकारकी मसूरिका पक जाती है ।

संख्या (३५१)

(सं०) भूबदरी, सूक्ष्मबदरी, वल्लीबदरी, क्षितिबदरी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
झड़बोर	झड़बेरी	चणियाबोर	भूयबोर	मेटोकुल	झाड़ीबेरं	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		नब्क़ सहराई	कुनार, दश्ती	Zizyphus nummularia Z Lotus	

स्थान—झड़बेरीके झाड़ पंजाब, सिंध, गुजरात, दक्खन, राजपूताना और पश्चिमोत्तर हिंदुस्थान आदि कई प्रदेशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसके झाड़ ६ से ८ और कभी कभी १५ फुट ऊंचे बढ़ जातेहैं । इसके सबके सब पत्ते नहीं गिरतेहैं । उष्णकालके प्रारम्भमें इसके पुराने पत्ते, बहुधा गिर जातेहैं और गिरनेके पीछेही नवीन पत्ते निकल आतेहैं

इसका फल गोल होताहै जो पकनेपर लाल रंगका और चमकदार होजाताहै। इसकी कठोर गुठलीमें दो खाने और उनमें दो मींगी होतीहैं इसकी छोटी डालियों के दो दो तीखे कांटे लगतेहैं जिनमें एक सीधा और दूसरा मुड़ाहुआ होताहै। इसके पत्ते कुछ गोल और छोटे होतेहैं। इसके १० से २० तक पुष्पोंके बहुतसे गुच्छे लगतेहैं।

फूलने फलनेका समय—फागुनसे जेठतक इसके पुष्प लगतेहैं आसोजसे पोषतक इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके फल खट्टे, कपेले, कुछ मधुर, स्निग्ध, रोचक, तिक्त शीतल और ग्राहीहै और पित्तके रोगोंको मिटातेहैं (२) विगड़े हुए व्रणों पर इसकी जड़की छालका पुल्टिस बांधते हैं (३) इसकी जड़ की छाल के काथसे कुल्ले करने से सब प्रकारका मुखपाक मिटता है (४) मीठे तेलके साथ इसके पत्तों को पीसके अग्नि दग्धपर लगाना चाहिये (५) बेरकी राखको जलके साथ शरीरपर मलने से रंग सुधरता है (६) बंबूलकी और इसकी जड़की छालको औटाके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै।

संख्या (३५२)

(सं) बंधूकः, वन्धुजीवकः, मध्यन्दिनः, माध्याह्निकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दुपहरिया	दोपहरिया	बपोरिया	दुपारी	बाधुलिफुलेर गाछ	गुलदुपहरिया	मंकेन

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कौजिशाहि	बंदुगे			Pentapetes phoenicia. Domboya p	The flame tree of the woods

स्थान—इसका झाड़ हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें बहुत होताहै।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसके चमकदार किरमिची रंगके दो इंच लम्बे पुष्प लगतेहैं। इसके पत्ते कुछ लम्बे होतेहैं। इसके बारह महीनेही पुष्प लगतेहैं, परन्तु वर्षा ऋतुमें तो अवश्य लगतेहैं।

प्रयोग--(१) दुपहारिया-ग्राही, लघु, कुछ उष्ण और ज्वरनाशक है (२) इसके पुष्पोंकी पखड़ियोंका रस नाकमें टपकानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (३) इसके दो तोले पुष्पों को घीमें तल, ४ रती जीरा और ४ रती नागकेशरके साथ पीस उनमें मक्खन और मिश्री मिला, गोली बनाके दिनमें दो वेर देने से आमातिसार मिटता है (४) इसकी २, २॥ मासे ताजी जड़को थोड़ी पीपलके साथ पीसके तीन २ चार २ घंटेके अंतरसे देनेसे तीव्र आमातिसार मिटताहै (५) इसकी जड़का स्वाद अच्छाहै ।



संख्या (३५३)

(स०) वंध्याकर्कोटकी, देवी, मनोज्ञा, नागारिः ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बांझककोडा	बांझककोडा	वाझकंटोला	वाझकर्टोली	तितकाँकड़ी	बाझखाखसा	ईश्वरी

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	ईश्वरि			Momordica dioica. M Missionis.	

स्थान—वांझ ककोड़ेकी वेलें हिन्दुस्थानमें बहुधा सबठौर होतीहैं ।

प्रयोग—(१)बांझककोड़ा-कड़वा, चरपरा, लघु, उष्ण, शोधन और विषनाशकहै (२) इसका कंद बहुत चेपदार होताहै स्त्री जातिकी वेलका कंद पुरुष जातिकी वेलसे अधिक चेपदार होताहै (३) इसके कंदका मुरब्बा खिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (४) इसकी मात्रा ७॥ मासे या कुछ अधिक दिनमें दो वेर देना चाहिये (५) आंतोंके कई रोगोंमें इसके कंदका मुरब्बा दिया जाताहै (६) मस्तक सम्बन्धी रोगोंकी यह बहुत उत्तम औषधिहै (७) नारियलकी गिरी, कालीमिरच रक्तचंदन और दूसरी औषधियोंके साथ इसके कंदको पीसके लेपकरनेसे मस्तककी सब प्रकारका पीड़ा मिटतीहै (८) विसमरे (छिपकिली) के मूत्रसे जो शोथ हो जातीहै उसको मिटानेके लिये इसकी जड़

के रसका लेप करना चाहिये (९) इसके सूखे फलके चूर्णको सूंघनेसे छींक बहुत आतीहै (१०) स्त्रीजातिके कंदकी फक्की देनेसे सूखी खांसी दूर हो जातीहै (११) सर्पके काटनेसे जो घाव हो जातेहैं उनपर पुरुषजाति की बेल के कंदका लेप करना चाहिये (१२) ज्वर छूटनेके पीछे उस रोगीको इसके कच्चे फलका शाक खिलाना चाहिये (१३) इसके कंदको पानीके साथ घिस के लेप करनेसे सर्प, बिच्छू और बिल्ली आदिका विष उतरताहै इसके १ तोले कंदको मधु और शक्करके साथ चटानेसे पथरी गलजातीहै (१४) इसके कंद के छालीके मूत्रकी भावना दे कांजीके साथ पीसके सुंघानेसे विषकी मूर्च्छा मिटती है ।

———o———

संख्या (३५४)

(सं०) बला, वाट्यालकः, भद्रोदनी, समंगा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खरेंटी	खिरैंटी	खरेटी	लघुचिकणा	बेढेला	खरैहटी	पिलमुच वपुलगमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	चिट्टहरळु गिड		-	Sida Cordifolia. S herbacea.	The horn bean leaved sida.

स्थान—इसके बूंटे हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होतेहैं ।

प्रयोग—(१) बल-कड़वी, अत्यन्त मीठी, चरपरी और उष्णहै बल और वीर्य्यको पुष्ट करतीहै (२) इसकी जड़का क्वाथ पिलानेसे पसीना आताहै, पेटकी पीड़ा मिटतीहै और शरीरकी शक्ति बढ़तीहै (३) इसकी जड़के क्वाथमें पीपल बुरकाके पीनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (४) रोग मिटनेके पीछे जो निर्बलता रहती है उसको मिटानेके लिये इसकी जड़की छालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला फक्की देके ऊपर दूध पिलाना चाहिये (५) इसका हिम पिलानेसे पसीना आताहै (६) सोंठके साथ इसका फांट करके पिलानेसे ज्वर उतरताहै (७) इसकी जड़के क्वाथमें जायफल घिसके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (८) इसके

पत्तोंको कालीमिरचके साथ घोट छानके पिलानेसे दाह, और मिश्रीके साथ पिलानेसे मूत्र सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (९) इसकी जड़की छाल, लौंग, जाविश्री और मिश्रीको पीस दूधमें छानके पिलानेसे स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटतीहै (१०) इसकी जड़को कबूतरकी बीटके साथ पीसके लेप करनेसे फुंसियां फूट जातीहैं (११) इसके पत्तोंके तिल्लीका तेल चुपड़ अग्निपर तपाके बांधने से फोड़े शीघ्रतासे पकतेहैं (१२) इसके और बंबूलके पत्तोंको पीस टिकड़ी बनाके दुखती हुई आंखपर बांधना चाहिये (१३) इसकी जड़का क्वाथ पिलानेसे मूत्र अधिक लगकर गठिया मिटतीहै (१४) इसके पत्तोंको भिगो, मल छान, मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१५) इसकी जड़ गलेमें बांधनेसे ज्वर छूट जातीहै (१६) बलबीजका पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (१७) बलबीजके चूर्णमें मिश्री मिलाके दूधके साथ फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१८) बलबीजोंका क्वाथ पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (१९) मुरब्बेकी हरड़ खिलाके ऊपर बलबीजका क्वाथ पिलानेसे दस्तकी बार २ शंकाका होना मिटताहै (२०) इसकी जड़का हिम पिलानेसे दाह मिटतीहै (२१) इसके हिमकी साथ अतीसकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (२२) इसकी जड़को सोंठकी साथ औटाके पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (२३) इसकी जड़के क्वाथपर सेकी हुई हींग और सैंधानमक बुरकाके पिलानेसे पक्षाघात और आर्दित मिटताहै (२४) वातव्याधि मिटाने के लिये जो तेल बनाये जातेहैं उनमें इसकी जड़ मिलाई जातीहै (२५) इसकी जड़की छालके चूर्णकी फकी लेके ऊपर मिश्री मिलाहुआ दूध पीनेसे चिनग मिटतीहै (२६) इसकी जड़की छालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला, १ तोलेकी फंकी देके ऊपर दूध पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (२७) इस चूर्णको मधु और दूधके साथ लेनेसे भी श्वेत प्रदर मिटताहै (२८) इसके क्वाथमें बराबर दूध मिलाकर पिलानेसे आर्दित मिटताहै (२९) इसकी ५ मासे जड़ पानीके साथ पीसके पिलानेसे विषूचिका मिटतीहै (३०) इसके चूर्णको मधु और शक्कर के साथ लेनेसे स्वरभंग मिटताहै (३१) इसका क्वाथ पिलानेसे अवबाहुक रोग मिटताहै (३२) इसके रस या क्वाथसे सिद्ध किये हुए एरंडके तेलको दूधमें डालके पिलानेसे आध्मान, शूल, और अंडवृद्धि मिटतीहै (३३) इसका यूष

बनाके पिलानेसे वातरोग मिटतेहैं (३४) इसका काथ और कल्क एक भाग दूध चारभाग, इनसे तेल सिद्ध कर, ऐसे दश बेर सिद्धकिये हुए तेलके सेवनसे बातरक्त औरं रक्तपित्त मिटताहै (३५) पुष्य नक्षत्रके दिन इसकी जड़को हाथमें बांधनेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै।

संख्या (३५५)

(सं०) अतिबला, बल्या, बलिका, विंककता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
डाबी	कंघी ककहिया	खपाट्य	विकंकती	पीतवाकुलि	कंघी	पेद्दमुत्तवनूगुबंड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तुत्तियतै	हिरिचिट्टहर-लुगिड	मश्तुलगूल	दरख्तेशानाह	Abuliton ındıcum sida indica.	

स्थान—इसके छोटे गुल्म हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें सब ठौर होतेहैं । इसके बीजोंमेंसे चेप बहुत निकलताहै ।

प्रयोग—(१) अतिवला-तिक्त, चरपरी, मधुर, खट्टी और कृमिनाशक है (२) इसके पत्तोंमेंसे चेपदार गाढ़ा रस निकालके औषधियोंकी तीक्ष्णता मिटानेके लिये पिलातेहैं (३) इसकी जड़का हिम पिलानेसे ज्वरकी दाह मिटतीहै (४) कुष्ठके रोगीको इसका हिम पिलाना चाहिये (५) इसके बीज सारकहैं और अर्शकी पीड़ा मिटानेके लिये इनकी फकी दीजातीहैं (६) इसके बीजोंका चेप चरपराहटको मिटाता है (७) इसके बीज और अडूसेको ओटाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (८) अतिसार मिटानेके लिये इसकी छालका काथ पिलाना चाहिये (९) इसके हरेक अंग छातीके रोग मिटानेके काममें आतेहैं १०) ज्वरकी दाह मिटानेके लिये इसके पत्तोंका हिम पिलाना चाहिये (११) इसकी छाल और बीजोंका हिम मूत्रवर्द्धकहै (१२)इसकी छालके काथसे कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा और

मसूढ़ोंका ढीलापन मिटताहै (१३) उष्ण दूधको इसकी टहनीसे हिलानेसे जम जाताहै जम जानेके पीछे उसमेंसे जो जल निकलताहै उसको पिलानेमे अर्श मिटताहै (१४) इसके बीजोंका पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढताहै (१५) इसके पत्तोंको पकाके खानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध हो जाताहै (१६) इसकी जड़का हिम पिलानेसे दाहके साथ वार २ मूत्र आना बन्ध होजाताहै (१७) इसके पत्तोंके हिममें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रके साथ रुधिरका आना बन्ध हो जाताहै (१८) २ से ७॥ मासे इसके बीजोंको दूसरी सारक औषधियोंके साथ देनेसे वे सारकपनका काम करतेहैं (१९) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२०) पुरानी खांसीको मिटानेकेलिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये (२१) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे मूत्राशयकी सूजन उतरतीहै (२२) बच्चोंकी गुदाके इसके बीजोंकी धूनी देनेसे सफेद, छोटे और गोल कीड़े, (जिनको मारवाड़ी में चुरणियें कहतेहैं) मर जातेहैं (२३) कन्याके हाथसे कते हुए सूतसे इसकी जड़को स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे गर्भका गिरना बन्ध हो जाताहै (२४) इसके ७ पत्तोंको पानीके साथ पीस उनका रस निकाल बूरा मिलाके पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै (२५) इसका ७ मासे चूर्ण शहदके साथ चाटनेसे और दाल चांवलका पथ्य खानेसे कामला रोग मिटताहै (२६) घावपर इसके पत्ते बांधनेसे वह भर जाताहै ।

संख्या (३५६)

(सं०) नागबला, चतुःफला, गांगेरुकी, झषा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गंगेरण	गुलशकरी	गंगेटी	नागबला	गोरक्षचाकुल	गंगेरण(न)	जिजि(वि)लिके चट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	जिबिलिक			Sida spinosa S Alba & alnifolia.	

स्थान—गंगेरन हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें अर्थात् पश्चिमोत्तर देशसे सीलोन तक होतीहै ।

प्रयोग—(१) गंगेरन-खट्टी, मधुर, कपेली, पचनेमें भारी, चरपरी और उष्णहै (२) इसके पत्ते औषधियोंकी चरपराहटको मिटातेहैं और ज्वर में शान्ति पैदा करतेहैं (३) इसके पत्तोंको कालीमिरचके साथ पीसके पिलानेसे नया और पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४) मूत्रकी दाह मिटानकेलिये इसकी जड़का हिम पिलाना चाहिये (५) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पसीना आताहै (६) इसकी जडकी छालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला एक तोले भरकी फक्की लेके ऊपर दूध पीनेसे शरीरकी निर्बलता मिटतीहै (७) इसके पत्तोंको जलमें भिगो मल छानके पिलानेसे प्रमेह मिटताहै (८) इसकी जड़का काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (९) इसकी जड़को पानीके साथ पीस के स्तनोंपर लेप करनेसे स्तन कठोर होजातेहैं (१०) इसकी जड़को दूधमें ओटाके पीनेसे हृद्रोग, श्वास और कास मिटताहै (११) जड़के चूर्णकी दूधके साथ फक्की देनेसे श्वास और कास मिटताहै ।

संख्या (३५७)

(सं०) महाबला, वर्षपुष्पा, पीतपुष्पी, सहदेवी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सहदेवी(ई)	सहदेवी(ई)	सहदेवी	महाबला	पीतबेडेला	सहदेई	सहदेवि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सहदेवि	सहदेवि			Sida Rhombifolia S. canariensis.	The ash colored flea bane.

स्थान—महाबला हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होतीहै ।

प्रयोग—(१) सहदेवी-मधुर, बल्य, वृष्य और त्रिदोषनाशक है (२) इसके पंचांगका काथ पिलानेसे पसीना होके ज्वर उतर जाताहै (३) इसके बीजोंका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (४) इसके बीजोंको

छानके पिलानेसे विष उतरताहै (५) इसके पंचांगको घोट छानके पिनेसे चिनग मिटतीहै (६) इसको ओटाके पिलानेसे मूत्राशयकी नशोंकी एठन मटतीहै (७) आंखोंके ऊपर इसके पुष्प बांधनेसे आंखकी ललाई मिटती है (८) इसकी जड़को ओटा छानकर पिलानेसे गठिया मिटताहै (९) इसकी जड़को सोंठके साथ ओटाके पिलानेसे विषमज्वर छूटताहै (१०) इसकी जड़के काथपर पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे शीतवात, कंपवात और दाह मिट जातीहै (११) इसको ऋतु समयमें पिलानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (१२) कंठमें बांधनेसे कंठमाला मिटतीहै (१३) कपिलागौके दूधके साथ इसका सेवन करनेसे वन्ध्यापन मिटताहै (१४) घृतके साथ इसका सेवन करनेसे शून्यवाय मिटतीहै ।

संख्या (३५८)

(सं०) राजबला, प्रसारणी, चारुपर्णी, प्रतानिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	पसरन	नारी	चादवेल	गंधभादुल्य	स्रींप	गोंतेमगोरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	सौरणेगिड्ड			Paederia foetida P. Ovata	

स्थान—यह—मध्य और पूर्वी हिमालय, बंगाल, आसाम आदि देशोंमें होतीहै ।

पहिचान—इसकी बड़ी भारी बेल होती है ।

प्रयोग—(१) राजबला-सारक, उष्ण, वृष्य, चरपरी, कड़वी, लघु, पचनेमें भारी और उष्णवीर्य है (२) रोग मिटनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये और रोगीकी नीरोगता बढ़ानेके लिये इसके पत्तोंको ओटाके उनका झोल पिलाना चाहिये (३) इसके पंचांगको ओटाके पिलानेसे और मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै (४) इसकी जड़वामकहै (५) इसके पत्तोंका ३॥ मासे

स्वरस पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (६) इसके पत्तोंका शाक बनाके खानेसे निर्बलता मिटतीहै और नीरोगता बढतीहै (७) इसके पत्तोंको रोगके बिना भोजनके काममें नहीं लाने चाहिये ।

संख्या (३५६)

(सं०) बालकं, ह्रीवेरं, बर्हिष्ठं, जलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नेत्रबालो	सुगंधवाला	धोळोवाळो	गंधवाला	गधवाला	नेत्रवाला	कुरु वेरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कुरु वेर	मुडिवाळ			Pavonia odorata Hibiscus odortlus	

स्थान - सुगंधवालेके पेड़ पश्चिमोत्तर देश, सिन्ध, बांदा, पश्चिमप्रायद्वीप और सीलोनतक पैदा होते हैं । यह उत्तम सुगंधकेलिये बागोंमें बोया जाताहै ।

प्रयोग—(१) सुगंधवाला-मधुर, कड़वा, दीपन, पाचन, शीतल, लघु और रूक्ष होता है । कफ, पित्त, वमन, तृषा, कुष्ठ, अतिसार, ज्वर, श्वास, अरुचि, व्रण, विसर्प, हृद्रोग, लालास्राव, रुधिरविकार, रक्तपित्त और कंडूको मिटाताहै (२) इसकी सुगंधित जड़ चरपरी ठण्ढी और पेटका दर्द मिटानेवालीहै (३) ज्वर, पित्तशोथ और भीतरके यंत्रोंमेंसे रुधिरके बहनेको रोकने के लिये इन रोगोंकी दूसरी औषधियोंमें इसको मिलाके देना चाहिये (४) सुगंधवाला और बीलगिरकी फकी देनेसे आमातिसार मिटताहै (५) इसके पानीसे निर्बल मनुष्यकी तृषा शान्त होतीहै (६) सुगंधवालेको शकर और मधुके साथ चटाके चांवलोंका पानी पिलानेसे बालकोंका रक्तातिसार, श्वास और कास मिटताहै (७) २ तोले नेत्रवालेको ३ पाव जलमें औटा, आधा रख, छानके पिलानेसे संग्रहणी मिटतीहै (८) इसको बकरीके ताजे दूध में पीसके इन्द्रीपर मलनेसे उसकी शक्ति बढतीहै (९) शीतला निकलने के पहिले इसको नींबूके रसके साथ चटानेसे शीतला कम निकलतीहै ।

संख्या (३६०)

(सं०) ब्रह्मदण्डी, अजदण्डी, कंटपत्रफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
ब्रह्मदण्डि				Tricholepis glabberima. Serratula Indica	

गुण—(१) ब्रह्मदण्डी--चरपरी, उष्ण, वृष्य और कड़वीहै वातरोग, शोथ और कफको मिटातीहै और स्नायुजालकी शक्तिको बढातीहै ।

संख्या (३६१)

(सं०) ब्राह्मी, सरस्वती, सोमा, सत्यनामा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ब्राह्मी	बरंभी, ब्रह्मी	विद्याब्राह्मी	ब्राह्मी	ब्रह्मीशाक	ब्रह्मी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Herpestis mounniera H spalthulata	Indian penny wort

स्थान—ब्राह्मी हिन्दुस्थानमें पंजाबसे सीलोन और सिंघापुर तक नदी नालोंके पास या तालाबके किनारे आर्द्र स्थानोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१) ब्राह्मी—शीतल, कषैली, कड़वी, सारक, पचनेमें हल्की, रस और विपाकमें मधुर, और पिच्छलहै आयु, बुद्धि, स्मृति और मूत्रवर्द्धकहै (२) औषधी लेनेतक जो बद्धकोष्ठ मिटता रहे ऐसे बद्धकोष्ठसे जिसका मूत्र बन्ध हो जावे ऐसी दशामें विशेष करके इसका प्रयोग करना चाहिये (३) ब्राह्मीके रसको घासके तेलमें मिलाके गठियाकी पीड़ापर मर्दन करना

चाहिये (४) ब्राह्मी स्नायुजालकी शक्ति बढातीहै (५) ब्राह्मीका क्वाथ पिलानेसे गलेका भारीपन मिटताहै (६) उन्माद और अपस्मार मिटानेके लिये ब्राह्मीके योगसे कई प्रकारके घृत बनाये जातेहैं (७) इसके पत्तोंके ६ मासे ताजे रसमें २॥ मासे कूठ और मधु मिलाके पिलानेसे उन्माद मिटताहै (८) इसके पत्तोंको घृतमें तलके खिलानेसे स्वरभंग मिटताहै (९) धातुओं-का विष उतारनेके लिये इसकी जड़का प्रयोग किया जाताहै (१०) इसके पत्तोंका ३॥ मासे रस पिलानेसे बच्चोंको वमन और विरेचन होके प्रतिश्याय और तीव्र कास मिट जाताहै (११) इसके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे मसूरिका मिटतीहै ।

संख्या (३६२)

(सं०) मंडूकपर्णी, ब्रह्ममांडूकी, सुप्रिया, दर्दुरच्छदा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजावी	तैलंगी
ब्राह्मीभेद	ब्रह्ममाडूकी चरेली	खडभरामी	ब्राह्मी	थुल्कुडि	मींडकी	मंडूकब्रह्म कुराकु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वल्लारइ	वदलगा			Hydrocotyle asiatica H Wightiana.	Asiatic penny wort

स्थान-मंडूकपर्णी हिन्दुस्थानके आर्द्रस्थानोंमें वहुत ठौर पैदा होतीहै ।

पहिचान—इसके ताजे पत्तोंमें किसी प्रकारकी गंध नहीं आतीहै परंतु जब उनको हाथसे मलें तो उनमें मंद २ सी चरपरी सुगंध आने लगतीहै ।

प्रयोग—(१) यह-शीतल, लघु, सारक और रस और विपाकमें मधुर है (२) इसको सूर्यकी धूपमें अथवा अग्निके योगसे सुखानेसे इसमें जो उड़ने-वाला तेलहै वह उड जाताहै, इस औषधिमें प्रयोगका मुख्य पदार्थ तेलहीहै । इसलिये बहुत सावधानीसे छायामें सुखाये हुए इसके केवल पत्तोंके चूर्णको औषधि के काममें लातेहैं । इनके चूर्णको किसी शीशीमें ऐसा बन्ध करना चाहियें कि उसमें शील नहीं पहुंचने पावे । १५ सेर ताजे पत्तोंका प्रायः २ सेर चूर्ण कुछ पीलरा हरे रंग

का होताहै (३) इसके ताजे पत्तोंका स्वाद कड़वा और बुरा होताहै परंतु भली भांति सूखजाने पर वहभी नहीं रहताहै (४) कोढ और उपदंशके प्रारम्भमें यह औषधि गुण करतीहै परंतु बढीहुई दशामें विशेष गुण नहीं करतीहै यह केवल उस कुष्ठमें गुण करतीहै कि जिसमें छोटी २ फुन्सियां होके फैलती जातीहैं (५) बहुत से रोगोंमें मूत्रवृद्धि करनेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै (६) रजोधर्म को शुद्ध करनेके लिये बहुधा इसका प्रयोग किया जाताहै (७) जो रोग सब शरीरमें हो और एक अंगमें विशेष हो तो इस औषधिको खिलाने पिलाने के सिवाय इसके चूर्णका उस ठौरपर मर्दन करना, पुल्टिस बांधना या लेप करना चाहिये (८) विगड़े हुए फोड़ेपर इसका चूर्ण बुरकाना चाहिये और २॥ से ४ रती तक चूर्णकी फक्की नित्य देना चाहिये और इसका पुल्टिस भी बांधना चाहिये (९) पानीसे धुलीहुई और अच्छे हवादार मकानमें छायामें पूरी सुखाई हुई जड और पत्तोंका ५—५ रती चूर्ण दिनमें दो तीन वेर देना चाहिये (१०) २० से ४० वर्षकी आयुवाले कोढी मनुष्यको इसके १० १० रती चूर्णको नित्य दो सप्ताह तक देके फिर २॥ रती बढाके एक सप्ताह तक देना चाहिये ऐसे हर सप्ताहमें २॥--२॥ रती चूर्ण बढाते हुए ३० रती तक बढाके एक महीने तक ३०—३० रती देना चाहिये फिर उसी क्रमसे २॥—२॥ रती प्रति सप्ताहमें घटाते हुए ५ रती तक लाके छोडदेना चाहिये और एक महीने तक बन्द रखना चाहिये, इस रीतिसे एक प्रयोग कर फिर दुबारा ऐसेही क-राना चाहिये, इस चूर्णको सोते समय उष्ण जलके साथ लेनेका प्रारम्भ करे जब वह १५ रतीतक पहुंच जावे तब इसीके दो बराबर विभाग करके एक प्रातःकाल और दूसरा सायंकालको लियाकरे इसी रीतिसे बढाते हुए उक्त प्रमाण तक बढाना चाहिये और उसी रीतिसे घटाके छोड देना चाहिये (११) इसका लेप बनानेकी यह रीतिहै कि पत्तोंको ठंढे जलसे महीन पीसकर लेप करनेयोग्य गाढा करलेना चाहिये, लेप बहुत पतला नहीं रखना चाहिये (१२) इसका शर्बत बनानेकी यह रीतिहै कि इसके ८ तोले चूर्णको सवासेर पानीमें बहुत मंद अंचसे ओटा छान उसमें सेरभर बूरा मिलाके शर्बत बना लेना चाहिये इस शर्बतकी सवा तोलेकी मात्राहै और इसका प्रयोग भी उक्त रीतिसे करना चा-हिये, त्वचाके रोगोंमें रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका प्रयोग बहुत उत्तमहै (१३)

इसका द्रवसार बनानेकी यह रितिहै कि इसके २॥ तोले चूर्णका २॥ तोले द्रवसार बना लेना चाहिये और उसकी मात्रा ५ से ७॥ रती तक दिनमें तीन बेर देना चाहिये (१४) इसका काथ बनानेकी यह रीति है कि इसके सूखे पोधेके ८ तोले पंचांगको सवासर जलमें ओटाकर अढाई पाव रख लेना चाहिये (१५) स्नान करनेके लिये इसका जल बनानेकी रीति—इसके ५ सेर ताजे पोधेको गर्म जलमें ओटा छान उस जलमें बैठनेसे त्वचा सम्बन्धी रोगों में बहुत उपकार होताहै (१६) इसके पत्ते और मक्खनको जलमें ओटा सब पानी जलाके उनको चटानेसे मस्तिष्क सम्बन्धी और उन्मादके रोग मिटतेहैं।

संख्या (३६३)

(सं०) भल्लातकः, अरुष्करः, अग्निमुखः, स्फोटहतुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भिलावो	भिलावा भेला	भिलामा	बिबव।	भेला	भिलावे	जीड़िगिंजा

द्राविड़ी	कर्नाटकनी	अरबी	फारसी	लॉटिन	अंगरेजी
शेना कोट्टै	गेरुबीजा	हब्बुलफ़हम	बलादुर	Somecarpus Anacardium S latifolius.	Marking nut

स्थान—भिलावेके वृक्ष हिमालयमें सतलज से पूर्व की ओर आसामतक और हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ३० फुटतक होतीहै। इसकी पेदड़ खड़ी होतीहै उसकी गुलाई ४ फुटकी होतीहै। इसकी छोटी शाखाओंके नीचे कुछ तीखे रुँए होतेहैं। इसके ६ से १८ इंच लम्बे पत्ते डालियोंके अन्तमें लगे रहते हैं उनका शिरा गोल होताहै। इसके पुराने पत्ते माघमें गिरजातेहैं और फागुनमें नवीन आजातेहैं। इसकी छाल एक इंच मोटी धुंएके रंगकी सफेद और कुछ काली होतीहै। इस वृक्षके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने फलने का समय—इसके पत्ते निकलनेके पीछेही बहुधा पुष्प लग जातेहैं परन्तु इसके सिवाय और भी कई बेर पुष्प लगतेहैं। कातीसे

माघतक इसके फल पकते हैं। इसके फलका छिलका रंगतके काममें आता है। १०० तोले भिलावेकी गिरमेंसे ३२ तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) इसका पकाहुआ फल—कपेला, ररा और विपाक में चरपरा, मधुर, उष्ण, उत्तेजक, पाचक, स्नायु बलवर्द्धक और फफोले पैदा करने वाला है। मंदाग्नि, त्वचाके रोग, अर्श और स्नायु जालकी निर्बलता मिटानेके लिये काममें आताहै (२) गंडमाला, उपदंश और कुष्ट सम्बन्धी रोगोंमें इस की बहुत थोड़ी मात्रा देनी चाहिये (३) भिलावेके छिलकेका रस चरपरा होताहै उसमें छाला उठानेकी बड़ी शक्तिहै (४) चोटके झूंठे चिन्ह पैदा करनेके लिये यह त्वचापर लगादिया जाता है, परन्तु चोट लगनेसे जो नील पड़जाताहै उसमें और इसके लगानेसे जो चिन्ह होतेहै उनमें यह अन्तर है कि त्वचापर जिस ठौर यह लगाया जाताहै वहांपर छोटे २ फफोले पैदा होजाते हैं और चोट लगनेसे जो नील पडतीहै उसपर फफोले नहीं होतेहैं (५) गठिया और मोचपर इसका तेल लगाया जाताहै (६) तालू की छत (काग) लटक जानेसे जो खांसी पैदा होतीहै उसको मिटानेके लिये चराककी लौमें भिलावेको जलानेसे जो तेल निकलता है उसको पावभर दूध में मिलाकर पिलाना चाहिये (७) भिलावे के छिलकेका रस उष्ण और रूक्ष है (८) वह सब प्रकारके त्वचा के रोग, पक्षाघात, अपस्मार और स्नायु जालके दूसरे रोगों में दिया जाताहै (९) इसकी मात्रा १ मासेसे २ मासे तककीहै (१०) इस को तेल या पिघलाये हुए घीमें मिलाके देना चाहिये (११) ठंढी शोथपर इसका बफारा लगाया जाताहै (१२) मुंहकी लाल बन्ध करनेके लिये इसके काथसे गंडूष (कुल्ले) कराने चाहिये (१३) नपुंसकता मिटानेके लिये इसकी धूनी देना चाहिये (१४) काजूके तेलके गुण इसके तेलसे मिलतेहैं (१५) इसको त्वचा पर लगानेसे १२ घंटेमें फफोले पैदा होजाते हैं (१६) इस के तेलकी अधिक मात्रा देनेसे पीड़ाके साथ वार वार मूत्र आने लगता है और कभी कभी मूत्र के साथ रुधिर भी आने लगता है। इसकी थोड़ी मात्रा देने से कुछ असर नहीं मालूम होताहै(१७)छोड़को गर्भाशयमेंसे निकालनेके लिये भिलावेका चरपरा रस गर्भाशयके मुंहपर लगा देतेहैं (१८) डाढकी पीडा मिटानेके लिये भिलावेकी राखसे मंजन करना चाहिये (१९) उपदंशकी

टांकियोंपर भिलावेके मरहमकी चुगती लगाना चाहिये (२०) भिलावेका पाक खानेसे पुरुषार्थ बढताहै (२१) किसी २ के इससे बड़ी खुजली चलने लगतीहै चमड़ी लाल होके उसमें दाह पैदा हो जातीहै और छोटी २ अलाइ-यां होके फुन्सियां हो जातीहैं, ये सब उपद्रव धीरे २ सब शरीरमें फैल जाते हैं इनको मिटानेके लिये नारियलका तेल या इम्लीका जल लगाना चाहिये (२२) जोड़ोंपर भिलावेका तेल लगाके उनपर इसीके गुगदेकी धूनी देनेसे उन जोड़ोंपर शोथ हो जातीहै, धोखेवाज लोग तब कहतेहैं कि हमारे गठिया होगई।

संख्या (३६४)

(सं०) भव्यं, भवं, भविष्यं, भावनम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	रोमफलओट	ओटफल	ओटीनेंझाड़	चाल्तागाछ		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
				Dillenia indica D speciasa. Aelliptica	

स्थान—भव्यके वृक्ष बंगाल, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, ब्रह्मा और पूर्वी द्वीपमें सिलहटसे सिंघापुर तक, कमाऊं और गढवालसे पूर्वकी ओर तक पहाड़ोंकी तलहटीमें और दक्खन कनारासे दक्खनकी ओर बहुत होतेहैं परंतु हिन्दुस्थानके उत्तरी या पश्चिमी मैदानोंमें कम होतेहैं।

पहिचान—यह एक साधारण ऊंचाईका वृक्ष होताहै। इसकी पेदड़ छोटी, खड़ी और मोटी होतीहै। इसकी शाखें चौड़ी फैलतीहैं। इसकी पेदड़ की और बड़ी डालियोंकी छाल चौथाई इंच मोटी, खरदरी, चमकदार होतीहै उसमें बहुतसी छोटी २ दरारें होतीहैं। इसके पत्ते ८,१० इंच लम्बे और कटवां किनारेदार होतेहैं, जबवे पुराने हो जातेहैं तब करड़े पड़जातेहैं। इसके पत्ते वसन्त ऋतुमें नहीं गिरतेहैं। इसके सुगंधदार पुष्प लगतेहैं। इसकाफल बड़ा होताहै उसकी मध्य रेखा३,४ इंच

लम्बी होतीहै इसका छिलका कड़ा होताहै इसकी चेपदार गिरमें वहुतसे वीज ठौर२ गडे रहतेहैं ।

फूलने फलने का समय—जेठ अषाढमें इसके पुष्प लगतेहैं पोष माघमें फल पकतेहैं ।

प्रयोग-(१) यह—फल खट्टा, चरपरा और उष्ण होताहै । पक्का फल रुचिकारकहै (२) ज्वरकी दाह मिटानेके लिये इसके फल के रसमें मिश्री और जल मिलाके पिलाना चाहिये (३) इसके फलके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे खांसी मिटतीहै (४) इसकी छाल और पत्ते ग्राहीहैं (५) अतिसार मिटानेके लिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये (६) इसका फल सारकहै परन्तु बहुत खानेसे अतिसार हो जाताहै । यह कच्चा या उबाला हुआ दोनों रीतिसे खानेके काममें आताहै ।

संख्या (३६८)

(सं०) भांडीरः, चोरकः, शंकितः, क्षेमकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजावी	तैलंगी
	भाट	भटोर	भटोरा	भाडीरफुलेर गाछ	भटोर	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Clerodendron infortunatum Volkameria infortunata.	

स्थान—भांडीरके झाड़ हिन्दुस्थानमें दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थान बंगाल, आसाम, अवध, खेड़ी और शालके जंगलोंमें बहुत ठौर पैदा होतेहैं ।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसका झाड़ १२ फुट ऊंचा होताहै । इसकी डालियोंपर और पत्तोंके नीचे कोमल रूंए होतेहैं, इसके पत्ते ६ से ९ इंच लम्बे और तीखे कटवां किनारेके होतेहैं । इसके लाल छींटेदार सफेद पुष्प लगतेहैं । इसके कुछ दवेहुए गोल गिरदार फलकी मध्य रेखा तिहाई इंसकी होतीहै यह पकजानेपर चमकदार और काले रंगका होजाताहै । मृगशिर से चैत्रतक इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह मधुर, कटु, उष्ण, तिक्त, पाकमें कटु, लघु, तीक्ष्ण और शीतलहै (२) इसके पत्ते चिरायतेकी ठौर काममें आतेहैं (३) इसके पत्तों का क्वाथ पिलानेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाताहै (४) पत्तोंके ताजे रसको घावपर लगानेसे कीड़े मरतेहैं (५) दूषित वायु आदिसे पैदाहुए बहुधा बच्चों के ज्वरको रोकनेके लिये इसके पत्तोंका ताजा रस पिलाते हैं (६) इसकी छाल भी औषधिके प्रयोगमें काम आताहै (७) इसका निचोड़ा हुआ ताजा रस अच्छा सारकहै (८) इस रसके पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं और पित्त बढ़ताहै (९) गुदाके कीड़े मारनेके लिये गुदामें इसकी पिचकारी लगातेहैं (१०) खुजली मिटानेके लिये इसी रसका मर्दन करतेहैं (११) दुष्ट वायु आदि से पैदाहुए ज्वरको छुडानेके लिये संखियेको इसके पत्तोंके क्वाथमें घोटके गोलियां बनाके देना चाहिये (१२) यकृत्की शिथिलता मिटानेके लिये इसके पत्तों का ताजा रस पिलाते हैं।

———.०———

संख्या (३६६)

(सं०) भार्गी, पद्मा, अंगारवल्ली, कासघ्नी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भाड़ंगी	भारंगी	भारंगी	भारग	वामनहाटी	भाडंगी	गंटुभार्ङ्ई

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
गण्डुपरगि	गण्टुभार्ङ्ई			Clerodendron serratum.	

स्थान—यह हिमालयमें सतलजसे खासिया पहाड़ और आसाम तक और नीलगिरी, पश्चिमी घाट, दक्षिण हिन्दुस्थान और ब्रह्मामें होतीहै।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसके नीले पुष्प लगतेहैं। इसके फलकी मध्यरेखा चौथाई इंचकी होतीहै, जब वह पक जाताहै तब चम-कदार काले रंगका हो जाताहै। इसके पत्ते चिकने एक ओर से गोल और दूसरी ओरसे लम्बे, एक २ सींकपर तीन तीन और डंडीके आमने सामने

लगनेहैं उनकी कोरें कटवां कंगूरेदार होतीहैं। भारंगीमें गंध और स्वाद नहीं होता है। वैशाखसे श्रावण तक इसके पुष्प लगतेहै।

प्रयोग--(१) भारंगी--चरपरी, कड़वी, रूक्ष, उष्ण, रोचक, पाचन, दीपन, कषेली और पचनेमें हल्कीहै (२) भारंगीका काथ पिलानेसे प्रतिश्याय और ज्वर मिटताहै (३) इसके पत्तोंको तेलमें ओटाकर लगानेसे आंखके गोले की सूजन उतर जातीहै और गीडोंका आना बन्द होजाताहै (४) भारंगी, सोंठ और धनियेंको पानीमें ओटाके पिलानेसे खाली होवड मिटतीहै (५) इसके बीजों की फकी देनेसे हल्का विरेचन होताहै (६) इनको मट्ठेमें ओटाके पिलानेसे जलंधर मिटताहै (७) इसको और सोंठको समान भाग ले, चूर्ण बनाके गर्म जल के साथ फकी देनेसे श्वास और कास मिटताहै (८) इसके चूर्णमें बराबर सोंठ मिलाकर अदरकके रसमें चटानेसे श्वासरोग मिटताहै (९) भारंगी और सोंठका काथ पिलानेसे श्वास मिटताहै (१०) इसकी जड़का चांवलोंके धोवन के साथ लेप करनेसे गलगंड और कुरंडरोग मिटताहै।

संख्या (३६७)

हिन्दी-भारंगीभेद L Clerodendron siphonanthus S indica

स्थान—इसका बड़ा झाड़ होता है। इसकी शाखें पोली होतीहैं, इसके ६ से ९ इंच लम्बे पत्ते एक सींकपर ३ से ५ तक लगतेहैं वे नीचेसे चन्दनियां रंगके होतेहैं, इनका रंग पहिले सफेद होताहै और पीछे धीरे २ पलट जाताहै। इसके गहरे नीले जड़में जुड़ेहुए १ से ४ तक बीज लगतेहैं। उष्णकाल और वसंतमें इसके श्वेत पुष्प लगतेहैं। इसके एक प्रकारका गोंद जैसा पदार्थ लगताहै।

प्रयोग—(१) बंगालियों का यह निश्चय है कि इसकी लकड़ीको गलेमें बांधनेसे कई प्रकारके रोग नहीं होतेहैं (२) इसकी जड़ राजयक्ष्मा, कास और गंडमालामें लाभकारी है (३) इसकी जड़के कल्क और सोंठके चूर्णको उष्ण जलमें घोलके पिलानेसे राजयक्ष्मा मिटताहै (४) फुफ्फस के रोगोंके कई काथोंमें यह मिलाई जातीहै (५) इसकी जड़के कल्क और काथ से तेल बनाके मांसक्षयवाले बच्चेके मर्दन करना चाहिये (६) इसका वृक्ष कुछ कड़वा और ग्राही होताहै (७) इसका गोंद जैसा पदार्थ उपदंश सम्बन्धी

गठियामें काम आताहै (८) इसके पत्ते और कोमल डालियोंका निचोड़ा हुआ रस घीमें मिलाके छत्तेदार फुन्सियोंपर लगाना चाहिये (९) जिस ज्वरमें फोड़े फुन्सी होते हों उस ज्वरमें भी यहही लेप करना चाहिये (१०) इस की पोली डालियोंके छोटे टुकड़ों की माला बनाके बच्चोंको पहिरानेसे और इस वृक्षकी सुगंधसे ८ वें और ९ वें प्रयोगके रोग मिटतेहैं ।

संख्या (३६८)

(सं०) भूतकेशः, केशी, अल्पकेशी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	भूतकेशी			भुंइकेश		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Corydalis Govaniana.	

स्थान—भूतकेशी पश्चिमोत्तर हिमालय और शिमलेके पास हाटू और चोरपर होतीहै ।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगते हैं ।

प्रयोग-(१) भूतकेशी-ग्राही, चरपरी, कड़वी, ठंढी और अग्निवर्द्धक है । (२) इसकी जड़ बहुत कड़वी होतीहै, उसका क्वाथ पिलानेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (३) इसकी जड़के ५ से १५ रती तक चूर्णकी फकी देनेसे उपदंश मिटताहै (४) इसकी जड़के क्वाथमें मधु मिलाके पिलानेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (५) इसकी जड़को पानीके साथ पीसके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ।



संख्या (३६९)

(सं०) भूनिम्बः, किरातकः, काण्डतिक्तः, कैरातः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चिरायतो	चिरायता	करियातु	किराईत	चिरेता	चिरायता	नेलावेमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नेलावेम्बु	नेल वेबु	कुस्बओवा	नएनिहावंदी	Swertia Ch'rata Gentiana Chirayta Justicia paniculata	Chirata. Chiretta.

स्थान–चिरायता हिमालय में कश्मीर से भूटान तक और खामिया पहाड़ आदि स्थानोंमें होताहै।

प्रयोग–(१) चिरायता-कड़वा, शीतल, पचनेमें हल्का, रूक्ष, वातल, सारक, बलवर्द्धक तथा ज्वर और कृमिनाशकहै (२) यह सब प्रकारके ज्वरोंमें कई रीतिसे, और ज्वर मिटाने वाली दूसरी औषधियोंके साथ, दिया जाताहै (३) चिरायतेके क्वाथमें दूसरी औषधियें सरसोंका तेल और मट्ठा डालके पकातेहैं जब सब औषधियें जलके तेल बाकी रह जाताहै तव उसको छान लेतेहैं इस तेल का मर्दन करनेसे जीर्णज्वर (जिसमें शरीर कृश होगया हो और रुधिरमें ललाई नहीं रहीहो) छूट जाताहै (४) सर्दी, पित्तविकार, शरीरकी दाह और सन्निपात ज्वरमें इसका प्रयोग किया जाताहै (५) कास और श्वास रोगको मिटानेके लिये चिरायतेका क्वाथ पिलाना चाहिये (६) पेटकी शूल मिटानेके लिये चिरायता और एरण्डकी जड़ ओटाके पिलाना चाहिये (७) बीलगीर की फकी देके ऊपर चिरायतेका क्वाथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (८) चिरायता और नीमगिलोय बराबर ले औटाके पिलानेसे, अथवा, दोनोंको रातभर ठंढे पानीमें भिगो प्रातःकाल मल छानके पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (९) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता, मन्दाग्नि और उदर्द मिटानेके लिये चिरायतेका फांट पिलाना चाहिये (१०) मंदाग्नि वालेको चिरायते का फांट पिलानेसे उसकी पाचन शक्ति बढतीहै (११) हल्के कियेहुए गंधक के तिजाबकी कुछ बुंदें या आधीसे १ रती तक कुनाइनके साथ चिरायतेका हिम पिलानेसे ज्वर बहुत शीघ्रतासे छूटताहै। ये दोनों चीजें चिरायतेके हिम या फांट में मिलानेसे इनकी शक्ति बढ़ जातीहै (१२) चिरायतेको ओटानेसे इसका गुण कम होजाताहै इस लिये इसको ठंढे पानीमें भिगोके देना चाहिये (१३)

चिरायते और सोंठके कल्कको पुनर्नवाके काथके साथ पिलानेसे सर्वांग शोथ उतरतीहै (१४) चिरायतेको पीस मधुमें मिला गर्मकर लेप करनेसे कुबड़ापन मिटता है ।

संख्या (३७०)

(सं०) भूर्जपत्रः, चर्मी, बहुलवल्कलः, मृदुत्वक् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भोजपत्र	भोजपत्र	भोजपत्र	भूर्जपत्र	भूर्जिपत्र	भोजपत्र	भुजपत्रमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
भुनपत्रं	भुजपत्रः			Betula Bhojpattra B Jacquemontii	The Indian birch tree. Indian paper birch

स्थान—भोजपत्रके वृक्ष हिमालयमें बहुत ऊंची २ ठौरमें और पंजाब, सिक्कम और भूटानमें होतेहैं ।

पहिचान—यह एक साधारण उंचाईका वृक्ष ५०-६० फुट ऊंचा होताहै । इसकी पेदड़ खड़ी कुछ मुड़ीहुई और गुलाईमें ६–७ कहीं कहीं १०–१२ फुट होतीहै । इसकी शाखें खड़ी और डालियें लटकती हुई होतीहैं । इसके पत्ते कटवां कोरके होतेहैं उनकी बीचकी नसके दोनों ओर रूँए होतेहैं । इसके स्त्री और पुरुषजातिके पुष्प अलग २ लगतेहैं । श्रावणमें इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं, चैत्र वैशाखमें नवीन आजातेहैं ।

प्रयोग—(१)यह–चरपरा, कषेला और उष्ण, होताहै (२) भूतबाधा त्रिदोष, पित्त, रुधिरविकार, कफ, कर्णरोग, मेद और विषको उतारताहै (३) भोजपत्रकी छाल वायुके विषैल कीड़ोंको मारतीहै (४) इसकी छालके काथकी पिचकारी देनेसे कानका व्रण साफ होजाताहै (५) जहरी घावोंको शुद्ध करनेके लिये इसकी छालके काथसे धोतेहैं (६) इसकी छालका हिम या फांट पिलानेसे पेटका अफारा मिटताहै (७) स्त्रियोंका आवेशका रोग मिटानेके लिये इसका प्रयोग करतेहैं ।

संख्या (२७१)

(सं०) भूस्तृणं, रोहिषः, गुच्छालः, मालातृणः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सुगंधितवास विशेष	सुगंधरोहिष	सुगंधरोस	सुगंधरोहिस	गंधतृण	गांधीघास	गुड्डुगड्डि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	मागबाळि-हुल्लु			Audropogon citratus & schoenanthus	The Lemon grass

स्थान—यह घास हिन्दुस्थानमें कई ठौर होताहै ।

पहिचान—कहीं इसके पुष्प लगतेहैं और कहीं नहीं लगतेहैं ।

इसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलताहै । उसमें जब तक दूसरा तेल नहीं मिलाया जावे, तब तक वह तेल पारदर्शक रहताहै । इस तेलका स्वाद चरका होताहै और उसमें नींबू जैसी सुगन्ध होतीहै ।

प्रयोग—(१) भूस्तृण—कड़वा, चरपरा, उत्तेजक, उष्ण, रोचक, दीपन, विदाही, रूक्ष और लघुहै (२) थोड़े ज्वर में इसके पत्तोंका फांट पिलानेसे पसीने होकर ज्वर उतर जाताहै (३) इसके पत्तोंको ओटाके बफारा देनेसे पसीना होके ज्वर उतर जाताहै इस कामके लिये इसमें पोदीना मिलाया करतेहैं (४) इसको चायके जैसे दूधमें या जलमें ओटाके पिलानेसे शरीरका आलस्य मिटताहै अर्थात् शरीर चैतन्य होजाताहै (५) इसके क्वाथकी भाफ को सूंगते रहनेसे या पेटमें पीनेसे पसीना होताहै (६) इसकी जड़ और कोमल पत्तोंको काली मिरचके साथ पीसके पिलानेसे मासिकधर्म ठीक समय पर होने लगजाताहै और मासिकधर्मके रजके जमावको मिटाने के लियेभी यहही प्रयोग करना चाहिये (७) इसके तेलकी कुछ बूंदें सोंफके अर्कमें डालके पिलानेसे आफरेकी शूल मिटतीहै (८) इसके तेलका मर्दन करनेसे पुरानी गठिया आदि वायुकी पीड़ा मिटतीहै (९) इसका तेल अंतड़ियोंकी वायुको निकालके उनको बलवान कर देताहै (१०) इसका क्वाथ पिलानेसे वमन और विरेचन बन्ध हो जाताहै (११) इसके तेलकी कुछ बूंदें रातके क्वाथकी

साथ पिलानेसे अंतड़ियोंकी एंठन मिटतीहै (१२) इसका तेल स्निग्धप्र-लेपाम पड़ताहै (१३) बच्चेके पेटकी पीड़ा मिटानेके लिये इसका काथ पि-लातेहैं (१४) दादपर इसके तेलका मर्दन करतेहैं (१५) इसके तेलसे "अ-इडो फार्मकी" दुर्गंध मिट जातीहै (१६) इसके पत्तोंका फांट पिलानेसे प्रति-श्याय मिटताहै (१७) इसके तेलका कुछ बूंदें साफके और पोदीनेके अर्कके साथ पिलानेसे विसूचिका मिटतीहै (१८) इसका सिरकेकी सिकंजी के साथ पिलानेसे अजीर्णसे पैदा हुई दाह मिटतीहै (१९) पसीना करानेके लिये इसके पत्तोंको दूधमें ओटाके पिलाना चाहिये (२०) कमरकी पीड़ा मिटाने-के लिये इसके तेलका मर्दन बहुत देर तक करना चाहिये (२१) कच्चे दूधमें इसकी बूंदें डालके पिलानेसे पाकस्थलीकी दाह मिटतीहै (२२) इसके एक तोले पत्तोंको २॥ पाव ओटा हुए पानीमें चार पहर भिगो ज्वरवाले बहुधा निर्मल मनुष्य को इसमें से २॥ से ५ तोले तक पिलानेसे पसीना आता है (२३) भांतीजरेवाले मनुष्यको भी यही पिलाना चाहिये।



संख्या (३७२)

(सं०) भृङ्गराजः, मार्कवः, अङ्गारकः, पित्तप्रियः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलंगी
जलभांगरो	भांगरा भंगरा	भांगरो	माका	भीमराज	भंगरा	गुंटगलगर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
करिशारकान्नि	गरगदमुप्पु			Wedelia Calendulacea Verbesina calendulacea	Trailing eclipta.

स्थान—जलभंगरेके गुल्म, हिन्दुस्थानमें जलके पास प्रायः सबठौर होतेहैं।

प्रयोग—(१) जलभांगरा—कटु, तिक्त, उष्ण, रूक्ष और तीक्ष्ण (२) खांसी, मस्तकपीड़ा, क्षय, प्रतिश्याय और त्वचाके रोगोंमें काम है (३) इसके पत्ते बलवर्द्धक और रक्तशोधक हैं मस्तकपीड़ा मिटानेके

इसके रसकी नस्य देनी चाहिये (४) कई औषधियोंके इसके रसकी भावना दी जातीहै (५) बालोंको रंगने और बढानेके लिये इसके पत्तोंका रस लगातेहैं (६) इसके पत्तोंका रस गुदामें तीन चार बेर मलनेसे पेटके कीड़े मिटतेहैं (७) इसके और धतूरेके पत्तोंके रसमें रुई भिगो उसकी बत्ती बना, छायामें सुखा, उसको मीठे तेलमें जला काजल पाड़के बासी पानीके साथ उसका अंजन करनेसे नेत्रोंकी पलकोंका रोग मिटताहै (८) इसके स्वरससे तेल सिद्ध करके बालोंमें लगानेसे बाल काले और कोमल रहतेहैं (९) पुष्य नक्षत्रमें इसकी जड़ हाथमें बांधनेसे चातुर्थिकज्वर छूटजाताहै (१०) इसके स्वरससे घृत सिद्ध करके पिलानेसे बिगड़ेहुए कंठ और स्वर सुधरतेहैं (११) इसके स्वरस और चिरमीके कल्कसे सिद्ध किये हुए तेलके मलनेसे कण्डू, दारुण, कुष्ठ और मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१२) इसकी जड़ और हल्दीका लगातार लेप करनेसे सूकरदंष्ट्र और विसर्परोग मिटता है (१३) इसका रस और बकरीका दूध बराबर ले मिला उसको सूर्यकी धूपमें रखके उष्ण होनेपर उस की नस्य लेनेसे सूर्यावर्त मिटताहै (१४) इसके रससे व्रणको धोनेसे उपदंश मिटताहै (१५) एक महीने तक इसका स्वरस पीनेसे और उन दिनोंमें केवल दूधका आहार करनेसे बल, वीर्य और आयु बढतीहै, और रसायनका गुण होता है।

संख्या (३७३)

(सं०) केशराजः, महानीलः, नीलपुष्पः, नीलभृङ्गः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कालोजल-भांगरी	भंगरा	भांगरा	माका	केशुरे		गंटगलिजेरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	गगरहुडाम-प्पु			Eelipta. Alba. E. prostrata.	

स्थान—केशराजके गुल्म हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं।

प्रयोग-(१) केशराजका रस पीने और लगानेसे बाल काले होजातेहैं। (२) इसका रस बच्चोंके कुछ भूरे केशोंपर अथवा सिरको मुड़वा के एक दो बेर लगानेसे केश काले हो जातेहैं इसके रसमें केशोंको काले करनेकी शक्ति है भृङ्गराजके रसमें नहींहै (३) त्वचाके पुराने रोग मिटानेके लिये इसके रस का मर्दन करना चाहिये (४) यकृत् और प्लीह बढ़जानेपर इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये (५) नये बच्चेका कफ मिटाने के लिये इसके रस की दो बूंदको ८ बूंद मधुमें मिला के चटाना चाहिये (६) इस के स्वरस में अजवायन आदि चरपरी और द्रावक चीजोंको मिलाके पिलानेसे तिल्ली आदि पेटके यन्त्रोंके बहावकी रुकावट मिटजातीहै (७) मांस शिराओंकी ऐंठन मिटाने वाली जो औषधियेंहैं उन में यह मिलाके दिया जाता है (८) इसके ताजे गुल्मके कल्कको तिलके तेलमें औटा के गजचर्म कुष्टपर लगातेहैं (९) इसकी जड़का स्वरस पिलानेसे वमन होताहै (१०) विरेचनके लिये भी इसकी जड़का स्वरस पिलातेहैं (११) इसकी जड़को घिसके लेप करनसे नेत्ररोग मिटतेहैं (१२) इसका पौनेचार मासे रस पिलानेसे कामला रोग मिटताहै (१३) ज्वरको छुडाने के लिये इसका पौनेचार मासे रस पिलाना चाहिये (१४) इसकी १ तोले भर जड़को पीस थोड़ा नमक मिलाके पिलाने से मूत्रकी दाह मिटतीहै (१५) इसको तेल में पीसके ललाटपर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटतीहै (१६) इसके तेलका मर्दन करनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै (१७) इसको पीस गर्म करके लेप करनेसे शोथ उतरतीहै।

संख्या (३७४)

(सं०) भृङ्गाह्वा, भ्रमरा, उग्रगंधा, भङ्गुच्छली।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	भ्रमरच्छली	भमरछाल्य	भवरसाली			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	उप्पुशके			Hymenodictyon excelsum H thyrsiflorum	

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिम हिमालयमें गढवालसे नैपालतक, छुटिया नागपुर और मध्य हिन्दुस्थानसे दक्षिण तक बहुत होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ३० से ५० फुट तक ऊंचा होताहै इसकी पेडकी गुलाई ६ से ८ फुट तक होतीहै परन्तु देश भेदसे अवध और संयुक्त प्रदेशमें इसकी उंचाई और गुलाई बहुत अधिक होती है। इसके पत्ते ६ से १२ इंच लम्बे, डंडीकी ओर से गोल और दूसरी ओर से कुछ लम्बे होते हैं। इसके कुछ हरे सफेद रंगके और सुगंध युक्त पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं। कातीसे वैशाख या जेठ तक इस वृक्षके सबके सब पत्ते गिरजातेहैं ।

फूलने फलने का समय—जेठ अषाढमें इसके पुष्प लगतेहैं आसोजसे पोषतक इसकी डोडियां पकतीहैं। इसके पत्ते और छाल रंगतके काममें आतेहैं।

प्रयोग—(१ यह—चरपरी, उष्ण, कड़वी, रोचक, और अग्निदीपकहै (२) इस वृक्षकी अंतर छाल शोषक, और सिनकोना जैसी कड़वी होती है (३) इसको औटाके पिलानेसे तेजरा छूट जाताहै (४) बारी से आनेवाले दूसरे ज्वरोंको छुडाने के लिये इसकी अंतर छालका काथ पिलाना चाहिये । (५) इसके प्रयोगसे त्रिदोष और कंठके रोग मिटतेहैं ।

संख्या (३७५)

(सं०) भेंडा, चतुष्पुण्ड्रः करपर्णः, वृत्तबीजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भिण्डी	भिण्डी	भींडा, भेंडों	रानभेंडी	भेंडा		बेंडकाया

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
बे (इ)काय्	बेंडकायि			Hibiscus esculentus Abelmoschus e	The edible hibiscus Ochro of West Indies Esculent Okra

स्थान—भिण्डीके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं ।

प्रयोग–(१) यह-ग्राही, उष्ण, पिच्छल, रुचिकारक, वातल, वृष्य, बल्य,

रसमें खट्टी और पचनेमे भारीहै (२) इसका और इसके बीजोंका चेप निकाल उसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्रकी दाह मिटतीहै (३) मूत्र और वीर्य्य सम्बन्धी अंगोंकी दाह मिटानेके लिये भिण्डी और इसीके बीजोंका शर्बत बहुत उपकारीहै (४) भिण्डी-शीतल, पौष्टिक और स्निग्धहै (५) यह पित्तकी प्रकृतिवाले मनुष्योंको बहुत गुणकारीहै (६) इस वृक्षका हरेक अंग परन्तु विशेष करके इसका फल उन सब रोगोंमें काम आताहै कि जिनमें दाह और तोद अर्थात् सूई चुभने जैसी पीड़ा होतीहै, जैसे दाह और कष्टके साथ मूत्रका उतरना और मूत्रकृच्छ्र आदि (७) भिण्डी या इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधने से दाह मिटतीहै (८ इसकी जड़मेंभी बहुत चेप निकलताहै (९)इसकी सूखी जड़के चूर्णमें मिश्री मिलाके देनेमे प्रमेह मिटताहै (१०) भिण्डीके शाक से अतिसार मिटताहै (११) इसके मूत्रवर्द्धक प्रयोगसे जलंधरमें बहुत उपकार होताहै (१२) इसकी जड़का पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (१३) कच्ची भिण्डीके चूर्णमें मिश्री मिलाकर दूधके साथ फकी लेनेसे प्रमेह मिटताहै (१४) इसका शाक बहुत अच्छा होताहै ।

—— ०० ——

संख्या (३७६)

(सं०) मकायः, महाकायः, शिखालुः, काटिजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहट्टी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मकी, मक्या	मका, भुट्टा	मकाइ	मका, मका		मकई	जोनपटलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हिंतहरूमिया	गंदुम मका	Zea Mays.	Maize Zea maize Indian corn Indian corn maize

स्थान—मकी हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोई जातीहै ।

इसके १०० तोले कच्चे तुकड़ोंको यंत्रमें दबानेसे १३ से १५ तोलेतक तेल निकलताहै । यह तेल कुछदिन पड़ा रहनेसे निर्मल हो जाताहै । इसका स्वाद

फीका होताहै और इसमें सुगंध अच्छी होतीहै न यह जल्दी बिगड़ताहै और न यह सूखताहै इस तेलके साधारण गुण जैतूनके तेलसे मिलतेहैं ।

प्रयोग—(१)यह-वातन्न, विष्टंभी, रूक्ष, रोचक और पौष्टिकहै (२) क्षयरोगमें मक्कीकी रोटी पथ्यहै (३) इसके खानेसे आंतोंकी निर्बलता मिटतीहै (४) निर्बल मनुष्य और बच्चोंके लिये मक्कीके आटेका भोजन गुणकारी है (५) तुक्कयाकी राखमें नमक मिलाके फकी देनेसे कुत्ताधांसी और जुखाम की खांसी मिटतीहै (६) इसकी पांच पांच रतीकी मात्रा दिनमें दो तीन बेर देना चाहिये (७) मक्याके बालोंका क्काथ, हिम या फांट पिलानेसे मूत्राशय के रोग और मूत्रमार्गकी दाह मिटजातीहै और मूत्र अधिक आने लगताहै (८) मक्कीके आटेका पुल्टिस बनाके बांधतेहैं (९) मूत्राशयकी पथरी गलानेके लिये तुक्केकी भस्मका द्रवक्षार निकालके पिलातेहैं (१०) इसके आटेका लपटा बनाके रोगीको पिलाना चाहिये यह लपटा बड़ा रोचक होताहै परन्तु प्रकृति मानेतो पिलाना चाहिये (११) कच्चेभुट्टे सेकके खानेसे किसी २ को तीक्ष्ण विरेच लगजाताहै (१२) मक्कीका तेल शरीरको पुष्ट करताहै (१३) उत्तम मक्की खानेसे शरीर पुष्ट होताहै परन्तु जिसको मक्की नहीं मानतीहै उसको लगातार खिलानेसे संभवहै कि अतिसार होजाताहै । इसके परमल या सेके हुए फूले रोगीको कभी नहीं खिलाना चाहिये । पश्चिमोत्तर देश, पंजाब, अवध और राजपूताने आदि कई देशोंमें मक्की खानेका बड़ा चलनहै । हिन्दुस्थानके कई देशोंमें मक्कीके आटेकी रोटी बनाके खातेहैं । कई देशोंमें इसकी घाट (दलिया) बनातेहैं । कहीं गीले मक्केको सेकके या उबालके खातेहैं । कहीं पकीहुई मक्कीको सेकके दुपहरिया करतेहैं । मक्कीका सत्तू बनाया जाताहै । मक्कीकी कड़बीसे शक्कर निकाली जासकतीहै परन्तु उसके दाने नहीं पड़तेहैं ।

संख्या (३७७)

(सं०) मकुष्ठः, वनमुद्गः, क्रमीलकः, अमृतः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोठ	मोठ	मठ	मठ,मटक्या	वनमुग	मोठ	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Phaseolus aconitifolius Dolichos dissectus	The aconite leaved kidney bean

स्थान—मोठ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

प्रयोग—(१) मोठ कषेले, मधुर, रोचक, पचनेमें लघु, ग्राही और शीतल होतेहैं। रक्तपित्त, ज्वर, दाह, वमन, कफ, रुधिरविकार, अर्श और गुल्मको मिटातेहैं और बादीको पैदा करतेहैं (२) मदाग्निमें इनकी दाल पथ्यहै (३) यह ज्वरमें भी पथ्यकी रीति पर दी जातीहै (४) इनकी जड़ मादक और विषैलहै (५) इनकी दाल बनाके खानेसे आध्मान होना बन्द होजाताहै (६) इनकी दालके कई प्रकारके भोजनके पदार्थ बनाये जातेहै (७) इनको सेकके भोजनके काममें लातेहैं।

संख्या (३७८)

(सं०) मज्जफलं, मायिफलं, मायिका, छिद्राफलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मांजूफल	माजूफल	माया	मायफळ	मांजूफल	माजूफल	माचकाया

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मासिकाय्	मायूफला	अफस	माजू	Quercus infectoria.	The gall or dyer's oak The gall nut

स्थान—माजूफलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं। ये ग्रीस, एशिया माइनर और सिरिया आदि देशोंसे हिन्दुस्थानमें आतेहैं।

प्रयोग—(१) मांजूफल—बहुत ग्राही, चरपरा, उष्ण, शीतल, रूक्ष, कषेला, लघु, दीपन और विपाकमें कटुहै (२) यह वनस्पतिके क्षारोंके विषको रोकनेके लिये या उतारनेके लिये बहुत अच्छाहै (३) रुधिर को रोकने के लिये मांजूफल या माजूफल और अहिफेनका मरहम बहुत अच्छाहै (४) मसूड़ों को दृढ़ करनेके लिये मांजूफलका मंजन बहुत अच्छाहै (५) बल बढानेवाली

औषधियोंमें मांजूफल मिलाया जाताहै (६)बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेकेलिये मांजूफलकाप्रयोग किया जाताहै (७) अतिसार और आमातिसार मिटानेके लिये मांजूफलका प्रयोग बहुत अच्छाहै ८) मांजूफलके चूर्णको थोड़े पानीमें भिगोके स्तनकी बींटलीके घावपर लगातेहैं (९) इसका मरहम बादीके अर्श पर लगाया जाताहै (१०) श्वेतप्रदर और मूत्रकृच्छ्रमे मांजूफलका प्रयोग बहुत उपकारीहै (११) मांजूफल और अनारके छिलकेको पीसके बुरकानेसे कांचका निकलना बन्ध होताहै (१२) इसको सिरकेमें घिस अंगुलिके लगा उससे बच्चेके लटकेहुए कागको उठातेहैं (१३) इसको कूट सिरकेमें ओटा, छान कानमें टपकाने से कानका बहना बन्ध होताहै (१४) मांजूफल पीसके नाकमें फूंकनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (१५) एक कच्चा और एक जलाहुआ मांजूफल और एक कच्ची और एक जलीहुई सुपारीको पीस छानके मंजन करनेसे दांत और मसूड़े दृढ हो जातेहैं (१६) मांजूफल और सुपारी ओटाके कुल्ले करने से दांतों से रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै (१७) मांजूफल और सुपारीको पीसके दन्तमञ्जन करनेसे दांत दृढ होतेहैं और उनसे रुधिरका निकलना बन्ध हो जाताहै (१८) मांजूफल और आसगंधको पानीके साथ पीस, गर्मकर लेप करनेसे अंडवृद्धि मिटतीहै (१९) मांजूफलकी भस्मको घावमें बुरकानेसे उसमेंसे रुधिर का निकलना बन्ध होजाताहै ।

संख्या (३७९)

(सं०) मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मजीठ	मंजीठ	मजीठ	मंजिष्ठ	मंजिष्ठा	मंजीठ	मंजिष्ठि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मंजिष्टि	मजिष्ट (I)	फुव्वाह	रोदक, रूनास	Rubia cordifolia. R. munjista	The Indian Madder Madder root Bengal madder

स्थान—मजीठ हिन्दुस्थानके पहाड़ी भागोंमें सब ठौर होतीहै ।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होतीहै ।

प्रयोग—मजीठ—मधुर, चरपरी, कषेली, गुरु, उष्ण, कड़वी, और लघु है (१) यह पेटके तिल्ली आदि यंत्रोंके वहावकी रुकावटको मिटातीहै (२) मूत्राघात और मासिकधर्मकी रुकावटको मिटानेके लिये मजीठका प्रयोग करना चाहिये (३) मजीठका फल हृदयकी रुकावटको मिटाता है (४) मजीठको पीस मधुमें मिलाके लगानेसे त्वचाके पीले और दूसरी प्रकार के दाग मिटतेहैं (५) मजीठका पंचांग विषनाशकहै (६) मजीठको गलेमें बांधनेसे या घरकी छतमें लटकानेसे नजर नहीं लगतीहै (७) यह ग्राही है (८) इसका लेप करनेसे पित्तशोथ मिटतीहै (९) त्वचा के रोग और घावोंको मिटानेके लिये इसके प्रयोग किये जातेहै (१०) मजीठ और मुलहटी को चांवलोंकी कीलोकी कांजीमें पीसके लेप करनेसे अस्थिभंगकी शोथ और दाह मिटतीहै (११) बच्चा होनेके पीछे गर्भाशयमें जो दुष्ट रुधिरादिक रह जातेहैं उनको निकालनेके लिये मजीठका क्वाथ पिलाना चाहिये (१२) मजीठको मस्तकपर बांधनेसे नजलेकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१३) इसको पीसके मंजन करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१४) इसके एक तोले चूर्णकी फकी देनेसे मासिकधर्मकी रुकावट मिट जातीहै (१५) मजीठ और महुवे को खटाईके साथ पीसके लेप करनेसे टूटी हुई हड्डी जुड़ जातीहै (१६) मधु के साथ इसका लेप करनेसे व्यंग रोग मिटताहै ।

संख्या (३८०)

(सं०) आच्छुकः, अच्छुकः, आच्छकः, रञ्जनद्रुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आल	आल	आल	आल	आचफुलेर-गाछ	कहू	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Morinda citrifolia M. Tinctoria	The Indian Mulberry The Togari wood of Madras.

स्थान—आलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं अर्थात् सतलज से पूर्वकी ओर और दक्षिणकी ओर सीलोन तक होते हैं । इसकी लकड़ी, छाल, जड़, और जड़की छालमेंसे लाल रंग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) आलका फल-तिल्ली आदि यंत्रोंके बहावकी रुकावट और मासिकधर्मकी रुकावटको मिटाता है (२) इसके पत्तोंका लेप करने से क्षत और चांदी मिटतीहैं (३) पत्तोंका काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) बल बढ़ानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये (५) इसकी जड़का काथ पिलानेसे विरेचन लगताहै (६) इसके पत्तोंके कोयलोंको ओटा छान उसपर राई बुरकाके पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (७) मसूड़ोंको दृढ करनेके लिये इसके कच्चे फलके कोयले और नमक पीसके मंजन करना चाहिये (८) अतिसार मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (९) इसका कच्चा फल शाकके काममें और पक्का फल खानेके काममें आताहै धावमें इसका चूर्ण भरदेनेसे उसमेंसे रुधिर का निकलना वन्ध होजाताहै ।

संख्या (३८१)

(सं०) मदनः, शल्यकः, राठः, करघाटः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मैणफल मींडल	मैनफल	मींढोळ	गेळ,गेळा	मयनाफल	मैनफल राडा	गंगचट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
	गंगारेगिड	जोज़ुमल्कै		Randia dumetorum. Posoqueria d.	Bushy gardenia.

स्थान—मैनफलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं ।

पहिचान—इसके वृक्ष १५–२० फुट ऊंचे होतेहैं । इसकी सीधी पेदड़की गुलाई २–४ फुटकी होती है । इसके बहुतसी पतली २ शाखें लगती हैं इसकी

छाल आध इंच मोटी कुछ भूरे श्वेत रंगकी खरदरी, सफेद छींटेदार, और सलपड़ीहुई होती है, यह कभी २ पूरी सफेद हो जाती है। देशभेदसे इसका आकार और प्रकृति बहुत बदल जातीहै। इसके इंच अथवा डेढ़इंच लम्बे कठोर कांटे लगतेहै, इसके पत्ते नोंकदार और दोनों ओर से खरदरे होतेहैं, उनपर छोटे कठोर रुँए होतेहैं। कुछ हरे पीले या प्रायःश्वेत रंगके सुगंधवाले, इकट्ठे या दो तीन पुष्प एक २ ठौर लगते हैं। इसका एक या डेढ़ इंच लम्बा फल ऊपरसे साफ होताहै और पकनेपर पीला पड़ जाता है इसके फल की गिरके बीचमें दो खाने होतेहैं, उनमें बीज रहते हैं।

प्रयोग—(१) मैनफल-चरपरा, उष्ण, कडुवा, वामक भेदी, लेखन लघु, रूक्ष, मधुर, शीतल, कषेला, और उष्ण वीर्यहै (२) उसमें जो हड़फूटन होतीहै उसको मिटानेकेलिये मैनफलके वृक्षकी छाल की फकी देनी चाहिये और इसका लेपभी करना चाहिये (३) इसको गोबरमें मिलाके लेप करनेसे चोटकी पीड़ा मिटती है (४) इसको मधु में मिलाके चटानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (५) इसके फलकी छाल वामक नहींहै केवल थोड़ासा हृल्लास पैदा करती है (६) २ या ३ मैनफलकी गिर और बीजोंको थोड़ेसे पानीमें दस पन्द्रह मिनट पीस आठ या दस तोले जल में छानके पिलादेना चाहिये, पिलानेके पीछे प्रायः १० मिनटमें हृल्लास और वमन होने लगेंगे, उष्णजलके पिलानेसे वमनकी संख्या बढेगी। इससे अवश्य और निरुपद्रव वमन होतीहै (७) इसकी गिरकी थोड़ी मात्रा देनेसे हृल्लास होताहै (८) सूखी खांसीमें कफ पैदा करनेकेलिये इसकी थोड़ीसी गिर देनी चाहिये (९) ज्वर का वेग निर्बल होनेके पीछे इसकी थोड़ीसी गिरकी फकी देनेसे पसीना होके ज्वर उतर जाताहै (१०) इसकी गिरमें कुछ अफीम मिलाके देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (११) प्रयोगके लिये इसका चूर्ण बनानेकी यह रीतिहै कि मैनफलके छिलके को दूरकर गिर और बीजोंको थोड़े पीस मोटे कपड़ेमें या साधारण चलनीसे छान लेना चाहिये जिससे इसके बीजोंके छिलके अलग निकल जावें, फिर उस चूर्णको बहुत महीन पीसके महीन कपड़ेसे छान, काकदार, शीशीमें भरदना चाहिये वमन करानेके लिये इस चूर्णकी ७॥ रतीसे २॥ मासे तककी मात्रा देनी चाहिये (१२) आमातिसार मिटानेके

लिये ७॥ रत्ती से १५ रत्ती तक देनी चाहिये (१३) हृल्लास, कफ और पसीना पैदा करनेके लिये ४॥ से ५ रत्ती तक देनी चाहिये (१४) कीड़े मारनेके लिये और गर्भाशयमें से छोड़ निकालनेके लिये इसकी पिरकी प्रयोग किया जाता है (१५) बच्चोंके दांत आनेके समयमें अकस्मात् कोई रोग अथवा ज्वर हो जाताहै उसको मिटानेके लिये इसके मोटे चूर्णको जीभ और तालुपर लगादेना चाहिये (१६) गठियाकी शोथपर इसका लेप करनेसे शोथ बिखर जातीहै (१७) पीपवाले फोड़ेपर मैनफल और रेवतचीनीका लेप करनेसे जल्दी पकके फूट जातेहैं (१८) मुखदूपिका और त्वचाके दूसरे रोगोंमें इसका लेप बहुत उपकारीहै (१९) चांवलोंके जलमें इसको पीसके नाभिपर लेप करनेसे शूल मिटतीहै (२०) मैनफलके चौथाई टुकड़ेको एक बड़ी इलायची के दानोंके साथ नागरबेलके पानमें रखके वारीके दिन खिलानेसे तेजरा छूट जाताहै (२१) इसको गायके दूधमें घिसके नस्य लेनेसे आधाशीशी मिटतीहै (२२) इसको कुटकीके साथ या कांजीके साथ पीस नाभीपर लेप करनेसे शूल मिटती है ।

संख्या (३८२)

(सं०) मधु, माक्षिकं, सारघं, क्षौद्रम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सहत	मधु, सहत	मध	मध	मधु, मउ	शहत, मधु	तेन

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
तेन्	जेनुतुप्प		शहद	MEL.	Honey

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें प्रायः सवठौर होतीहै ।

मधुको मनुष्य बहुधा खानेके काममें लातेहैं परन्तु किसी २ देश की मधु में विष होताहै उसका कारण यहहै कि जहां विषके वृक्ष बहुत होतेहैं उनके पुष्पोंमेंसे जो मधु मक्खियां मधु एकत्र करतीहैं उसमें बहुधा विष होताहै ।

प्रयोग—(१) मधु शीतल, कषेली, मधुर, लघु, दीपन, लेखन, शोधन, हृद्य और बलकारकहै (२) नवीनमधु पौष्टिक, और सारक होतीहै (३) यह एक वर्ष पीछे ग्राही हो जातीहै और पुरानी कहलातीहै (४) तीक्ष्ण पदार्थों की चरपराहट कम करनेके लिये उनमें मधु मिलाई जाती है (५) मधुका लेप करनेसे क्षतादिक शुद्ध हो जातेहैं (६) कास मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत किया जाताहै (७) गंडूषकी औषधियोंमें यह बहुधा मिलाई जातीहै (८) यह विषैल वायुका असर नहीं होने देतीहै (९) फलों को इसमें डाल रखनेसे वे बहुत समय तक नहीं विगड़तेहैं (१०) बकरी के कच्चे दूधमें आठवां भाग मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै जिन दिनों में यह प्रयोग किया जावे उन दिनोंमें उस रोगीको सांभर नोंन और लाल मिरचके बदलेमें सेंधानमक और काली मिरच, दाल रोटीमें देना चाहिये। इसको पाव भर दूधसे प्रारम्भ करके जो वह पचासके तो नित्य छटांक २ दूध और उसी प्रमाणसे मधु बढ़ाते हुए दो सेर तक बढा देवे, (११) स्थूल मनुष्यको कृश करनेके लिये उष्ण जलमें अष्टमांश मधु मिलाके पिलाना चाहिये अथवा जो औषधिया कृश करनेवाली है उनके चूर्णकी फक्की देके यह पिला दिया करे (१२) ताजे कच्चे दूधमें मधु मिलाके पिलानेसे किसी २ को विरेचनके दो तीन अच्छे वेग लग जातेहैं (१३) मधुके साथ मोरचंद्र के चंदवे की या उसके तन्तुओंकी भस्म चटानेसे हिचकी बन्ध होतीहै (१४) मधुको खाने और लगानेसे विच्छूका विष उतरताहै (१५) गिलोयके ठंढे कियेहुए काथमें मधु मिलाके पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (१६) इसको पलासके बीजों के स्वरसमें मिलाके पिलानेसे कृमिरोग मिटताहै (१७) निंब, एरंड और धतूरेके पत्तोंके अलग २ रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे कीड़े मरतेहैं (१८) इसको कांदेके रसमें मिलाके अंजन करनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (१९) इसके खाने और मलनेसे भिड़का विष उतरताहै (२०)२ तोले मधुमें दुगुना पानी मिला ओटाकर पिलानेसे जलोदर मिट जाताहै (२१) मधुको बत्तीपर लगाके गर्भाशयके मुंह तक पहुंचानेसे गर्भाशयका मल निकल जाताहै (२२) मधु को नमक और सिरकेमें मिलाके मलनेसे झांई दूर होतीहै (२३) मधु और जल मिलाकर पिलानेसे क्षयसे पैदाहुई तृषा मिटतीहै (२४) इसको सुंघाने

से तृषा मिटतीहै (२५) इसमें गायका घी मिला अंजन करनेसे शिरोत्पात रोग मिटताहै ।

संख्या (३८३)

(सं०) मधूच्छिष्टं, सिक्थकं, मयनं, मधुशेषम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोम, मैण	मोम	मीण	मेण	मम्, मोम	मोम,सित्था	मैनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मळहि,मेळुहु	न्याण,मेणा	शमै	मोम	Cera alba. Cera plumba	White wax Yellow wax

स्थान—मोम हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होताहै पीले और सफेदके भेद से यह दो प्रकारका होताहै ।

इसको मधुके छत्तेमेंसे निकालनेकी यह रीतिहै कि छत्तेमेंसे मधु निचोड़नेके पीछे उस छत्तेको औटते हुए जलमें डाल देनेसे मोम पिघल कर जलके ऊपर तैरने लग जाताहै और उसमें जो कोई दूसरा पदार्थ मिला हुआ होताहै वह नीचे बैठ जाताहै फिर उस पानीके पात्रको अग्नि परसे उतारकर रख लेवे, जब वह ठंढा हो जाय तब मोमको पानीपरसे इकट्ठा लेवे और जबतक वह निर्मल नहीं हो जाय तबतक ऐसे करता रहे, जो उस औटते हुए पानी में थोड़ा शोरेका तिजाब डाल दिया जाय तो मोम शीघ्रही निर्मल हो जाता है, यह मोम पीला होताहै ।

मोमको सफेद करनेकी यह रीतिहै—कि पीले मोमकी वत्तियें बना, या पतली चक्रियें बनाके सूर्यकी घाममें रख देनेसे उनके ऊपरका भाग सफेद हो जाताहै, फिर उसको मिला टिकड़ियां बनाके धूपमें रखनेसे उसके ऊपरका भाग फिर सफेद हो जाताहै, ऐसे बेर बेर करनेसे वह सब मोम सफेद हो जाताहै ।

प्रयोग—(१) मोम—स्निग्ध, मृदु, कटु, पिच्छल, मधुर, और व्रण

रोपणहै (२) घाव या कोमल त्वचा पर तीक्ष्ण पदार्थके स्पर्शसे जो चरपराहट होजातीहै वह मोमके लगानेसे अथवा उस पदार्थमें मोम मिलाके लगानेसे नहीं होतीहै (३) अतिसार और आमातिसार मिटानेवाली औषधियों में मोम मिला देनेसे उनकी शक्ति बढ़ जातीहै (४) मर्दनके तेल और लेपकी औषधियोंमें और गुदामें देनेकी बत्तियोंमें मोम मिलाया जाताहै (५) ५ से १० रतीतक मोम किसी चेपदार औषधि में मिलाके खानेके लिये देसकते हैं (६) स्नायु सम्बन्धी और गठियाकी पीड़ाको मिटाने के लिये मोम के तेलका मर्दन करते हैं (७) मोम मृदु रेचक है (८) ७ मासे मोममें ॰ मासे नमक मिला, बत्ती बना, घीसे चुपडकर गुदामें देनेसे दस्त आजाताहै और वायशूल मिटजाती है, जो यह बत्ती बाहिर निकल आवेतो फिर पीछी गुदा में देदेना चाहिये ।

संख्या (३८४)

(सं०) मधूकः, मधुस्रवः, गुड़पुष्पः, रोध्रपुष्पः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
महुवो	महुआ	महुड़ो	मोहाचावृक्ष	मउलगाछ	महुआ	इप्प, यिप्प

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
इलुप्पं	दिप्पेमर			Bassia latifolia.	The butter or Mahwa tree.

स्थान—मध्य हिन्दुस्थान, कांगड़ा, कमाउं, अवध, छुटिया नागपुरसे पश्चिमी घाटतक और बंबई अहातेके बहुतसे भागोंमें और विशेष करके गुजरातमें महुवेके वृक्ष बहुत होतेहैं । इसके पेड़ सूखी पथरीली जमीनमें अच्छे बढतेहैं ।

पहिचान—इसके वृक्षकी उंचाई ४०,६०, फुटकी होतीहै इसकी पेदड़ छोटी और गुलाईमें ६, ७ फुटकी होतीहै । इसके बहुतसी फैलीहुई शाखें होतीहैं । इसकी छाल एक दो इंच मोटी सफेद भूरी या कुछ काले रंगकी होतीहै उसमें बहुतसे सल और दरारें होतीहैं । इसकी अंतर छालमेंसे दूध निकलताहै उसका

रंग लाल होताहै। इसकी डालियोंके अन्तमें ५-६ इञ्च लम्बे बहुतसे पुष्प एक ठौर लगतेहैं। माघसे चैत्रतक इसके पुराने पत्ते गिरजातेहैं और उनके पीछेही नवीन निकल आतेहैं। इसके कच्चे फल हरे होतेहैं और पक जानेपर ललाई लिये हुए पीले या नारंजी रंगके हो जाते हैं, वे एक से दो इंच तक लम्बे और उन में एकसे ४ तक बीज निकलतेहैं, फलोंमें गिर होतीहै। पुष्प गिरजानेके पीछे प्रायः तीन महीने तक फल पका करते हैं। इसके सफेद दूधिया गोंद लगताहै। इस की छालमें से एक प्रकारका रंग निकाला जाताहै।

तेल—(१) इसके बीजोंकी गिर निकाल उसको दबाके तेल निकालतेहैं वह टण्डा तेल कहलाताहै (२) मध्य हिन्दुस्थानमें, इसकी गिरको पीस ओटा उसको कपड़े की दो तीन तहकी थैली में भरकर दबाके तेल निकाल लेतेहैं। यह तेल जलाने और साबुन बनानेके काम मे आता है और कभी २ उसको घीमें मिला देतेहैं।

प्रयोग—(१) महुआ कपेला, कड़वा, मधुर, शीतल, पौष्टिक और वीर्य्यवर्द्धकहै (२) इसके पुष्पोंका काथ पिलानेसे कफ मिटता है (३) इसका तेल लगाने और मर्दन करनेसे मस्तककी स्नायु सम्बन्धी पीड़ा और त्वचाके रोग मिटतेहैं (४) इसकी खल वामकहै (५) इसकी खलका लेप करने से फोडे साफ हो जातेहैं (६) इसकी मदिरा–उष्ण, ग्राही, बलवर्द्धक और भूख लगानेवालीहै (७) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे बहुतसे रोग मिटतेहैं (८) इनको पीसके मर्दन करनेसे वादीकी पीडा मिटतीहै (९) इसके हरे फल और कोमल छालका दूध औषधिके काममें आताहै (१०) इसकी छालका काथ ग्राही और बलवर्द्धकहै (११) इसकी छालको पीस गर्मकर लेप करनेसे गठिया की पीड़ा मिटती है (१२) इस की छाल को पीसकर मर्दन करने से पामा मिटतीहै (१३) इसकी खलके धुएँसे चूहे और कीड़े मरतेहैं (१४) आंतों के कीड़ोंके सबबस बच्चोंकी भुजामें जो बहुत खाज चला करतीहै उसको मिटाने के लिये यह तेल लगाया जाताहै (१५) सब शरीरकी निर्बलतासे पैदा हुए नपुंसकपनको मिटानेके लिये इसके २॥ तोले पुष्पोंको पावभर दूधमें ओटाकर पिलाना चाहिये (१६) इसके सूखे पुष्पोंको ओंटाके बफारा देनेसे अण्डवृद्धि मिटतीहै (१७) इसके पुष्पोंको खानेसे शरीरके पसीनमें एक मुख्य प्रकारकी

गंध पैदा होजातीहै(१८)गायको महुवे खिलानेसे उसके दूधमें महुवेकास्वाद आताहै (१९)नीच जातिके लोग इसके पुष्पोंको ओटाके खाया करतेहैं (२०) इसके पुष्पों को अधिक खानेसे भयानक वमन होने लग जातीहै (२१) इसके फल खाने के काममें आतेहैं (२२) इसके पुष्पोंको कच्चे या ओटाके और उनकी मिठाई बनाके खातेहैं (२३) इसके पुष्पोंसे खांड बनाई जातीहै (२४) इसकी खल और बीज खानेके काममें आतेहैं (२५) ये उत्तेजक, उष्ण और पौष्टिकहैं (२६) इसके सतका अंजन करनेसे शुक्ररोग मिटताहै (२७) कोल्हूसे निकालेहुए इसके बीजोंके तेलका मर्दन करनेसे बादीकी पीड़ा और सर्दीके रोग मिटतेहैं (२८) इसके पुष्पोंसे बनायेहुए तेलका मर्दन करनेसे सर्दी और गर्मी की मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२९) इसके पत्ते और टहनियोंको कूट रोटी बनाके अंडकोष पर बांधनेसे उनकी शोथ उतरतीहै (३०) इसके पत्तोंके तेल लगा तपाके बांधनेसे फोड़ा मिटताहै (३१) इसके बीजोंकी मींगीकी बत्ती बनाकर गुदामें देनेसे वायुशूल मिटतीहै (३२) एक बीजकी आधी मींगी और २॥ कालीमिरच पीसके सुंघानेसे मिरगीमें चेत आजाताहै ।

संख्या (३८५)

जलमधूकः, मंगल्यः, दीर्घपत्रकः, गौरिकाख्यः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
महुवे का भेद	जलमहुवा	जलमहुड़ो	जलमोहाचावृक्ष	जलमौल		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Bassia longifolia.	The Mawa or Mahva tree

स्थान—इस महुवेके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन और कनारामें होतेहैं ।

इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै । इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै वह आधा जमाहुआ और पील रंगका होताहै । यह तेल जलाने और साबुन बनानेके काममें आताहै और जल्दी बिगड़ जाताहै ।

प्रयोग—(१) जलमहुवा-मधुर, वृष्य, शीतल और बलवर्द्धक है (२) इसके बीजोंकी खल बाल धोनेके काममें आतीहै (३) इस महुवेका तेल त्वचाके रोगोंके काममें आताहै (४) इसके पुष्प हल्के सारकहैं (५) इसके पत्ते, छाल, छालका रस और कोमल फलका औषधिमें प्रयोग किया जाताहै (६) यह ग्राही है और अंगकी कठोरताको ढीली करताहै (७) इसमें भी उक्तमहुवे जैसे गुणहैं।

संख्या (३८६)

(सं०) मनःशिला, कुनटी, मनोगुप्ता, सुरागा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मैणसल	मैनशिल	मणशल मणशील	मनशील	मनछाल	मनशिल	मणिशिल

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मनोशिलइ	मणिशिल	—	—	Arsenicum sulphidum	Realgar Red orpiment Red arsenic Disulphide of *

* arsenic Native sulphuret of arsenic

स्थान—मैनशिल हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंमें से निकलतीहै।

पहिचान—मैनशिल तीन प्रकारकी होतीहै (१) श्यमांगी (२) करवीरका और (३) द्विखंडा, इनमें करवीरका सबसे उत्तम होतीहै।

इसको शुद्ध करनेकी रीति—(१) इसके छोटे २ टुकड़े कर, पोटलीमें बांध, हल्दीके क्वाथमें दोलायंत्रकी भांति एक पहरतक मंदाग्निसे औटाना चाहिये। (२) पूर्वोक्त रीतिसे बकरीके मूत्रमें तीन दिन तक पचाना चाहिये। (३) जलभंगरे और अगतियेके क्वाथमें उसी रीतिसे एक प्रहर तक पचाना चाहिये। (४) अगतियेके पत्तोंके स्वरसकी और अदरखके स्वरसकी अलग २ ७ बेर भावना देनेसे शुद्ध होजाताहै।

प्रयोग और गुण—(१) शुद्ध मैनसिल-पचनेमें भारी, सारक, उष्ण, लेखन, चरपरी, कड़वी और स्निग्ध होतीहै (२) विष, श्वास, कास, भूतबाधा और रुधिरविकारको मिटातीहै और शरीरके रंगको सुधारतीहै (३)

इसको पानीके साथ पीसके लेप करनेसे दाद और खुजली मिटतीहै (४) इसको सरसोंके तेलमें मिलाके लगानेसे जूंएं मरतीहैं (५) इसको घोड़े की लालमें घिसके अंजन करनेसे तन्द्रा दूर होती है (६) ३ तोले मनसिल को महीन पीस एक सेर गौके घीमें डालके ओटावें, जब उसका धूँआं निकलना बन्ध होजावे, तब एक पात्रमें पानी भरके उसमें डाल देवें पानीके ऊपर तैरतेहुए घीको उतार त्वचाके रोगोंके काममें लाना चाहिये (७) अशुद्ध मनसिलके सेवनसे मंदाग्नि, निर्बलता, कृमिरोग, बद्धकोष्ठ, मूत्रशर्करा, पथरी और मूत्रकृच्छ्र होजाताहै ।

संख्या (३८७)

(सं०) मयूरतुत्थं, वितुन्नकं, शिखिग्रीवं, मयूरकम् ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
नीलोतूथो	नीलाथोथा	मोरथुथु	मोरचूक	तुते	नीलाथोथा	मै इ)लतुत्तमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
गैलतुत्त	मैळतुत्त	तूतियाहिंदी	तुतियाहिन्दी	Cupri sulphas	Sulphate of copper Copper sulphate Blue stone Blue vitriol

इसको शुद्ध करनेकी रीति—बिल्ली और कबूतरकी बींट समानभाग ले, इन दोनोंके बराबर मोरतूथा और मोरतूथेका १० वां भाग सोहागा ले, सबको खरल कर, सरावसंपुटमें कपड़ मिट्टीसे बन्धकर, थोड़ी अग्निमें जलादेवे । ऐसे तीन आंच देकर फिर दही और दूधकी साथ अलग २ आंच देनेसे यह शुद्ध हो जाता है ।

इसकी भस्म करनेकी रीति—शुद्ध मोरतूथेमें शुद्ध गंधक और शुद्ध टंकण मिला, कटहरके रसमें खरल कर, कपड़ मिट्टीसे सरावसंपुटमें बन्ध कर, कुक्कुटपुटमें दो तीन बेर आंच देनेसे बहुत उत्तम भस्म बन जातीहै ।

प्रयोग-(१) यह बहुत अच्छा वामकहै । खाने और लगानेके काम आताहै (२) पुराने आमातिसार और अतिसारमें मोरतूथेकी १ रतीके सोलवें हिस्सेसे

आठवें हिस्से तककी मात्राहै (३) तांबेके जिन पैसोंपर काट आगयो हो उनको इमलीकी खटाईमें घंटे दो घंटे रखकर पित्तीवालेके शरीरपर मर्दन करना चाहिये (४) नीलतूथेको छाछमें बुरकाके विष खाये हुए मनुष्यको पिलानेसे वमन होकर उसका विष निकल जाताहै (५) खांसी या छातीके दूसरे रोग मिटानेके लिये तांबेकी चद्दरके एक २ इञ्चके सम चोरस टुकड़े कटवाके उस रोगीकी छाती और पीठपर उन टुकड़ोंको जमाके बांध देतेहैं (६) बिगड़े हुए फोडों पर तांबेके वरक लगा देतेहैं और उनको कई दिनों तक लगे रहनेके लिये उनपर पट्टी बांध देतेहैं (७) नीलातूथा-संकोचक, रेचक और दाहकहै (८) यह नेत्र और त्वचाके रोगोंमें उपकारीहै और विष उतारताहै (९) शुद्ध करनेकी रीति- नीलतूथेको घी और मधुमें खरल कर मूसमें डालके अवदेना चाहिये, फिर उसको दही के तोड़में ३ दिन तक भिगो सुखाके खानेके लिये प्रमाणसे दिया जावेतो वमन नहीं होतीहै (१०) इसकी आधी रतीसे एक रती तक मात्रा दी जातीहै (११) इसकी अधिक मात्रा देनेसे तीव्र विष का काम देताहै (११) अफीम, धतूरा, कुचला, सिंगीमोहरा, सोमल और दूसरी चीजोंके विषको उतारनेके लिये नीलेतूथेकी २॥ रतीकी मात्रा निवाये जलसे देनी चाहिये जो इससे आध घंटेमें असर न हो तो उतनीही मात्रा फिर देनी चाहिये (१२) ७ मासे नीलातूथा और १० मासे त्रिफलेको जो कूट कर रातभर पानीमें भिगो प्रातःकाल उस जलकी पिचकारी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१३) इसको महीन पीसके घावपर बुरकानेसे रुधिरका निकलना वन्ध हो जाताहै (१४) इसके गुण—यह चरपरा, सलोना कषैला, विशद, लघु, लेखन और भेदीहै, और नेत्रोंको हितकारीहै (१५) कृमि, कंडू और विषको मिटाताहै (१६) २ रती तूतिया और १ मासे कमलगट्टे पीसके निवाये जलके साथ पिलानेसे वमन होकर विष उतर जाताहै (१७) इसका जल नेत्रमें डालनेसे शुक्र रोग मिटताहै (१८) इसको अग्निपर चढाके लोहेके दस्तेसे महीन घोट फिर उतारके दांतों पर मलनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै ।

संख्या (३८८)

(सं०) मयूरशिखा, सहस्रा, शिखिनी, बर्हिचूडा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोरशिखा	मोरशिखा	मोरशिखा	मोराचीशेंडी	लालमोरगफुल	मोरशिखा	मयूरशिखि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
			हबक़	Celosia Cristata.	

स्थान — मोरशिखा बंगाल हिन्दुस्थानके उत्तरके भाग और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें सब ठौर पैदा होतीहै ।

प्रयोग—(१) यह—लघु, शीतल, कषेली और रस और विपाकमें खट्टी होतीहै (२) इसके पुष्प ग्राहीहैं (३) इनका क्वाथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (४) इनका शर्बत पिलानेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिरका निकलना बन्ध हो जाताहै (५) इसके बीज चरपराहट मिटानेवालेहैं (६) इसके बीजोंको घोट छानके पीनेसे मूतनेके समयकी पीड़ा मिटतीहै (७) उनके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे खांसी मिटतीहै (८) सोंफके अर्कके साथ इसके उनकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटताहै (९) इसकी जड़को चांवलोंके धोवनके साथ पीने और उन दिनोंमें केवल दूध पीते रहनेसे पथरी गल जातीहै ।

संख्या (३८९)

(सं०) मरिचं, श्यामं, यवनेष्टं, शिरोवृत्तम्, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कालीमिरच	कालीमिरच	मरि (री)	मिरें	गोलमिरच	कालीमरिच	मिरियालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंगरेजी
मोळह्	मिणसु	फिलफिल अस्वद	पिलपिलेगिर्द	Capsicum awinum C frutiscens C minimum	

स्थान—सरकारके जंगलोंमें काली मिरचकी बेलें अपने आप उगतीहैं और दक्षिण हिन्दुस्थानके उष्ण और आर्द्र भागोंमें काली मिरचकी बेलें बोई जातीहैं।

कालीमिरचोंको पूरी पके पहिले ही तोड़के सुखा देतेहैं ये पूरी पक जानेसे इनका चरपराट कम होजाताहै जब इनका रंग हरेसे लाल होने लगे तब जान लेना चाहिये कि अब ये तोडनेके लायक होगईहैं, तब इनको तोड़के सूर्यकी धूपमें अथवा मंदअग्निसे सुखालेतेहैं। इन कालीमिरचोंको जलके साथ पत्थर पर रगड़नेसे इनका छिलका उतरके सफेद निकल आतीहैं तब इनको सफेद मिरचें कहतेहैं, सफेद मिरच कोई दूसरी चीज नहींहै।

प्रयोग—(१) यह चरपरी, तीक्ष्ण, दीपन, पित्तकारक, उष्ण, रूक्ष और पेटकी पीड़ा मिटानेवालीहै (२) विषमज्वर, अर्श और मन्दाग्निमें काम आतीहै (३) मस्तकमें किसी ठौरके वाल उड़जातेहैं तो उस ठौरपर कालीमिरचका लेप करतेहैं (४) कालीमिरचका लेप करनेसे गांठें बिखरजातीहैं (५) पेटके यंत्रोंके बहावकी रुकावट मिटानेकेलिये कालीमिरचकी फकी देते हैं (६) जहर उतारनेकेलिये कालीमिरचके चूर्णको घीमें मिलाके पिलाना चाहिये (७) स्नायुजालकी निर्बलता मिटानेकेलिये कालीमिरचका प्रयोग करतेहैं (८) हाथ पैर या और किसी अंगकी शून्यता मिटानेकेलिये कालीमिरचका लेप करतेहैं (९) कालीमिरचके क्वाथसे गंडूष (कुल्ले) या इसके चूर्णसे दंतमञ्जन करनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै (१०) कालीमिरच और खीराककड़ी के बीज जलके साथ पीस छानके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (११) विषैल जीवोंके काटनेसे जो मनुष्य मूर्छित होगया हो उसको चैतन्य करनेकेलिये कालीमिरचके चूर्णकी नस्य देना अथवा इसके चूर्णको उसके मुंहमें बुरकाना चाहिये (१२) विसूचिकामें शरीरकी शिथिलता मिटानेकेलिये कालीमिरचके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (१३) ज्वरके पीछेकी निर्बलता, भ्रम, मूर्च्छा और आमाशयकी पीड़ा (जो मदाग्नि और आध्मानमें होजातीहै) उसको मिटानेकेलिये कालीमिरच बहुत अच्छीहै (१४) दुष्ट वायु आदिसे उत्पन्न ज्वरकी बारीको रोकनेकेलिये और नीचेके अर्द्धांग और गठिया सम्बन्धी रोगोंको मिटानेकेलिये इसका प्रयोग बहुत गुणकारीहै (१५) गलरोगमें गलेकी नशोंकी शिथिलता, अर्श और त्वचाके कई रोग मिटानेकेलिये कालीमिरचका लेप करना चाहिये (१६) कफसे मस्तकके भारीपनको मिटानेके लिये काली मिरचकी नस्य देनी चाहिये (१७) शूल और

विसूचिकामें कालीमिरचका काथ पिलाना चाहिये (१८) २॥ रत्तीसे १। मासे तक कालीमिरचका चूर्ण उत्तेजकहै, पेटकी शूल मिटाताहै और बारीसे आनेवाले बुखारको रोकताहै (१९) साधारण निर्बलताको मिटानेकेलिये और गुदाके बाहिर निकलनेको बन्ध करनेके लिये कालीमिरचका प्रयोग बहुत अच्छाहै (२०) जब विसूचिकाके वमन विरेचनादि सब बन्ध होजावें और पेटमें आध्मान होजावे उस समयमें काली मिरचका अष्टमांश तथा इससेभी अधिक शेष काथ करके पिलाना चाहिये (२१) कालीमिरचका लेप करने से शोथ मिटतीहै (२२ दांतों के मंजन में काली मिरचभी मिलाई जाती है (२३) इसको पीसके घीके साथ मर्दन करनेसे उदर्द रोग मिटताहै (२४) फोड़े फुन्सियों पर कालीमिरचका लेप करना चाहिये (२५) अम्लपित्त मिटानेकेलिये कालीमिरचका प्रयोग बहुत अच्छा है (२६) मन्दाग्नि में आध्मानको मिटानेके लिये हींग, कालीमिरच और कपूरकी गोली बनाके देना चाहिये (२७) इसको घीमें घिसके नाकमें टपकानेसे आधाशीशी मिटतीहै (२८) कालीमिरचको घोड़ेकी लालमें घिसकर अंजन करनेसे अधिक निद्राका आना बन्धहोताहै (२९) इनको थूंकमें घिसके आंजनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (३०) २१ कालीमिरच और २१ नीमके पत्तोंको महीन वस्त्रमें पोटली बांध आधसेर पानीमें ओटा ६ तोले रखके दोनों समय पिलानेसे ज्वर छूट जाताहै (३१) इसके चूर्णको गुड और दहीके साथ खिलानेसे पीनस रोग मिटताहै । परन्तु इसके खानेके समय घी युक्त गेहूंकी रोटीका पथ्य देना और रात्रिको सोते समय ठंढा पानी पिलाना हितकारीहै (३२) ७ कालीमिरचें थोड़े पानीसे निगलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (३३) १२ काली मिरच और शिरषके पत्ते घोट छानके पीनेसे उदरपीड़ा मिटतीहै (३४) इसके चूर्णको मधु और शक्कर के साथ चाटनेसे श्वास, कास और कफ मिटताहै (३५) दहीके तोड़में काली मिरचको घिसके अंजन करनेसे रतौंधा मिटताहै (३६) भांगरेके रस अथवा चांवलोंके पानीकी साथ इनको पीसके लेप करनेसे आधा शीशी मिटतीहै ।

संख्या (३६०)

(सं०) रक्तमरिचं, कटुवीरा, पित्तकारिणी, ज्वालामरिचम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लालमिरच	लालमिरच	मरची	मिरची	लंकामरिच	लालमरच	मिरपकाया

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मुलाकायू	मेणिशिन कायि	फिलफिलेअ-हमर	पिलपिलसुर्ख	Capsicum annuum	Red pepper

स्थान लाल मिरच हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै । यह लम्बाई, गुलाई और रंगके कारणसे सात प्रकारकी होतीहै पहाड़पर पैदाहुई मिरच वहुत चरपरी होतीहै ।

प्रयोग—(१) लाल मिरच खानेसे विगडीहुई वायु और जलका असर कम होताहै (२) यह मिरच उत्तेजकहै (३) इसकी गुड़में गोली बनाके देनेसे पेटकीशूल मिटतीहै (४) शकर और बादामके गोंदके साथ इसकी गोली बनाके देनेसे गवैये और व्याख्यान देनेवालोंका स्वरभंग मिटताहै (५) इसके हिम, फांट या क्वाथके कुल्ले करानेसे गलेके विगड़ेहुए घाव (चाहे वहीं हुए हों चाहे दूसरे स्थानके सम्बन्धसे हुए हों) मिट जातेहैं (६) इसकी और कुनैनकी गोली बनाके देनेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (७) छोटे जोड़ोंकी हल्की सोजिशको यह गोली मिटा देतीहै (८) यह गोली उत्तेजक है (९) आमाशयकी निर्वलता मिटानेवाली जितनी कड़वी, बलवर्द्धक और उत्तेजक चीजेंहैं उनमें लाल मिरच मिला देनेसे उनकी शक्ति बढ जातीहै (१०) लालमिरच, हींग और वचकी गोलियां बनाके विसूचिकामें देतेहैं (११) मूत्रकृच्छ्रवालेको लालमिरचसे बचना चाहिये (१२) सर्पके काटेहुए का अचेतपन मिटानेके लिये लालमिरचको महीन पीसके उसके मुंहमें वुरकाना चाहिये (१३) विषूचिकामें अफीम और सेकीहुई हींगकी गोली देके ऊपर लालमिरचका क्वाथ पिलाना चाहिये (१४) इसके हिम फांट या क्वाथ के कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (१५) वीज निकाली हुई मिरच (मिरच के

फूतरे) कोई हानि नही करतीहै (१६) इसके बीज बहुत दाह करतेहैं (१७) मिरचको पीसके कुत्तेके दंशपर लेप करतेहैं (१८) तीन पान औंटतेहुए पानीमें १। तोले लालमिरच डाल ठंढा कर छानके कुल्ले करानेसे तीव्र मुखपाक मिटता है (१९) कंपवायु मिटानेकेलिये सवा मासे लालमिरचकी गोली बनाके देनी चाहिये (२०) विषूचिकामें लालमिरच, कपूर और सेकी हुई हींगकी गोली देनी चाहिये (२१) काग या तालुकी छत लटक जावे तो लाल मिरचको कुछ देरतक मुखमें रखके मुंहका पानी झार देना चाहिये (२२) लालमिरच, रेवतचीनी और सोंठको बराबर ले गोलियां बनाके खिलानेसे मंदाग्नि मिटती है (२३) बद्धकोष्ठवालेको ये गोलियें लाभकारी हैं। और इन गोलियों से आंतो मे उत्तेजना पैदा होतीहै (२४) रक्तातिसार मिटानेके लिये इसके बीजोंके तेलकी १० बूंदें २ मासे शक्करमें मिलाके फकी देना चाहिये (२५) उष्णकालमे शरीरपर जो फुन्सियां होतीहैं उनपर यह तेल लगाना चाहिये (२६) पित्तसे जिसकी भूख बंध होगई हो उसको शक्तिके अनुसार इसकी ५ से २० बूंद तक शक्कर में डालके फकी देनी चाहिये (२७) विच्छूके दंशपर जो ठंढी हवा या ठंढा पानी अच्छा लगता हो तो उसपर इसतेलके लगानेसे शान्ति होतीहै (२८) ईशरबोलकी ३ मासे भुस्सीपर इस तेलकी ५ से १० बूंदें डालके फकी देनेसे पित्तका मूत्र कृच्छ्र मिटताहै (२९) इस एक बीजकी मोममें गोली बनाके विषूचिकामें देनेसे लाभ होताहै (३०) इसके २० तोले बीजोंमेंसे २, ३ तोले तेल निकलताहै।



संख्या (३९१)

Latin Capsicum frutescens Eng Spur papper Cayenne pepper Goat Pepper Chillies The shrubby capsicum

स्थान—लालमिरचकी यह जातिभी हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै। परन्तु बहुधा बंगाल ओडीसा और मद्रासकी वालू रेतकी हल्की पृथ्वीमें शीतकालमें बोई जातीहै। जब यह पकजातीहै तब इसका रंग चमकीला लाल होजाताहै। यह सबसे बड़ी होतीहै।

प्रयोग—(१) ज्वर मिटानेवाली औषधियोंमें लालमिरच मिलाके देने-

से पानीजरा और नारीका ज्वर छूट जाताहै (२) इसको आकड़ेके दूधमें खरल कर गोलियां बनाके देनेसे जलंधर मिटताहै (३) हींग और गुड़के साथ गोलियां बनाके देनेसे पेटका दर्द मिटताहै (४) सेकके धोई हुई भंग और लाल मिरच बराबर ले, महीन पीस, दुगुने गुड़में गोलियां बना, एक २ मासे भर गोलियां, तीन तीन घंटेके अंतरसे शीतज्वरके आनेके पहिले, तीन वेर देनेसे ज्वर छूटताहै (५) छोटे जोड़ोंकी सूजन, मंदाग्नि और विसूचिकामें इसका प्रयोग बहुत उपकारीहै (६) इसके बीजोंके बहुत महीन पांच पांच रत्ती चूर्णको २॥ तोले गर्म जलके साथ दिनमें दो तीन वेर फकी देनेसे हाथ पैरोंकी कंपवायु मिटतीहै (७) इनको तिल्लीके तेलमें जला छान उस तेलको मर्दन करनेसे छोटे जोडोंकी सूजन उतरतीहै ।

———o———

संख्या (३६२)

Latin Capsicum minimum C fastigiatum Eng Bird's eye chilli

स्थान— यह जातिभी हिन्दुस्थानभरमें बोई जातीहै, परन्तु बहुत नहीं ।

पहिचान—यह आकारमें छोटी होतीहै और पहिली संख्याकी मिरचसे बहुत मिलतीहै । इसके बीज छोटे, मिरच सीधी, प्रायः गोल और पकने पर पीली होजातीहै ।

प्रयोग--(१) २॥ तोले लाल मिरच और २॥ तोले नमक, इन दोनों को पीस, ओटतेहुए सवा पाव पानीमें डाल देवें जब ठंढा होजावे तब उसमे सवा पाव सिरका मिलाके छान लेवें इसमेंसे १। तोले हर चोथे घंटे पिलानेसे जवान मनुष्यके गलेकी पीड़ासे पैदाहुआ ज्वर छूट जाताहै (२) इसकी मात्रा बच्चोंकी आयुके अनुसार तथा रोगकी प्रबलताके अनुसार न्यूनाधिक कर देनी चाहिये (३) गले सम्बन्धी और स्वर सम्बन्धी रोगोंमें इसके कुल्ले करनेसे बहुत लाभ होताहै (४) यह मिरच तीव्र उत्तेजकहै (५) निरंतर रहनेवाले पैत्तिक ज्वरकी वमनको रोकनेके लिये इसके चूर्णको सिरकेकी सिकंजी और पैपरामिण्ट के साथ पिलाना चाहिये (६) शब्दवाहिनी शिराओं के शिथिल हो जानेसे जो आवाजका भारीपन, स्वरभंग या गलेके दूसरे रोग

मिटानेके लिये इन्हीं रोगोंकी दूसरी औषधियोंमें मिरचको मिला औटाके उस काथसे कुल्ले कराने चाहिये (७) राईके साथ इस मिरचको पीस उसका पलस्तर बनाके लगानेसे राईका गुण बहुत बढ जाताहै (८) मंदाग्नि, कामलासहित ज्वर, और कभी २ अतिसार और अर्शमें भी इसका प्रयोग किया जाताहै ।

संख्या (३९३)

(सं०) मरुवकः, फणिज्झकः, मरुत्तकः, प्रस्थपुष्पः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलङ्गी
मरवो	मरुवा	मरवो	सब्जा, मर्वा	गंधतुलसी	मरुआ	मरवमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शब्जा	मरवा	मरजन, जोश	मरजन, गोश	Origanum marjorana M. hortensis.	The sweet marjoram

स्थान—मरुवेके वृक्ष बहुधा हिन्दुस्थानके बागोंमें बोये जातेहैं ।

प्रयोग—(१) यह चरपरा, उष्ण, रस और पाक में चरपरा पचने में लघु, रोचक, कड़वा, रूक्ष, दीपन, हृद्य और पाचकहै । अग्नि बढ़ाताहै । वृश्चिकादिविष, कफ, वात, कृमि, कुष्ठ, रुधिरविकार, ज्वर, कंडू, अरुचि, श्वास शोथ, हृद्रोग, मलकी गांठ, आध्मान शूल, मंदाग्नि, त्वग्दोष, भिलावेकी शोथ को मिटताहै इसके बीज ग्राहीहैं (२) इसके बीजोंकी फक्की लेनेसे शूल मिटती है (३) सूरज मुखी और इसके पत्तोंकी फक्की लेनेसे शूल मिटतीहै (४) इसके पंचांगकी धूनी उत्तेजकहै (५) आमातिसारकी शूल मिटानेके लिये इसके बीजोंके काथका बफारा देना चाहिये (६) इसको पीसके अंडकोश-पर बांधनेसे उनकी सूजन और पीड़ा मिटतीहैं (७) इसके रसका लेप करनेसे वातपीड़ा मिटतीहै । इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै वह सुगंधके काममें आताहै ।

——.o o——

संख्या (३६४)

(सं०) मर्यादवल्लि, मर्यादा, सागरा, मन्मथा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	मरजादवेल	मरजादवेल्य	मर्यादवेल			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Ipomaea biloba I Pes Caproe	

स्थान–मर्यादवल्लीकी बेलें पश्चिमके किनारे समुद्रके पास होतीहैं ॥

पहिचान–इसकी बड़ी बेल होतीहै, इसके पत्ते कचनारके पत्तोंके जैसे दो दो जुड़े हुए होतेहैं । इसके लाल रंगके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग – (१) यह शीतल, ग्राही, सारक, पचनेमें भारी और अन्तमें उष्ण होतीहै । वादी पैदा करतीहै । विषूचिका, आम, शूल और वमन को मिटातीहै (२) इसके पत्ते गठिया पर बांधे जातेहैं (३) पेटकी शूल मिटाने के लिये इसके पत्तों पर एरंड का तेल चुपड़ गर्म करके बांधना चाहिये, (४) जलंधर वाले के मूत्रवृद्धि करनेके लिये इसके पत्तोंका अर्क पिलाना चाहिये और उनको पीस गर्म करके उसके पेटपर लेप करना चाहिये (५) इसके प्रयोग से स्त्री गर्भको धारण करतीहै ॥

संख्या (३६५)

(सं०) मल्लिका, तृणशून्यं, भूपदी, शीतभीरुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोतियो	बेलमोतिया	वेल्य,डोलर	वटमोगरा	मलिकाफुल रगाछ	मोतिया	मल्लेपुव्वु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मल्लिहई	मल्लिगे			Jasminum sambac J Zambac.	

स्थान—मोतिया हिन्दुस्थानके बागोंमें बोया जाताहै।

पहिचान—इसका झाड़ बहुधा वृक्षोंके आश्रय रहताहै इसकी प्रकृति-बेलडी जैसी होतीहै, इसके २--३ इंच लम्बे पत्ते डंडीके आमने सामने लगतेहैं, वे अण्डाकार और कुछ लम्बे होतेहैं। चैत्र वैशाखमें इसके सुगंधवाले सफेद पुष्प लगतेहैं इसके पुष्पोंसे तेल बनातेहैं जिसमें बहुत सुगंध होतीहै।

प्रयोग—(१) इसके पुष्पोंको पीस टिकिया बनाके दिन में एक दो वेर स्त्रीके स्तनोंपर बांधनेसे दुग्धका संचार बन्ध होजाताहै। किसी २ के एक दिन और किसी २ के तीन दिन बांधने पड़तेहैं (२) सूखे पत्तोंको पानीमें भिगो पुल्टिस बांधनेसे पुराना और बहुत समयमें अच्छा होनेवाला व्रण मिटताहै (३) अपने आप उगीहुई मल्लिकाके जड़का काथ करके पिलानेसे स्त्रियोंका कष्टसे मासिकधर्म होना मिटताहै (४) इसके पुष्पोंका शर्वत पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै (५) इसके काथसे आंखोंको धोनेसे अथवा इसके अर्ककी बूंदे आंखमें डालनेसे ज्योतिकी निर्बलता मिटतीहै (६) इसके काथके गंडूष करनेसे मुखपाक मिटताहै।

संख्या (३९६)

(सं०) मसूरः, रागदालिः, मंगल्यः, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मसूर	मसूर	मसूर	मसूरा	मसूरि	मसूर	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		अदस्	मरजूमक	Lens esculenta Ervum L.	The Lentil

स्थान—मसूर शीतकालमें सब हिन्दुस्थानमें बोया जाताहै।

प्रयोग—(१) मसूर–मधुर, शीतल, ग्राही, रूक्ष, लघु, कषेला और विशदहै (२) बिगड़ेहुए और बहुत समयमें अच्छे होनेवाले व्रणको साफ

करनेके लिये मसूरका लेप करना चाहिये, या उसका पुल्टिस बनाके बांधना चाहिये (३) आंतोंके रोग मिटानेके लिये मसूरका सेवन करना चाहिये (४) चेचक निकालनेके पीछे जो फोड़े हुआ करतेहैं उनके ऊपर मसूरकी फलीका लेप करना चाहिये या इसका पुल्टिस बनाके बांधना चाहिये (५) यह उष्ण है और इसका लगातार कई दिनों तक सेवन करनेसे उष्माके कारण शरीर पर फोड़े फुन्सी होने लगजातेहैं (६) मसूरकी भस्मका मंजन करनेसे दांत साफ रहतेहैं (७) इसके पत्तोंको ओटाके गरारा करनेसे कंठकी सूजन मिटती है (८) मसूरको जला भैंसके दूधमें मिलाकर नित्य दोनों समय लगानेसे असाध्य घाव भर जाताहै (९) मसूर और अनारकी छाल ओटा, पीसके लगानेसे गर्मीसे पैदाहुई अण्डकोषकी सूजन मिटतीहै (१०) इसके काथसे अंगुलियोंको धोनेसे उनकी खुजली मिटतीहै (११) इसके तुसोंकी धूनी देनेसे ज्वरके रोग मिटतेहैं (१२) इसके काथमें बीलगिरको सिजोके खानेसे संग्रहणी मिटतीहै (१३) इसकी दालको निवाये पानीसे पीसके लेप करनेसे पैरोंकी दाह मिटतीहै (१४) इसको दूधसे पीस उसमें घी डालके मुखपर मलनेसे मुखकी कान्ति बढतीहै (१५) मसूरकी राख और सफेद कत्था दोनों बराबर ले, पीसके बुरकानेसे मुखके छाले मिटतेहैं (१६) मसूर और अनार की छालको पीसके लगानेसे नाड़ीव्रण मिटताहै (१७) मसूर को सिरके में ओटा अर्द्धोष्ण लेप करनेसे पीठ और कटिकी पीड़ा मिटतीहै (१८) मसूर को नींबूके रसके साथ पीस, लेप करने या मलनेसे मुखकी झांई मिटतीहै (१९) मसूर और खरबूजोंके बीजोंकी मींगी, दोनों बराबर ले, पीसके उबटना करनेसे शरीरका रंग लाल और चमकदार होजाताहै (२०) मसूरके काथ और बीलगिरसे घृत सिद्ध करके सेवन करानेसे संग्रहणी मिटतीहै (२१) घीके साथ मसूरका लेप करनेसे विसर्प रोग मिटताहै (२२) इसके आटेका उबटना करनेसे शरीरका रंग सुधरताहै (२३) मसूरका एक दाना और नीमके दो पत्तोंको मेपकी संक्रान्तिके दिन खानेसे एक वर्ष तक विषका भय नहीं रहता है (२४) पुराने और स्वाभाविक बद्धकोष्ठको मिटानेके लिये मसूरका सेवन कराना चाहिये । (२५) १०० तोले मसूरमें ५८॥ तोले मैदा, सवा तोले तेल, और पौने बारह तोले पानी होताहै ।

संख्या (३६७)

(सं०) माखान्नं, पानीयफलं, मखान्नं, पद्मबीजाभम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
फूलमखाना।	मखाना।	मखाणा	मखाणे	माखना	फूलमखाना।	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
				Euryale ferox E. indica	The gorgon fruit

स्थान—मखाने के वृक्ष पूर्वी बंगाल, आसाम, मनीपुर, अवध और कश्मीर आदि देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इस वृक्ष के शाखा नहीं होती है। ये मीठे पानी के बड़े तालावों में होते हैं। इसके पत्ते गोल और नोक या कांटेदार होते हैं जिनकी मध्यरेखा दो से तीन फुटतक होतीहै। इसके पत्ते पानीपर तैरते रहतेहैं। इसके पुष्प नीले, गहरे नीले, नाफरमानी, या चमकीले लाल रंगके होतेहैं। इसके फल गोल, कांटेदार, नारंगी जितने बड़े और पकने पीछे वे कई ठौर से फूल जाते हैं, क्योंकि इसके बीज भीतर बड़े होजाते हैं। इसके बीज मटर जितने बड़े और काले रंगके होतेहैं इनको चने या धानीकी जैसे उष्णरेतसे सेक लेतेहैं। इनको मारवाड़ी में फूलमखाने कहते हैं ये फलहारमें और खानेके काममें आतेहैं।

प्रयोग—(१) फूलमखाने—ग्राही, बल्य, विष्टम्भी, वृष्य रूक्ष, शीतल, मीठे, कषेले, तिक्त और गुरुहैं (२) इनको घीमें तलके खिलानेसे आंतिसार मिटताहै (३) इनकी खीरपर सालममिश्रीका चूर्ण बुरकाके खिलानेसे प्रमेह मिटताहै (४) ये पचनेमें हल्केहैं, इसलिये मंदाग्निवाले रोगीको इनका पथ्य देना चाहिये (५) रोग छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटाने के लिये इनका सेवन कराना चाहिये (६) ये कफ और वातको पैदा करतेहैं (७) रक्तपित्त और दाहको मिटातेहैं और गर्भ स्थापन करतेहैं।

संख्या (३९८)

(सं०) माडः, ध्वजवृक्षः, वितानकः, मद्यद्रुमः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	माड	माड	भेर्लिमाड			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Caryota urens	Hill plam Sagot palm Torn leaved caryota

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिमी घाट पर महाबलेश्वर तक, ब्रह्मा, बंगाल, ओड़ीसा और सिक्कममें बहुत होतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह–शीतल, चरपरा, रोचक और कषेलाहै । तृषा और श्रमको मिटाताहै । पित्त, दाह, बादी और कफको पैदा करताहै (२) इसकी ताजी ताड़ीका एक गिलास प्रातःकाल पीनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (३) इसके फलको पीसके लेप करनेसे आधाशीशी मिटतीहै (४) इस वृक्षमें से ताड़ी निकलतीहै जिसकी मदिरा बनाई जातीहै ।

संख्या (३९९)

(सं०) माणिक्यं, पद्मरागः, रत्नराट्, शोणरत्नम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
माणक	मानिक	माणयक चुनी	माणिक	मानिक	लाल	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		याकूत		Rubinus	Rube

गुण—(१) माणक–मधुर, स्निग्ध, रसायन, दीपन और वृष्यहै । कफ, भूतबाधा, वात, पित्त, व्रण और क्षयको मिटाताहै ।

संख्या (४००)

(सं०) माधवी, वासन्ती, अतिमुक्ता, चन्द्रवल्ली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	माधवी	माधवीलता	मधुमाधवी	माधवीलता	माधवी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Hiptage madablota, Gaertner racemosa	Clustered hriptage.

स्थान—माधवीकी बेलें हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होतीहैं इसकी बेलें बहुधा शालके वृक्षपर चढतीहैं ।

पहिचान—इसके ४—६ इंच लम्बे और अरण्डेके आकारके चिकने पत्ते लगतेहैं। इसके पौन इंच लम्बे सफेद और पीले रंगके सुन्दर पुष्प लगतेहैं। वैशाखमें इसके फल लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (२) इसका अर्क पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (३) खुजली मिटानेकेलिये इसके अर्कका लेप करना चाहिये (४) इसके पचांगका तेल बनाके मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै (५) इसके पत्तोंको औटाके पिलानेसे श्वास मिटताहै ।

संख्या (४०१)

(सं०) मानकं, स्थूलकंदः, महापत्रः, महच्छदः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मानपात	मानकंद		मानकंद	मानकचु		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Alocasia indica Arum indicum,,	

स्थान—मानपात बंगालमें होताहै, परन्तु हिन्दुस्थानमें सब बागोंमें लगाया जाताहै। इसके वृक्ष ढीली पृथ्वीमें या राख भरेहुए गढ्ढेमें लगाये जावेंतो बहुत अच्छे बढतेहैं।

प्रयोग—(१) मानकन्द-शीतल, चरपरा, मीठा, गुरु और पाकमें लघु है (२) यह सर्वांग जलमयशोथ में काम आता है (३) इसके पत्तोंकी सूखी डंडियोंको पीस उनका आटा निकाल उसको चांवलोंके आटेकी साथ इतना ओटावें कि उसका सब पानी जल जावे तब उसको उक्त शोथवाले रोगीको खानेकेलिये देवे और इसके सिवाय उसको और कुछ खानेको न देवे (४) इसका कंद हल्का सारकहै (५) इसके प्रयोगसे मूत्रकी वृद्धि होतीहै (६) इसके खानेसे बद्धकोष्ठकी प्रकृति मिटजातीहै (७) अर्शवालेकेलिये इसका सेवन बहुत उपकारीहै (८) इसके कंदको जला पीस मधुके साथ लगानेसे बच्चोंके मुंहके सफेद छाले मिटतेहैं (९) इसके पत्तोंकी डंडियां जो २—३ फुट लम्बी होतीहैं, और कुछ महीनोंकेलिये निर्दूषित पड़ी रहतीहैं, उनको बंगाली लोग इस रीतिसे खानेके काममें बहुत लातेहै कि इसके कंद और पत्तोंकी डंडियोंके कड़े छिलकेको दूरकर उनकी गिरको पानीमें ओटाके उस पानीको निकाल देतेहैं, नहीं तो गले और तालूमें कांटे होजातेहैं (१०) निर्बल मनुष्योंके लिये इसकी पुरानी सूखी डंडियोंके आटेका भोजन बहुत उपकारी है। इसका आटा अरारूट और सागूदानेका बहुत अच्छा प्रतिनिधि (बदला) है। यह आटा पचनेमें चावलोंसे हल्काहै। जिस सर्वांग जलमय शोथवाले रोगीको खानेके लिये अन्न छुड़ाके केवल दूध देते रहनेसे दूधही पचताहै और अन्न पचना बन्ध हो जाताहै उसको इस कंदके आटेका पथ्य खानेका अभ्यास करानेसे उसको पीछा अन्न पचने लग जाताहै (११) मंदाग्निवाले के लिये कंद और डंडियोंके आटेका पथ्य बनाके खिलाना बहुत उपकारीहै क्योंकि यह पचनेमें हल्का, मांस बढ़ानेवाला, चेप और रसदार होताहै (१२) मानकंदका चूर्ण एक भाग और चांवल दो भागकी दूध और जलमें खीर बनाके खिलानेसे वातोदरकी शोथ उतरतीहै (१३) इस कंदके क्वाथ और कल्कसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे तीनों दोषोकी शोथ उतरतीहै।

संख्या (४०२)

(सं०) मालती, गंधभद्रा, मधुमल्ला, सुगंधा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजाबी	
मालती	मालती	मालती	मालती	गंधमालती	मालती	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रे
				Aganosma caryaphyllata. Ec hites. C	

स्थान-मालती वंगालके नीचेके भाग दक्षिण प्रायद्वीप और वहु हाड़ी भागोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१) मालती-उष्ण, रेचक और वलवर्द्धकहै (२) पित्त रुधिरविकार, त्वग्दोष, कृमि, कुष्ट, व्रण, शोथ, कानका और मुखपाकको मिटातीहै (३) इसके पत्ते कफ और पित्तको मिटातेहैं इसके पुष्प नेत्रोंको हितकारीहैं (५) रुधिर शुद्ध करनेकेलिये इसका करना चाहिये (६) यह पित्तविकारको मिटानेवालीहै (७) इसके चूर्णमें ६ मासे शक्कर मिलाकर फकी देनेसे मासिकधर्म में प्रमाणसे रुधिरका निकलना बन्ध होताहै ।

संख्या (४०३)

(सं०) माषः, कुरुविन्दः, वृषाकरः, पित्र्यः ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजाबी	तैलंगी
उडद	उड़द	अड़द	उड़ीद	माषकलाई	माह	मिनुमुलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Phaseolus mungo	

स्थान—उड़दोंकी खेती हिंदुस्थानमें सब ठौर होतीहै ।

पहिचान—उड़द दो प्रकारके होतेहैं, एक काले, जोवर्षा ऋतुके प्रारम्भमें बोये जातेहैं और सावन भादोंमें पकतेहैं । दूसरे हरे रंगके जिनको "कचिये उड़द" कहतेहैं ये भी वर्षाके प्रारम्भमें बोये जातेहैं और आसोज कातीमें पकतेहैं। कचिये उड़दोंको कभी कहीं वसंत ऋतुमें बोतेहैं अर्थात् माघमें बोतेहैं और वैशाखमें काटतेहैं । १०० तोले उड़दोंमें ५६ तोले मैदा और सवा दो तोले तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) उड़द-स्निग्ध, पचनेमें भारी, रस और विपाकमें मधुर, रोचक, उष्ण, शुक्ल, तृप्ति और बलकारक, वृंहण, शोषक, वृष्य, वातनाशक, कफ और पित्तकारकहैं (२) उड़दोंको सोंठके साथ ओटाके पिलानेसे अर्द्धांग वात मिटतीहै (३) एरंड़की जड़की छालके साथ उडदोंको ओटाक पिलानेसे गठिया मिटतीहै (४) एक रती सफेद चिरमीके चूर्णको इनके क्वाथ पर बुरकाके पिलानेसे स्नायुजालकी शक्ति बढ़तीहै (५) बादी मिटानेवाले कई तेलोंकी औषधियोंमें उड़द मिलाके जो तेल बनाये जातेहैं, उन तेलोंके मर्दनसे गठिया, जुड़े हुए घुटने और कड़े पड़े हुए कंधे आदिकी बादीकी पीड़ा मिटती है। (६) इसकी जड़ मादकहै (७) इसका क्वाथ पिलानेसे हड़ फूटन मिटतीहै (८) पीपवाले फोड़ोंपर इनका पुल्टिस बांधतेहैं (९) इनकी दाल रांधकर खानेसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (१०) उड़दोंको रांधकर पित्तशोथमें बांधना चाहिये (११) विषूचिकाकी प्रवृत्तिके दिनोंमें बंगालवाले उड़दकी दाल खाना ठीक समझतेहैं क्योंकि वे इसको ठंढी और लघु (तुरंत पचनेवाली) मानतेहैं परंतु आयुर्वेदमें इनको उष्ण और गुरु लिखतेहैं देशभेदसे गुणोंमें यह अंतर हो सक्ताहै (१२) इनकी दाल, मोगर, रोटी, पापड़ आदि कई प्रकारके भोजनके पदार्थ बनतेहैं (१३) तालुपर इनके आटेका लेप करनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (१४) हल्दी, शणकी छाल और इनके चूर्णका धूम्रपान करनेसे हिचकी बन्ध होतीहै (१५) इनके आटेके बड़े तलके मक्खनके साथ ७ दिन तक खानेसे अर्दितरोग मिटताहै (१६) इनके स्वरसकी नस्य देनेसे अवबाहुक रोग मिटताहै (१७) इनका हुकेमें धरके तमाखूकी भांति इनका धूआँ पीनेसे हिचकी मिटतीहै ।

संख्या (४०४)

(सं०) माषपर्णी, महासहा, कांबोजी, हयपुच्छी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	बनउर्दी	अड़दवेल	रान उड़ीद	माषानी	जंगलीमाह	कारुमिनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
काडुलंद्द	काडुद्दु				

गुण—(१) यह वृष्य, कड़वी, बलवर्द्धक पौष्टिक, शीतल, रूक्ष, मधुर, ग्राही और कफवर्द्धकहै (२) रुधिरविकार, त्रिदोष, ज्वर, पित्त, रक्तपित्त, क्षय, कास, शोष और दाहको मिटातीहै ।

संख्या (४०५)

(सं०) मिश्रेया, मधुरा, छत्रा, तृषापहा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोंफ	सोंफ	वरियाळी	बडीशोप	मौरीगाछ	सोंफ	सोपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सोंपु	सोपु			Fooniculum vulgare F Panmorium	Fonnel.

स्थान—सोंफ हिन्दुस्थानमें सब ठौर वोई जातीहै ।

प्रयोग—(१) सोंफका हिम पिलानेसे ज्वरकी दाह मिटतीहै (२) सोंफको घीमें तल मिश्रीके साथ दरगचके फकी देनेसे आमातिसार मिटताहै (३) इसका फांट पिलानेसे पेटकी शूल और बच्चोंका अजीर्ण मिटताहै (४) पेटकी शूल मिटानेवाली दूसरी औषधियोंमें इसके तेलकी १५ बूंदें डालके पिलानेसे उदरशूल मिटतीहै (५) इसके और बीलागिरके चूर्णकी फकी लेनेसे

अतिसार मिटताहै (६) यह उत्तेजक, चरपरी और उत्तमगंधवालीहै (७) इसकी जड़का काथ पिलानेसे विरेक होताहै (८) इसके पत्तोंका रस या फांट पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (९) ७ मासे सौंफमें वरावर शक्कर मिलाके सोते समय फक्की लेनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढतीहै (१०) ७ मासे सौंफको घी में सेक उसमें बराबर मिश्री मिला, चूर्ण बनाके ठंढे जलके साथ फकी देनेसे कफका अतिसार मिटताहै (११) इसके प्रयोगसे उदरकी सर्दी और निर्बलता मिटतीहै (१२) १०० तोले सौंफमेंसे ३ तोले तेल निकलताहै वह उडनेवाला पीले रंगका और अच्छी सुगंधवाला होताहै ।

संख्या (४०६)

(सं०) मुकूलकं, पिस्तं, दन्तीफलसमाकृतिः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पिस्ता	पिस्ते	पस्ता	पिस्ते	पेस्तागाछ	पिस्ता	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Pistacia vera P Narbonensis.	The Pistachis nut.

स्थान—पिस्तेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं, ये अफगानिस्थान और परसियासे आतेहैं । इस वृक्षके एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ लगताहै इसके पत्ते रंगतके काममें आतेहैं । १०० तोले पिस्तोंमेंसे ६० तोले गाढा हरे रंगका मीठा और सुगंधयुक्त तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) पिस्ते—पाचक, उष्ण, मांसादिककी न्यूनताको पूर्ण करनेवाले, बलवर्द्धक और पुरुषार्थ बढानेवालेहैं (२) इनका तेल चीजोंकी चरपराहट मिटानेकेलिये काममें आताहै (३) इनके तेलका सेवन करनेसे रुधिरमें जो किसी तत्वकी न्यूनता होतीहै वह मिटजातीहै (४) इसकी छाल के चूर्णकी फकी देनेसे अजीर्ण मिटताहै (५) इसकी छालके चूर्णको घी और शकरकी साथ खानेसे बल बढताहै (६) पिस्ते, हृल्लास और वमनकोरोकतेहैं।

संख्या (४०७)

(सं०) मुचुकुंदः, हरिवल्लभः, रक्तप्रसवः, प्रतिविष्णुकः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मुचकुंद	मुचकुंद	मुचकुंद	मुचकुंद वृक्ष	मुचकुंद		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंगरेजी
				Pterospermum suberifolium P canescens	

स्थान— मुचकुन्दके वृक्ष उत्तरी सर्कार और कर्णाटकमें बहुत होतेहैं।

प्रयोग—(१) यह चरपरा, उष्ण और कड़वाहै । स्वरभंग, कफ, कास, त्वचाके रोग, शोथ, मस्तकपीड़ा, त्रिदोष, रक्तपित्त, व्रण और पांवको मिटाताहै (२) इसके पुष्पोंको चांवलोंकी कांजीके साथ पीसके लेप करनेसे आधाशीशी मिटतीहै (३) इसके केवल पुष्पोंका लेप मस्तकपीड़ाको मिटाताहै (४) इसके पुष्पोंके चूर्णका घी और शक्करके साथ हलुवा बना नित्य एक तोला खानेसे अर्शसे रुधिरका निकलना वन्ध होजाताहै (५) इसके पुष्पोंको पानीमें भिगोके मलनेसे पानी गाढा होजाताहै ।

संख्या (४०८)

(सं०) मुण्डी, श्रावणी, भिक्षुः, परिव्राजी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोरखमुंडी	गोरखमुंडी	गोरखमुंडी	बरसबोंडी	मुडीरी	गोरखमुंडी	बोड़तरमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
करन्दै.	बोड़ितर			Spharaenthus indicus S. Mosllis.	

स्थान—गोरखमुण्डी-सूखीहुई नाड़ियोंमें हुआ करतीहै ।

यह छोटी बड़ीके भेदसे दोप्रकारकी होतीहै।

प्रयोग-(१) गोरखमुंडी-कड़वी, विपाकमे चरपरी, उष्ण वीर्य, मधुर, पचनेमें लघु, कषली, भेदक, बल और बुद्धिवर्द्धकहै (२) पेटके कीड़े निकालनेकेलिये इसके बीजोके चूर्णकी फक्की देनी चाहिये (३) इसकी जड़को ओटाके पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (४) इसके पुष्पोंके प्रयोगसे रुधिर शुद्ध होताहै (५) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे बल बढताहै (६) इसकी छालके चूर्णको छाछके साथ पिलानेसे अर्श मिटताहै (७) इसकी जड़के कल्कको पानीमें घोल उसमे तिल्ली का तेल मिलाके ओटावे जब सब पानी छीज जावे तब तेलको छानकर रख छोड़े, इस तेलका इन्द्री पर मर्दन करके नागरवेलका पान बांधनेसे और उसकी १० से ३० बुंदतक पानपर लगाके दिनमें दो तीन वेर खानेसे नपुंसकता मिटतीहै (८) इसकी जड़को छायामे सुखा चूर्ण बना उसमें बराबर शक्कर मिलाकर ७ मासेकी मात्रा नित्य खानेसे अथवा गो दुग्धके साथ फक्की लेनेसे नेत्रोंके बहुत से रोग मिटतेहै (९) इसकी एक तोले जड़को पीस छाछके साथ छानके पिलानेसे गुल्म रोग मिटताहै (१०) इसकी जड़को इसीके रससे पीसके लेप करनेसे गंडमाला मिटतीहै (११) इसका ४ तोला रस पीनेसे गंडमाला मिटतीहै (१२) इसके और कुटकीके चूर्णको मधु और घी के साथ चटानेसे वातरक्त मिटताहै (१३) इसके रससे घृत सिद्ध करके लगानेसे विपादिका आदि त्वग्दोष मिटतेहैं (१४) एक भाग मुंडी और आधा भाग समुद्रसोख, इनका चूर्ण बना एक मासे से ९ मासे तक मात्रा लेनेसे सफेद कुष्ट मिटताहै (१५) इसके ८ मासे चूर्णकी गर्म जलके साथ फक्की देनेसे सन्धिवात मिटतीहै (१६) बकरीके दूधके साथ इसके चूर्णकी फक्की लेनेसे पेटकी वादी मिटतीहै (१७) इसके और लोंगके चूर्णकी फक्की लेनेसे कंपवायु मिटतीहै (१८) इसके चूर्णको गौके दहीके साथ लेनेसे अर्श मिटताहै (१९) बकरीके दहीके साथ देनेसे मृतवत्सा रोग मिटताहै (२०) नीमके रस के साथ लेनेसे नपुंसकता मिटतीहै (२१) शक्करके साथ लेनेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै (२२) वासी पानीके साथ लेनेसे भगंदर और रक्तपित्त मिटताहै (२३) इसके चूर्णको घृतके साथ चाटनेसे बल बढताहै (२४) वासी पानीसे इसके चूर्णकी फक्की लेनेसे श्वास और तेजरा मिटताहै (२५)

गायकी छाछके साथ इसका सेवन करनेसे नित्य ज्वर छूटताहै (२६) खांड के साथ लेनेसे जलंधर मिटताहै (२७) खोपरेके साथ लेनेसे कई प्रकार के रोग मिटतेहैं (२८) सालममिश्रीके साथ लेनेसे शरीर पुष्ट होताहै (२९) जीरेके साथ लेनेसे दाह मिटतीहै (३०) कालीमिरचके साथ लेनेसे ज्वर छूटताहै (३१) काली बकरीके दूधके साथ लेनेसे तेजरा छूटताहै (३२) गायके दूधके साथ लेनेसे चित्तभ्रम मिटताहै और बुद्धि बढतीहै (३३) धनियांके साथ लेनेसे आंखका रूला मिटताहै (३४) गायके दूधके साथ लेनेसे प्रमेह मिटताहै (३५) इसके और जायफलके चूर्णको बकरीके दूधके साथ लेनेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (३६) सोंठके साथ लेनेसे शरीर पुष्ट होताहै (३७) एरंडके तेलके साथ देनेसे जलंधर मिटताहै (३८) कपूरके साथ इसके चूर्णको लेनेसे अर्श मिटताहै (३९) अलसीके साथ देनेसे खैन रोग मिटताहै (४०) नींबूके रसके साथ देनेसे मिरगी मिटतीहै (४१) गोमूत्रके साथ लेनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (४२) घृतके साथ लेनेसे अतिसार मिटताहै (४३) जायफलके साथ लेनेसे नपुंसकता मिटतीहै (४४) नेत्र नहीं दुखतेहों तब इसकी २० घुंडियोंको एक दिनमें निगलनेसे एक बर्ष तक और ४० निगलनेसे दो वर्ष तक नेत्रपीड़ा नहीं होतीहै ।

—— o ——

संख्या (४०६)

(सं०) मुद्गः, सूपश्रेष्ठः, हरितः, लोभ्यः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मूंग	मूग	मग	हिरवेमूग	मुग	मुगी	पच्चपेसालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पच्चपयर	हेसरु	माष	माष	Phascolus Mungo P Max	Green gran.

स्थान — ये हिन्दुस्थानमें सब ठौर होते...

तेहैं। वङ्गालमें ३ प्रकारके मूंग होतेहैं (१) सोन मूंग (पीले), (२) कृष्ण मूंग (काले), (३) हरित् मूंग (हरे)। परन्तु श्वेत और रक्त दो प्रकारके जो और लिखेहैं, वे इधर नहीं मिलतेहैं १०० तोले मूंगोंमें ५४। तोले मैदा और २॥ तोले तेलहै।

प्रयोग—(१) मूंग-मधुर, कषेले, कफ और पित्तनाशक, शीतल, लघु और दीपनहैं (२) हरे मूंग रोगीके लिये पथ्यहैं और नीरोगता बढ़ानेवाले हैं। इनकी दाल ज्वरमें पथ्यहै। यह ठंढी, लघु और ग्राहीहै (३) मात्र काठिन रोगोंसे मुक्त होनेके पीछेकी निर्वलता मिटानेके लिये इनकी दालकी झोली पिलानी चाहिये (४) इससे नेत्रोंकी ज्योति वलवान होतीहै (५) हरे मूंगों का आटा सावुनका काम देताहै और इसका उद्वर्त्तन (पीठी) करनेसे त्वचा स्निग्ध और कोमल होजातीहै (६) मूंगोंको मुंहमें चावके लगानेसे नाड़ी-व्रण (नासूर) मिटताहै (७) मूंग और साठी चांवलोंको पीस गर्मकर स्तनोंपर लेप करनेसे दूधका जमाव विखरताहै (८) मूंगोंको जला, पीसके मलनेसे वहुत पसीनेका आना वन्ध होताहै (९) मूंग और मुलहटीका यूष वनाके पिलानेसे पित्तज्वर शान्त होताहै (१०) सिकेहुए मूंग और चांवलोंकी कीलोंका क्वाथ वना उसमें सहत और शकर डालके पीनेसे अतिसार मिटताहै (११) यह क्वाथ वमन, दाह और ज्वरको मिटाताहै (१२) मूंगोंको पीस घीके साथ लेप करनेसे विसर्परोग मिटताहै (१३) इनका और चनेका पानी पिलानेसे भस्मकरोग मिटताहै (१४) इनकी फलियोंका शाक वनाया जाताहै। भोजन के लिये मूंगोंके कई प्रकारके पदार्थ जैसे रोटी, पापड़, मोगर, मसालेदार वड़ियां इत्यादि वनाये जातेहैं।

संख्या (४१०)

(सं०) मुद्गपर्णी, क्षुद्रसहा, शिखी, मार्जारगन्धिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजावी	तैलंगी
	मुगवन	अडवाउ-मगवेल्य	रानमुग	मुगानी	मुंगवन	पिल्लपेसर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सीर् पयर	किरिहिसरु			Phaseolus tirbolus Dollcbos tribolatus.	The t'rcelobed kidney bean

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै और बिन बोई भी होतीहै।

प्रयोग—(१) यह-शीतल, रूक्ष, कड़वी, स्वादिष्ट, वीर्यवढ़ानेवाली, ग्राही, हल्की और नेत्रोंको हितकारक है । कास, शोष, क्षय, वातरक्त, ज्वर, त्रिदोष, संग्रहणी, कृमि, अतिसार, कफ, अर्श और पित्तको मिटातीहै (२) रक्तको रोकतीहै (३) विषमज्वरके लिये इसका काथ पिलातेहैं (४) इसके पत्तोंके चूर्णकी फकी देनेसे बल बढताहै (५) बूरेके साथ इसकी फकी देनेसे कलेजेका धड़कना कम पडजाताहै (६) इसके पत्तोंको पीस टिकिया बनाके बांधनेसे नेत्रोंकी निर्बलता मिटतीहै । यह नीरोगता बढानेकेलिये बहुत उत्तम पदार्थहै । इसको नीचजाति के लोग भोजनके काममें बहुत लातेहैं ।

संख्या (४११)

(सं०) मुषली, गोधापदी, तालमूली, हेमपुष्पी, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मूसली	सफेदमुषली	धोळीमूशली	पाढरीमुसळी	तालमूली	सुफेदमूसली	नेलताटिगड्ढा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
निलप्पन इकिलग्	नेलताळेगड्डे	मूसलीअचियज	मुशलीसपेद		

स्थान—सफेद मूसली हिन्दुस्थान केबहुतसे अधिक उष्ण भागोंमें पैदा होतीहै ।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होतीहै एक सफेद और दूसरी काली होतीहै । इसके बोयेहुए पेड़के बारह महीने पुष्प लगते रहतेहैं ।

प्रयोग—(१) मुषली–रस और विपाकमें मधुर, वृष्य, उष्णवीर्य, वृंहण

कड़वी, शीतल, पिच्छल, भारी, पौष्टिक, अग्नि और बलवर्द्धकहै (२) मूशलीका अवलेह बनाके दिनमें दो वेर, चार चार मासे चटानेसे बल बढ़ताहै (३) इसके चूर्णमें बरावर मिश्री मिलाके ८ मासेकी फकी दिनमें एक वेर देके ऊपर दूध पिलानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (४) दो वर्षके पुराने पेड़की जड़ोंको निकाल, जलसे धो, उनके महीन तन्तुओंको तोड़कर लकड़ीके चक्कूसे छोटे २ टुकड़ेकर, छायामें सुखाकर काममें लाना चाहिये (५) इसके एक तोले चूर्णमें बरावर मिश्री मिला उसमें चन्दनके तेलकी ३० बूंद डालके कच्चे दूधके साथ उसकी दो वेरमें फक्की लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (६) इसके या कालीमूसलीके रसमें बरावर तेल डालकर ओटावें, जब रस छीजके तेल मात्र रह जाय, तब उसको ठंढाकर, कानमें डालनेसे कर्णरोग मिटतेहैं (७) इसको बरावर दूधमें ओटाके सब दूध छिजो देवें, फिर सुखा पीस चूर्ण बना उसमें बरावर शक्कर मिलाकर, २ तोलेकी फक्की लेकर, ऊपर गायका दूध पीनेसे शरीर पुष्ट होताहै (८) कांजीके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे तेजरा छूटताहै (९) इसके चूर्णको छाछ अथवा चांवलोंके धोवनके साथ सेवन करनेसे संग्रहणी मिटतीहै (१०) इसके नवीन कंदके चूर्णमे भैंसका मक्खन मिलाकर उसको धानकी राशीमें सात दिन तक गडा रखकर कर्णपाली रोगवालेके काममें लाना चाहिये (११) यह–रक्त शोधक, मूत्र और पुरुषार्थ वर्द्धकहै । अर्श, निर्बलता, नपुंसकता, श्वास, कास, कामला, अतिसार, शूल, मूत्रकृच्छ्र, और चरपराहटको मिटातीहै ।

संख्या (४१२)

(सं०) कृष्णमुषली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कालीमूशली	कालीमुषली	काळीमुशळी	काळीमुसळी	त लमूली	स्याहमूसली	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		मुस. लीआवियज़	मुशलीस्याह	Curculigo orchioides Hypoxis O	

स्थान—काली मुपली हिमालयमें यमुनासे काशिया पहाड़ तक, टन सरीम और केपकमोरिनके दक्षिण तक होतीहै।

प्रयोग—(१) यह ग्राही, उष्ण और रूक्षहै। मस्तकपीड़ा, चक्कर, ज्वर, कामला और बहिरापन आदि रोगोंको मिटातीहै (२) यह विषनाशक है (३) इसके प्रयोगसे सर्पका विष उतरताहै (४) इसके चूर्णमें मिश्री मिलाके फकी लेनेसे पुरुषार्थ बढताहै (५) तुलसीके रसके साथ इसकी फकी लेनेसे या उसमें मिलाके चटानेसे वृक्ककी पीड़ा मिटतीहै (६) स्त्रीका स्मरण करनेसे जिसका वीर्य निकल जाताहै उसको रोकनेके लिये इसके चूर्णको बंगके साथ देना चाहिये (७) इसकी जड़की छालको छायामें सुखा, पानमें रखके खानेसे श्वास मिटताहै (८) इसका पाक बनाके खानेसे नपुंसकता मिटतीहै (९) जायफलके साथ इसकी फकी देनेसे मूत्रातिसार मिटताहै (१०) दालचीनी के साथ इसकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (११) पागल कुत्तेके विष को उतारनेके लिये इसको पीपलके साथ देना चाहिये, और इसको पीपलके साथ पीसके कुत्तेके दंशपर लेप भी करना चाहिये।

संख्या (४१३)

(सं०) मुष्कक:, मोक्षक:, जटाल:, गोलीढ: ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोखा	मोखा	मरखो	मोखा	घंटापारुल	घंटापाटली	मोक्कमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	मोक्के			Schrebera swietenioipes	

स्थान—मोखाके वृक्ष कमाऊंके पहाड़पर, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पाहचान—इसका वृक्ष ३०-४० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेदड़ खड़ी,

सीधी और गुलाईमें ४-५ फुटकी होतीहै, इसके बहुतसी डालियां होतीहैं । इसकी छाल खाखी रंगकी होतीहै, बहुत महीनों तक इसके एकभी पत्ता नही रहताहै, चैत्र वैशाखमें इसके नवीन पत्ते निकलतेहैं और एक सींक पर ३-४ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं । इसकी छोटी डालियें भूरे रंगकी होतीहैं । रात्रीके समयमें इसके पुष्पोंकी सुगंध अधिक आतीहै । इसकी डोडी दो इंच लम्बी और ऊपरसे खरदरी होतीहै । उस पर उठे हुए कुछ सफेद दाग होतेहैं और वह डालीके लटकती रहतीहै । माघसे चैत्र तक इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग-(१)मोखा- चरपरा, खट्टा, रोचक, पाचक, ग्राही, उष्ण, सलौना और कड़वा होताहै और प्लीह, गुल्म, उदररोग, विष, कफ, वात, मेद, वस्तिशूल, शुक्रदोष, कर्णरोग, पित्त, खुजली और कृमिको मिटाताहै (२) इसके पुष्प त्रिदोष और कुष्ठको मिटातेहैं (३) इसके फल अग्निको बढ़ानेवाले, भेदक और रोचकहैं (४) गुल्म, प्रमेह, अर्श, पाडुरोग, शुक्रदोष और उदर रोगको मिटातेहैं (५) इसका गोंद अत्यंत वीर्यवर्द्धकहै, (६) यह गोंद शोष, पित्त और वादीको मिटाताहै ।

संख्या (४१४)

(सं०) मुस्तकः, गाङ्गेयं, कुरुविन्दः, अब्भ्रनामकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोथा	मोथा	मोध्य,मोथ	मोथ	मुता	गाथा	तुंगमुस्तेरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कोरकडङ्ग	कोन्नारि			Cyperus no un lus Hexastachyos	

स्थान-मोथा हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होताहै ।

प्रयोग-(१)मोथा-चरपरा, शीतल, ग्राही, कड़वा, दीपन, पाचन, पसीने लानेवाला, उत्तेजक और मूत्रवर्द्धकहै (२) अदरक और मोथेको पीस मधु के साथ १० रती चटानेसे आमातिसार मिटताहै (३) ताजे मोथेको पीसक

स्त्रीके स्तनों पर लेप करनेसे दूध बढ़ताहै (४) दूधकी लस्सीके साथ मोथेके चूर्णकी फक्की देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (५)इसकी गुड़में गोली बना तिलोंके काथके साथ देनेसे स्त्रियोंका मासिकधर्म शुद्ध होने लगताहै (६) बिच्छूके देशपर इसका दोषानुसार ठण्ढा या उष्ण लेप करतेहैं (७) फैलनेवाले फोड़े पर इसका चूर्ण बुरकातेहैं (८) सर्दीकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसको जलमें पीस उष्ण करके लेप करतेहैं (९) जलंधरमें अधिक मूत्रवृद्धि करनेकेलिये इसका प्रयोग करतेहैं (१०) इसके चूर्णकी अधिक मात्रा देनेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (११) अजीर्ण मिटानेवाली दूसरी औषधियोंके साथ इसको मिलाके देतेहैं (१२) इसका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१३) इसको दूधमें ओटाके पिलानेसे रक्तातिसार मिटताहै (१४) इसका और गिलोयका काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (१५) पसीना लानेकेलिये मोथेके ताजे कंदको ओटाके वफारा देना चाहिये (१६) मोथे और पित्तपापड़ेका काथ या फांट पिलानेसे शीतज्वर छूटताहै और पाचक शक्ति बढ़तीहै (१७) इसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलताहै, जो सुगंधके काममें आताहै । मोथा–रंगतमें सुगंध देनेकेलिये काममें आताहै। तर जमीनमें पैदा हुआ मोथा काममें लाना चाहिये ।

—— ०० ——

संख्या (४१५)

(सं०) नागरमुस्ता, कच्छरुहा, नागरोत्था, पिण्डमुस्ता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नागरमोथा।	नागरमोथा	नागरमोथ्य	नागरमोथ	नागरमुता	नागरमोथा।	नागमुस्तेलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	कोआरीभेद	सोद	मुश्कजमीन	Cyperus scariosus. C pertenuis	

स्थान—नागरमोथा–बंगाल, अवध आदि देशोंकी आर्द्र पृथ्वीमें होताहै। यह पंजाबमें बहुतही कम होताहै। मोथेकी अपेक्षा नागरमोथेकी उत्पत्ति बहुत कमहै ।

पहिचान--नागरमोथा दो प्रकारका होताहै, एक भारी और अधिक
सुगंधवाला, दूसरा-हल्का और कम सुगंधवाला ।
प्रयोग(१)नागरमोथा चरपरा, कड़वा, कषैला और शीतलहै। अतिसार,
पित्तज्वर, दाह, तृष्णा, अरुचि और हृदय और आमाशयके रोगोंको मिटाताहै
(२) यह बाल धोनेके काममें आताहै (३) इसके प्रयोगसे पसीना आताहै
और मूत्रवृद्धि होतीहै (४) यह ग्राहीहै और इसका काथ पिलानेसे अतिसार
मिटताहै (५) मूत्रकृच्छ्रवालेको इसका काथ पिलातेहैं (६) इसका और
उशबेका काथ पिलानेसे उपदंश मिटताहै (७) ज्वरमें पसीना लानेकेलिये
इसका काथ पिलातेहैं (८) इसको पीने और लगानेसे विच्छूका विष उतर-
ताहै (९) नागरमोथा मुंहमें रखनेसे गले या पेटमेंसे जोंक बाहिर निकल-
आतीहै (१०) इसको खानेसे वमन बन्ध होतीहै (११) एक भाग दूध
और तीन भाग जलमें एक तोला नागरमोथा ओटाके जल छिजा केवल दूध
रहे तब छान ठंढा करके पिलानेसे आम और शूल मिटतीहै (१२) इसका
फांट पिलानेसे तृषा और जीमचलाना मिटताहै (१३) इसकी उत्तर दिशा-
की ओरकी जड़को शुभ दिनमें उपाड़ उसको पीसके बच्चेवाली एक रंगकी
गौके दूधके साथ पिलानेसे मिरगीका आना बन्ध होजाताहै (१४) इसके
काथसे धोनेसे मुंहका रंग सुधरताहै ।

संख्या (४१६)

(सं०) भद्रमुस्तकं, मेघाख्यं, भद्रमुस्ता, ग्रन्थिला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोथाविशेष (रेड़)	भद्रमोथा	भद्रमोथ	भद्रमोथ	भादलामुचा		तुंगगड्डा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कोरै (इ)	भद्रमुस्ता			Cyperus jeminicus. C bulbosus	

स्थान—भद्रमोथा सिन्ध, मदरास और सीलोनमें समुद्रके किनारे सूखे
रेतीले घासके जंगलोंमें होताहै ।

प्रयोग—(१) भद्रमोथा–कषेला, शीतल, कडवा, पाचक, चरपरा, ग्राही, खट्टा और अग्नि दीप्त करनेवालाहै। पित्त, कफ, अतिसार, रुधिरविकार, ज्वर, अरुचि, तृषा और कृमिरोगको मिटाताहै और शरीरको पुष्ट करताहै (२) इसको जलमें धिस गुनगुना कर पिलानेसे जीका मचलाना और तृषा मिटतीहै (३) कालके दिनोंमें इसकी जड़को सेक या उबाल कर खातेहैं जब ये सेके जातेहैं तब इनका स्वाद आलू जैसा होजाताहै (४) यह खुराककी एक बहुत उत्तम वस्तुहै। यह कंद बहुत छोटा होताहै और खानेमें बड़ा स्वादिष्ट लगताहै। कई आदमी इसको धूपमें सुखाकर आटा पीसके रोटी बनाके खातेहैं।



संख्या (४१७)

(सं०) मूर्वा, मोरटा, तेजनी, गोकर्णी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मुरायली	चूर्णहार	मूर्वा	मोरवेल	मुर्वा	चूरनहार	चागाजट्टुपाकु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वेलिप्परिचि	इेगोरिटिगे			Clematis trilola.	The bow string hemp Sweet marjoran

स्थान—मुर्हरीकी बेलें हिन्दुस्थानके पूर्वके किनारे, ऊपर बंगालसे मद्रास तक कारोमण्डलके किनारे और दंडीगल जिले आदिमें बहुत होतीहैं।

प्रयोग—(१) यह कषेली, कड़वी, स्वादिष्ट, उष्ण, भारी, विपाकमें कड़वी और सारकहै (२) त्रिदोष, रुधिरविकार, मेद, कुष्ट, प्रमेह, ज्वर, वमन, मुखशोष, भ्रम, कंडू, तृषा, हृद्रोग और विषमज्वरको मिटातीहै (३) इसका कंद कृमिरोग और विषनाशकहै (४) इसकी जड़ स्वादमें कुछ उष्ण और उत्तम सुगंधवाली होतीहै (५) क्षयरोगमें इसकी जड़का पाक बनाके खिलाना चाहिये (६) पुरानी खांसीमें इसकी जड़के ४ मासे चूर्णको मधुके साथ चटाना चाहिये (७) इसकी कोमल कोंपलोंका रस पिलानेसे बच्चेके गलेका

कफ निकल जाताहै (८) इसकी जड़ और पत्तोंका रस पिलानेसे सर्पका विष उतरताहै ।

संख्या (४१८)

(सं०) मूलकं , हरित्पर्णां, नीलकंठं, महाकंदः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मूली	मूली	मूळा	मुळा	मूला	मूली	पेद्दमुल्लगि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मुल्लांगि	हेम्णुल्लगि	हुजूल	तुर्बं	Raphanus sativus	Radish

स्थान—मूली हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै । यह शीतकालमें पैदा होतीहै परंतु पहाड़ोंमें १२ महीने रहतीहै । जल और पृथ्वीके कारणसे मूलीका आकार और स्वाद बदल जाताहै ।

मूली और मूलीके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै उसकी सुगंध अच्छी नहीं होतीहै, इसके बीजोंका तेल सफेद रंगका और पानीसे भारी होताहै । मूली और मूलीके बीजोंका तेल जलाने और भोजनके पदार्थ बनानेके काममें आताहै । मूलीके बीजोंके तेलमें गंधक बहुत होताहै ।

प्रयोग—(१) कच्चीमूली- रोचक, उष्ण, पाचक और पचनेमें हल्कीहै (२) मूलीके बीज मूत्रवर्द्धक और सारकहैं और मूत्राशयकी पथरीको गलाते हैं (३) इसके बीजोंकी फकी देनेसे मासिकधर्ममें रज बहुत निकलताहै अथवा मासिकधर्मकी रुकावट मिट जातीहै (४) मूत्रसम्बन्धी और उपदंश सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये मूलीका सेवन करतेहैं (५) मूलीके ताजे पत्तोंके रस में वेही गुणहैं जो इसके बीजोंमेंहैं (६) मूली उत्तेजक और मूत्रवर्द्धकहै, शर्कराश्मरी और पेटकी शूलको मिटातीहै (७) इसके बीज औषधियोंकी चरपराहटको कम करतेहैं (८) ये वामक नहींहै तबभी इसके बीजोंकी पूरी मात्रा बेर २ देनेसे कभी २ वमन होने लग जातीहै (९) मूलीका रस चिनग और

कष्टसे मूत्र उतरनेको मिटाताहै (१०) इसका रस पिलानेसे मूत्राशय में जो पथरी होतीहै वह गलने लग जातीहै (११) वृक्कमें जो मूत्रका पैदा होना बन्ध होजाताहै उसको फिरसे पैदा करनेके लिये इसका रस पिलाना चाहिये (१२) इसके सूखे बीजोंके चूर्णकी फकी लेनेसे चिनग मिट जातीहै और मूतनेके समय कष्टका होना बन्ध होजाताहै (१३) भूख और पाचन शक्ति बढानेके लिये भोजनके पहिले मूली खाना चाहिये (१४) मूलीके बीजोंको पानीके साथ पीस कपड़ेमें छानके पिलाना चाहिये और मूलीको दरगच कपड़े में दबा रस निकाल के काममें लाना चाहिये। इसकी मात्रा ३॥ तोले से ७॥ तोले तकहै जिस कामके लिये यह दिया जावे वह जबतक न हो तबतक २४ घंटोंमें चार बेर देना चाहिये (१५) पौने चार मासेसे ७॥ मासे तक बीजोंकी मात्रा दी जातीहै (१६) मूत्रकृच्छ्र मिटानेके लिये ३॥ मासे बीज काममें लाने चाहिये (१७) रक्तार्शका रक्त बन्ध करनेके लिये मूली खिलानी चाहिये (१८) आमाशय की शूल मिटानेके लिये मूलीके स्वरसमें नोंन, मिरच डालके पिलाना चाहिये (१९) मूली कच्ची खाई जातीहै। इसका शाक और अचारभी बनाया जाताहै (२०) सूखी मूलीको ओटाके पिलानेसे श्वास और हिचकी मिटतीहै (२१) इसके बीजोंको आंधी झाड़के खारके पानी से पीसके लेप करने से श्वेत कुष्ठ मिटताहै (२२) मूलीके बीजोंको कूट गर्म जलके साथ खानेसे आवाज खुलतीहै (२३) इसके पत्तोंको छायामें सुखा पीस छान बराबर बूरा मिलाके ४० दिनतक लगातार फकी लेनेसे बवासीर मिटताहै (२४) इसके पत्ते गर्म करके पागल कुत्तेके दंशपर बांधतेहै (२५) इसके बीजोंको तेलमें ओटाके इन्द्रीपर मर्दन करनेसे उसकी शिथिलता मिटतीहै (२६) मूलीके पत्तोंके ३ तोले रसमें एक तोला तेल सिद्ध करके कानमें टपकानेसे कर्णपीड़ा मिटतीहै (२७) इसके बीजोंको बकरीके दूधके साथ पीसके लेप करने से कंठमाला मिटतीहै (२८) इसके टुकड़ेके नोंन लगाकर दंशपर रखनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२९) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे जलंधर मिटताहै (३०) सिरके में डाला हुआ इसका अचार खाने से कामला रोग मिटताहै (३१) इसके पत्तोंके ४ तोले रसके साथ ३ तोले अजमोदकी फकी देनेसे पथरी गल जातीहै (३२) इसके बीजोंको नींबूके रसमें पीस गोलियां बनाके

लगानेसे दाद मिटताहै (३३) जो बहुधा मूली खाया करतेहैं उनके विच्छूके विषका असर कम होताहै (३४) मूलीकी फलीको मारवाड़ी भाषामें मोगरी कहतेहैं और जो फली आधगज लम्बी होजातीहैं उसको जयपुरके प्रान्त में सोंगरी कहतेहैं । मूली मूलीकीगांदल, पत्ते, मोगरी और सोंगरीका शाक बनाया जाताहै ।

संख्या (४१९)

(सं०) मृगनाभिः, मृगमदः, वेधमुख्या, कस्तूरि, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तुरि	मृगनाभि	कस्तूरी	कस्तूरि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कस्तूरि	कस्तूरि	मिस्क	मुश्क	Moskus.	MUSK

प्रयोग-(१) कस्तूरी-कड़वी, चरपरी, सलौनी, उष्ण, शुक्रल, पचनेमें भारी, वृष्य, बहुत उत्तेजक और पुरुषार्थ बढ़ानेवालीहै (२) यह मदज्वर, पुरानी खांसी, निर्बलता और नपुंसकताको मिटाती है (३) बांइटे मिटानेके लिये पानमें रखके कस्तूरी खिलानी चाहिये (४) मोतीजरे, पानीजरे और निर्बलता सम्बन्धी दूसरे रोगोंको मिटानेकेलिये कस्तूरीका प्रयोग करना चाहिये ५) श्वास वालेको अद्रकके रसमें कस्तूरी देनी चाहिये (६) मक्खनके साथ कस्तूरी देनेसे कुत्ताधांसी मिटतीहै (७) इसको मालकंगनीके तेलमें चटाने से अपस्मार मिटता है (८) शतावरीके घृतपर कस्तूरी बुरकाके पिलानेसे कंपवायु मिटतीहै ।

संख्या (४२०)

(सं०) लताकस्तूरिका, कस्तूरीलतिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मुश्कदाना	मुश्कदाना	लताकस्तुरी	मुसकदाणा	लताकस्तुरि	मुसकदाना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		मुश्कदाना		Hibiscu Abelmochus A. moschatus.	Musk mallow.

स्थान—लताकस्तूरी हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होतीहै ।

पहिचान—इसके बीज सुगंधयुक्त, चरपरे और वृक्कके आकारवाले होते हैं । इनको चुगटीमें मलनेसे इनमें तीक्ष्ण गंध उत्पन्न होजाती है । इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ६॥ तोले सुगंधयुक्त तत्व और राल जैसा पदार्थ निकलताहै ।

प्रयोग—(१) लताकस्तूरी-मधुर, वृष्य, शीतल, कड़वी, तीक्ष्ण और पचनेमें हल्कीहै । इसके बीज-शीतल, रूक्ष, बलवर्द्धक और पेटकी पीड़ा मिटानेवालेहैं (२) इसकी जड़ और पत्तोंका चेप निकालके मूत्रकृच्छ्रवाले रोगीको पिलाना चाहिये (३) इसके बीज उत्तेजक और बांइटे मिटानेवाले हैं (४) स्नायुजालकी निर्बलता, स्त्रियोंका आवेशका रोग, थोड़ी मंदाग्नि आदि रोगोंमें यह काममें आतीहै (५) इसके ताजे पत्तोंका रस पिलाने से ज्वर छूटता है (६) इसके रस में मधु मिलाके पिलाने से सूखी खांसी मिटतीहै (७) खांसी मिटानेकेलिये इसके पंचांग को पीस पुल्टिस बनाके छातीपर बांधना चाहिये (८) औषधिका चरपरापन मिटानेके लिये इसके बीजोंका चेप अच्छाहै (९) ज्वरकी दाह मिटानेके लिये इसकी जड़का चेप पिलाना चाहिये (१०) इसके पंचांगका धूम्रपान करानेसे स्वरभंग मिटताहै (११) इसके बीजोंको सूंसनेसे गलेका सूखना मिट जाताहै (१२) खांडको साफ करनेके लिये इसके पत्ते काममें आतेहैं ।



संख्या (४२१)

(सं०) मेथी, मेथिका, पीतबीजा, बहुपत्रिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मेथी	मेथी	मेथी	मेथी	मेति	मेथी	मेंतुलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वेंदियं	मेंत्या	हुलवह	शमवलीद फ़रीक़ह	Trigonella Foenum graecum	The fenugreek or fenugraec

स्थान—मेथी–हिन्दुस्थानके बहुत से भागोंमें बोई जातीहै ।

प्रयोग—(१) मेथी–चरपरी, उष्ण, रसमें कड़वी, दीपन, रूक्ष, रोचक, हृद्य, वातनाशक और पचनेमें हल्कीहै (२) यह मंदाग्नि और पेटकी शूल मिटातीहै, पुरुपार्थ और बल बढातीहै (३) बालक होनेके पीछे स्त्रियोंका अतिसार मिटानेके लिये मेथीदानेको घी से चुपड़ सेकके फक्की देतेहैं (४) गुड़में मेथीका पाक बनाके खिलानेसे गठिया मिटतीहै (५) मेथीके पत्ते और मेथीदाने उष्ण, रूक्ष; फोड़ेको पकानेवाले, सारक और मूत्रवर्द्धकहै (६) कष्टसे मासिक धर्म होनेको अथवा मासिकधर्मके समय रजके कम निकलनेको मिटातीहै (७) जलंधर पुराना, कास, तिल्ली और यकृत्‌की अनुचित वृद्धिको घटातीहै (८) इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे बाहिर और भीतरकी शोथ उतरतीहै (९) अग्निसे जलेहुएकी दाह मिटानेके लिये मेथीके पत्तोंका लेप करना चाहिये (१०) इसका लेप करनेसे बालोंका गिरना बन्ध होजाताहै (११) मेथीदाने का तेल कई प्रयोगोंमें काम आता है (१२) मेथीदानेको सेक, उनका काथ करके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१३) मेथीदानेका बफारा देनेसे बादी की पीड़ा मिटतीहै (१४) इनको गुड़के साथ ओटाके पिलानेसे पेटकी शूल और आध्मान मिटताहै (१५) मेथीदानेका लपटा बनाके चटानेसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (१६) इसके पत्तोंका ठंढा लेप करनेसे दाह मिटतीहै (१७) पत्तोंको ठढांइकी तरह घोट छानके पिलानेसे अन्तरदाह मिटतीहै (१८) पत्तों के स्वरसमें सैंधानमक मिलाके पिलानेसे विरेचनके एक दो वेग होकर पित्तके विकार मिटजातेहैं (१९) मेथीदानेका लपटा उत्तेजक और बलवर्द्धकहै (२०) मेथीदानेको दूधमें ओटाके पिलानेसे अर्शका रुधिर बन्ध होताहै (२१)

मेथीके पत्तोंको घीमें तलके खिलानेसे आमातिसार मिटताहै (२२) पत्तोंका पुल्टिस बनाके बांधनेसे चोटकी सूजन उतरतीहै (२३) मेथीदानेके आटेका उद्वर्तन (पीटी) करनेसे शरीरका रंग सुधरताहै (२४) मेथीदानेका क्वाथ पिलानेसे अर्श मिटताहै (२५) इसको दूधमें पीस छान गुनगुना करके कान में टपकानेसे कानसे पीपका वहना बन्ध होताहै (२६) मेथीदाने और जौके आटेको सिरकेके साथ पीस गालों पर पतला लेप करनेसे सूजन उतरतीहै (२७) मेथीदाने और असालूको पीसके लेप करनेसे वद बैठ जातीहै (२८) मेथीदानेके क्वाथमें शहद मिलाकर पीनेसे छातीके पुराने रोग मिटतेहैं (२९) मेथीदानेका कढ़ीमें छौंकन देतेहैं और अचार आदिके मसालेमें डालतेहैं । इस के बीजोंमें से पीला रंग निकाला जाताहै । १०० तोले मेथीदानेमें से ६ तोले गाढा तेल निकलताहै ।

संख्या (४२२)

(सं०) वनमेथी, तिक्तशाका, स्वर्णपुष्पी, शेलुका,

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मेथो	वनमेथी	रानी मेथी	रान मेथी	वनमेति		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Melilotus parviflora Trifolium indicum	

स्थान—वनमेथी—बम्बई, बंगाल अहाता, संयुक्त प्रदेश, राजपूताना और पंजाब आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१) आँतोंके उपद्रवमें बहुधा बच्चोंके अतिसारमें इसका लपटा बनाके पिलातेहैं ।

संख्या (४२३)

(सं०) मेषशृङ्गी, अजशृङ्गी, विषाणी, मेषवल्ली ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मींढामिंगी	मेढाशिंगी	मेढाशिंग	मेढशिंगी	मेढाशिंगे	मेढासिंही	चिटिमुटि
द्राविड़ी	**कर्नाटकी**	**अरबी**	**फ़ारसी**	**लैटिन**		**अंग्रेज़ी**
चट्टत्तिरुप्पि	कुरुटगे			Gymnema sylvestre Periploca sylvestris		

स्थान–मेढाशिंगी–मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें कोकनसे ट्रावनकोर तक होतीहै ।

प्रयोग–(१) सर्पके काटे हुए मनुष्यको इसकी जड़का क्वाथ पिलातेहैं (२) इसकी जड़को घिसके सर्पके दंशपर लगातेहैं (३) इसके पत्तोंको चावके चूंसनेसे जीभ ऐसी होजातीहै कि उसको मिठासका ज्ञान नहीं रहताहै और जबतक इसके पत्तोंका जीभ पर पूरा असर न हो तब तक जीभ पर नोन जैसा स्वाद बना रहताहै, इससे जीभको किसी पदार्थके कड़वापनकाभी ज्ञान नहीं होताहै । जो कुनैन आदि कड़वी चीजभी खिलाई जावे तो उसका स्वाद मिट्टी जैसा आताहै, अर्थात् इससे जिह्वाको किसी रसका ज्ञान नहीं रहताहै ।

संख्या (४२४)

(सं०) मौक्तिकं, मुक्ता, शौक्तिकं, अम्भः सारम् ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोती	मोती	मोती	मोती	मुक्ता	मोती	मुत्यमु
द्राविड़ी	**कर्नाटकी**	**अरबी**	**फ़ारसी**	**लैटिन**		**अंग्रेज़ी**
मुत्तु	मुत्तु	लोलो	मरवारीद			Pearl

प्रयोग–(१) ये मधुर और शीतल होतेहैं, नेत्ररोग, विष, राजयक्ष्मा कफ, पित्त, क्षय, कास, श्वास, मंदाग्नि, दाह और निर्बलताको मिटातेहैं ।

बल वीर्य और आयुर्दाको बढातेहैं और शरीरको पुष्ट करतेहैं। अम्लपित्तमें इनका प्रयोग कियाजाताहै (२) इनको पीसके अंजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै (३) जब ये सीपमें गर्भकी तौरपर रहतेहैं तब इनका लेप करनेसे कोढ मिटजाताहै (४) इनको पीसके कुचलेके साथ देनेसे कंपवायु मिटतीहै (५) इनको सोनेके वर्कके साथ चटानेसे हृदय का अधिक धड़कना मिट जाताहै (६) इनको गिलोय सतके साथ चटानेसे पित्तविकार मिटतेहैं (७) इनको हीरादिक्खनके साथ चटानेसे तथा इलायचीके अर्कके साथ देनेसे रक्तस्राव मिटताहै।

संख्या (४२५)

(सं०) यक्षद्रुमः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गरजन तेल	गरजन तेल	गर्जन	गर्जन	गर्जन		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Dipterocarpus turbinatus D laevis	Kanyin oil

स्थान—गरजनके वृक्ष पूर्वी बंगाल, चटगांव, ब्रह्मा और सिंघापुर आदि कई स्थानोंमे होतेहैं।

पहिचान—हिन्दुस्थानमें यह सबसे ऊंचा वृक्षहै इसकी ऊंचाई प्रायः २५० फ़ुटतक होतीहै। इसकी पेड़की गुलाई १५ से २५ फुटतक होतीहै। इस वृक्ष के पत्ते पतझड़में नहीं गिरतेहैं।

गरजनका तेल कई प्रकारका होताहै। इसका गाढेसे गाढा तेल मधु जैसा और पतलेसे पतला तेल तेल जैसा होताहै। गाढ़े तेलका रंग पीलापन लिये हुए भूरा और पतले तेलका रंग थोड़ा भूरा, लाल, ललाई लिये हुए भूरा या चन्दानियां होताहै। इनमें पतला कुछ ललाई लिये हुए भूरे रंगका तेल सबसे अच्छा होताहै।

प्रयोग—(१) नवीन और पुराने मूत्रकृच्छ्र में इसके तेलकी १० से ० तक बूंदें दूध. चांवलोंके मांड, या पतले लपटेमें अथवा किसी चेपदार ोजमें डालके दिनमें दो तीन वेर देना चाहिये (२) कई प्रकारके कोढों में नका प्रयोग इस रीतिसे करना चाहिये कि प्रात.काल उठकर शरीरपर जहां हां दाग हों उनको सूखी मिट्टीसे खूब रगड़ना चाहिये, पीछे ७ बजे इसके ाका दूधिया पानी बना, उसको पिलाकर सब शरीर पर दो घंटे तक इसके ाका मर्दन करना चाहिये, फिर भोजन करके दुपहर पीछे २ बजे उक्त दूधिया नी पिलाके वैसेही दो घंटे तक इसके तेलका सब शरीर पर मर्दन करना ाहिये । जो इसके पीनेसे अधिक विरेचन होजाय तो इसकी मात्रा कम कर ी चाहिये । इसके लगानेकी औरभी कई रीतियांहैं परन्तु सबसे उत्तम रीति ेहै जो ऊपर लिख आयेहै । यह मर्दन चट्टोंको साफ करनेके लिये साबुन र भुस्से से अच्छाहै इस प्रयोगमें जो दूधिया पानी बनाके नहीं भी पिलाया- वे तबभी रोगी निरोग हो जाताहै । यह इकल्ला काम नहीं देवेतो इसके पौने र मासे तेलमें चालमुगरेके तेलकी ५ से १० बूंद तक मिलाके देना चा- ये (३) इसके तेलका दूधिया पानी बनानेकी यह रीतिहै कि बंबूलके गोंद पानीमें गला उसमें इस तेलको मिलाके खूब हिलानेसे पानीके रूप हो ताहै अथवा इसके तेलमें बराबर चूनेका पानी मिलाके हिलानेसे दूधिया नी बन जाताहै । यह लेप करनेके काममें आताहै अथवा सवा सवा तोले ाया पानी दिनमें दो तीन वेर पिलाना चाहिये (४) एक तोले गरजनके में ३ तोले चूनेका पानी मिलाके त्वचाके पुराने रोगों पर और कोढपर ाना चाहिये (५) यह तेल कृमि सम्बन्धी कुष्ठमें बहुत उपकारी है) चर्म दल कुष्ठ पर इसका मर्दन करनेसे बहुत लाभ होताहै (७) इस में रस कपूर और गंधक मिलाके मर्दन करनेसे दाद मिटताहै (८) इस लके लगानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहैं (९) त्वचाके सब रोगों में इस तेलका प्रयोग किया जाताहै, परन्तु जिन लाल चाठोंपर सफेद छिलकोंके पुड़तके पु- ड़त जम जातेहैं या जो सफेद चाठे होतेहैं, उनपर इस तेलके मर्दनसे बहुत लाभ होताहै । केवल इसी तेलके मर्दन करनेसे ये दोनों रोग मिटभी जातेहैं । (१०) इस तेलके लगानेसे खजली मिटतीहै (११) कुष्ठरोगके प्रारम्भमें

इस तेलको पिलाने और लगानेसे उसका बढ़ना रुक जाताहै और बढ़ी हुई हालतमेंभी लगाने और पिलानेसे उसकी शान्ति हो जातीहै (१२) वीर्य्य और मूत्र सम्बन्धी अंगोंमेंसे किसी प्रकारके उपद्रववाले बहावको रोकनेके लिये इसको चूनेके पानीके साथ लगाना और पिलाना चाहिये ।

संख्या (४२६)

(सं०) यमानी, दीपकः, दीर्घ्यः, उग्रगंधा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अजवाण	अजवान	अजमा	ओंवा	यउयान योयान्	अजवाइन	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		कमूनेमुनूकी	ननख्वाह ज़ीनान	Carum Copticum Ligusticum Ajowain	Lovage Bishop's weed Ajava seeds.

स्थान—अजवान हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै ।

इसका तेल निकालनेकी यह रीतिहै कि इसको पानीमें ओटानेसे अथवा भभकेमें इसका अर्क खींचनेसे उस अर्कके ऊपर इसका २५ वां भाग तेल निकल आताहै और उसी अर्कपर एक पदार्थ आके जम जाताहै उसको अजवाइन के फूल कहतेहैं ।

प्रयोग—(१) अजवायन–उष्ण, तीक्ष्ण, दीपन, पाचन, रोचक, चरपरी, कड़वी, पचनेमें हल्की, हृद्य और सारकहै (२) इसके तेलकी दो बूंदें नागरवेलके पानमें लगाके खानेसे मन्दाग्नि मिटतीहै और आवश्यकता होवे तो इसकी मात्रा बढा देनी चाहिये (३) दालचीनीके एक मासे चूर्णमें इसके तेलकी बूंदें डालकर फकी देनेसे शूल मिटताहै (४) १॥ मासे लशुनाष्टकमें इसके तेलकी बूंदें डालके फकी देनेसे अजीर्णसे पैदाहुई विषूचिका मिटती है (५) अजवानके एक या दो रती फूल सौंफके अर्कके साथ देनेसे अफारा मिटताहै और इसीमें सौंफके तेलकी ५ बूंदें डालके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (६) इसके फूल और इसका तेल मिलाकर मर्द्दन करनेसे बांइटे मिट-

तेहैं (७) विषूचिकासे पैदाहुई शरीरकी शिथिलताको मिटानेके लिये इसका अर्क पिलाना चाहिये (८) इसके साथ दूसरा उत्तेजक अर्क मिलाके पिलानेसे अधिक लाभ होताहै (९) इसका अर्क पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१०) पेटका अफारा मिटानेके लिये इसका अर्क पिलातेहैं (११) विसूचिकाके प्रारम्भमें इसका अर्क पिलातेहै (१२) १॥ मासे अजवाइनको आगपर गर्मकर मलमलके कपड़ेमें ढीली बांधके सूंघनेसे छीकें आकर और नाक बहकर मस्तकका भारीपन मिटकर प्रतिश्यायका वेग कम हो जाताहै (१३) ३ मासेसे ६ मासे तक अजवाइनमें एक या १॥ मासे काला नमक मिलाके उष्ण जलके साथ फक्की देनेसे अफारा मिटताहै (१४) इसको और सोंठको चार पहर भिगो पीस छान गर्मकर नमक डालके पिलानेसे मन्दाग्नि मिटतीहै (१५) अजवायन, कालीमिरच और नमकको पीस गर्म जलके साथ प्रातःकाल फक्की देनेसे पेटकी शूल, अफारा और मन्दाग्नि मिटतीहैं (१६) लवे बच्चेके पेटकी शूल मिटानेके लिये और चैतन्य रखनेके लिये इसका अर्क पिलातेहैं (१७) गठिया मिटानेवाली औषधियोंमें अजवान अवश्य मिलाना चाहिये (१८) लवे बच्चेकी उल्टी और दस्तें मिटानेके लिये उसकी माके दूधके साथ अजवान देनी चाहिये (१९) अजवानकी फकी लेनेसे आलस्य मिटताहै (२०) मदकारी पदार्थोंके सेवनका स्वभाव और कामोन्माद मिटानेके लिये अजवाइन खिलाया करतेहैं (२१) अजवानको पानमें रख चाव २ के पीक निगलनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (२२) आवश्यकता अनुसार इसकी फकी देनेसे या हिम, फांट या काथ बनाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (२३) ३ मासे अजवानकी नित्य फकी लेनेसे कोयले या मिट्टी खानेका स्वभाव छूट जाताहै (२४) इसके तेलका मर्दन करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (२५) घी, खांड या पुराने गुड़के साथ इसके मोदक बनाके खानेसे क्षुधा और पाचन शक्ति बढ़तीहै (२६) जितनी अजवान खा सके उतनी दोनों समय खिलानेसे तिल्ली कम होजातीहै (२७) अजवानको पीस छान शहदमें मिलाके लेप करनेसे पादतलकी पीड़ा मिटतीहै (२८) जो औषधियें अपने बुरे स्वादसे खाली होवड या पेटमें मरोड़ी (मरोटी) पैदा करतीहै, उनमें अजवान मिलाके देनेसे उनके ये दोनों उपद्रव मिटजातेहैं ।

संख्या (४२७)

(सं०) पारसीकयमानी, तुरुष्का मदकारिणी, यावनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खुरासाणी अजवाण	खुरासानी अजवायन	खुरासाणी अजमा	खुरासनी ओंवा	खोरासानी यमानी	खुरासानी अजवाइन	खुरासानिवामु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कुरोशानि वोमं	खुरासानि वोमं	तेरालवज	तुरुमेबंग	Hyoscyamus niger	Henbane.

स्थान—खुरासानी अजवायनके वृक्ष हिमालयमें कश्मीरसे गढवाल तक होतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह उष्ण, पाचक, रूक्ष, पचनेमें भारी, ग्राही, चरपरी, मादक, मूर्छा पैदा करनेवाली और पीड़ा मिटानेवालीहै (२) रक्तपित्तकी शोथ, गठिया, छोटे जोड़ोंकी सूजन और दुखती हुई आंख पर इसका लेप करना चाहिये (३) इसको रालके साथ पीसके दुखते हुए दांतकी खोखलमें रखना चाहिये (४) गर्भाशयकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसकी वत्ती बनाके योनीमें रखना चाहिये (५) इसके रसकी या इसके बीजोंको १६ गुने जलमें ओटा एक भाग रख छान उसकी बूंदें आंखमें डालनेसे आंखकी पीड़ा मिटतीहै (६) यह उत्तेजक, ग्राही और पाचनशक्ति बढ़ानेवालीहै (७) इसके पंचांगमेंसे पत्ते, हरीटहनियें और बीज औषधिके प्रयोगमें आतेहैं (८) इसके पत्तोंका टिंचर बनाके उसकी २० से ६० बूंद तक देनी चाहिये । और उनका सार २॥ से ५ रती तक देना चाहिये (९) उन्मादके वेग, निद्रानाश और स्नायु सम्बन्धि शिथिलता मिटानेकेलिये इसका प्रयोग करतेहैं (१०) कास और श्वासके प्रारम्भमें इसका प्रयोग किया जाताहै (११) यह सारकहै (१२) इसकी गुड़में गोली बनाके देनेसे पेटकी वायुकी पीड़ा मिटतीहै (१३) वीर्य्य और मूत्र सम्बन्धी अंगोंकी दाह मिटानेकेलिये इसका प्रयोग करतेहैं (१४) स्नायु पीड़ा, पेशियोंकी सूजन, फोड़ोंकी दाह और अर्श पर

इसका लेप करना चाहिये (१५) इसका तेल बनाके मर्दन करनेसे बांइटे मिटतेहैं (१६) प्रातःकालके समय पहिले थोड़ा गुड़ खिलाके फिर इसकी फक्की बासी पानीके साथ देनेसे पेटके कीड़े निकलजातेहैं ।

संख्या (४२८)

(सं०) वनयमानी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
		छुवारीअजमोद	किरामणी ओवा	वनयमान		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Seseli indicum Ligusticum indicum	

स्थान—वनयमानी हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१)--यह-कटु, तिक्त, उष्ण, दीपन, लघु, और वृष्यहै । त्रिदोष, अजीर्ण, कृमि शूल और आमका नाश करतीहै (२) इसकी फक्की लेनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (३) आंतोंके कीड़े मारनेकेलिये वनयमानीका प्रयोग बहुत अच्छाहै (४) इसकी मात्रा सवामासेसे ३॥ मासे तकहै (५) यह उत्तेजकहै और आमाशयकी पीड़ाको मिटातीहै ।

संख्या (४२९)

(सं०) यवः, मेध्यः, सितशूकः, कंचुकी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जो	जौ, नव	जव	जव, यव	यव	जौं	यवलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
यवं	जव	श्यईर	जौ	Hordeum hexastichum	Bärley.

स्थान—हिन्दुस्थानमें इनकी खेती होती है। १०० तोले जवोंमेंसे ६२ तोले मैदा निकलतीहै। इनमें तेल बहुत कम निकलताहै।

प्रयोग—(१) ये-कपैले, मधुर, शीतल, लेखन, सारक, मृदु, विपाक में चरपरे, पचनेमें भारी और रूक्ष है बुद्धि, अग्नि, वात, बल, कान्ति और मल को बढ़ातेहैं, रक्त और पित्तको सुधारते हैं। ये अभिष्यंदी नहीं हैं (२) स्वरभंग, कंठ और त्वचाके रोग, कफ, पित्त, मेद, पीनस, श्वास, कास, उरुस्तंभ तृषा, प्रमेह और दाहको मिटातेहैं। व्रणवालेके लिये पथ्यहैं और औषधियोंकी चरपराहट मिटातेहैं (३) ये शीघ्रतासे पचजानेके कारण रोगियोंके पथ्यमें बहुत काम आतेहैं (४) जिसके पेटमें मन्दाग्निसे पीड़ा रहतीहो उसको जवोंका लपटा पिलातेहैं (५) इनके पत्तोंकी भस्मके पानीका बनाया हुआ शर्बत ठंढा होताहै (६) इनके पंचांगकी भस्मका जल अजीर्णमें पिलातेहैं (७) इनके आटेको पानीमें घोलकर मस्तकपर लेप करनेसे उसकी पित्तकी पीड़ा मिटतीहै (८) इनकी और गेंहूकी भुस्सीको ओटाके कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (९) इनको कूट पानीमें भिगो देवें जब पानी नितर जावे तब उस नितरेहुए पानीको गुनगुना करके गरारा करनेसे कंठकी सूजन उतरतीहै (१०) इनकी पतली खिचड़ी बना उसमें मधु मिला, ठंढी करके खानेसे ज्वर, छर्दि, पित्तशूल दाह और तृषामें बहुत लाभ होताहै।

—∞○∞—

संख्या (४३०)

(सं०) यवक्षारः, पाक्यः, यवजः, यवाग्रजः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जोखार	जवाखार	जवखार	जवखार	यवक्षार	जौंखार	यवक्षारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
यवक्षार	यवक्षार				Carbonate of Potash

प्रयोग—(१) यवक्षार-शीतल, स्निग्ध, पचनेमें हल्का, सूक्ष्म, सारक,

चरपरा और अग्नि दीपकहै (२) हरड़की छालके चूर्णमें यवक्षार मिला, मधुके साथ चटानेसे अम्लपित्त मिटताहै (३) जोखार और मिश्रीको सौंफके अर्कके साथ पिलानेसे मूत्रका विरेचन होताहै (४) इसकी अधिक मात्रा लेनेसे विष जैसे उपद्रव पैदा करताहै (५) ३ मासे सोंठके चूर्णमें १॥ मासे जोखार मिला गर्मजलके साथ फक्की देनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (६) हरड़के २ मासे चूर्णमें १ मासा जोखार मिला उष्ण जलके साथ फक्की देनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (७) हरड़ और रोहीड़ेकी ६–६ मासे छालका काथ कर उसमें ४ पीपलका चूर्ण और ३ मासे जोखार डालके पीनेसे तिल्ली और गुल्म मिटताहै (८) ३ मासे जोखार और ६ मासे मिश्रीको पाव दूध और पाव पानीकी लस्सीके साथ लेनेसे मूत्रनालीकी दाह मिटतीहै (९) जवखारमें बराबर मिश्री मिलाके लेनेसे सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र मिटतेहैं (१०) ३ से ७ मासे जोखार दहीमें मिलाके खानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ।

संख्या (४३१)

(सं०) यशदं, रीतिहेतुः श्वेतपटलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जस्त	जस्त	जसत	जसत	दस्ता	जसद	तेल्लसत्तु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सत्त, तुत्त				Zincum	Zinc

स्थान–यह मद्रास, बंगाल, राजपूताना और पंजाब आदि कई स्थनोंमें खानोंसे निकलताहै ।

जस्ता शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि–इसको गला २ के गायके दूधमें २१ बेर बुझानेसे शुद्ध हो जाताहै ।

इसकी भस्म करने की रीति—चूल्हेपर मिट्टीका खपरा चढा उसमें जस्तको गला, नीमकी लकड़ीके घोटेसे घोटने २ भस्म होजाय, तब अग्निपर

से नीचे उतार, कपड़छानकर, बिन जला हुआ रहा होवेतो उसको फिर वैसे ही उक्त रीतिसे जला, कपड़ छानकर लेवें, जब सब भस्म कपड़ छान हो जावे तब उसको पत्थरकी खरलमें डाल त्रिफलाके काथ, गवारपाठे और जलभंगरे के रसमें खरलकर, टिकड़ी बना, सराव संपुटमें रख, कपड़ मिट्टीसे बन्धकर, गजपुटमें रखकर आंच देवें, ऐसे एक एक औषधिके रस तथा काथकी बत्तीस बत्तीस भावना और गजपुटकी आंच देवें, पीछे सब औषधियोंको मिलाके उनके रसकी एक भावना और एक गजपुटकी अंच देकर, फिर पंचामृतकी एक भावना और गजपुटकी अंचदे खरलमें घोट शीशीमें भरकर रखदेवें। इसकी मात्रा ४रतीकी है।

प्रयोग—(१) इसकी भस्म—कपैली कड़वी और शीतलहै। कफ, पित्त, प्रमेह, पांडु और श्वास रोगको मिटातीहै और नेत्रोंको बहुत हितकारीहै (२) इस को पानमें रखकर खानेसे पित्त और कफके प्रमेह मिटतेहैं (३) अरणीकी जड़की छालके चूर्णके साथ खानेसे मन्दाग्नि मिटतीहै (४) तज, पत्रज, और छोटी इलायचीके दानेके चूर्णके साथ खानेसे त्रिदोष मिटताहै (५) चांवलोंके धोवनके जल (तन्दुलोदक) में छुहारेको घिस उसपर इसकी भस्म बुरकाके पिलानेसे पित्त ज्वर छूटताहै (६) अजवान और लोंगके चूर्णके साथ देनेसे शीतज्वर छूटताहै (७) अदरकके ६ मासे रसको गर्मकर ठंढा होने पर उसमें ६ मासे मधु मिला इसकी भस्म बुरकाके चाटनेसे श्वास रोग मिटताहै (८) मुनक्काके साथ देनेसे रुधिर बढताहै (९) पुराने घृतके साथ इसका अंजन करनेसे आंखोंके पित्तके रोग मिटते हैं (१०) इसके फूलोंको घीमें मिलाकर गर्मीके फोड़े फुन्सी और रगड़की चांदीपर लगाते हैं (११) बच्चोंके कानोंके पीछे या नीचे जो चांदी पड़ जातीहै अथवा हाथ पैरोंकी संधिमें जो चांदी पड़ जातीहै उसपर इसके फूल बुरकातेहैं (१२) सरसोंके तेलके साथ इसका लेप करनेसे पित्तकी सूजन उतरतीहै (१३) चन्दनके तेल के साथ इसकी भस्म देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१४) गोखरू के शर्बतके साथ देनेसे मूत्र अधिक और शुद्ध हो जाताहै (१५) कोंचबीज और मिश्री के साथ देनेसे प्रमेह मिटताहै (१६) हीरा दक्खनके साथ देने से रक्तार्शका रुधिर बन्ध होताहै (१७) बीलके मुरब्बे या शर्बतके साथ देनेसे रक्तातिसार मिटताहै।

संख्या (४३२)

(सं०) खर्परीतुत्थं, रसकं, चक्षुष्यं, अमृतोत्पन्नम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खपरयो	खपरिया	खापरियु	कलखापरी	खापर	खपरिला	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		तूतिया	संगबसरी	Zinci sulphidum	Impure calamine Black jack Zinc ore

खरपरियेको शुद्ध करनेकी रीति—इसके छोटे २ टुकड़े कर कपड़े की पोटलीमें बांध गोमूत्रमें ७ दिन तक दोलायंत्रमें पचानेसे शुद्ध हो जाताहै ।

प्रयोग—(१) यह–चरपरा, सलौना, कषेला, वामक, पचनेमें हल्का, लेखन, शीतल, भेदन करनेवाला और नेत्रोंको हितकारीहै । कफ, पित्त, विष, रुधिरविकार, कुष्ठ, प्रमेह, क्षय, जीर्णज्वर, पांडु, शोथ, गुल्म, योनीरोग, रक्त गुल्म, प्रदर, सोमरोग, अर्श, अतिसार और कंडूको मिटाताहै (२) अशुद्ध खपरियेका सेवन करनेसे विशेष करके वमन और चक्कर आतेहैं ।

संख्या (४३३)

(सं०) यष्टिमधु, मधुयष्टिका, मधुस्रवा, मधुकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मलहटी	मुलहटी	जेठीमध	ज्येष्ठीमध	यष्टिमधु	मुलहठी	यष्टिमधुकमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
अतिमधुरं	अतिमधुरा	असलुस्सूस	बेख़ेमहक़	Glycyrrhiza glabra	Liquorice root

पहिचान—मुलहटीकी जड़ लम्बी और गोल होतीहै, उसमें कई शाखें फूटतीहैं, और उसकी गुलाई १ से २॥ या ३ इंच तक होतीहै, यह खरदरी

और लचकदार होतीहै, इसका बाहिरका भाग कुछ सफेदी लियेहुए भूरा होता है और भीतरका भाग पीला होताहै, इसका स्वाद मीठा, कुछ चरपरा और कड़वा होताहै, यह चेपदार होतीहै, इसकी गंध अच्छी नहीं होतीहै। इसको छील के काममें लानी चाहिये।

प्रयोग—(१) यह औषधियोंकी चरपराहट मिटानेवाली, पचनेमें भारी, वृष्य, रोचक, शीतल और मीठी होतीहै (२) पित्तशोथ, कफ, गलेका भारीपन, कुत्ताखांसी और तृषा आदि रोगोंको मिटातीहै (३) लाल चन्दनके साथ इसको घिसके लगाने से दाह मिटतीहै (४) काथ, तेल और घी वनाने की कई औषधियोंमें यह मिलाई जातीहै (५) यह-उष्ण, रूक्ष, फोड़ेको पकानेवाली, मूत्रवर्द्धक और रेचकहै विगड़ेहुए दोषको सुधारतीहै और श्वास, खांसी और मासिकधर्मके कष्टको मिटातीहै (६) वादीकी शूल को मिटानेके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये (७) नेत्रोंकी ज्योतिको बलवान करनेके लिये इसके काथसे आंखोंको धोनी चाहिये (८) सिरमें जलीहुई ठौरपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (९) इसका पुल्टिस बांधनेसे पैर या कांखकी दुर्गंध मिटतीहै (१०) इसका काथ पिलानेसे श्वासकी नलिका साफ हो जातीहै (११) इसके पंचांगमेंसे इसके बीजोंमें सबसे अधिक गुणहैं (१२) मुंहके छाले मिटानेकेलिये मुहलटीको मुंहमें रखना चाहिये (१३) रूक्ष खांसीमें कफ पैदा करनेकेलिये मुहलटीके सतको मधुके साथ चटाना चाहिये (१४) इसको पानीसे पीस उसमें रूईका फोया भिगोके नेत्रों पर बांधनेसे नेत्रोंकी ललाई मिटतीहै (१५) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे हिचकी बन्ध होतीहै (१६) इसको सुंघानेसे तृषा मिटतीहै।

संख्या (४३४)

(सं०) यावनालः, शिखरी, वृत्ततण्डुलः, क्षेत्रेक्षुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जुवार	ज्वार, ज्वारी	जुवार	जोंधळे	जुयारा	ज्वार	जोंनलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शोलें	जोळा	जुर्रत	गावरसइन्दी	Sorghum vulgare Holcus sorghum	The Indian or great millet Guinea corn

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत बोई जातीहै ।

प्रयोग—(१) सफेद जुवार—मीठी, बल कारक, वृष्य और रोचकहै त्रिदोष, गुल्म, अर्श और व्रणोंको मिटातीहै (२) लाल जवार—कषेली, उष्ण, ग्राही और विदाही होतीहै (३) यह वादीको मिटातीहै और सूजन पैदा करतीहै (४) शरद् ऋतुमें पैदा होनेवाली जवार—पिच्छिल, पचनेमें भारी, शीतल, मधुर, वृष्य और बलवर्द्धकहै और शरीरको पुष्ट करतीहै (५) जुवारकी गर्म रोटीको दहीमें चूर कर ढक रक्खें जब बिलकुल ठंढी होजावे तब खिला-आमातिसार मिटताहै (६) रात्रीमें इसके आटेकी रबड़ी बना रक्खे प्रातःकाल उसमें कुछ सफेद जीरा और छाछ मिला कर पीनेसे अंतरदाह मिटतीहै (७) इसकी फूली ठंढी और कफ बढ़ानेवाली और खानेके काममें आतीहै ।

संख्या (४३५)

(सं०) यूथिका, गणिका, अम्बष्ठा, यूथी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जूही	जूही	जुई	श्वेतजुई	जुइ, युइ	जूही	नंदिवट्ट

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Jasminum auriculatum	

गुण—(१) जूही—मधुर, शीतल, कड़वी, विपाकमें चरपरी, पचनेमें हल्की, कषेली, हृदयको बल देनेवाली, वात और कफ पैदा करनेवालीहै, । पित्त, दाह, तृषा, कई प्रकारके त्वचाके रोग, रुधिरविकार, मुख, दंत, नेत्र और मस्तकके रोग, विष और शर्कराश्मरीको मिटातीहै ।

संख्या (४३६)

(सं०) स्वर्णयूथिका, स्वर्णयूथी, हेमपुष्पी, मनोहरा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोनजूही	पीलीजूही	पीळीजुई	पिवळीजुई	स्वर्णजुइ	स्वर्णजूही	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी

स्थान—सोनजूही हिमालयमें कश्मीरसे नैपालतक, दक्षिण हिन्दुस्थान और सीलोनमें होतीहै और हिन्दुस्थानके सब बागोंमें बोई जातीहै। इसकी जड़-मेंसे पीला रंग निकाला जाताहै । इसके पुष्पोंसे सुगंधित तेल बनाया जाताहै

प्रयोग-(१) इसकी जड़का लेप करनेसे दाद मिटतेहैं (२)इसका दूधिया रस या इसकी छालमें छेद करनेसे जो दूध निकलताहै उसको पुराने नासूर और बिगड़ी हुइ हड्डी पर या खराब जख्मोंके किनारे पर लगाना चाहिये (३) इसके पुष्पोंको पीसके मलनेसे योनीका ढीलापन मिटताहै ।

संख्या (४३७)

(सं०) रक्तरंगा रागगर्भा, रंजका, नखरंजनी, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मँहदी	मेहदी	मेदी	मेदि	मेइदी	मेदि	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हिन्ना		Lawsonia alba L. inermis	Henna

स्थान—मँहदी हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै और कहीं २ अपने आपभी उगतीहै ।

पहिचान—इसका झाड़ ६–७ फुट ऊंचा होताहै, इसके पत्ते चमक-

दार होतेहैं । इसकी छोटी टहानियां गोल नहीं होतीहैं । इसके कुछ हरे पीले रंगके बहुत सुगंध युक्त पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं । इसके १२ महीनेही पुष्प लगते रहतेहैं । इसके पत्ते रंगतके काममें आतेहैं ।

प्रयोग—(१) निर्बल मनुष्योंको मेंहदीके पुष्प सुंघातेहैं और ललाट पर उनका लेप करतेहैं (२) इसके पत्तोंको पीसके फोड़ों पर लेप करतेहैं (३) इसके काथके कुल्ले करनेसे मुखके छाले मिटतेहैं (४) पित्तशोथ और अग्नि दग्धपर मेंहदीके काथमें भिगोया हुआ कपड़ा रखना चाहिये (५) मस्तककी पीड़ा मिटानेकेलिये मेंहदीको तेलमें पीसके लगाना चाहिये (६) जिसको शीतला निकलीहो उसके पैरोंके तलवों पर इसका लेप करनेसे उसका असर आखों-पर नहीं होताहै (७) नख और केशोंपर मेंहदी लगानेसे वे अच्छे बढतेहैं (८) मेंहदीके लेपमें घाव भरनेकी शक्ति बहुत अच्छीहै (९) कामला और तिल्लीवालेको इसकी छालके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (१०) इसकी छाल का हिम पिलाने से पथरी मिटती है (११) कोढ और औषधि नहीं माननेवाले त्वचाके रोगमें इसकी छालका काथ पिलाना चाहिये (१२) मस्तकके रोगोंमें मेंहदीके बीजोंको मधुके साथ चटाना चाहिये (१३) इसके पुष्पोंका काथ पिलानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१४) इसके पुष्पोंके लेपको उष्ण करके चोटपर लगाना चाहिये (१५) इसके पुष्पोंको तकियेमें भरके रोगीके सिरके नीचे रखनेसे उसको नींद आजातीहै (१६) इसके पुष्पोंको पीसके चोटपर लगातेहैं (१७) इसके पीले और तीव्र गंधवाले पुष्प, पत्ते, और कोमल टहनियों का सार निकालकर, उसकी दो मासेकी मात्रा कुष्ठी और शरीरकी प्रकृति बिगड़े हुए मनुष्योंको दिनमें दोवेर देनी चाहिये (१८) पत्तोंके स्वरसमें थोड़ा पानी मिलाके प्रमेहवालेको पिलाना चाहिये (१९) सर्दी और गर्मीके वेगमें इसके पत्तोंका स्वरस दूधमें मिलाके पिलाना चाहिये (२०) पैरोंकी दाहमें मेंहदीके पत्तोंका लेप करना चाहिये जो दूसरी औष-धियां पैरोंकी दाह नहीं मिटासकें तो इसका लेप तो अवश्यही थोड़ा बहुत गुण करेगा । इसके लेपकी यह रीतिहै कि ताजे पत्तोंको शिरकेके साथ पीस पुल्टिसकी तरह पैरोंके तलवोंपर बांधना चाहिये (२१) गठियाके तीव्र वेग को मिटानेकेलिये मेंहदीके ताजे पत्तोंको महीन पीस, रात्रिको सोनेके समय उस

ठौरपर गाढा लेप करना चाहिये, जबतक गाठिया नहीं मिटे, तबतक लगातार लेप करते रहना चाहिये (२२) इसके पत्ते हरड़की छाल और कत्थेको ४ पहर भिगो, मल छानके, मूत्रकृच्छ्रवालेके पिचकारी देनी चाहिये (२३) इसके ताजे पत्तोंको नींबूके रसमें घोटके पैरोंके तलवोंमें लेप करनेसे उनकी दाह मिटतीहै (२४) ताजे पत्तोंको पीस उनका पुल्टिस बनाके बांधनेसे सूजन और पीड़ा मिटतीहै (२५) नये भरे हुए घावकी चमड़ीको मजबूत करनेके लिये उसपर इसके ताजे पत्तोंकी टिकड़ी बांधनी चाहिये (२६) मसूड़ोंके असाध्य रोगवालेको इसके पत्तोंके क्वाथके कुल्ले कराने चाहिये (२७) सब प्रकार के फोड़े फुन्सियोंको इसके क्वाथसे धोनेसे बड़ा लाभ होताहै (२८) इसके बीजोंकी फक्की देनेसे प्रलाप मिटताहै (२९) गीले या सूखे पत्तोंको पानीमें पीसके शरीरपर लगानेसे शरीरकी चमचमाहट मिटतीहै (३०) इसके पत्तों को जो कूट कर रातभर पानीमें भिगो, उनका निनग हुआ जल प्रातःकाल ७ दिनतक पिलानेसे कामलारोग मिटताहै (३१) इसके पत्तोंको मुंहमें रखने और चाबनेसे बादीका मुखपाक मिटताहै (३२) इसके पुष्पोंको पीसकर मस्तकपर लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (३३) मेंहदीको पानीमें भिगो उस पानीके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (३४) इसके और एरंड के पत्तोंको पीस गुनगुना कर घुटनोंपर लेप करनेसे उनकी पीड़ा मिटतीहै (३५) इसके १॥ तोले पत्तोंको रातभर ऐसे पानीमें भिगो प्रातःकाल मल छान उसमें थोड़ा बूरा डालके नित्य ४० दिनतक पीनेसे कुष्ठ मिटताहै (३६) इसके पत्तोंको साबुनके पानीके साथ पीसकर सफेद बालोंपर लगानेसे वे काले होजातेहैं (३७) इसके ४॥ मासे बीजोंको मधुके साथ चटानेसे मस्तक पुष्ट होताहै (३८) पत्तोंको साबुनके साथ पीसके लगानेसे घुटनेके जोड़की पीड़ा मिटतीहै (३९) फटेहुए हाथ पैरों पर मेंहदी लगाना चाहिये (४०) अग्निसे कम जलनेपर अर्थात् छाला न उठा हो तो उसपर मेंहदी लगाना चाहिये (४१) इसके आधसेर पत्तोंको सेर पानीमें ओटा, आधा पानी रख छान उसमें आध सेर तिलोंका तेल डालकर ओटावे जब तेल सिद्ध होजावे तब उतार लेवे। इसका मर्दन करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (४२) इसके पत्तोंका मस्तकपर लेप करनेसे आधा शीशी मिटतीहै (४३) इसके

बीज शोषक और ग्राहीहैं। इसके पुष्पोंका इत्र खींचा जाताहै। इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै।

संख्या (४३८)

(सं०) रक्तवल्ली।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	पित्ती	रगतरोहडो	खंडवेल	रक्तपित्त		यर्रचिरतली

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सुरलपट्टे	पैपलीचक्का			Ventilago madraspatana V bracteata	

स्थान—रक्तवल्ली पश्चिम प्रायद्वीपमें कोकनसे दक्षिणकी ओर होतीहै।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसका बड़ा झाड़ होताहै वह बेलकी भांति वृक्ष पर चढताहै। इसके छोटे पत्ते चिकने होतेहैं। शीतकालमें इसके पुष्प लगतेहैं। इसके एकप्रकारका गोंद लगताहै। इसकी जड़की छालमें से लाल रंग निकालाजाताहै।

प्रयोग—(१) पेट और आमाशय की पीड़ा मिटानेके लिये इसकी जड़की छाल काममें आतीहै (२) यह बलवर्द्धक और उत्तेजकहै (३) इसका सेवन करने से मंदाग्नि निर्बलता और हल्का ज्वर मिट जाताहै (४) इसकी मात्रा दो माससे ५॥ मासे तक कीहै (५) इसको कुनैनकी ठौर भी देतेहैं (६) इसकी छालको महीन पीस तिलोंके तेलमें मिलाके लगानेसे पामा और त्वचाके दूसरे कई रोग मिटतेहैं।

संख्या (४३९)

(सं०) रजतं, तारं, शुभ्रं, चन्द्रहासम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चांदी	चादी	रुपुं	रुपें	रुपा	चांदी	वेंडि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
वल्लि	वेल्लि	फिज्ज़ाह	सीम नुक़राह	Argontum	Silror.

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंसे निकलतीहै ।

बिना शोधी हुई चांदी की भस्मका सेवन करनेसे पांडु, खुजली, गलग्रह, बद्धकोष्ठ और मस्तकशूल आदि कई प्रकारके रोग पैदा होतेहैं और बल और वीर्य्यका नाश होताहै। इसकी भस्म करते समय जो कच्ची रह जाय उसका सेवन करनेसे दाह, मलकी गांठ और प्रमेह आदि कईप्रकारके रोग पैदा होतेहैं। और बलवीर्यका नाश होताहै ।

इसको शोधनेकी रीति—(१) इसके पतले २ पत्र करा उनको अग्निमें लालकर अगस्तिके पत्तोंके रसमें बुझावें, ऐसे तीन बेर बुझानेसे यह शुद्ध हो जातीहै (२) रीति–इसके पत्रोंको अग्निमें लाल कर करके इमली और दाखोंके अलग अलग रसमें तीन २ बेर बुझाने से शुद्ध हो जातीहै।

इसकी भस्म बनानेकी रीति–एक तोले शुद्ध हरतालको नींबूके रस या और किसी खटाईमें एक पहर खरलकर उसको शुद्ध की हुई चांदीके तीन तोले पत्रों पर लेपकर देवे, फिर सुवर्ण भस्म बनाने की रीतिके अनुसार सरावसम्पुटमें बन्धकर ३० जंगली कंडोंकी आंच देदेवे। जब वह बिलकुल ठंढी हो जावे, तब उसको निकाल, फिर पूर्वोक्त रीतिसे १४ बेर आंच देनेसे चांदी की उत्तम भस्म हो जातीहै। इसको रूपरस कहतेहै। इसकी मात्रा ४ रत्ती तककीहै ।

प्रयोग–(१) इसकी भस्म–कषेली और मधुर होतीहै। मन्दाग्नि, पांडु, क्षय, पित्त और कफके रोग, विष, प्रमेह, नेत्ररोग, मदात्यय, अपस्मार, शूल, प्लीह, ज्वर, यकृत् के रोग, शोथ, कास, त्रिदोष आदि कई रोगोंको अलग २ अनुपानसे मिटातीहै (२) मिश्रीके साथ रूप रसका सेवन करनेसे दाह मिट-

तीहै (३) त्रिफलेके साथ सेवन करनेसे वात पित्तके विकार मिटतेहैं (४) स्नायुजालकी शक्ति बढानेवाली औषधियोंमें चांदीके वर्क मिलाये जातेहैं (५) उष्ण ऋतुमें हृदय का बल बढ़ानेके लिये मुरब्बेके आंवलेपर चांदीके वर्क लगाकर खातेहै (६) शरीर की साधारण निर्बलता मिटानेके लिये चांदीके वर्कों को मक्खन और मिश्रीके साथ खातेहैं ।

संख्या (४४०)

(सं०) रजनीगन्धा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गुलशब्बा	गुलशब्बा		गुलचेरी	राजानिगधा	गुलशब्बो	नेलसैम्पैग

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
				Polianthes tuberosa	

स्थान—गुलशब्बा हिन्दुस्थानके बहुतसे बागोंमें बोया जाताहै ।

पहिचान—इसके पुष्पोंमें बहुत उत्तम सुगंध होतीहै ।

प्रयोग—(१) गुलशब्बा-रूक्ष, उष्ण, मूत्रवर्द्धक और वामकहै (२) इसके कंदको सुखा पीस दूधके साथ फक्की देनेसे, अथवा उसकी ठढाईकी जैसे पीसके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३) इसको हलदीके साथ पीस, मक्खन में मिलाके लगानेसे नये बच्चेकी लाल फुन्सियां (अलाइयां) मिटतीहैं (४) इसको दूबके रसमें पीसकें गाठोंपर लेप करतेहैं (५) इसके पुष्पोंका इत्र निकाला जाताहै ।

संख्या (४४१)

(सं०) रतनजोत ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रतनजोत	रतनजोत				रतनजोत	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
				Onosma echioides O. hispida	

स्थान—रतनजोत हिमालयमें कश्मीरसे कमाऊं तक होतीहै ।

प्रयोग—(१) त्वचाके ऊपर कई प्रकारके फोडे फुन्सियों पर इसकी जड़का लेप करतेहैं (२) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै (३) इसके पुष्प उत्तेजकहैं (४) इनको औटाके पिलानेसे हृदय के रोग मिटतेहैं (५) इनको तेलमें औटाके उस तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटती है (६) रतनजोतको पीसके नाकमें टपकानेसे भिरगीवालेकी मूर्च्छा मिटती है । इसकी जड़मेंसे लाल रंग निकाला जाताहै ।



संख्या (४४२)

(सं०) रसाञ्जनं, रसगर्भं, रसोद्भूतं, रसाग्रजम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रसोत	रसोत	रसवती	रसाञ्जन	रसांजन	रसौत,रस	रसाञ्जनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हुज़ुज	रसोत	Axtractum berberis	Extract of Barberry

प्रयोग—(१) रसोत बनानेकी रीति—दारूहल्दीकी जोकूटकी हुई जड़ोंको पानीमें बहुत धीरे २ औटावे, जब पानी गाढा पड़ जावे, तब छानकर फिर उसको वालुयंत्रमें बहुत मन्द आंचसे गोली बनने लायक गाढा करके उतार लेवे (२) बच्चोंको रेच करानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छा है (३) आंख दुखतीहो, और उसमें गीड बहुत आतेहों, तो उसपर रसोतका लेप करना चाहिये (४) रसोत और अफीमको नींबूके रसमें सिजोकर, आंख की पीड़ा मिटानेके लिये, बाहिर २ लेप करना चाहिये (५) देरीसे अच्छे

होनेवाले फोड़ोंके ऊपर रसोतका लेप करना चाहिये (६) रसोत, अफीम और फिटकड़ीका लेप करनेसे आंखकी पुरानी पीड़ा मिटतीहै (७) पौने दो दो मासे रसोतको पानीमें घोल २ के दिनमें ३–४ बेर पिलानेसे ज्वर छूटता है (८) इससे क्षुधा और पाचन शक्ति बढतीहै, और पेटके ऊपर के भागमें एक प्रकारकी सुहावनी उष्णता प्रतीत होतीहै (९) इसके लेनेसे मल ढीला हो जाताहै (१०) इसके सेवनके समयमें शरीर निरंतर आर्द्रसा बना रहताहै (११) एक भाग रसोत, एक भाग फुलाई हुई फिटकड़ी, और एकसे आधा भाग अफीम, इन सबको नींबूके रसमें अग्निपर गाढा करके, भंवारे और पपोटोंपर लेप करनेसे आंखकी पीड़ा मिटती है (१२) रसोतकी ५ रती से १५ रतीतक मात्रा देनेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध हो जाताहै (१३) नीमके क्राथका बफारा आंखके लगाकर फिर उसपर इसका लेप करना चाहिये। (१४) २॥ रतीसे ७॥ रतीतक रसोतको मक्खनके साथ चटानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होताहै (१५) ४ मासे रसोतको १० तोले पानीमें गलाके अर्श को धोना चाहिये (१६) रसोत और कपूरको मक्खनमें मिलाके गर्मीके फोड़े फुन्सियों पर लगानेसे उनकी दाह मिटतीहै और वे आपभी मिट जातेहैं (१७) वृद्ध मनुष्योंके हल्के ज्वरको मिटानेके लिये और उनके शरीर में बल बढानेके लिये रसोत का प्रयोग बहुत अच्छाहै (१८) इसको नींबूके रसके साथ पीसकर लेप करनेसे मुखपाक मिटताहै (१९) इसकी भस्म सुंघानेसे नकसीर बन्ध हो जातीहै (२०) रसोत और हाथी दांतकी भस्मको छालीके दूधमें पीसकर लगानेसे बाल उग आतेहैं (२१) रसोतको स्त्रीके दूध और मधुमें मिलाकर कानमें डालनेसे उसमेंसे पूयका बहना बन्ध हो जाताहै (२२) इसको पिलाने और लगानेसे बच्चोंकी गुदाका पकना बन्ध हो जाताहै (२३) रसोतको मधुमें मिलाकर अंजन करनेसे मस्तकपीड़ा और नेत्रके रोग मिटतेहैं (२४) रसोत, लाल चांवलोंकी जड़ और मधको चांवलोंके धोवनमें मिलाके पीनेसे रक्त प्रदर मिटताहै।

संख्या (४४३)

(सं०) राजमाषः, महामाषः, चपलः, चवलः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चँवला	लाविया चवरा	चोळा,चोल	अळसुदा	चरवटी	र वांह	अलसंदुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कारामणि		फिरीका	लोविया	Vigna catiang Dolichos sinensis	The Cholee of India Tow cok of China

स्थान—चँवले हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं।

चँवले—श्वेत, लाल और काले रंगके भेदसे तीन प्रकारके और छोटे बड़े के भेदसेभी दो प्रकारके होतेहैं, सफेद रंगके बड़े चँवलोंको "डोलरचँवले" कहतेहैं। १०० तोले चँवलोंमेंसे ५६॥। तोले मैदा सवा तोले तेल और १२॥ तोले पानी निकलताहै।

प्रयोग—(१) चँवले-ठंढे, रूक्ष, पचनेमें भारी, मधुर, कषेले, शरीर तृप्तिकारक, वातल, रोचक, स्त्रियोंके दुग्धवर्द्धक, सारक, विशद, मल को बढ़ानेवाले, और वीर्य्य, मेद और कफको शोषण करनेवाले, रक्त पित्त और आमको मिटानेवालेहैं। साबित चँवलोंका या इनकी दाल और कच्ची फलियोंका शाक बनाया जाताहै। चँवलोंकी दाल और इनके आटेसे भोजन के कई प्रकारके पदार्थ बनातेहैं।

संख्या (४४४)

(सं०) राजावर्त्तः, नृपावर्तः, आवर्तकः, आवर्तमणिः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लाजवर्द	लाजवर्द			राजावर्त्त	लाजवर्द	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Lapis lazuli	

सरल और नीलके भेदसे राजावर्त दो प्रकारका होताहै जिसमें नीला भाग अधिक और श्वेत, चमकीलाभाग कम होवे और तोलमें भारी होवे वह उत्तम होताहै।

इसको शुद्ध करनेकी रीति—इसको महीन पीस बिजौरेके रसमें खरलकर फिर अम्लवर्ग अर्थात् खट्टे पदार्थोंके रसमें, फिर अद्रकके रसमें खरलकर गर्म जलसे धोकर खटाई आदि निकाल देनेसे शुद्ध होजाताहै।

प्रयोग—(१) शुद्ध कियाहुआ राजवर्त–चरपरा, कड़ुआ, शीतल, ग्राही और चित्त प्रसन्न करनेवालाहै। पित्त, वमन, प्रमेह और हिचकी को मिटाता है (२) फोड़े फुन्सियोंपर इसका लेप करतेहैं (३) जुलाफा आदि दूसरी विरेचन की औषधियोंमें इसको मिलातेहैं।

संख्या (४४५)

(सं०) राजिका, राजी, आसुरी, तीक्ष्णगंधा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
राई	राई	राई	मोहरी	राइसरिषा	राई, अरयो	आवालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कड्डू	सासुवे	खरदल	सर्शफ	Brassica Juncea Sinapis]	The Rai or Indian mustard

स्थान—राई हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै।

प्रयोग—(१) राई–उष्ण, अत्यन्त तीक्ष्ण, चरपरी, कड़वी, कुछ रूक्ष और अग्निवर्द्धक है (२) वायुकी पीडापर कई प्रकारसे राईका लेप किया जाताहै। इसके लेपकी यह रीतिहै कि केवल राईको महीन पीस उसमें थोड़ी चीनी शक्कर डाल, थोड़ेसे पानीके साथ उसको ऐसी महीन पीसे कि उसमें चेप पैदा होजावे पीछे एक मलमलका कपड़ा गीलाकर उसको खूब निचोड़ उसपर उसका लेपकर जहां दर्द हो वहां उस कपड़ेको राईको बाहिरकी ओर रखके चिपका देवे और ऊपरसे उसको सेक देवे, जब बहुत जलने लगे तब

उस पट्टीको उतार लेवे। अथवा राई और पापड़को पीसकर उसका लेप करे (३) गठियाकी सूजनपर इसका लेप बहुत उपकारी है (४) स्नायु पीड़ा मिटानेके लिये इसका लेप करना चाहिये (५) राईमें लहसन मिलाके लेप करनेसे अधिक लाभ होताहै (६) राईकी फकी लेनेसे पाचनशक्ति बढती है (७) राईका आटा करके पानीमें ओटानेसे उसमेंसे तेल निकल आताहै (८) राईके तेलमें वायुनाशक औषधियोंको ओटा छान उसका मर्दन करनेसे वॉइटे मिटतेहैं (९) एरंडके पत्तोंको इसके तेलसे चुपड़ अग्नि पर तपाके वांधनेसे शरीर में जमा हुआ रुधिर विखर जाताहै (१०) इसके चूर्णमें बूरा मिलाकर फकी लेनेसे मुँहसे लाळका गिरना वन्ध होताहै (११) इसका तेल कानमें डालनेसे बहिरापन और लगानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहैं (१२) राईको पीस कर मंजन करनेसे दांत साफ और दृढ़ रहतेहैं (१३) इसको पीस कर सुंघानेसे मिरगीका वेग दूर होताहै (१४) राई और कलौंजी पीसके सुंघानेसे कंठमें चिपटी हुई जोंक गिर जातीहै (१५) इसके पत्तोंका शाक वनाया जाताहै।

संख्या (४४६)

(सं०) कृष्णराजिका, कृष्णिका, सुतीक्ष्णः क्षवकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
राईभेद	काली राई	काली राई	काळी तिखी	कृष्णराइ	कालीराई	अवलो

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कडघो	बिलेमसिवे			Brassica nigra Sinapis n	The black or true mustard

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै।

१०० तोले राईमेंसे ३३ तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) इसका पुल्टिस पीड़ा मिटाने और छाला उठानेकेलिये बांधा जाताहै (२) पित्त शोथपर इसका पुल्टिस बहुत लाभ कारी है परन्तु चमड़ी लाल होजानेके पीछे इसके पलस्तरको उतार लेना चाहिये, नही तो

वहां पर बहुत दुखदाई छाले होजातेहैं (३) इसका लेप करनेसे गठिया का दर्द मिटताहै (४) राईके आटेको पानीमें घोलके पिलानेसे शीघ्र और निरुपद्रव वमन होतीहै (५) अगर प्रमाणसे लिया जायतो राई या राईका आटा पाचक मसालाहै (६) राईको साधित निगलनेसे सारकपनका काम करतीहै (७) बद्धकोष्ठके कारणसे पैदा हुई मंदाग्निको मिटानेकेलिये राईकी फक्की देतेहैं (८) इसके ताजे शुद्ध तेलका मर्दन करनेसे शरीरका आलस्य मिटताहै (९) गलेकी हल्की सूजन पर इस तेलका मर्दन किया जाताहै(१०) शरीरके भीतर कहीं रुधिर आदि जम जावे वहां इस तेलका मर्दन करके सेक देना चाहिये (११) इस तेलका मर्दन करनेसे पट्ठोंकी पुरानी सूजन उतर जातीहै (१२) इसका तेल खानेके काममें भी आताहै (१३) स्नान करनेके पहिले शरीर पर इसका मर्दन करनेसे अधिक पसीना होना बन्ध होताहै और सूर्यकी किरणोंकी तीक्ष्णता और लूका असर नहीं होताहै (१४) बच्चेके शरीरपर इसका मर्दन करके उसको कुछ देरतक धूपमें बैठा रखनेसे उसकी त्वचामें तेज गर्मी सहनेकी शक्ति होजातीहै (१५) भोजनके पदार्थ बनानेमें इस तेलको बहुधा घीकी ठौर काममें लातेहैं (१६) भोजन करनेके पीछे इसकी कुछ बूंदें पीनेसे पाचनशक्ति बढतीहै (१७) कुछ पित्त और मूत्रवृद्धि करनेकेलिये इसको पिलाना चाहिये (१८) इस तेलमें कपूर मिला के मर्दन करनेसे गठियामें बहुत लाभ होताहै (१९) पैरोंमें और नाकके ऊपर इस तेलका मर्दन करनेसे मस्तककी सर्दी और प्रतिश्याय एक रातमें मिटजाताहै (२०) बच्चोंकी छातीपर इसका मर्दन करनेसे खांसीके विकार मिटतेहैं (२१) गलेके साधारण रोगमें इसका मर्दन करना उपकारीहै (२२) जुकामके कारणसे तेज ज्वर होनेपर पैरों पर इसका मर्दन करना तुरंत आराम दिखलाताहै (२३) नाकपर मर्दन करनेसे नाकका बहना तुरंत बन्ध होजाताहै (२४) कपासके पान और राईको पीसकर लेप करनेसे विच्छूका विष उतरताहै (२५) राई और हींगके चूर्णकी फक्की देनेसे मरा हुआ बालक गर्भमेंसे बाहिर निकलजाताहै (२६) राई और सहिंजनेकी छालको गायकी छाछके साथ पीसके लेप करनेसे वातशूल मिटतीहै (२७) राई और नोसादरको पीस कर घरमें डालनेसे सांप भग जाताहै (२८) सर्पका विष

उतारनेकेलिये बहुतसी राई खिलानी चाहिये (२६) राई और बकरी की मेंगनीको पीस, केश उपाड़कर, उस ठौर पर लगानेसे केश दरसे उगते हैं (३०) पेटमें जमे हुए रुधिर आदिके विकारको मिटानेकेलिये ८ मासे राईको पानीके साथ पीसकर पिलानी चाहिये (३१) जिह्वाका रसाज्ञान मिटानेकेलिये राई आदि तीक्ष्ण औषधि चबाना चाहिये (३२) राई और कबूतरकी बीटको पीसके लेप करनेसे आधाशीशी मिटतीहै (३३) राईको सिरकेके साथ पीसके लेप करनेसे दाद मिटताहै (३४) राई और सैंधेनमकको ओटाकर कुल्ले करानेसे कंठ में चिपटी हुई जोंक निकल जातीहै (३५) राईको गर्म जलके साथ पीसके लेप करनेसे कांखोलाई मिटतीहै (३६) इसका लेप करनेसे बद बिखर जातीहै (३७) आधी कच्ची और आधी सेकी हुई राईको पीस कड़वे तेलमें मिलाकर लगानेसे गंज मिटतीहै।

संख्या (४४७)

(सं०) रामफलं, अग्रिमा, कृष्णबीजं, लवनी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रामफल	लवनी एनोना	रामफळ	रामफळ	लोना	रामफल	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Anona reticulata	The bullock's heart or true custard apple of the West Indies

स्थान—रामफलके वृक्ष बंगाल, दक्षिण हिन्दुस्थान आदि और कई भागोंमें बोये जातेहैं।

फूलने फलने का समय—इसके फल वर्षा ऋतुके अंतमें पकतेहैं, वे खानेके काममें आतेहैं।

प्रयोग—(१) रामफल-कषैला, मीठा और खट्टाहै। कफ और बादीको बढाताहै। रुचि, दाह, तृषा, पित्त, श्रम और क्षुधाको मिटाताहै (२) इसकी छाल बहुत ग्राहीहै, और बलवर्द्धक औषधियोंमें मिलाई जातीहै (३) इसका

फल आमातिसार मिटानेके लिये काममें आताहै (४) इसके फल खिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं। इसके कच्चे सूखे फलमेंसे काला रंग निकलताहै। इसके ताजे पत्तोंमेंसे एक प्रकारकी नील निकलतीहै।

संख्या (४४८)

(सं०) रास्ना, रस्या, सुगंधिमूला, युक्तरसा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
राठकापान	रास्ना	रासना	रासना	रास्ना	जतर रहसन	सन्नरास्ना

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सन्नदुम्पराष्टं	सन्नराश्मे			Vanda Roxburghii Cymbidium tessellоides	

स्थान—रास्ना-दक्षिण हिन्दुस्थानके, बंगाल और कोकन देश आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै। दो, तीन वृक्षोंकी जड़ोंको रास्नाके काममें लातेहैं।

प्रयोग-(१) रासना-कड़वी पचनेमें भारी, उष्ण और पाचकहै। आम, वातरक्त, विष, श्वास, कास, विषमज्वर, शोफ, हिचकी, आमवात, कफ, शूल, कंपवायु, उदररोग और सब प्रकारकी बादीको मिटातीहै (२) वातव्याधि मिटानेके लिये जो तेल बनाये जातेहैं उनमें रास्ना अवश्य मिलाई जातीहै (३) इससे बनाया हुआ तेल स्नायुजालके रोगोंको मिटाताहै (४) उपदंश सम्बन्धी उपद्रव मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (५) इसके पत्तोंको पीसके लेप करने से ज्वरकी दाह कम होतीहै (६) इसके पत्तोंका रस कानमें डालनेसे उसकी खुजली और बहना बन्ध होताहै (७) इसको उशबेकी ठौर भी काम में लातेहैं।

संख्या (४४६)

(सं०) रुदन्ती, चणपत्री, रोमाञ्चिका, सञ्जीवनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रुद्रवन्ती	लाणा	पलियो	रुदंती	रुदन्ती		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Cressa cretica	

स्थान—रुद्रवंती बहुधा हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें समुद्रकी तट के पास २ मुलतान, सिन्ध, गुजरात, कारोमण्डलके किनारे और सीलोनमें होतीहै। वर्षाऋतु पूरी होनेके पीछे यह खेतोंमें उगतीहै।

पहिचान—इसका छोटा खड़ा झाड़ होताहै, इसके चने जैसे खट्टे पत्ते लगतेहैं, शिशिर ऋतुमें इसमेंसे पानीकी बूंदे टपकने लगतीहैं, जब यह वृक्ष वृद्ध होजाताहै तब इसपर सफेद रुंए पैदा होजातेहैं।

प्रयोग—(१) रुदंती—कपेली, चरपरी, कड़वी और उष्ण होतीहै क्षय, कृमि, रक्तपित्त, कफ, श्वास और प्रमेहको मिटातीहै (२) यह रसायनी और बलवर्द्धकहै (३) इसके क्काथसे सूखी खांसी मिट जातीहै।

संख्या (४५०)

(सं०) रुद्राक्षः, अमरः, तृणमेरुः, पुष्पचामरः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रुद्राक्ष	रुद्राक्ष	रुद्राक्ष	रुद्राक्ष	रुद्राक्षगाछ	रुद्राछ	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Elaco-corpus Ganitrus	Utrasum bead tree

स्थान—रुद्राक्षके वृक्ष नैपाल, आसाम और कोंकन घाटपर बहुत होतेहै।

पहिचान—इसका वृक्ष बड़ा होताहै इसकी टहनियों पर प्रायः ६ इंच लम्बे पत्ते बारी २ से लगतेहैं, उनकी कोरें कुछ कटीहुई होतीहैं। छोटे पत्तों पर

बहुत हल्के रेशमीन रूंए होतेहैं, पत्ते बडे होनेपर दोनों ओरसे चिकने होजातेहै। इसके फलमें पांच खाने होतेहैं और उन हरेकमें एक एक बीज रहताहै ।

फूलने फलनेका समय—यह शीतकालमें फूलताहै और वसंतऋतुमें इसके फल पकतेहैं ।

गुण—(१) रूक्ष-खट्टा, उष्ण और रोचक होताहै। वादी, कफ, मस्तक पीड़ा और भूतबाधाको मिटाताहै ।

संख्या (४५१)

(सं०) रोहिणी, सुलोमा, मांसरोहा, सदामांसी ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रोहन	रोहिणी	रोहरय	रोहिणी	रोहन	रोहिणी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		वक्रम	वक्म-	Soymida febrifuga swiotenia f	The Indian red wood Bastard Cedar

स्थान—रोहनके वृक्ष पश्चिमोत्तर, मध्य और दाक्षिण हिन्दुस्थानमें दक्षिणकी ओर ट्रेवनकोर और सीलोन तक और राजपूताना, आदि देशोंमें भी होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ७०--८० फुट ऊंचा होताहै । इसकी पेदड़की गुलाई ७, ८ फुट होतीहै और छाल धुंधले रंगकी और बहुत खरदरी होतीहै। इसके ६ से १२ इंच लम्बे पत्तोंके तीनसे छैतक जोड़े लगतेहैं। इसके कुछ हरे और सफेद रंगके पुष्प लगतेहैं। इसके चिकनी और एक दो इंच लम्बी डांडी लगतीहै वह पकने पर काली पड़ जातीहै। इसके पुराने पत्ते गिरनेके पाहिले ही चैत्र वैशाखमें नवीन पत्ते आजातेहैं

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाख में यह फूलतीहै और अषाढ श्रावणमें इसके बीज पककर गिरजातेहैं ।

इसकी गहरी लाल छालमेंसे चेपदार गोंद और राल जैसा सफेद रंगका एक पदार्थ निकलताहै । इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै ।

प्रयोग—(१) रोहिणी–शीतल, कपेली, और कृमिनाशकहै (२) इसकी छाल ग्राहीहै और बारीसे आनेवाले वेगको मिटातीहै (३) ?। तोले से १॥ तोलेतक इसकी छालका चूर्ण रात दिनमें देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाताहै परन्तु अधिक मात्रा देनेसे स्नायुजालमें विकार पैदा होके पहिले चक्कर आने लगतेहैं और अन्तमें मूर्छा होजातीहै (४) अतिसार और आमातिसार मिटानेकेलिये इसकी छालके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (५) इसकी छालके क्वाथके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (६) योनीके व्रण मिटानेकेलिये उनको इसकी छालके क्वाथसे धोतेहैं (७) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे अथवा इसकी छालका पुल्टिस बांधनेसे गंठियाकी सूजन उतरतीहै ।

——— ० ———

संख्या (४५२)

(सं०) रोहिषतृणं, पौरं, सौगान्धिकं, देवजग्धकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रोहिसोघास	गंधेजघास	रोंश (स)	रोहिषगवत	रामकर्पूर	गाधीघास	ध्यामकतु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	कामंचिहुल्लु			Andropogon schoenanthus A Martini	The Geranium grass Rusa oil grass

स्थान—रोहिसका घास संयुक्त प्रदेश, पंजाब, दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थानमें बहुत होताहै । पंजाबमें रोहिसका घास दो प्रकारका होताहै ।

प्रयोग—(१) रोहिसघास—कपेला, कड़वा, पाकमें चरपरा, स्निग्ध, उष्ण और मधुरहै (२) इसके तेलका मर्दन करनेसे पुरानी गाठिया मिटतीहै (३) शिरमें इसको लगानेसे गंज मिटतीहै (४) स्नायुजालकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसका मर्दन करतेहैं (५) इसका फांट पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (६) इसका तेल गुलाबके तेलमें मिलाया जाताहै (७) नलिका यंत्रसे इसका तेल निकालतेहैं वह ठंढा और ग्राही होताहै (८) इस तेलका

मर्दन करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (६) इसका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूट-जाताहै (१०) फाल्गुन और चैत्रमें इसकी जड़ें खोदी जातीहैं। उनमें कुछ मसाले मिला, अर्क निकालके पिलानेसे अजीर्ण मिटताहै (११) इसका क्वाथ पिलानेसे प्रतिश्याय (जुकाम) मिटताहै (१२) ज्वरमें पसीने लानेकेलिये रोहिसा और चंद्रको बराबरले ओटाके पिलाना चाहिये (१३) हाथ पैरोंकी शून्यता मिटानेकेलिये इसके तेलका मर्दन उत्तेजकहै।

संख्या (७५३)

(सं०) रोहीतकः, रोही, प्लीहशत्रुः, दाडिमपुष्पकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रोहिड़ा	रोहेडा	रोहिडो	रक्तरोहिडा	रोढा, रयना	रुहेड़ा	मुलुगोट्टुगचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	यरहुमलु-मतलु			Tecoma undulata Bignonia undulata	

स्थान—रोहेड़के वृक्ष सिन्ध, पजाब, गुजरात, खानदेश, कानपुर और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष बहुत बड़ा नहीं होताहै। प्रायः १०—१५ फुट ऊंचा होताहै। परन्तु जो जमीन इसको मानतीहै, वहां खात और जल आदि इसको भली भांति दिया जावे तो यह ३०—४० फुट ऊंचा बढ जाताहै। तब इसकी पेदड़की ऊंचाई १२—१५ फुट और गुलाई ५—८ फुटकी होजातीहै। इसकी छाल चौथाईसे आध इंच मोटी, कुछ ललाई युक्त, भूरे या धुंधले सफेद रंगकी और खरदरी होतीहै। इसकी डालियोंके अन्तके भाग जमीनकी ओर झुके रहतेहैं। इसकी नवीन डालियां सफेद रंगकी होतीहैं। इसके पत्ते बहुधा एक दूसरेके सामने लगतेहैं, ये रूप और आकारमें बहुत पलटते रहतेहैं, इन पर बहुत छोटे २ रूँए होतेहैं, पुराने पत्ते कुछ खरदरे हो जातेहैं। छोटी शाखाओंके अन्तमें विना सुगंधवाले, चमकीले और नारंजी रंगके ५, १० अच्छे बड़े पुष्प लगतेहैं। इसके ६ से ८ इंच लम्बी, मुड़ी हुई फलियां लगतीहै। इसके

पत्ते सबके सब नहीं गिरतेहैं । पोष और माहमें इसके नवीन पत्ते आतेहैं इस के एक प्रकारका भूरा गोंद लगताहै ।

फूलने फलने का समय—फागुन और चैत्रमें यह पूरा फूल जाता है, वैशाखसे अषाढ तक इसके फल पक जातेहैं ।

प्रयोग—(१)रोहेड़ा—चरपरा, स्निग्ध, कषेला, कड़वा, सारक और शीतलहै (२) इसकी छोटी टहनियोंकी छालका काथ पिलानेसे उपदंश मिटताहै (३) रक्तष्ठीवी सन्निपात (जिसको मारवाड़ी भाषामें गुजराती रोग कहतेहैं) मिटाने वाली औषधियोंमें इसकी छाल मिलाई जातीहै (४) इसकी और हरड़की छाल के गौमूत्रकी भावना देकर उनके चूर्णकी फकी देनेसे तिल्ली आदि उदर के रोग मिटतेहैं (५) इसकी छालका घी बनाकर खानेसे तिल्ली मिटती है (६) इसकी जड़के कल्कमें मधु और मिश्री मिलाकर खानेसे श्वेत और रक्त दोनों प्रकारके प्रदर मिटतेहैं ।

संख्या (४५४)

(सं०) लकुचः, स्थूलस्कंधः, क्षुद्रपनसः, डहुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बडहर	बडहर(ल)	लकुच	क्षुद्रफणस	डहुयागाछ	बडहल	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Artocarpus Lakoocha	

स्थान—बडहरके वृक्ष कमाऊं, सिकम, पूर्वी बङ्गाल, पश्चिमीघाट और सीलोन आदि कई देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ५०--६० फुट होतीहै । इसकी छोटी पेदड़की गुलाई बड़ी होतीहै, इसकी छाल आध इंच मोटी हल्के या धुंधले सफेद रंगकी और खरदरी होतीहै, उसमें नालियें या दरारें नहीं होतीहैं । इसकी छोटी डालियों और पत्तों के नीचे कोमल भूरे रंगके रूंए होतेहैं । पत्तोंके

ऊपरका भाग चिकना होताहै, इसका फल बेडोल और कुछ गोल होताहै, य पकनेपर पीले रंगका हो जाता है। इसकी मध्य रेखा ३-४ इंचकी होती है

फूलने फलने का समय—फागुनमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) इसका कच्चा फल—उष्ण, पचनेमें भारी, अफारा पैद करनेवाला, वीर्य्य और अग्निका नाश करनेवाला, और नेत्रोंको हानिकारव है (२) इसका पका हुआ फल—मधुर, खट्टा, रोचक, वृष्य, अग्निवर्द्धव विष्टंभी और वात पित्त नाशकहै और कफ और अग्निको बढ़ाताहै यह खानेवे काममें आताहै। इसकी छालको सुपारीकी ठौर खातेहैं। इसके फल का शाव बनातेहैं। इसकी जड़ और लकड़ीमेंसे पीला रंग निकाला जाताहै।

संख्या (४५५)

(सं०) लज्जालुः, रक्तपादी, शमीपत्रा, संकोचनी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लजालू	लजालू लज्जावती	रिशामणी	लाजाळू सकोरणी	लाजुकलता	छुईमुई	मण गुदामर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तोट्टाशाटि	मुट्टिढमुनिय			Mimosa pudica M sensitum	The sensitive plant

स्थान—लज्जालूके छोटे बूंटे हिन्दुस्थानके उष्ण प्रदेशोंमें होतेहैं। ये दक्षिण हिन्दुस्थानके कुछ भागोंमें सड़कके किनारे बहुत होतेहैं अर्थात् खेतके खेत लगे रहतेहैं॥

प्रयोग—(१) लजालू—शीतल, कड़वी, कषेली, और चरपरी होतीहै (२) इसकी जड़का क्वाथ पिलानेसे पथरी गलजातीहै (३) इसके पत्तोंके तोले भर तक चूर्णको दूधमें पिलानेसे अर्श मिटतेहैं (४) इसकी जड़को घिसके लेप करनेसे नासूर मिटताहै (५) यह सूजन को बिखेरतीहै, रुधिरको शुद्ध करतीहै और पित्तके रोगोंको मिटातीहै (६) नासूर पर इसके रसका लेप क-

रतेहैं (७) किसी विशेष समयमें इसका संग्रह करना चाहिये और इसके प्रयोगभी विशेष रीति और युक्तिसे करने चाहियें। इसके प्रयोगके पहिले सप्ताहमें ज्वर और सब प्रकारके पित्तविकार मिटतेहैं। दूसरे सप्ताहमें अर्श और कामला आदि रोग मिटतेहैं। तीसरे सप्ताहमें कोढ़, कीलें और उपदंश आदि रोग मिटतेहैं (८) इसके पत्तोंका लेप करनेसे मूत्रातिसार मिटताहै, (९) इसकी जड़को गलेमें बांधनेसे खांसी मिटतीहै (१०) इसके पत्तोंके रसमें कपड़ेको भिगोके नासूर पर पट्टी बांधनी चाहिये (११) इसका रस पिलानेसे अपचि और गंडमाला मिटतीहै (१२) लज्जालू और आसगंधकी जड़ पीसके लेप करनेसे स्तनोंका ढीलापन मिटताहै।

संख्या (४५६)

(सं०) लवंगं, ग्रहणीहरं, देवकुसुमं, श्रीसंज्ञम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लोंग	लोंग	लवींग	लवग	लवग	लोंग	लवंगमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
लवग किराम्ब	लवग	करनफल	मेखक	Caryophyllus aramaticus Engenia caryophyllala	Cloves

स्थान—लोंग पहिले मुलक्का टापूमें पैदा होतेथे, अब हिन्दुस्थानके दक्षिणके भागमें बोये जाने लगे हैं। लोंगके वृक्षके हरेक भागमेंसे तेल निकलताहै। भभकेमें लोंगोंका अर्क निकालनेसे उसके साथ इनका सुगंधित तेल निकलजाताहै। उसका कुछ पीला रंग होताहै, उसमें लोंगों जैसा स्वाद और वैसी ही बहुत तीक्ष्ण सुगंध होतीहै। १०० तोले लोंगोंमें १६ से २० तोले तक तेल निकलताहै।

प्रयोग (१) लवंग-चरपरा, कड़वा, शीतल, दीपन, पाचन, रोचक रस और विपाकमें मधुर, स्निग्ध, तीक्ष्ण, उष्ण और पचनेमें लघु है (२) सवारती लोंग और सवा रती जुलाफा की गोली बनाके देनेसे बद्धकोष्ठ

मिटताहै (३) लौंगको पीस मिश्रीकी चाशनीमें मिलाके चटानेसे गर्भवती स्त्री की रीती होवइ मिटतीहै (४) लौंगोंको ठण्ढे पानीमें पीसके पिलानेसे तृषा मिटतीहै (५) लौंग और चिरायता दोनों बराबर ले ठण्ढे पानीमें पीसके पिलानेसे ज्वर छूट जाताहै और ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै (६) इसमें दालचीनीका चूर्ण बुरकाके पीनेसे पाचनशक्ति बढतीहै और साधारण निर्बलता मिटतीहै (७) लौंगका तेल गठिया की पीड़ा पर लगाया जाताहै (८) यह तेल ललाट पर लगानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (९) इसको दांत के लगानेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१०) लौंग उष्ण और रूक्षहैं (११) इनको जलमें पीस गर्मकर ललाट और कनपटियों पर लेप करनेसे मस्तककी स्नायुपीड़ा मिटतीहै (१२) इनको मुखमें रखनेसे मुख और श्वासकी दुर्गंध मिटतीहै (१३) लौंग, आककी चोफूली और काले नोनकी गोली बना, मुखाके मुखमें चूसनेसे श्वास तथा श्वास नलिका सम्बन्धी रोग मिटते हैं (१४) लौंग, दालचीनी और मिश्रीकी फक्की देनेसे पाचनशक्ति बढतीहै (१५) लौंगको मुखमें रखनेसे बहुत चिकना कफ छूटने लग जाताहै (१६) इनसे शरीरकी शिथिलता मिटतीहै (१७) ताम्बेके पात्रमें लौंगको पीस मधु मिलाके अंजन करनेसे नेत्रके श्वेत भागके रोग मिटतेहैं (१८) इनको ठण्ढे पानीमें घोट छान बूरा डालके पिलानेसे हृदयकी दाह मिटतीहै (१९) इनको दीपककी लोयमें सेककर या जलाकर खानेसे गलेकी दाह मिटतीहै (२०) इनको सेककर या इनकी भस्म मधुके साथ चटानेसे कुत्ताखांसी मिटतीहै (२१) बहुतसे लौंग एक साथ खानेसे जिह्वाकी स्वादशक्ति नष्ट हो जातीहै (२२) दो लौंग और ४ रत्ती अफीमको पानीके साथ पीस गर्मकर ललाट पर लेप करनेसे नजलेकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२३) लौंग और हळदीका लेप करनेसे गुहांजनी मिटतीहै (२४) लौंग और हरड़के क्वाथ पर सैंधानमक बुरकाके पिलानेसे अजीर्ण मिटताहै और विरेच होताहै (२५) इनको पानीके साथ पीस छान निवाये करके पिलानेसे तृषा और जीमचलाना मिटताहै (२६) इनको पीसकर तालू पर लेप करनेसे प्रतिश्याय मिटताहै (२७) लौंगऔर हळदीको पीसके लगानेसे नासूर मिटताहै ।

———o———

संख्या (४५७)

(सं०) लवली, सुगन्धमूला, स्कंधफला, कोमलवल्कला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलंगी
	हरफारेवड़ी	खाटीआवळी	हरपरेवड़ी	नोयाल फल	हरफारेवड़ी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
				Phyllanthus distichus (Cicca disticha)	

स्थान—इसके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थानके बागोंमें बहुत लगाये जातेहैं ।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—यह एक छोटा सुंदर वृक्षहै इसके पत्ते कसौंदीके पत्तोंके जैसे होतेहैं । उष्णकालके प्रारम्भमें इसके छोटे २ बहुतसे लाल रंगके पुष्प आने लगतेहैं, उनके पीछे गिरदार फल लगतेहैं । इसके फल गूलरके फलकी जैसे डालीके चिपे रहतेहैं उनका स्वाद खट्टा होताहै ।

प्रयोग—(१) इसके फल–ग्राही, कषेले, रोचक, खट्टे, कड़वे, रूक्ष, विशद, सुगंधयुक्त, मीठे और पचनेमें हल्केहैं । कफपित्त, वातपित्त, शर्करा-श्मरी और अर्शको मिटातेहैं (२) इसकी जड़के चूर्णकी फक्की देनेसे या क्वाथ करके पीनेसे या इसके बीजोंके चूर्णकी फक्की देनेसे तीव्र विरेचन लगताहै (३) इसके कच्चे और पक्के फल खानेके काममें आतेहैं । इनका अचार और मुरब्बा बनाया जाताहै ।

संख्या (४५८)

(सं०) लशुनं, महौषधं, रसोनकः, महाकन्दः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
लसण	लहशन	लसण	लसन	लशुन, लसन	थोम	वेल्लुल्लि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
वल्लु ल्लि	वेल्लुल्लि	सूम	शीर	Allium sativum	Garlic

स्थान—लहशन हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै।

प्रयोग—(१) लहशन-स्निग्ध, उष्ण, वृष्य, वल्य, रोचक, पाचन, ारक, रस और विपाकमें चरपरा, तीक्ष्ण, मधुर, पचनेमें भारी, पिच्छल और ातनाशकहै (२) इसके बीजोंमेंसे साफ, सफेद और पारदर्शक तेल निकल ाहै (३) लहशनको भी दबाकर तेल निकालतेहैं उस तेलके मर्दनसे शरीर उत्तेजित होजाताहै (४) शीतज्वर के शीतको मिटानेके लिये इसके तेलकी ात्रा देतेहैं (५) इसका लेप करनेसे चमड़ी लाल हो जातीहै (६) इसके प्रयोगसे बेर २ आनेवाला ज्वर छूटताहै (७) लहशनका गुरब्बा खिलानेसे गठिया मिटतीहै (८) इसके अर्कका कानके बाहिर लेप करनेसे बहिरापन और कानकी पीड़ा मिटतीहै (९) मूत्राशयकी निर्बलतासे पैदाहुई मूत्रकी रुका-वटको मिटानेके लिये इसका पुल्टिस बांधतेहैं (१०) इसको कूट भभकेमें डाल के इसका तेल निकालतेहै उसको साफ करनेसे उसमें कोई रंग नहीं रहताहै। लहशन में जितने गुणहै वे सब इस तेलकेहैं (११) लहशन खानेवाले शरीरमेंसे निकलनेवाले पसीने आदि हरेक मलमें उसकी गंध आने लगतीहै (१२) इसको सिरकेमें भिगोकर खानेसे दुखते हुए गलेकी ढीली पड़ी हुई रगोंका संकोच होजाताहै और शब्द वाहिनी नाड़ियोंका ढीलापन मिटजाताहै (१३) श्वास रोगवालेको लह-शन बहुत लाभदायकहै (१४) इसकी चटनी बनाके खानेसे शूल युक्त अ-फारा मिटताहै (१५) गठिया और स्नायुपीड़ा होनेसे बचनेकेलिये बादीकी प्रकृतिवालेको शीतकालमें लहशन खिलाना चाहिये (१६) छाला उठाने केलिये इसका पुल्टिस बहुत देर तक बांधे रहतेहै (१७) इसके खानेसे कई प्रकारकी मंदाग्नि मिटतीहै (१८) कांदेके जैसे यहभी शरीरके स्वास्थ्यको ठीक रखताहै (१९) यह खांसीको अवश्य मिटाताहै (२०) राईके तेलमें इसको तलकर उस तेलके लगानेसे खुजली मिटतीहै (२१) जिस फोड़ेमें कीड़े पड़ जातेहैं उस पर यह तेल लगाया जाताहै (२२) चोट और मुरड़ पर इसका रस और नोंन लगातेहै या लहशनकी गुलीको नोंनके साथ पीस पुल्टिस बनाके बांधतेहैं (२३) लहशनके पास सांप नहीं आताहै (२४) इसका पुल्टिस बांधनेसे गठिया मिटतीहै (२५) बच्चेकी छाती पर इसका तेल मर्दन करनेसे खांसी मिटतीहै (२६) इसकी एक दो गुलीको सवा तोले

तिल्लीके तेलमें तल कर उसकी एक दो बूंदें कानमें डालनेसे वहिरापन मिटता है (२७) बढे हुए या लटके हुए कानपर इसका अर्क लगातेहैं (२८) कुत्ता घांसीवाले वालकको इसकी छिली हुई गुलियोंकी माला करके पहिनातेहैं (२९) श्वासवालेको उष्ण जलके साथ इसका रस पिलातेहैं (३०) इसका लगातार खाते रहना गठियावालेको लाभकारीहै (३१) नारियलके या राईके तेलमें इसकी गुलियोंको तल कर उसका मर्दन करनेसे खुजली या कृमि सम्बन्धी त्वचाके रोग मिटतेहैं (३२) इसका रस लगानेसे जूं और लीखें मरतीहैं (३३) इसकी गुलीको धो पीस कनपटी पर लगानेसे आधाशीशी और दूसरे प्रकारके मस्तकरोग मिटतेहैं (३४) इसके तेलका मर्दन करनेसे गठिया और त्वचाकी शून्यता मिटतीहै (३५) इसकी धूनीसे भिड़ भाग जातेहैं (३६) इसका पाक बनाके खानेसे लकवा मिटताहै (३७) लहशन और नोंन पीसके दंशपर लगानेसे विच्छूका विष उतरताहै (३८) इसके खानेसे वायुशूलकी पीड़ा मिटतीहै (३९) जिह्वाका रसाज्ञानमें लहशन आदि तेज औषधियां चबानी चाहिये (४०) बहुत लहशन खानेसे पागल कुत्तेका, और सर्पका विष उतरताहै (४१) जोंकके डंक पकजाने पर इसको पीसके लगाना चाहिये (४२) लहशनको सिरकेमें पीसके कुत्तेके दंशपर लगानेसे उसका विष उतरताहै (४३) सूखा लहशन और अमचूर पीसके मलनेसे विच्छूका विष उतरताहै (४४) लहशनके एक तोले रसमें गायका एक तोला घी मिलाकर पिलानेसे आमवात मिटतीहै (४५) इसके कल्कको तेलके साथ खानेसे अर्दित वायु और विषम ज्वर मिटताहै (४६) इसके कल्क और स्वरससे सिद्ध किये हुए तेलका सेवन करनेसे वातके रोग मिटतेहैं (४७) इसको पीसके लेप करनेसे विद्रधी मिटतीहै।

संख्या (४५९)

(सं०) लाक्षा, अलक्तः, द्रुमामयः, जतुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लाख	लाख	लाख	लाख	लाहा, गाला	लाख	लक्क, लेक्का

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
अरक	अरगु			Coccus lacca	Lac

स्थान—हिन्दुस्थानमें ४०–४५ वृक्षोंके लाख लगतीहै।

प्रयोग–(१) लाख—शीतल, स्निग्ध, कषेली, पचनेमें हल्की और कड़वी, होतीहै। शरीरकी कान्ति और बलको बढातीहै। कफ, वातरक्त, हिचकी, कास, ज्वर, उरक्षत, व्रण, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, विष, रक्तविकार, विषमज्वर, शोथ, नासारोग, त्वग्दोष, दाह और कफ पित्तको मिटातीहै और टूटी हुई हड्डीको जोड़तीहै (२) यह कई प्रकारके तेल बनानेकी औषधियोंमें मिलाई जातीहै (३) यकृत् रोग, जलंधर और फोड़े आदिकेलिये इसका प्रयोग किया जाताहै (४) नारूकी सूजन मिटानेकेलिये लाख और देशी साबुनको पीस गर्म करके लेप करना चाहिये (५) लाख और शक्करकी फकी देनेसे कफके साथ रुधिरका आना और मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिर का निकलना बन्ध होजाताहै (६) लाखके चूर्णको मधु और दूधमें मिलाके पिलानेसे रक्तपित्त मिटताहै (७) लाखके चूर्णको घृतके साथ चाटनेसे रक्तप्रदर मिटताहै (८) घी, मधु और दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे शोष रोगसे पैदा हुई वमन मिटतीहै (९) दूधके साथ इसकी नस्य लेनेसे हिचकी मिटतीहै (१०) बकरीके दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे रक्तपित्त मिटताहै (११) लाख, हरड़ और बोलका लेप करनेसे पाददारी मिटतीहै (१२) इसका पानी बना उसमें मधु मिलाकर पिलानेसे रुधिरकी वमन बन्ध होतीहै। लाख रंगनके काममें आतीहै।

संख्या (४६०)

(सं०) लामज्जकं, इष्टिकापथिकं, अवदाहेष्टम्, दीर्घमूलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लामज्जक	पीलावाला	पीलोवाळो	पीतवाळा	लामज्ज-कतृण		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		इजखर	गोरग्याह	Andropogon laniger A Iwarencusa	The Juncus odoratus A Herba schoenanthi of Pharmacists

स्थान—लामज्जकके पेड़ हिमालयके नीचेके भाग, संयुक्तप्रदेश, पंजाब, और सिन्धमें होतेहैं ।

प्रयोग—(१) लामज्जक-शीतल, कड़वा, मीठा, पाचक, स्तंभन और और पचनेमें हल्का होताहै । त्रिदोष, त्वगदोष, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह, रक्त-पित्त, तृषा, श्रम, मूर्छा, ज्वर, शूल, वमन, व्रण, विष और विसर्पको मिटाताहै (२) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका हिम या फांट पिलातेहैं (३) इसका क्वाथ पिलानेसे खांसी मिटतीहै (४) बच्चोंकी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (५) इसका क्वाथ उत्तेजकहै और पसीना लाके छोटे जोड़ोंकी पीड़ा और गठियाको मिटाताहै और ज्वरको उतारताहै (६) चंदनके साथ इसका लेप करनेसे दाह मिटताहै ।

संख्या (४६१)

(सं०) लोध्रः, गालवः, रोध्रः, तिरीटः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लोद	लोध	लोदर	लोध्रवृक्ष	लोधगाछ	लोधर	लोद्दुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	लोध्र			Symplocos racemosa S. nervosa	The lodh or lode tree

स्थान—लोधके वृक्ष-बङ्गाल और आसाम आदि देशोंके जङ्गल और छोटे पहाड़ोंमें, कासिया पहाड़, सिक्कम, नैपाल और पश्चिमी घाटमें होतेहैं ।

पहिचान—इसकी ऊंचाई २० फुट होतीहै । इसकी छाल खरदरी, बहुत छिद्र युक्त और सफेद रंगकी होतीहै । इसके पत्ते ३ से ६ इंच लम्बे अण्डे

के आकारके और कंगूरेदार होतेहैं। इसके सुगन्ध युक्त पीले पुष्प लगतेहैं। इसके प्रायः आध इंच लम्बा गोल फल लगताहै इसकी कठोर गुठलीमें एकसे तीन तक खाने और उनमें एक या दो बीज होतेहैं। इसके फल पक कर बैंजनी-रंगके हो जातेहैं। इसकी छाल और पत्तों मेंसे रंग निकालतेहैं।

फूलने फलने का समय--आसोजसे मार्गशीर्ष तक इसके पुष्प लगते रहतेहैं और वैशाखमें फल लगतेहैं।

प्रयोग—(१) लोद-ग्राही, पचनेमें हल्की, शीतल और कषेलीहै (२) यह आंतोंकी शिकायत, नेत्ररोग और फोड़ोंके काममें आतीहै (३) इसके क्वाथके कुल्ले करनेसे मसूड़ोंका ढीलापन मिटताहै और उनमेंसे रुधिर का बहना बन्ध हो जाताहै (४) दिनमें दो तीन बेर ४, ५ दिन तक सवा सवा मासे लोदकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे गर्भाशय की शिथिलतासे पैदा हुआ रक्तप्रदर मिटताहै (५) कलाओं (झिल्लियों) के ढीलेपनको मिटानेके लिये लोद बहुत उपकारीहै (६) इसके चूर्णको घीके साथ गर्म कर उसका सेक करनेसे नेत्ररोग मिटतेहैं (७) आठवें महीनेमें गर्भ गिरनेके उपद्रवको मिटाने के लिये लोद और पीपलके चूर्णको सहतमें चटाना या दूधके साथ फकी देना चाहिये (८) इसके कल्कका लेप करनेसे स्तनोंकी पीड़ा मिटतीहै (९) लोद, जीरा और भुनी हुई फिटकड़ीको पीस, ग्वारपाठेके गूदेमें मिला, कपड़ेमें पोटली बांध उसको पानी में भिगो भिगो के नेत्रों पर फेरनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (१०) इसके चूर्णको कानमें बुरकानेसे उसका बहना बन्ध होताहै।

संख्या (४६२)

(सं०) पट्टिकालोध्रः, क्रमुकः, बृहद्दलः, शीर्णपत्रः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पठाणी लोद	पठानी लोद	पठाणी लोदर	पट्टी लोध्र	पाम्यालोध	पठानीलोद	तेल्ललोद्दुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	बिळीलोध्र			Symplocos crataegoides	

स्थान—पठानीलोदके वृक्ष हिमालयमें सिन्ध नदीसे आसामतक, खासिया पहाड़ और मरतवानके पहाडोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी उंचाई ३० फुटकी होतीहै. इसकी सीधी पेड़की गुलाई तीन चार फुटकी होतीहै। इसकी पुरानी छाल सफेद कुछ भूरी या धुंधले नीले रंगकी कुछ खरदरी होतीहै । इसके दो चार इंच लम्बे तीखे कंगूरेदार पत्ते लगतेहैं, वे सूखनेपर पीले पड़ जातेहैं । इसके वर्फ जैसे सफेद, सुगंधयुक्त पुष्प लगतेहैं । इसके चौथाईसे तिहाई इंच लम्बा फल लगताहै उसमें गोल और मुड़ाहुआ बीज होताहै। वैशाखमें इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं। इसके पुष्पोंकी सुगंधसे बहुत दूरतक की हवा सुगंधयुक्त हो जातीहै ।

प्रयोग—(१) पठानीलोद–शीतल, लघु, कषैला, ग्राही और बलवर्द्धक है (२) नेत्ररोगमें इसकी छालका लेप करतेहैं ।

संख्या (४६३)

(सं०) लोणी, लोणा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लूणक्यो	लैानीनोानिया	लुणीनोानिया	घोल	खुदेनुनी	कुलफा	-

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
-		बजरुल हुम्क़ा	तुखमकु रफाह	Potulaca oleracea P Quadrifida	Purslane the common Indian purslane

स्थान—लोनीके पेड हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं ।

प्रयोग—(१) यह–रूक्ष, गुरु, चरपरी, दीपन, खट्टी और मंदाग्नि मिटानेवालीहै (२) मुखकी ओरसे शिरकी ओर बढनेवाली जलयुक्त पित्तशोथ पर इसके ताजे पत्तोंका लेप करना चाहिये (३) मूत्राघातवाले रोगीको इसके पत्तोंका सवा ६ तोले फांट दिनमें दो वेर पिलाना चाहिये (४) ज्वरके तीव्रवेगमें इसके पत्तोंका हिम पिलाना चाहिये (५) इसके पत्तोंका कनपटी पर लेप

रनेसे अत्यंत ऊष्मा और शिरकी पीड़ा मिटतीहै (६) इसके पत्तोंका अर्क लानेसे रुधिरका थूकना बन्ध होताहै (७) यह शीतल, स्निग्ध, ग्राही और ावोंको साफ करनेवालीहै (८) वृक्क, मूत्राशय और फुफ्फुसके पित्त सम्बन्धी रोगोंमें लोनी और इसके बीज बहुत उपकारीहैं (९) अग्निदग्धसे जो ाण होतेहैं उनपर और त्वचाके कई प्रकारके रोगोंमें इनका लेप बहुत उपकारी है (१०) इसके बीज औषधियोंकी चरपराहट मिटातेहैं और मूत्रवर्द्धकहैं (११) इसके पत्ते शान्ति करनेवाले, मूत्रवर्द्धक और शिथिल करनेवालेहैं (१२) इसका पंचांग मूत्र, मूत्राशय की दाह, मूत्राघात, मूत्र के साथ रुधिरका आना, रुधिरकी वमन, रुधिरका थूकना और मूत्रकृच्छ्र को मिटाता है (१३) इसके बीजोंकी फक्की लेनेसे अन्तड़ियोंकी झिल्ली पर एक प्रकारका ऐसा प्रभाव हो जाताहै कि जिससे बार २ दस्तकी शंका होना और अन्तड़ियोंकी ऐंठन मिट जातीहै । ऐसे अवसरमें इन रोगोंकी औषधियोंके साथ इनको मिलाके देना चाहिये (१४) बाहिरकी दाह मिटानेके लिये इसके ताजे पत्तों को चमड़ी पर बांध देना या रख देना चाहिये (१५) ये पत्ते बर्फ और ठण्डे लेपका काम देतेहैं (१६) १५ रत्ती से ३॥ मासे इसके बीज अथवा २॥ से ५ तोले तक इसके पत्तों का स्वरस वृक्क, मूत्राशय और फुफ्फुसके के रोगोंमें दिया जाताहै (१७) शीताद रोग और यकृत् के रोगों में लोनी को खुराककी रीति पर काममें लानी चाहिये (१८) इसके बीज कृमिनाशक हैं (१९) इसके बीजोंको गायके दूधके साथ पीसके मलनेसे मुहांसे मिटतेहैं (२०) इसके पत्ते शाकके काममें आतेहैं ।

संख्या (४६४)

(सं०) लोबान ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लोबान	लोबान		ऊद			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
		हर्स लुत्र नु-लूजावी	हसनलुब्बा	Styrax Benzoin	Benzoin tree.

स्थान—लोबानके वृक्ष मलाया, आरचीपिलेगोमें होतेहैं।

प्रयोग—(१) श्वास और राजयक्ष्मा रोगमें लोबान बहुत उपकारीहै (२) इसकी धूनी निगलनेसे श्वास और राजयक्ष्मा रोग मिटतेहैं (३) २॥ रतीसे १। मासे तक लोबान देनेसे पुरुषार्थ बढताहै (४) इसका लेप उत्तेजक है (५) यह दूषित वायुका असर नहीं होने देताहै (६) इसकी धूनीसे हवा शुद्ध होतीहै (७) इसके प्रयोगसे मूत्राशयकी सूजन उतरतीहै (८) इसकी धूनीसे मूर्छा मिटतीहै (९) इसका पाक बनाके खानेसे उदरका बल और पाचनशक्ति बढ़तीहै, जो इसके पाकको खट्टा करना हो तो उसमें नीबूका रस जितना चाहिये उतना डाल देवें (१०) लोबानको पीसके मालिश करने और तपानेसे सर्दीकी वातपीड़ा मिटतीहै (११) १०० तोले लोबानमें से १४ से १८ तोले तक लोबानके फूल निकलतेहैं।

—:*:—

संख्या (४६५)

(सं०) लोहं, अयः, शस्त्रकं, कालायसं।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लोह	लोह	लोढु	लोखड	लोहा	लोहा	इनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
इलम्बु	काब्बिण	हदीद	आहन	Ferrum	Iron

हिन्दुस्थानमें लोह कई प्रकारका होताहै उसमें सबमें उत्तम कान्त लोह होताहै, उससे नीचे तीक्ष्ण होताहै, औषधिके प्रयोगमें बहुधा तीक्ष्ण लोह काम आताहै।

इसके शुद्ध करनेकी रीतिः—१६ तोले त्रिफलेको आठ गुणे जलमें ओटा, चौथाई रह जाने पर उसको छान २५ तोले तीक्ष्ण लोहके पतले २ पत्रों को अग्निमें लाल कर २ के उसमें ७ बेर बुझाना चाहिये।

लोहभस्म बनानेकी रीति–(१) उक्त प्रकारसे शुद्ध किये हुए लोहे का चूर तीन भाग, शुद्ध पारा एक भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, इन सबमें पहिले पारे और गंधककी कजली कर, उसमें लोहे चूर मिलाकर ग्वारपाठेके रससे दो पहर तक खरल कर, तांबेके पात्रमें भर, उस पर एरंडके पत्ते बांधकर, धूपमें रख देवें, जब वह अच्छा उष्ण होजावे तब उसको धानकी राशीमें ३ दिन तक गाड़ देवे चौथे दिन निकाल कर कामभें लावे। इस प्रकारसे बहुत उत्तम लोह भस्म बन जातीहै। इस भस्मको सोमामृत लोहभस्म कहतेहैं (२) लोहके चूरको ७ बेर दाड़िमके पत्तोंके रसमें खरल करके धूपमें सुखा दिया करे। फिर उसके गजपुटकी आंच देके स्वांग शीतल होने पर निकाल फिर उसीके रसमें उक्त प्रकारसे आंच देवे जबतक कज्जल जैसा महीन न होवे तबतक पुट दिया करे और खरल किया करे। इसीप्रकारसे बहुतसी औषधियोंके पुट और आंच देनेसे लोहभस्ममें कई रोगोंको नाश करनेकी शक्ति होजाती है। शुद्ध लोहसारके गुण–यह कृमि रोग, पाण्डु, वायु, वीर्यकी क्षीणता, पित्त-विकार, शरीरका मोटापन, अर्शरोग, संग्रहणी, कफ, शोथ, प्रमेह, गुल्म, प्लीह, विष, आमवात, कुष्ठ, केशोंकी सफेदी, शरीरकी चमड़ीमें सल पड़-जाना, वातरक्त, कामला और क्षय आदि रोगोंको मिटाताहै, बल, पुरुषार्थ और दृष्टिको बढ़ाताहै और रसायनहै॥

प्रयोग—(१) अशुद्ध लोहके सेवनसे नपुंसकता, कुष्ठ, हृद्रोग, शूल, अश्मरी, हृल्लास आदि बहुतसे रोग उत्पन्न होतेहैं। इससे एक प्रकारका मद होजाताहै। शरीर निर्बल और हृदय में रोग पैदा होने लगजातेहैं (२) थोड़ी औषधिसे अथवा थोड़े पुटोंसे अथवा गंधक और पारेके बिना भस्म करनेसे जो लोह कच्चा रहजाताहै उसके सेवन करनेसे आयुर्दाका नाश होताहै (३) इसके सेवनसे जो उपद्रव होतेहैं उनको मिटानेकेलिये अगस्तके रसमें वायविडिंगको पीसके चटाना और उसी रसका लेप शरीरपर करके बहुत देरतक धूपमें बिठा रखना चाहिये (४) लोह भस्म सेवन करनेवालेको पेठा

कोहला, तिलोंका तेल, उड़द, राई, मदिरा, खटाई, मच्छी, बन्ताक, कांजे आदि पदार्थ नहीं खाने चाहिये और कसरत नहीं करनी चाहिये (५) हींग और घृतके साथ लोहसार देनेसे शूल मिटताहै (६) मधु और पीपल के साथ देनेसे पुराना ज्वर छूटताहै (७) घृत और लहशनके साथ इसकी भस्मका सेवन करनेसे बादी मिटतीहै (८) सोंठ, मिरच, पीपल और मधु के साथमें चटानेसे श्वास मिटताहै (९) कालीमिरचके साथ पानमें रखकर खानेसे ठंढका लगना बन्ध होजाताहै (१०) त्रिफला और मिश्रीके साथ फक्की लेनेसे प्रमेह मिटताहै (११) अद्रकके रस और मधुके साथ चटानेसे खांसी मिटतीहै (१२) घीके साथ चटानेसे बादी मिटतीहै (१३) मधुके साथ चटानेसे पित्त मिटताहै (१४) अद्रकके रसके साथ चटानेसे पित्त और कफ मिटताहै (१५) निर्गुंडीके रसके साथ लेनेसे शीत और वात मिटतीहै (१६) सोंठके साथ लेनेसे बादी मिटतीहै (१७) मिश्रीके साथ लेनेसे पित्त मिटताहै (१८) तज, पत्रज, इलायची और पीपलके साथ चटानेसे कफ मिटताहै (१९) त्रिफलाके साथ देनेसे सन्धिगत रोग मिटतेहैं (२०) वली और पलित रोगको मिटानेकेलिये त्रिफलेके साथ देना चाहिये (२१) पारे और गंधककी कजली पीपल और मधुके साथ चटानेसे कफ रोग मिटतेहैं (२२) मिश्री और चातुर्जातकके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै (२३) साटेकी जड़के चूर्णके साथ फक्की देकर गायका दूध पिलानेसे बल बढताहै (२४) साटेके रसके साथ चटानेसे पांडुरोग मिटताहै (२५) हलदी, पीपल और मधुके साथ चटानेसे २० प्रकारके प्रमेह मिटतेहैं (२६) शिलाजीतके साथ चटानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२७) अडूसा, पीपल, मुनक्का और मधुके साथ चटानेसे ५ प्रकारके कास मिटतेहैं (२८) मंदाग्नि मिटानेकेलिये पानमें रखकर खाना चाहिये (२९) मधु और घृतके साथ चटानेसे पाण्डु और कामला मिटताहै (३०) इसकी और नागरमोथेके चूर्णकी खैरके काथके साथ फक्की लेनेसे हलीमक रोग मिटताहै (३१) खदिरसारके साथ इसकी नस्य लेने से नकसीर बन्ध होतीहै (३२) इसको सात राततक गोमूत्रमें भिगो, सुखाके दूधके साथ देनेसे पांडुरोग मिटताहै (३३) इसको मधुके साथ चाटनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३४) लोहा बुझाया हुआ पानी पीनेसे आंतों के घाव भरते हैं और उदरका बल बढताहै (३५) लोहे की अंगूठी बनाकर पहिरनेसे पथरी मिटतीहै ।

संख्या (४६६)

(सं०) मंडूरं, लोहकिट्टं, शिंघाणं, लोहमलं, सिंहाणम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
काटी, मडूर	मडूर	लोढानु किट्ट	लोह कीट	मंडूर	लोहेका मैल	चिट्टमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
किट्ट	लोहकिट्ट			Ferri peroxidum	Rust or impure red oxide of iron Iron rust

लोहेको तीक्ष्ण अग्निमें धोंकने से जो उसमेसे एक प्रकारका पदार्थ (कीट) निकलताहै उसको मंडूर कहतेहैं। यह जिस प्रकारके लोहेमेंसे निकला हो उसमें वैसेही, गुण होतहैं। जो भारी, चिकना, ठोस तोड़नेपर अंजन जैसा और जिसमें वहुत गढ्ढे न हों वह उत्तम मंडूर गिना जाताहै। कमसेकम १०० वर्षका पुराना मंडूर औषधिके प्रयोगके काममें लाना चाहिये, लोहेसे निकाले पीछे जो ८० वर्ष तक पृथ्वीमें पड़ा रहा हो वह मध्यमें गिना जाता है और साठ वर्षका अधम गिना जाताहै। साठसे कम वर्षोका मंडूर विष तुल्य गिना जाताहै।

(१) इसको शुद्ध और भस्म करनेकी यह रीतिहै कि १०० या सौसे अधिक वर्षोंका मंडूर लेकर उसको बहेड़ेकी लकड़ीके कोयलोंमें लालकर गोमूत्रमें बुझावे, ऐसे सात वेर बुझानेके पीछे उसको महीन पीस उससे दुगुने त्रिफलेको आठ गुने जलमें औटा चौथाई रह जाने पर उसको छान, उस क्वाथ में मंडूर को खरल कर, टिकिया वना, सुखा, सरात्र संपुटमें कपड़ मिट्टीसे वन्ध कर, गजपुट की आंचमें फूंक देना चाहिये। फिर स्वांग शीतल होने के पीछे उसको निकालके देखना चाहिये जो वह टिकिया कठोर हो तो फिर उसी रसमें खरलकर उक्त रीतिसे आंच देना चाहिये, जवतक वह टिकिया चुकटीसे पिसनेके लायक नहीं हो जाय तवतक उक्त रीतिसे आंच देते रहना चाहिये (२) मंडूरको महीन पीस लोहेकी कढाईमें डाल, आठ गुने गो मूत्रमें पचावे, जव वह गोमूत्र सूख जाय तव उसको महीन पीसकर फिर वैसेही

उक्त गोमूत्रमें पचावे, ऐसे सात वेर पचानेके पीछे उसकी टिकिया वनाकर गजपुटकी आंचमें जला लेवे, यह जवतक चुकटीसे पिसने लायक न हो तव तक उक्त रीतिसे आंच देते रहना चाहिये।

प्रयोग—(१) यह–कषेला और शीतल होताहै पांडु, शोथ, हलीमक, कामला और कुम्भ कामला को मिटाताहै (२) गोमूत्रमें पचाकर भस्म किये हुए मंडूरको गुड़के साथ देनेसे पांडुरोग मिटताहै (३) घी और मधुके साथ इसका सेवन करने से पांडु, शोथ और मंदाग्नि मिटतीहै (४) प्रथम रीतिसे वनाये हुए मंडूरको मधुके साथ चटाने से कुम्भकामला और पांडुरोग मिटताहै (५) मृत्तिका के पात्रमें भैंसके मूत्रमें एक महीनेतक मंडूर को पड़ा रखकर गजपुटमें उसकी भस्म वनाकर मधुके साथ सेवन करनेसे गलगण्ड मिटताहै॥



संख्या (४६७)

(सं०) वङ्गं, रङ्गं, त्रपु, पिच्चटम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजावी	तैलङ्गी
वग, कथीर	राग, रागा	कलई, कथीर	कथिल	रांगा, राङ्	रागा	वगमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वग	तवर	रिसास अबियज	अरज़ीज़	Stannum	Tin

स्थान—वंग–हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंसे निकलताहै।

पहिचान—वंग दो प्रकार का होताहै। एक खनिज और दूसरा मिश्रक। इनमें खनिज श्रेष्ठ है इसका दूसरा नाम खुरकहै। यह सफेद, कोमल, स्निग्ध, जल्दी गलनेवाला, भारी और निःशब्द अर्थात् इसको मरोड़ने या कूटनेसे शब्द नहीं होताहै। मिश्रकका कुछ नीला रंग होताहै।

यह—तिक्त, लौणिया सारक, पतला करनेवाला और कुछ पित्त बढानेवाला होताहै। पाण्डुरोग कृमिरोग और वादीको मिटाताहै।

इसको शोधनेकी पहिली रीति--वंग को गला २ के तेल, छाछ, कांजी, गोमूत्र, कुलित्थके क्वाथ और आकड़ेके दूधमें तीन २ बेर बुझाना चाहिये, और जो एक २ पदार्थमें सात २ बेर बुझाया जावे तो बहुतही उत्तमहै। **दूसरी रीति**-अथवा सम्भालूके रसमें हल्दी डाल उसमें तीन बेर बुझाना चाहिये। इसको शुद्ध करनेकी और भी कई रीतेंहैं परन्तु विस्तारके भयसे नहीं लिखीं।

वंग भस्म करनेकी रीति-(१) शुद्ध वंगको मिट्टीके खप्पर (ठीकरे) में चूल्हे पर चढा के गलावे। पीछे इसका चतुर्थांश अपामार्ग के पंचांग का चूर्ण लेके उसमें थोड़ा २ डालता जाय और नीमके घोटेसे घोटता जाय और खप्परके नीचे तीव्र अग्नि बनी रक्खे। जब घोटते २ उस सबकी भस्म होजाय तब चूल्हेमें से लकड़ियां निकालके चूल्हेमें अग्नि रहने देवे और खप्परको ऊपरही पड़ा रक्खे जब वह स्वांग शीतल होजाय तब उसको खप्परमेंसे निकाल, उष्ण जलसे धो डाले जिससे अपामार्ग और नीमकी भस्म उसमेंसे निःकल जावे और केवल वंग भस्म उसमें रह जावे। इसमें रहस्य यह है कि जिस रोगको मिटाना हो उस रोगको मिटानेवाली औषधियोंसे वंग भस्म बनावे अथवा ९,१० रोग मिटानेवाली औषधियोंसे वंग भस्म बनावे तो वह वंग भस्म उन रोगोंको अवश्य मिटावेगी। पीछे इस भस्मको आवश्यकरोगकी औषधिके स्वरस अथवा क्वाथमें खरल कर टिकिया बना सुखा सरावसम्पुटमें कपड़ मिट्टीसे बन्धकर गजपुटकी आंच देवे जब बिलकुल ठण्ढा होजाय तब निकाल कर उक्त रीति से केवल एक औषधिके अथवा जितनी औषधियोंसे जलाया हो, उन सबके रस या क्वाथ में खरल कर, उक्त रीति से २५ आंच दे कर खरल करके धर रक्खे। इस वंग भस्मसे बालकसे वृद्धतक कभी किसीके कोई विकार नहीं होगा।

रीति--(२) वंगके पतले २ पत्र कराके उनके छोटे २ टुकड़े कतर मिट्टीके तवेपर आवश्यक औषधिको बिछा उसपर उन टुकड़ोंको कुछ कुछ चोड़े बिखेर उन पर उसी औषधिका एक अंगुलका तह देदेना चाहिये, ऐसे आवश्यकताके अनुसार उनके ५, ६ तह लगा गज भर ओंडे पौन गढ्ढेमें जंगली कंडे भर, उन पर उस तवको रखकर उसके ऊपर फिर कंडे लगाके आग

लगादेवे जब वह स्वांग शीतल होजावे, तब ऊपरके कंडोंकी थानीको हटा उस तवेको निकालके, उसमें जो वंगकी कतरण जलकर फूली जैसी होजातीहै उसको उस औषधिकी थानीमेंसे निकालकर फिर उसके उक्त रीतिसे गजपुट के २५, ३० आंच देनेसे बडी उत्तम भस्म होजातीहै इसको बनानेके पीछे कमसे कम एक वर्ष पहिले नहीं खाना चाहिये। वंग भस्म बनानेकी और भी कई रीतियां हैं ॥

प्रयोग और गुण—(१) यह कास, श्वास, गुल्म, पीनस, प्रमेह, भ्रम, कफ, क्षय, पाण्डु, शूल, वमन, प्रदर, कृमि, मन्दाग्नि आदि अनेक रोगों को पृथक् पृथक् अनुपानों से मिटाती है (२) कपूरके साथ मुखकी दुर्गंध मिटातीहै (३) जायफलके साथ शरीरको पुष्ट करतीहै (४) तुलसीके साथ प्रमेहको मिटातीहै (५) घृतके साथ पाण्डु रोगको० (६) सोहागेके साथ गुल्मको० (७) हल्दीके साथ ऊर्ध्वश्वास और रक्तपित्तको० (८) मिश्रीके साथ पित्तको० (९) पीपलके साथ मन्दाग्निको० (१०) चम्पाके स्वरसके साथ श्वासकी दुर्गंधको० (११) नींबूके रसके साथ देहकी दाहको० (१२) सुपारीके साथ अजीर्णको० (१३) मक्खनके साथ हड्डीकी निर्बलताको० (१४) दूधके साथ वीर्य्यकी कमीको० (१५) विजियाके साथ वीर्यके जल्दी निकल जानेको० (१६) लहशनके साथ वादीकी पीड़ाको० (१७) समुद्रफल अथवा निर्गुडीके साथ कुष्ठको० (१८) लौंगकी टोपियोंके साथ वमन को० (१९) गिलोयके स्वरस और मधुके साथ सब प्रकारके प्रमेहको मिटातीहै (२०) ब्राह्मीके साथ बुद्धिको बढ़ातीहै (२१) कस्तूरीके साथ वीर्यको बढ़ातीहै (२२) मधुके साथ बल बढ़ातीहै ॥

संख्या (४६८)

(सं०) वचा, शतपर्विका, षड्ग्रन्था, उग्रगन्धा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बच	सफेदबच	घोड़ा बज	वेखंड	वच	बच	वस्, वस

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वशम्नु	वजे	वज	अगरेतुर्की	Acorus calamus	The sweet flag.

स्थान—वचके पेड़ हिन्दुस्थान में गीली और दल २ की जगहमें वोये जातेहैं विशेष करके मनीपुर और नागा हिल्समें बहुधा खेतोंकी वाड़ोंपर होतीहैं।

पहिचान—इसके पत्तोंमें से एक प्रकारका तेल निकालतेहैं उसको वासोंके मसालेमें डालतेहैं। इसकी जड़को ओटानेसे उसमेंसे गहरे पीले रंगका तेल निकलताहै उसमें इसकी जड़ जैसी तीव्रगंध आतीहै, उसका स्वाद चरपरा, कड़वा और कपूर जैसा होताहै।

प्रयोग—(१) वच-कड़वी, चरपरी, उष्ण, वामक, दीपन, रोचक और बुद्धिवर्द्धकहै (२) इसके चूर्णकी थोड़ी मात्रा देनेसे पेटकी पीड़ा और अफारा मिटताहै (३) अर्शकी पीड़ा मिटानेके लिये वच, भांग और अजवान इन तीनोंको वरावर लेके इनकी धूनी देतेहैं (४) वच्चोंके आमातिसार में वच बहुत उपकारीहै (५) २॥ तोले वचको ३५ तोले जलमें ओटा छान उसमें से २॥, २॥ तोले काथ दिनमें तीनवेर पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (६) ऐसेही इसका हिम या फांट बनाके ढाई २ तोले दिनमें तीन वेर पिलानेसे पेटका अफारा और शूल मिटताहै (७) वचको पानीमें घिसके पिलानेसे वच्चोंके जुकामकी खांसी मिटतीहै (८) इसको मुखमें रखनेसे एक प्रकारकी उष्णता प्रतीत होतीहै और मुखमें बहुतसा पानी छूट जाताहै (९) इसको चिरायतेके साथ ओटाकर पिलानेसे वार २ आनेवाला ज्वर छूटताहै (१०) इसके कपड़ छान किये हुए ५ रती चूर्णको निवाये दूधमें डाल के पिलानेसे चीठा कफ ढीला पड़ जाताहै और गलेका दर्द मिट जाताहै (११) इसकी जड़ को जो कूट कर क्वाथ वनाके २॥ या ३॥ तोलेकी मात्रा पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१२) मंदाग्नि मिटानेवाली औषधियों के साथ इसको मिलाके देनेसे भूख बढतीहै (१३) वमन करानेके लिये वचके २ से ७॥ मासे चूर्णकी मात्रा देनी चाहिये (१४) श्वास रोग मिटानेके लिये पहिले इसकी एकसे सवा मासे तक मात्रा देनी चाहिये, फिर पांच पांच रतीकी

मात्रा हर दूसरे तीसरे घंटेमें देनी चाहिये (१५) बच्चोंको, माके दूधमें बच घिसके पिलानेसे उसका कफ और ज्वर मिटताहै (१६) जुकामकी खांसी और ज्वरको मिटानेके लिये एक भाग वचको २० भाग पानीमें ओटाके या भिगोके देना चाहिये, इसमें मुलहठी मिला देनेसे अधिक लाभ होताहै (१७) बच्चोंका शूल युक्त अफारा मिटानेके लिये पेटपर वचका लेप करतेहैं (१८) वचके कोयलेको एरंडके तेल या खोपरेके तेलमें पीसके बच्चेके पेटपर लेप करनेसे शूल युक्त अफारा मिटताहै (१९) वचको कुछ जला पीस उसकी एक रतीसे ५ रती तक मात्रा देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै और बल बढताहै (२०) इसको सेकी हुई हींगके साथ देनेसे पेटके कीडे निकल जातेहैं (२१) इसके हिम, फांट या क्वाथको छिड़कनेसे उस जगहके कीडे भग जातेहैं (२२) इसके कोयलेकी १० रती भस्मको पानीमें घोल कर पिलानेसे जमालगोटेका असर मिट जाताहै इसालिये इसको जमालगोटेका दर्पनाशक कहतेहैं (२३) इसके चूर्णकी सवा मासेसे २॥ मासे तककी मात्राहै (२४) २॥ तोले वचको २५ तोले पानीमें ओटाके उसकी २॥ तोलेसे ५ तोले तककी मात्रा देनेसे पेटकी शूल और अफारा मिटताहै और कीड़े मर जातेहैं (२५) इसको ऊनी कपड़ोंमें रखनेसे कीड़े नहीं लगतेहैं (२६) इसकी राख पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (२७) इसको काजूगुलीके तेलमें पीसके लेप करनेसे गठिया और चोटकी सूजन मिटतीहै (२८) इसकी २॥ रती तककी मात्रा उत्तेजकहै (२९) ललाटपर इसका लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटतीहै (३०) नाकपर मालिश करनेसे जुकामकी खांसी और उससे पैदा होनेवाला तीव्र ज्वर रुक जाताहै (३१) कईप्रकारके ज्वर छुड़ानेके लिये इसको कुनैनके साथ देतेहैं (३२) आमाजीर्णवालेको उल्टी करानेके लिये उष्ण जलमें नमक और वच-का चूर्ण डालके पिलाना चाहिये (३३) १० मासे वचका पाव बूरेके साथ पाक बनाके नित्य तोला भर खाने से भूलरोग मिटताहै (३४) वच और सोंठके बराबर चूर्णको मधुमें मिला नित्य दोनों वक्त एक२ तोले चटानेसे अर्दित रोग मिटाताहै, इसके सेवनके समय शहदका पानी पिलाना चाहिये (३५) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे पुराना अपस्मार मिटाताहै (३६) इसके और पीपलके चूर्णको मधु या नीमके तेलके साथ सुंघानेसे गलगंडादि

रोग मिटतेहैं (३७) वच और पीपलके चूर्णको सुंघानेसे सूर्यावर्त्त मिटताहै (३८) बालक होनेके पीछे गर्भाशयकी पीड़ा मिटानेके लिये इसका क्वाथ पिलातेहैं (३९) वच हरड़ और घृतकी धूप देनेसे विषमज्वर छूटताहै (४०) इसके चूर्णको कांजीके साथ पिलानेसे वमन बन्ध हो जातीहै (४१) इसको और सरसोंको पीसकर लेप करनेसे सोई उतरतीहै (४२) इसके चूर्णको वस्त्रमें पोटली बांध कर सुंघानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (४३) घृत, दूध या जलके साथ एक महीने तक वचके चूर्णका सेवन करनेसे मनुष्यकी धारणाशक्ति बहुत बढ़ जातीहै ।

संख्या (४६९)

(सं०) वटः, न्यग्रोधः, जटालः, विटपी ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बड़	वड़, वर	वड़	वट, वड़	वड़गाछ	वरगद	मर्रि, (क्षीर) पालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
आलें पालु	आलदमर			Ficus bengalensis	The banyan tree

स्थान—बड़का वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर होताहै ।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ७० से १०० फुटतक होतीहै । इसकी पेदड़की साधारण गुलाई २५, ३० फुटकी होतीहै । इसके घेरकी मध्य रेखा २०० से ३०० फुटतक होतीहै इसकी शाखें बहुत फैलतीहैं उनमेंसे बहुतसी पतली जटा निकलके जमीनतक पहुंच जातीहैं वेभी समय पाकर पेदड़ बनजातीहैं । इसकी डालीके अन्तमें दोनों ओर बारी २ से पत्ते लगतेहैं । इसके फलकी मध्य रेखा आध इंचकी होतीहै। फल साफ रूएदार और पकनेपर लाल रंग का होजाताहै । फाल्गुन चैत्रमें इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके फल पकजातेहैं ।

प्रयोग—(१) बड़–शीतल, ग्राही, मधुर, रूक्ष, पचनेमें भारी और

कषेलाहै (२) इसका दूध पीड़ा और चोटपर लगाया जाताहै (३) गठिया की सूजनपर इसका लेप करनेसे पीड़ा मिटतीहै (४) इसकी छालका क्वाथ पीनेसे बल बढताहै और मधु प्रमेह मिटताहै (५) पैरकी पगथली फट जानेपर इसका दूध लगाना चाहिये (६) दांत और मसूड़ोंके रोगोंमें बड़की छालके क्वाथके कुल्ले कराने चाहिये (७) बड़का दूध लगानेसे डाढकी पीड़ा मिटतीहै (८) इसके बीज ठंढे और बल बढानेवालेहैं (९) इसके पत्तोंका पुल्टिस बनाके पीपदार फोड़ोंपर बांधना चाहिये । जब वे फोड़े पककर पीले पड़जावें तब इसके पत्तोंको चावलोंके साथ ओटाके बफारा देना चाहिये (१०) इसकी जड़की छालको पीस ठंढाईकी रीतपर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) इसकी नरम डालियोंका फांट पिलानेसे रक्तकी वमन बन्ध होतीहै (१२) इसकी जटाके अंकुरोंको घोट छानके पिलानेसे औषधिको नहीं माननेवाली वमन मिटतीहै (१३) इसके क्वाथ या रसको गाढा कर उसमें पुष्टाईकी औषधियां मिलाके खिलानेसे वीर्यकी चीणता और मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१४) इसकी कच्ची कलियें ग्राही हैं और अतिसार मिटताहै (१५) आमातिसार मिटानेकेलिये बड़का दूध ३ मासे प्रातःकाल पिलाना चाहिये (१६)इसके दूधका लेप करनेसे कमरकी पीड़ा मिटतीहै (१७) इसका दूध दो बतासेमें नित्य भरकर तीन दिनतक प्रातःकाल खानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१८) इसकी कोमल कोंपलोंको छायामें सुखा, पीस उसमें बराबर बूरा मिलाकर दूधकी लस्सीके साथ नित्य प्रातःकाल फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१९) कंठमालापर बड़का दूध लगाना चाहिये (२०) इसकी छालका चूर्ण दांतोंके नीचे रखनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (२१) इसके फलोंको छायामें सुखा पीस गायके दूधके साथ फकी लेनेसे वीर्य गाढा होजाताहै (२२) इसके पत्तोंको जला उस भस्मको पानमें रखकर खानेसे उपदंश मिटताहै (२३) इसकी कोंपलोंको गायके दहीके साथ पीसकर अग्निदग्ध पर लगाना चाहिये (२४) इसका दूध बिवाईमें भरनेसे उसका घाव भर जाताहै (२५) इसके दूधमें सांपकी कांचलीकी राख मिला उसमें रूई भिगो कर उसको नासूरमें १० दिन रखनेसे व्रण भरजाताहै (२६) इसके पत्तों के कल्कमें मधु और शक्कर मिलाके खानेसे रक्त पित्त मिटता है

(२७) इसका दूध नेत्रमें भरनेसे जाला दूर होजाताहै (२८) इसका दूध नाभिमें भरने और उसके आस पास लगानेसे अतिसार मिटताहै (२९) इसकी जटाकी राख खिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (३०) इसकी कोंपल और गूलर की छालके चूर्णमें बराबर बूरा मिलाकर एक तोलेकी फकी लेके ऊपर दूध पीनेसे वीर्यका पतलापन मिटताहै।

.०.

संख्या (४७०)

(सं०) वटपत्री, गोधावती, ऐरावती, श्यामा॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	बड्वती	बड्वती	वटपत्री	पातरकुचा	वटपत्री	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Zizyplus Z trinervia	

स्थान—वटपत्रीके वृक्ष बंगाल, भूटान और पश्चिम प्रायद्वीपमें होतेहैं।

प्रयोग—(१) यह—कषेली, उष्ण, मधुर और बलकारकहै। योनी और मूत्रके रोग, व्रण, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, पथरी, मूत्राघात और भगंदरको मिटातीहै (२) इसके पत्तोंका क्राथ पिलानेसे उपदंश सम्बन्धी पुराने रोग मिटतेहैं (३) शरीरको पोषण करनेवाले दूषित पदार्थोंके सेवनसे जो शरीर की प्रकृति बिगड़ जातीहै उस दशामें रुधिर शुद्ध करनेकेलिये इसके पत्तोंका क्राथ पिलातेहैं।

.०

संख्या (४७१)

(सं०) वंदाकः, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वांदा	बंदा	बादो	बादागुल	बॉदड़ा	बादा	वदानिक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शक्कळाति	वदनिके			Loranthus longifolius L bicolor.	

स्थान—वन्दाकका वृक्ष जम्बूसे भूटानतक, गंगाजीके जंगलोंमें अवधसे आसामतक, और दक्षिणकी ओर ट्रावनकोर और सीलोनतक होतेहैं।

पहिचान—इसके मोटे पत्ते बहुधा एक दूसरेके सामने लगतेहैं। वे आकार और स्वरूपमें बहुत बदल जातेहैं। इसके डेढ दो इंच लम्बे बड़े पुष्पोंका नीचेका भाग लाल और ऊपरका हरा होताहै। इसके फल तिहाईसे आधे इंच लम्बे और गिरदार होतेहैं और उनकी गुठलीके चारों ओर गाढा चेपदार पदार्थ लगा रहताहै।

फूलने फलनेका समय—इसके बहुधा कातीसे जेठतक पुष्प लगा करतेहैं, परन्तु कई ठौर बारह महीने ही पुष्प लगा करतेहैं। इसके वृक्ष तीन प्रकारके होतेहैं। "अकेकिया" महुवा, कचनार, चारोली (चिरौंजी) तेंदू "फीकस" कपीला, आम, नीम, बकाइन, शहतूत "मूनस" सेव, नासपाती, मांजूफल, "राट लेरा" आदि दूसरे कई वृक्षोंपर उगतेहैं। जब कोई पखेरू इसके फलकी गुठलीको निगलकर किसी वृक्षके ऊपर बींट करता है उस बीट में वह गुठली निकलके उस वृक्षके चिपक जातीहै तब वही इसका वृक्ष उगजाताहै। यह जिस वृक्षपर उगताहै उस वृक्षके सब रसको धीरे २ चूंस लेताहै और उस वृक्षकी जिस शाखापर यह लगताहै, वह शाखा पहिले सूख जातीहै पीछे उसके पासकी दूसरी शाखा सूख जातीहै ऐसे क्रमसे सब शाखा सूखकर अन्तमें वह वृक्ष जड़तक सूख जाताहै और उस सूखे पेड़की लकड़ी ईंधनके सिवाय और दूसरे काममें नहीं आतीहै।

गुण-(१) बंदाक-शीतल, कड़वा, कषेला, रसमें मीठा, ग्राही, वृष्य, रसायन, व्रण रोपण, तथा कफ, वात, पित्त, श्रम, रुधिरविकार और विषको हरनेवाला है (२) इस वृक्षकी एक जात जो (फैलकटा) होती है उसकी छाल सुपारीकी ठौर काममें आतीहै।

संख्या (४७२)

(सं०) वरुणः, कुमारकः, अश्मरीघ्नः, तिक्तशाकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वरणो	वरना,(णा)	वरणो	वायवरणा	वरुणगाछ	बरना	उलिमिरि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	उलिमिरिच मले			Crataenaroligiosa Capparis trifoliata	

स्थान–वरणेके वृक्ष रावीके पूर्वकी ओर आसामतक, मनीं पुर, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, वंगाल, बुंदेलखंड और राजपूताना आदि कई देशों में होतेहै ।

पहिचान–इस वृक्षकी ऊंचाई ३०, ४० फुट होतीहै इसके पेडकी गुलाई ६ फुट होतीहै । इसकी छाल धुंधले सफेद रंगकी साफ और चिकनी होतीहै । इसकी डालियोंके अन्तमें तीन २ पत्तोंकी सीकें लगतीहैं । इसके सफेद रगके वड़े पुष्प लगतेहैं इसका फल सेवकी वरावर और गोल होताहै उसकी पीली गिरमें चौथाई इंच लम्बे वहुतसे बीज होतेहैं और उसका छिलका कठोर और खरदरा होताहै, उस पर कुछ सफेद वहुतसे दाग होतेहै । जबतक इसके पुष्प निकलतेहैं तबतक पुराने पत्ते लगे रहतेहैं । इसके पुष्प निकलनेके साथ और उनके निकले पीछे तक नवीन पत्ते निकलते रहतेहैं ।

फूलने फलनेका मसय—चैत्र वैशाखमें यह वृक्ष फूलताहै ।

प्रयोग–(१) वरना–कषेला, मधुर, कड़वा, चरपरा, रूक्ष, पचनेमें लघु, उष्ण, स्निग्ध, दीपन और भेदकहै (२) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे पैरोंके तलवोंकी दाह मिटतीहै और उष्ण करके लेप करनेसे पैरोंकी शोथ उतरतीहै (३) इसके पत्तोंके ६ मासेसे तीन तोले रसमें सुपारीके पत्तोंका रस और घी मिलाके पिलानेसे गठिया मिटतीहै (४) इसके पत्तोंका धूंआं पेटमें पीके नाकके द्वारा निकालनेसे नाकके हाडका सड़ना या उस हाडका फोड़ा मिटजाताहै (५) इसके पत्ते और छालको पीस पोटलीमें बांध तपाकर सेकनेसे गठिया मिट

तीहै (६) इसकी पेड़ या जड़की छालका काथ पिलानेसे शर्कराश्मरी मिटतीहै (७) इसकी १० तोले छालको १५ छटांक जलमें औटावें, जब १० छटांक रह जाय, तब ठंढा हो जानेपर छान उसमेंसे ५ तोलेसे १० तोले तककी मात्रा देनेसे मूत्रसम्बन्धी कई रोग मिटतेहैं (८) इसके ताजे पत्तोंको सिरके, नींबू के रस या उष्ण जलके साथ पीसके राईकी भांति लगानेसे ५ से १५ मिनट में पूरा असर होनेपर वहांकी चमड़ी लाल हो जातीहै और यह लेप अधिक समय तक चमड़ीपर लगा रहनेसे छाला होने लगजाताहै (९) इसकी जड़ की ताजी छालकाभी यही प्रभाव है (१०) इसकी छालके काथपर पीपल बुरकाके पीनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (११) इसकी छाल और किरमालेकी गिर को औटाके पीनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (१२) इसके फल और छालका लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (१३) छालके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होता है (१४) रुधिरविकारके जिन २ रोगोंमें सारसपरेला काम आताहै उनमें यह भी काम आताहै (१५) इसकी जड़के काथमें इसीका कल्क मिलाके पिलानेसे पथरी मिटतीहै (१६) इसकी छालके काथमें जवखार मिलाके पिलानेसे कफसे पैदा हुई पथरी मिटतीहै (१७) इसके काथमें गुड़ मिलाके पिलानेसे वस्ति शूल और पथरी मिटतीहै (१८) इसके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे गंडमाला मिटतीहै ।

संख्या (४७३)

(सं०) बब्बुरः, युगलाक्षः, कंटालुः, पंक्तिबीजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बूंल्यो, बवल	बबूर, बंबूल	बावळ	बाभूळ	बाबूलागाछ	किक्कर	तुम्मचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वेलम्मरं	गोब्बलि (ळि	उम्मुग़ीला	मुग़ीलां	Acacia arabica Mimosa a.	Indian gum Arabic tree Acacia tree Babool tree

स्थान—बबूलके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं और अपने आपभी उगतेहैं।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ५०, ६० फुटकी होतीहै। इसकी पेदड़ १०, १५ फुट ऊंची और बहुत सीधी नहीं होतीहै उस पेदड़की गुलाई ५, ६ फुटसे १०, १२ फुटतक होतीहै। इसकी शाखें फैली हुई होतीहैं। इसकी छाल मोटी, धुंधले भूरे या मायःकाले रंगकी होतीहै उसमें छोटी २ दरारें छालके आरपार निकलजातीहैं। इसकी डालियोंके आधेसे दो इंच लम्बी सीधी चिकनी बहुधा कुछ सफेद रंगकी और बहुधा चमकीले भूरे रंगकी अणीदार तीखी शूलोंके बहुतसे जोड़े लगतेहैं। इसके इमली जैसे १०, २० पत्तोंके जोड़े एक सींकपर लगतेहैं। इसके सुनहरी पीले रंगके पुष्प गोल घुंडीके आकारके लगतेहैं पुष्प खिलने पर उसमें से महीन २ रूँए निकलके फैल जातेहैं। इसकी पातड़ी ६ इंच लम्बी, चपटी और खानेदार होतीहै उसके हरेक खानेमें एक२ बीज होताहै। कची पातड़ीमें बहुत चेप निकलताहै और वह पकने पर सफेद रंगकी हो जातीहै। इसके सबके सब पत्ते कभी नहीं खिरतेहैं। फागुन और चैत्रमें नये पत्ते निकल आतेहैं। फागुन और चैत्रके महीनेमें इस वृक्षमेंसे सफेद और लाल गोंद निकलताहै उनमें लालको ठीक नहीं समझतेहैं।

प्रयोग—(१) बबूल-कषैला, उष्ण, स्निग्ध, कड़वा, ग्राही, शीतल और कफनाशकहै (२) इसके गोंदको घीमें तल उसका पाक बनाके प्रसूति स्त्रियोंको देनेसे बल बढ़ताहै और पुरुषोंको खिलानेसे वीर्य बढताहै (३) इसके गोंदका पानी पिलानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (४) इसकी पातड़ीकी छाल और बादामके छिलके की राखमें नमक मिला मंजन करनेसे दांतों की पीड़ा मिटतीहै (५) इसके गोंदके पानीको, पिलानेसे आमाशय और आंतोंका दर्द मिटताहै (६) इसके गोंदमें कुनैन मिलाकर देनेसे ज्वरातिसार और आमातिसार मिटताहै (७) इसके गोंदको पानीमें गलाकर उसकी पिचकारी देनेसे मूत्राशयकी सूजन और सुजाककी जलन और पीप रुक जातीहै (८) इसकी छालके हिम या काथके कुल्ले करनेसे साधारण मुखपाक, पारेका मुखपाक मसूड़ोंसे रुधिरका बहना, और गलेकी पीड़ा मिटतीहै (९) नर्म पत्तोंको पीस रस निकाल कर, आंखमें टपकानेसे अथवा स्त्रीके दूधमें पीस-

कर बांधनेसे आंखकी पीड़ा और सूजन मिटतीहै (१०) नर्म पत्तोंको शक्कर और काली मिरचके साथ अथवा अनारके पत्तोंके साथ पीस छानकर पिलानेसे सुजाक मिटताहै (११) कोमल पत्तोंको कालीमिरच और शक्करके साथ पीस छानके पिलानेसे आमाशयमें से रुधिरका बहना बन्ध होताहै (१२) इसके कोमल पत्तोंको घीमें तलके बांधनेसे आखोंकी पुरानी पीड़ा मिटतीहै (१३) इसकी छाल अत्यन्त शोषकहै (१४) इसकी छालके काथकी पिचकारी देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (१५) इसी काथमें फिटकड़ी डालके पिचकारी देनेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (१६) छालका काथ पिलाने या उसकी पिचकारी देनेसे श्वेत और रक्तप्रदर मिटताहै (१७) इसकी और आमके वृक्षकी छाल प्रत्येक ६-६ मासे लेकर ढाई पाव पानीमें आध घंटे ओटा छानके कुल्ले करानेसे पारेका मुखपाक मिटताहै (१८) छालके चूर्ण को वुरकानेसे होठोंके छाले और उपदंश मिटताहै और सर्पके दंश पर वुरकानेसे विष उतरताहै (१९) इसकी पातड़ियोंका चूर्ण शोषकहै और दस्त बन्ध करताहै (२०) नवीन कोंपलोंके साथ अफीम मिलाकर खिलानेसे विशेषकर बच्चोंका अतिसार और आमातिसार मिटताहै (२१) इसके पत्ते और छाल और बड़की छालके हिमसे कुल्ले करने से गलेका रोग मिटताहै (२२) इसकी छालके काथसे धोनेसे निर्वलताके कारणसे गर्भाशय और कांचका बाहिर निकलना बन्ध होताहै और गुदा और गर्भाशयके दूसरे रोग भी मिटतेहैं (२३) इसके गोंदके सेवनसे मधुमेह मिटताहै क्योंकि इसके गोंदकी शक्कर नहीं वनतीहै (२४) बंबूलकी छाल और बीजोंको जलाकर उसका मंजन करनेसे दांत दृढ़ होतेहैं (२५) पेट और आंतोंकी दाह मिटाने के लिये इसके गोंदका चेप पिलाना चाहिये (२६) छालके क्वाथ के कुल्ले करनेसे दांतोंका सड़ना मिटताहै (२७) इसके ७॥ मासे कोमल पत्तोंको पीस छानकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२८) इसकी कोमल फलियों (पातड़ियों) मेंसे एक प्रकारका सार निकाला जाताहै वह भारी और कठोर होता है और "अकेकिया" के नामसे मिलताहै, उसकी सुगंध वहुत अच्छी होतीहै। इसके टुकड़ेमें होके रोशनीकी तरफ देखनेसे वह टुकड़ा वोतली नीले रंगका दीखताहै और सावित काले रंगका दीखताहै (२९) कोमल पत्तोंको घीमें

तल, आंखके पपोटोंपर बांधनेसे आंखके श्वेत भागमें जो बहुत दिनोंसे रुधिर जमा हो बिखर जाताहै (३०) इसकी कच्ची कलियोंको छायामें सुखा कूट छान, घीमें तल, शकर मिलाकर तोलेभर दोनों समय लेनेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राशयके रोग मिटतेहैं (३१) इसके गीले या सूखे कांटे, आधसेर पानीमें ओटा, आधा रख, उसमें मधु मिलाके पिलानेसे हिचकी मिटतीहै (३२) सेर पत्तोंको ४ सेर पानीमें ओटा चौथाई रख कर नित्य दोनों समय पलकों पर पतला २ लेप करनेसे बाफनीका गलना मिटताहै (३३) इसकी कोंपलोंको पीसकर पीने और मलनेसे मुखपाक मिटताहै (३४) इसकी कोंपलें, छाल, फलियां और गोंद, ये सब बराबर २ ले, कपड़ छानकर, उसमें बराबर बूरा मिला एक तोले प्रमाण नित्य फक्की लेनेसे वीर्यका पतलापन और स्वप्नदोष मिटताहै (३५) इसके पुष्पोंके चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाकर एक तोलेकी फकी नित्य लेनेसे पीलिया मिटताहै (३६) इसकी छालके काथसे उपदंशकी टांकीको धोना चाहिये (३७) इसकी छायामें सदैव बैठा रहनेसे शरीर दुबला होजाताहै (३८) इसके पत्ते, जीरे और स्याहजीरेको पीसके एक तोलेकी फकी रात्रीके समय देनेसे कफातिसार मिटताहै (३९) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे अतिसार मिटताहै (४०) इसके पत्तोंको पीस मर्दन कर, फिर हरड़के चूर्णका मर्दन करके स्नान करनेसे बहुत पसीना होना बन्ध होजाताहै (४१) इसके बीजोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे टूटी हुई हड्डी जुड़ जातीहै (४२) बीजोंके चूर्णको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे स्नायुक मिटताहै (४३) इसके १॥ मासे गोंदके चूर्णकी फक्की नित्य १० दिन तक लेनेसे अतिसार मिटताहै (४४) इसकी एक तोले कोंपल और एक तोले गोखरू इन दोनोंका चेप निकालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४५) इसकी ३ तोले छालका हिम नित्य पीनेसे कुष्ठ मिटताहै (४६) इसके सूखे पत्तोंको पीसकर हाथ पैरों पर मलनेसे पुस्तवाय मिटतीहै (४७) इसका भुना हुआ गोंद साढे चार मासे और गेरू साढे चार मासे इनको पीसके प्रातःकाल फकी देनेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै (४८) इस चूर्णके सेवन करनेसे या उसका लेप करनेसे उपदंश मिटताहै ॥

संख्या (४७४)

(सं०) वंशः, वेणुः, त्वक्सारः, तृणध्वजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बाम	बास	वाश (स)	वेळू, बाबू	वास, बाश	बांस	वेदुरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मूंगिल	विदरु	क़सब	नएक़वीर	Bambusa arundinacea B orientalis	The spriny bamboo Bamboo cane.

स्थान—यह बांस मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान संयुक्त प्रदेश और बङ्गालमें बहुत ठौर लगाया जाताहै ।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ८०, ६० फुटकी होतीहै । यह ३२ वर्षका होनेके पीछे इसके पुष्प लगतेहैं । एक बीड़ेमें ३० से १०० तक बांस होतेहैं । इनके जोड़की गांठोंकी मध्य रेखा ४ से ६ इंचकी होतीहै, इसमें छोटा छिद्र होताहै, इसके दृढ़, तीखे, मुड़वां एक एक या दो दो या तीन तीन कांटे लगते है उनमें डालीपर बीचका कांटा बड़ा होताहै । इसके पत्ते ४ से ८ इंच लम्बे, एक तिहाई से दो तिहाई इंच चौड़े पतले नोकदार ऊपरसे साफ और नीचेसे रुँएदार होतेहै । बिड़लेके एक साथ पुष्प आजातेहै और पुष्पोंके साथ बहुधा थोड़े पत्तेभी निकलतेहैं । इस बांसमेंसे वंसलोचन निकलताहै ।

प्रयोग—(१) यह सारक, मधुर, छेदन, कसैला कुछ कड़वा, शीतल, और खट्टाहै (२) इसके पत्ते या कोंपलोंका क्वाथ पिलानेसे रजोधर्म यथोचित होने लगताहै (३) इसके कोमल पत्ते, काली मिरच और सांभरे नोंन को पीसके फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै (४) इसकी कोमल कोंपलोंको पीसके फोड़ेपर पुल्टिस बांधनेसे उसके कीड़े निकल जातेहैं परन्तु पहिले इसका थोड़ासा रस कीड़ोंपर डालकर पीछे पुल्टिस बांधना चाहिये (५) कोढ ज्वर और रुधिरकी वमनमें यह बांस काममें आताहै (६) इसकी जड़का क्वाथ पिलानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (७) इसकी छालके क्वाथ में मधु मिलाके

पिलानेसे कोठेमें रक्तके भर जानेसे उत्पन्न हुई दाह मिटतीहै (८) अकाल पड़ जानेपर इसके बीज और अंकुरोंको गरीब लोग खानेके काममें लातेहैं ।

संख्या (४७५)

(सं०) वंशभेदः ।

Latin Daendrocalamus strictus Bambusa stricta The male bamboo.

स्थान—यह बांस हिन्दुस्थानमें सब ठौर होताहै विशेषकर उत्तर, मध्य हिन्दुस्थान, आबू, बंगाल, और हिमालयकी तराईमें बहुत होताहै ।

पहिचान—पंजाबमें यह बांस २०, ४० दक्षिण हिन्दुस्थनमें ३०, ५० ब्रह्माके सूके पहाड़ोंमें २०, ४० और आर्द्र स्थानोंमें १०० फुट ऊंचा बढ़ जाताहै । वर्षा ऋतुके प्रारम्भमें थोड़े सप्ताहमें इस बांसकी पेदड़ पूरी लम्बी बढ़ जातीहै, वैशाखमें इसकेनवीन पत्ते निकलतेहैं वे चमकीले हरे रंगके होतेहैं शीतकालमें इसके पुराने पत्ते पीले पड़ जातेहैं, आर्द्रभूमिमें जो इस जातिके बांस होतेहैं वे १२ महीने हरे रहतेहैं. इसकी टहनियां थोड़ी पोली, या बिलकुल ठोस होतीहैं, इसकी पेदड़के नीचेका भाग बहुधा कई भांतिसे मुड़ा हुआ होताहै, इसकी पुरानी डालियोंके पत्ते बहुधा खिरजातेहैं ऊपरकी डालियां चारों तर्फ फैली रहतीहैं, बहुधा नीची झुकी रहतीहैं । इसकी पेलियें एकसे डेढ फुट लम्बी होतीहैं, उनकी मध्यरेखा १ से ३ इंच होतीहै, पत्ते दोनों ओरसे रूंएदार और खरदरे होतेहैं, उनका आकार बहुत बदल जाताहै मझोले आकारके पत्ते ३ से ९ इंच लम्बे चौथाईसे एक इंच चौड़े होतेहैं हर वर्ष इसके हरेक मेड़में एक या थोड़े बांसों पर पुष्प आया करतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंका प्रायः ५ तोले क्वाथ पिलानेसे बच्चा होनेके समय बहुत पीड़ा नहीं भोगनी पड़तीहै । इसके पत्तोंका ५ तोले अर्क या चूर्णभी प्रायः इसी काममें आताहै (२) बांसकी गांठों या जोड़ोंके क्वाथसे बच्चा होनेके समय बहुत दुख नहीं उठाना पड़ताहै (३) इसके पत्तोंके चूर्णसे खांसी मिटतीहै (४) पत्तोंके क्वाथसे स्नान करानेसे रोग छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै (५) गर्भाशयमेंसे आंवलको निकालनेकेलिये इसके पत्तोंकी फकी देनी चाहिये ।

संख्या (४७६)

(सं०) वंशरोचना, तुगाक्षीरी, वंशक्षीरी, वंशलोचना ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वंशलोचनं	वंशलोचना	तबाशीर	तबाशीर		Bamboomann

बाजारमें दो प्रकारका वंशलोचन मिलताहै । एक सुनहरी झांई दार नीले रङ्गका और दूसरा सफेद रङ्गका, परन्तु ऐसा जान पड़ताहै कि वह पहिला ही सूख जाने पर सफेद हो जाताहै और इसको एक वेर जलमें डबोकर पीछा निकाल लेनेसे इसका रङ्ग वैसाही हो जाताहै जैसा कि ऊपर वर्णन कियाहै ।

प्रयोग—(१) वंशलोचन मधुर, शीतल, रूक्ष, कषेला, ग्राही, उत्तेजक, विषनाशक, वृष्य, बल्य और बृंहणहै । श्वास सम्बन्धीरोग तृषा, ज्वर, अर्द्धांग अफारा कामला और फेफड़ेके रोगोंको मिटाताहै (२) ज्वरमें तृषा मिटानेके लिये मधुके साथ इसको चटाना चाहिये (३) इसकी २॥ से ६ मासे तककी मात्रा देनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (४) मधुके साथ इसका लेप करनेसे मुखपाक मिटताहै (५) गोखरू, वंशलोचन और मिश्रीके चूर्णकी फक्की कच्चे दूधके साथ देनेसे मूत्रकी दाह मिटतीहै (६) साधारण विषको उतारनेके लिये इसको मधुके साथ चटाना चाहिये (७) पुराने ज्वरको मिटानेके लिये इसको गिलोयके क्वाथके साथ देना चाहिये (८) इसको मधुके साथ चटानेसे बालकका श्वास कास मिटताहै (९) मधु और मिश्रीके साथ इसका सेवन करनेसे रक्तपित्त मिटताहै ।

संख्या (४७७)

(सं०) वसुकः, पाशुपतः, एकाष्ठीलः, वसुः, वक्रः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	सफेदवसु	रातोवसु	पाढरीवसु	वासुनागाछ		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
					The red Norinjy of Madras.

स्थान — वसुकके वृक्ष हिन्दुस्थानके जङ्गलोंमें बहुत ठौर होतेहैं ।

प्रयोग — (१) यह कटु, तिक्त, उष्ण, दीपन और पाकमें शीतल होताहै । अजीर्ण, वात और गुल्मको मिटाताहै (२) इस वृक्षका रस मूत्रवर्द्धक है (३) इसके रसमें जल मिलाके गंडूष करनेसे शीताद रोग मिटताहै (४) इसके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होके उपदंशके पुराने रोग मिट जातेहैं (५) श्वेतवसुक रसायनहै (६) इसके पत्ते बहुत रूक्ष होतेहैं । कफ, वायु, मंदाग्नि, गुल्म, प्लीह और शूलरोगको मिटातेहैं ।

संख्या (४७८)

(सं०) वाकुची, अवल्गुजः, कालमेषी, कृष्णफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बावची	बावची बकुची	बापची बावची	बावची	सोमराज हाकुच	बावची	वावांचिवित्तुलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कार्पोहअरिशि		तुख्मरेहा	स्याहसफर	Psoralea corylifolia Trifolium unifolium	The purple fleabane

स्थान — बावचीके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर होते हैं ।

इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै ।

प्रयोग — (१) इसके बीज रूक्ष और उष्ण हैं कोई २ आचार्य्य इनको शीतल और रूक्ष मानतेहैं (२) ये सारक, उत्तेजक और पुरुषार्थ बढानेवाले हैं (३) रक्तविकार से जो कुष्ठ और त्वचाके रोग होतेहैं उनको मिटानेके

लिये इसके केवल बीजोंकी या उनको मिटानेवाली दूसरी चीजोंके साथ फकी दी जातीहै या उनपर इसके बीजोंका लेप करतेहैं (४) इसके बीजोंकी फकी देके ऊपर चिरायतेका अर्क पिलानेसे ज्वर छूटताहै (५) इसकी फकी देके ऊपर नीबूका रस और मधु पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (६) इसके पत्ते और गिलोयको पानीमें भिगो मल छानकर पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (७) अजवायनके अर्कके साथ बावचीकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (८) तिल्ली आदि अङ्गोंके बढ़ावकी रुकावट मिटानेके लिये बावचीका प्रयोग अच्छाहै (९) बावचीके तेलको श्वेतकुष्ठ पर कुछ दिनोंतक लगानेसे सफेद चट्टे लाल हो जातेहैं। जो उनपर फुन्सियां हो जातीहैं उनको वैसीकी वैसीही रहने देना चाहिये अर्थात् फोड़ना या मलना नहीं चाहिये, वे सूखके काले दाग हो जातेहैं, और उनके आस पासकी ठौर, और वैसेही उन सफेद चट्टोंके किनारे काले पड़ने लगतेहैं अन्तमें वे सब आपसमें मिल जातेहैं और तमाम सफेद चट्टोंका रंग सादी चमड़ी जैसा हो जाताहै (१०) इसके लगानेसे ताजे चट्टे बढ़नेसे रुक जातेहैं किसी २ के इस तेलका असर थोड़े दिन तक ही रहताहै (११) इसके लेपसे पिटिका मिटतीहै (१२) बावची एक भाग और नमक डेढ भाग ले कूटकर नित्य फकी लेनेसे श्वेतकुष्ठ मिटताहै, इसके सेवनके दिनोंमें चनेकी रोटीके सिवाय और कुछ नहीं खाना चाहिये (१३) बावचीको तीन दिन तक दहीमें भिगो सुखा आतसी शीशीमें उसका तेल निकाल उसमें थोड़ा नोसादर मिलाकर कुष्ठके दागको खुजला कर लगानेसे श्वेत कुष्ठ मिटताहै (१४) बावचीको २१ दिन तक उष्ण जलके साथ पीनेसे सफेद कुष्ठ मिटताहै परन्तु इसके सेवनके समय केवल दूध पीना चाहिये।

संख्या (४७६)

(सं०) वाताम:, वातादः, नेत्रोपमफलः, वातवैरी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बिदाम	बदाम बादाम	बदाम	बदाम	बादाम	बादाम	बादामु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वादुमै	बादाम	लोज़्	बादाम	Prunus Amygdalus A communis	Almond

स्थान—इसके वृक्ष काश्मीर, पंजाब, अफगानिस्थान, और पर्सिया में होतेहैं।

बादामकी कई जातेंहैं उन हरेकके गुण लैटिन नामोंके नीचे पृथक् २ लिखतेहैं बादाम मीठे और कड़वे दो प्रकारके होतेहैं।

मीठे बादाम दो प्रकारके होतेहैं एक पतले छिलकेके उनको "कागजी" कहते हैं। दूसरे मोटे छिलकेके उनको "ठरड़" बादाम कहतेहैं।

इसके वृक्षकी साधारण उंचाई होतीहै। इसके कोमल पत्ते हल्के हरे रंगके होतेहैं पूरे बढ जाने पर वे हल्के सफेद रंगके हो जातेहै और पतझड़में गिर जातेहैं। ये कंगूरे दार और कुछ लम्बे होतेहैं इसके लाल छींटेदार सफेद पुष्प इकट्ठे या दो दो लगतेहैं। इसका फल मखमली या रूएदार होताहै, इसका छिलका सूखा होताहै और जब पक जाताहै उसको दूर करनेसे भीतर बादाम निकलताहै जो आंखके आकारका होताहै, उसमें खोखले सल और छोटे २ छेद होतेहैं उस छिलकेको फोड़नेसे उसमेंसे बादामकी गुली निकलतीहै।

इसकी गुलीमेंसे आधेसे कुछ कम तेल निकलताहै।

इसके तेलमें तिल्ली, खस खस और सरसोंका तेल मिला दिया करतेहैं।

कड़वे बादामकी मींगीमेंसे तेल निकालके पीछे उसकी १०० तोले खल को केवल पानी तथा पानी और नमकमें डालके अर्क खेंचतेहैं उसपर ६ मासे से तोले भर तेल तैरने लग जाताहै, यह तेल बहुत विष युक्त होताहै इसको काममें लानेमें बड़ी सावधानी रखनी चाहिये।

इत्र निकालनेमें बादामके तेलका भाता दिया जाताहै।

प्रयोग—(१) बादाम—उष्ण, स्निग्ध पचनेमें भारी, वातनाशक और वीर्य्यवर्द्धकहै (२) बादामके छिलकोंकी राखसे दांतोंका मंजन करतेहैं (३) मसूड़ों और मुंहके छालोंपर इसके कच्चे फलकी गुलीको पीसकर लेप करतेहैं (४) कड़वे बादाम—कृश और साफ करनेवालेहैं और बहुतसे रोगोंमें खाने

और लगानेके काममें आतेहैं (५) बादामकी मींगीको सिरकेके साथ पीसके लगानेसे स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटतीहै (६) इसके तेलसे कज्जल पाड़के अंजन करनेसे दृष्टि बलवान होतीहै (७) इसके प्रयोगसे मूत्राशयमें पथरी गल जातीहै (८) ये यकृत् और तिल्लीके रसके बहावकी रुकावटको मिटा देतेहैं (९) कड़वे बादामको पीस शिर पर लेप करनेसे लीखें मरतीहैं (१०) इसकी बत्ती बनाके योनीमें रखनेसे मासिकधर्महोतेसमयकी पीड़ा मिट-जातीहै (११) इसका पुल्टिस बांधनेसे फोड़ेकी खुजली और दाह मिटतीहै (१२) छाले और खुजली मिटानेकेलिये कड़वे बादामको पीस कर लेप करतेहैं (१३) इसकी जड़का लेप करनेसे सूजन विखर जातीहै (१४) इसकी जड़का क्वाथ पीनेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै (१५) इसके फलका रस शक्करके साथ पिलानेसे खांसी मिटतीहै (१६) बादामोंको अंजीरके साथ खिलानेसे हल्का विरेचन होताहै और आंतोंकी पीड़ा मिटतीहै (१७) बादामका पुराना तेल मलनेसे बाल गिरजातेहैं ।

संख्या (४८०)

(सं०) वातामभेदः । (१)

L Canarium commune Eng. Java almond

स्थान—इस बादामके वृक्ष बंगालमें बोये जातेहैं ।

(१) यंत्रमें दबाकर इसके फलोंमेंसे आधा जमा हुआ तेल निकाला जाता है वह खोपरेके तेल जैसा दीखताहै और स्वादिष्ट होताहै ।

(२) इसकी छालमेंसे बहुतसा निर्मल तेल निकलताहै, उसमें चरपरी सुगंध आतीहै और वह जमकर मक्खन जैसा होजाताहै इसके एक प्रकारका राल जैसा गोंद लगताहै ।

प्रयोग—(१) शिथिल घावोंपर इसके गोंदका लेप किया जाताहै (२) इसका तेल बादामके तेलकी ठौर काममें आसकताहै (३) औषधिकी चरपराहट कम करनेकेलिये उसमें बादामका तेल मिला देतेहैं (४) इसके ताजे फलोंको खानेसे या लगातार खाते रहनेसे अतिसारका रोग होजाताहै

(५) कई देशोंके मनुष्य इसके ताजे तेलको खानेके काममें लातेहैं । इसके फलके आटेकी रोटी बनाई जातीहै ॥

संख्या (४८१)

(सं०) वातामभेदः (२)

Latin Hydnocarpus venenata H. inebrians

स्थान—इस बादामके वृक्ष सीलोनमें नदियोंके किनारे और मलबार टिनेवल्ली, और ट्रावानकोरमें भी होतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै, वह मक्खन जैसा गाढा होताहै और चालमुगरेके तेलकी ठौर काममें आसकताहै (२) खुजलीके रोगोंमें और विशेष करके कोढपर इस तेलका मर्दन किया जाताहै (३) इसके बीजोंको खानेसे चक्कर आने लगतेहैं क्योंकि उनमें विषहै ।

संख्या (४८२)

(सं०) वातामभेदः (३)

Latin. Terminalia Catappa T Badamia Eng Indian almond

स्थान—इस बादामके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थानसे सीलोन तक हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं ।

पहिचान—इसका ८० फुट ऊंचा बड़ा वृक्ष होताहै । इसके पत्ते पतझड़की ऋतुमें गिरजातेहैं । इसके एक प्रकारका धुंधले रङ्गका गोंद लगताहै, इसकी छाल और पत्तोंमें से रङ्ग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) यह बादाम नीरोगता बढानेवाला शरीर पुष्ट करनेवाला और स्वादिष्टहै (२) इसकी छाल ग्राही और संकोचकहै जैसे (४७९) संख्याके बादामकी मींगी और तेल काममें आतेहैं वैसेही इसकी गुली और तेल काममें आतेहैं (३) इसके पत्तोंका अर्क पिलानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (४) इस अर्कमेंकालानोन मिलाके पिलानेसे पेटकीशूल मिटतीहै (५) खुजली, कोढ और त्वचाके दूसरे रोगों पर लगानेके लिये इसके कोमल पत्तोंके स्वरससे

एक प्रकारका प्रलेप बनातेहैं (६) इसकी गुलीको सरसोंके तेलके साथ पीसके लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (७) इस बादामकी गुलीका स्वाद असली बादामकी गुली जैसा होताहै। इसकी गुलीमें से आधा तेल निकलताहै वह स्वाद और रङ्गमें उक्त बादामके तेल जैसा होताहै, परन्तु यह तेल जल्दी नहीं बिगड़ताहै।

संख्या (४८३)

(सं०) वनवातामः (४)

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अडक बिदाम	जंगलीबादाम	बदामकडवी	रानबादाम		बादामकड़वे	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		लोजसहराई	बादामदश्ती	Hydnocarpus Wightiana H inebriana	

स्थान—इस जंगली बादामके वृक्ष पश्चिम मायद्वीपमें कानकानमें समुद्रके किनारे२ के पहाड़ोंमें होतेहैं। इसकी १०० तोले गिरीको यंत्रमें दबानेसे अथवा पानीमें ओटानेसे ४४ तोले तेल निकलताहै यह तेल स्वादमें फीका और रङ्गमें सफेद होताहै।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंको पीसकर लेप करनेसे त्वचा और नेत्रके रोग मिटते हैं (२) इसके कल्कको कपड़े परलगाके घाव और फोड़ों पर उसकी चुक्तियें लगातेहैं (३) इसके तेलकी बराबर मुगलाई एरंडका तेल, गंधक, कपूर और नींबूका रस मिलाके खुजलीकी फुन्सियों पर लगातेहैं (४) इसका तेल, चूनेका पानी मिलाके गर्म जल आदिसे जले हुए मस्तक पर लेप करतेहैं (५) कोढरोगवालेको दो मासे तेल पिलाना चाहिये (६) छिलके सहित एरंडके बीज पीस इस तेलमें मिला पामा पर लेप करतेहैं। इसके बीजोंमें औषधि सम्बन्धी जो गुणहैं वे सब इसके तेलके कारणसेहैं

(७) इसका तेल गठिया, मोच, चोट, गृध्रसी, छातीके रोग, खैन, नेत्र और त्वचाके कई प्रकारके रोगोंमें काम आताहै (८) कोढ, त्वचासम्बन्धी रोग, सब शरीरमें फैले हुए उपदंशके रोग और पुरानी गठियामें इस तेलकी १५ बूंदोंसे ७॥ मासे तककी मात्रा देनी चाहिये। इस तेलका सेवन सावधानीसे करना चाहिये। क्योंकि इससे कभी२ आमाशय और आंतोंमें खुजली और दाह पैदा होके वमन और विरेचन होने लगजाताहै।



संख्या (४८४)

(सं०) वास्तूकं, क्षारपत्रं, वस्तुकं, शाकराजः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चथुवो	वथुवा	टाको, चील	चाकवत वठवा	वेतोशाक	वथुआ	चक्रवर्त्तीकूर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
चक्रवर्त्तीकीरै	चक्रवर्त्ती-सोप्पु	कत्फ़		Chenopodium album C viride	The white goose foot

स्थान—वथुवा हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें खेतोंमें बोया जाताहै और जो, गेहूंके खेतोंमें अपने आपभी उगताहै।

वथुवा दो प्रकारका होताहै एक बड़ा "बड़बथुवा" बोया जाताहै, और दूसरा छोटा "चील वथुवा" जो गेहूंके खेतोंमें अपने आप उगताहै।

प्रयोग—(१) वथुवा—रोचक, दीपन, पाचन, पचनेमें हल्का, सारक सलौना, चिरछभी, रसमें मधुर, स्निग्ध, विपाकमेंभारी और कृमिनाशक है (२) तिल्ली और पित्तके रोगोंमें वथुवेका शाक बहुत उपकारीहै (३) वथुवेका अर्क निकाल उसमें नमक डालके पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (४) वथुवेके स्वरसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (५) वथुवेका शाक खिलानेसे अर्श मिटताहै क्योंकि यह सारकहै (६) पेटके यंत्रोंके रसके बहावकी रुकावट मिटानेके लिये वथुवेके स्वरसमें कालीमिरच और नमक मिलाके पिलाना चाहिये (७) इसके १॥ तोले बीजोंको आधसेर पानीमें

छोटा आधा रख छानके पिलानेसे वालक होनेके समय स्त्री कष्टसे छूट जातीहै (८) इसके पत्ते और तमाखूके पुष्पोंको वांट घीमें मिलाकर लगानेसे नाड़ीव्रण मिट जाताहै (९) इसके वीजोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै (१०) गर्भ गिरनेके पीछे इसके वीजोंका काथ पिलाना गुणदायक है (११) इसके पत्तोंका शाक, रायता आदि वनाके खानेके काम में लातेहैं ।

संख्या (४८५)

(सं०) विकंकतः, स्रुवावृक्षः, ग्रन्थिलः, व्याघ्रपात् ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजावी	तैलंगी
	कंटाई	वहेकळ	गुलघोंटी	वोंचफल वंइचिगाछ	कुकोया	मुलुवेलाम

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वक्षवेळम	मुल्लुव्याल			Flacourtia Ramontchi F sapida	

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके सूखे पहाड़ोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका वहुधा छोटा झाड़ होताहै परन्तु जो इसको खात जल आदि सावधानी से दिये जावे तो यह साधारण ऊंचाई का वृक्ष होजाताहै । इसकी छोटी पेड़की गुलाई ४,५ फुटकी होतीहै इसकी शाखें फैली हुई और कांटेदार होतीहैं। डालीके अन्तमें कांटे लगतेहैं। इसकी पेड़की छाल हल्के या धुँधले, सफेद या प्रायः काले रङ्गकी और कुछ खरदरी होती है । इसकी डालियों पर पत्ते वारी२ से लगतेहैं वे आकारमें कई भांतिके होते हैं और वे नीचेसे रुँएदार और ऊपरसे चिकने होतेहैं, इसके कुछ हरे पीले रङ्गके छोटे पुष्प लगतेहैं । इसका आध इंच लम्बा फल धुंधले, लाल या काले रङ्गका होताहै उसमें ८ से १६ तक बीज दो तहमें होतेहैं अर्थात् एकके ऊपर दूसरा तह होताहै । पौष और माघमें इसके पत्ते गिर जातेहैं और फागुनमें

नवीन पत्ते निकल आतेहैं परन्तु बहुधा जेठमें निकलतेहैं, छोटे पत्ते पहिले लाल रङ्गके होतेहैं परन्तु पीछे हल्के हरे रङ्गके हो जातेहैं ।

फूलने फलनेका समय—यह वृक्ष कार्तिकसे फागुन तक फूलताहै इसके फल वैशाख ज्येष्ठमें पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह-अत्यन्त उष्ण, कषेला, शीतल, दीपन, पाचन, पचनेमें हलका और विपाकमें मधुरहै (२) शीतलाकी फुन्सियोंको नवें, दसवें दिन इसके कांटोंसे फोड़तेहैं (३) बच्चा होनेके पीछे जलयुक्त वायुके स्पर्शसे अथवा शीतल वायुके स्पर्शसे गठियाकी जो पीड़ा हो जातीहै उसको मिटाने के लिये इसके बीज और हल्दीको पीसके सब शरीर पर मर्दन करना चाहिये (४) विषूचिका मिटानेवाली दूसरी औषधियोंमें इसका गोंद मिलाके देना चाहिये (५) वारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसकी और शिरष की छालको पीसके शरीरपर लेप करना चाहिये (६) इसका फल-मीठा, भूख लगानेवाला और पाचक है यह शाक खानेके काममें आताहै ।

———०———

संख्या (४८६)

(सं०) विजया, अजया, भृङ्गा, मातुलानी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भांग, बूटी	भाग, भंग	भाग्य, भाग	भाग, गाजा	सिद्धि	भाग	भगि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कंजा	भंगि	किन्नब	फल्कताज़	Cannabis sativa C Indica	Hemp Indian hemp

स्थान—चरस, गांजा, पत्ती, बीज और तन्तुओंके लिये भंग-हिन्दुस्थान में सब ठौर थोड़ी या बहुत बोई जातीहै और अपने आप भी उगतीहै।

पहिचान—इसके पके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै अर्थात् १०० तोले बीजोंको यंत्रमें दबानेसे २५ से ३४ तोले तक तेल निकलताहै उसका रङ्ग पहले कुछ हरा या भूरास लिये हुए पीला होताहै परन्तु जब हवा लग

जातीहै तो उसका रङ्ग उक्त गहरे रङ्गका हो जाताहै । भंगका अर्क खेंचनेसे उसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलताहै वह अर्कके ऊपर तैरता रहताहै उसमें भंगके जैसी सुगंध आतीहै और उसका रंग कहरुवे जैसा होताहै । कभी२ उस तेलमें कंदके जैसे छोटे२ बहुतसे टुकड़े जम जातेहैं ।

प्रयोग—(१) भंग-तीक्ष्ण, उष्ण, कड़वी, ग्राही, पाचक, लघु, दीपन, रोचक और मोहकारकहै (२) धनुस्तंभ और विषूचिकामें इसका प्रयोग बहुत उपकारीहै । क्योंकि इससे अन्तमें न भूख बन्ध होतीहै और न बद्धकोष्ठ होताहै जैसे कि बहुधा अहिफेनके प्रयोगसे हो जाताहै इसका असर भी वैसाही होताहै जैसा कि अहिफेनका० (३) भंगके पत्तोंकी सवामासेकी मात्रा देनेसे शरीरकी पीड़ा और वांइटे मिटतेहैं और मूत्रवृद्धि होतीहै (४) तीव्र आमातिसार मिटानेके लिये सोंफके अर्कके साथ भंगकी फकी देनी चाहिये (५) इसके ताजे पत्तोंका कल्क बना कुछ उष्ण कर आंखके ऊपर बांधनेसे आंखकी पीड़ा और दीपक आदिकी ज्योतिका नहीं सहना मिट जाताहै (६) इसके पत्तोंको दूधमें रांधकर अर्श पर उनका पुल्टिस बांधतेहैं (७) इसके बीजोंके तेलका मर्दन करनेसे गाठिया मिटतीहै (८) सेकीहुई भंगको धो, महीन पीसके मधुके साथ चटानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (९) भंग और कालीमिरचके चूर्णकी गुड़में गोली बनाके देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (१०) इसकी अधिक मात्रा देनेसे पहिले चित्त कुछ प्रसन्न होता है पीछे सब इन्द्रियां शिथिल होजाती हैं (११) गांजेका लगातार बहुत समय तक सेवन करनेसे मनुष्य बहुधा विक्षिप्त होजाता है (१२) जिन दशाओंमें अहिफेन निद्रा नहीं ला सकताहै उन दशाओंमें भंगका प्रयोग बहुत अच्छाहै क्योंकि इसके प्रयोगसे हृल्लास, बद्धकोष्ठ और मस्तकपीड़ा नहीं होतीहै (१३) कफकी मस्तक पीड़ाको रोकनेके लिये भंगका प्रयोग बहुत अच्छाहै (१४) तेज पागलपनकी बेचैनी, कुत्ताधांसी, श्वास, मूत्राघात और कष्टसे मासिकधर्म होनेमें इसका सेवन करनेसे बहुत लाभ होताहै (१५) इलायची और लोंग आदिके साथ भंगको पीसके चटानेसे शरीरकी पीड़ा मिटतीहै (१६) कालीमिरच और भंगके चूर्णको शहद के साथ चटानेसे भूख बढ़तीहै (१७) पुरुषार्थ बढानेवाले कई पाक और गोलियोंमें यह एक मुख्य पदार्थहै (१८) यह मास्तिष्ककी शिथिलताको मिटातीहै मनके विचार

बढातीहै और ध्यानमें मन बहुत लगातीहै । इसके नशेमें यह दूषणहै कि कई तरहके विचार मनमें पैदा होतेहैं और मिटते जातेहैं और विना कारणही हँसी आजातीहैं (१९) बच्चोंका अतिसार और अजीर्ण मिटानेके लिये उनको मिटानेवाली दूसरी औषधियोंमें कुछ भंग मिला देनी चाहिये (२०) भंग के पत्तोंका सार निकालके औषधिके प्रयोग में लाना चाहिये (२१) श्वास और धनुस्तंभ मिटानेके लिये घीमें सेकीहुई एक रतीके अष्टमांशसे एक रती तक भंगमें कालीमिरच और मिश्री मिलाके देनी चाहिये (२२) आमातिसार और पुराने अतिसारको मिटानेके लिये भङ्ग और पोस्तके दानोंका प्रयोग करना चाहिये (२३) स्त्रियोंके आवेशके रोगमें हींगके साथ भङ्ग देना चाहिये (२४) इसके गीले पत्तोंका पुल्टिस अण्डकोशकी सूजनपर बांधना चाहिये और सूखी भङ्गको ओटाकर वफारा देना चाहिये (२५) आवेशके रोगोंमें यह बहुत काम देतीहै और पुरानी शूलको मिटातीहै । भंगका आध रती सूखा सार हींग के साथ देना चाहिये (२६) शीतज्वर मिटानेके लिये पीसीहुई मासेभर भंगकी दो मासे गुड़में चार गोली वनाकर ठंढ लगनेका प्रारम्भ होनेके पहिले दो २ घंटेके अंतरसे चारों गोलियोंको दे देना चाहिये (२७) जिसके मूत्र की रुकावट नहीं रहतीहै उसको भंगका पाक खिलाना चाहिये (२८) भंगको पानीमें घोट छान कर पिलानेसे वृक्क पर प्रभाव होनेसे मूत्रवृद्धि बहुत होतीहै (२९) इसकी सूखी कोमल टहनियों और पुष्पोंको शक्कर और कालीमिरच के साथ देनेसे आमातिसार मिटताहै यदि आवश्यकता होतो इसमें अहिफेन मिलाके देना चाहिये (३०) भंग और खीरेकी मींगीकी ठंढाई पीस छानके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३१) गांजा पीनेके व्यसनवाले मनुष्य वहुधा फुप्फुसके रोग, जलंधर और सर्वांग जलमय शोथ इत्यादि रोग होके मरतेहैं (३२) इसके पत्तोंको महीन पीसके सूंघनेसे मस्तिष्क साफ हो जाता (३३) इसके पत्तोंके स्वरसका लेप करनेसे मस्तककी भुस्सी (खोरी) मिट जातीहै और कीड़े मर जातेहैं (३४) इसके स्वरसको कानमें डालनेसे कीड़े मरतेहैं और कानकी पीड़ा मिट जातीहै (३५) इसके पत्तोंके चूर्णको ताजे घाव और जख्म पर बुरकानेसे उनमें अंकुर जल्दी आने लगताहैं (३६) स्नायुपीड़ा, पित्त शोथ और एक प्रकार की शोथ जो मुंह पर होतीहै और

आस पास फैलती जातीहै उसपर भंगके पंचांगका लेप करतेहैं (३७) भंगके पत्तोंकी मात्रा ३ मासे तक और आवश्यकतानुसार न्यूनाधिक भी दी जातीहै (३८) उत्तम गांजेके सारकी एक रतीकी मात्रा देनेसे मूत्रनालीमें पित्तकी पथरीकी पीड़ाका होना मिटताहै (३९) इसके पत्तोंका अर्क गर्म करके कानमें डालनेसे गर्मी और सर्दीकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (४०) पानीमें भंगको भिगो के उस पानीमें अंडकोषोंको थोड़ी देर रखने और उसके फोकको उनपर बांधनेसे गर्मीसे उत्पन्न हुई अण्डकोषोंकी सूजन उतरतीहै (४१) भंगकी जड़ गलेमें बांधनेसे ज्वर छूटताहै (४२) इसको सायङ्कालको नूंत आवे फिर दूसरे दिन प्रातःकालके समय इसकी जड़ लाकर सिरमें बांधनेसे भूतज्वर छूटता है(४३) भंगको सेककर मधुके साथ चटानेसे नष्ट हुई निद्रा फिर आने लग जातीहै (४४) इसके पत्तोंके रसमें बत्ती भिगोकर कानमें रखनेसे उसकी पीड़ा मिटतीहै (४५) इसके बीजोंको पीस मोममें मिलाकर खिलानेसे विच्छूका विष उतरताहै (४६) जो मनुष्य नित्य अफीम खाया करताहै वह यदि भंगकी अधिक मात्रा लेलेवे तो उसको हानिकार नहीं होतीहै (४७) भंग पीनेवालेको इसके नशेसे ऐसा विचार आताहैकि मैं ऊपर चढ़ा चला जाताहूं और नशेके समय जो २ बातें होतीहैं उन सबको भूलता जाताहै और उसके मनके विचार ऐसे बढतेहैं कि देखनेवाले ऐसा विचार करने लगतेहैंकि उसके ऊपर कोई देवी आवेश होगयाहै (४८) इसके बीजोंको सेक पीस आटेमें मिला रोटी बनाके खातेहै (४९) भंगको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि भंगको दूधमें ओटा पानीसे धो, साफ करके काममें लाना चाहिये (५०) यह यकृत्के सिवाय और अंगोंमेंसे अपने २ द्रवके निवासको रोकतीहै ।

संख्या (४८७)

(सं०) विडङ्गः चित्रतण्डुला, अमोघा, क्रमिघ्नः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वायविडग	वायविडंग	वावडिंग	वावडिंग	बिडंग	वाविड़ंग	वायविलङ्ग

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वायविलङ्गं	वायविलंग			Embelia ribes E glandulifera	Babireng

स्थान—वायविडंगकी वेलें हिन्दुस्थानके पहाड़ी भागोंमें अर्थात् मध्य हिमालयसे सीलोन और सिंघापुर तक वहुत होतीहैं।

पहिचान—इसके पत्ते २,३ इंच लम्बे ऊपरसे चमकदार, नीचेसे चन्दनियां, आकारमें अंडे जैसे और कुछ लम्बे होतेहैं, इसके कुछ हरे पीले रंगके पुष्प और काले रंगके छोटे फल लगतेहैं, जब वे सूख जातेहैं तब उन पर सळ पड़जातेहैं उनमें एक २ बीज निकलताहै उसमें गर्म मसाले जैसी सुगंध होतीहै और उसका स्वाद कुछ चरपरा होताहै।

प्रयोग—(१) वायविड़ंग कड़वी, चरपरी, उष्ण, रोचक, हल्की, रूक्ष, कीड़े मारनेवाली और वलवर्द्धकहै (२) पेट और आमाशयकी वादीकी पीड़ाको मिटातीहै (३) हृक्कके रोगोंमें वायविडंगका प्रयोग किया जाताहै (४) वायाविडंगके दो तोले महीन चूर्णको आध पाव मट्ठेमें मिलाके प्रातःकाल पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (५) दाद मिटानेवाले और त्वचाके दूसरे रोग मिटानेवाले लेपोंमें वायविडंग मिलाई जातीहै (६) दूधमें वायविडंगके दाने डाल गर्म कर, छान, छोटे वचेको पिलानेसे उसका पेट फूलेना वन्ध होजाताहै (७) रात्रिको सोते समय एक तोले वायविडंगके चूर्णको मक्खन निकाले हुए दूधके साथ देके फिर प्रातःकाल एरंडका तेल पिलानेसे पेटकी पिटारें निकल जातीहैं (८) सवा तोले वायविडंगके चूर्णको दहीमें मिलाके प्रातःकाल भोजनके पहिले लेनेसे पिटारें निकल जातीहैं (९) वायविडंगका तमाखूके साथ धूम्रपान करनेसे पेट और आमाशयकी वादीकी पीड़ा मिटतीहै (१०) इसके चूर्णकी फकी लेनेसे साधारण मन्दाग्नि मिटतीहै (११) इसका फेन निकालके लगाने या मलनेसे होटोंका फटना मिटताहै (१२) इसके काथमें इसीका चूर्ण बुरकाके पीनेसे कीड़े मरतेहैं (१३) इसके आधे या एक तोले चूर्णको मधुके साथ चटानेसे कृमिरोग मिटताहै।

संख्या (४८८)

(सं०) विडंगभेदः ।

Latin. Embelia Robusta E Basal.

स्थान—इसके वृक्ष या झाड़ हिमालयमें यमुनासे पूर्वकी ओर बंगाल तक और दक्षिणकी ओर सीलोन तक होतेहैं ।

पहिचान—इसका बड़ा झाड़ या छोटा वृक्ष होताहै जो पृथ्वी, जल आदिके कारणसे आकारमें बहुत बदलजाताहै । इसकी छोटी शाखाओं पर और पत्तोंके नीचे लोहेके जंग जैसे रंगके रुँए होतेहैं, इसके पत्ते दो चार इंच लम्बे और कुछ गोल होतेहैं इसके कुछ हरे रंगके सफेद पुष्प लगतेहैं । इसके छोटे गोल फलकी मध्य रेखा प्रायः एक इंचके छठे भाग लम्बी होतीहै इसकी छोटी, खड़ी पेदड़ और छोटी शाखाओं पर जले हुए, गोल या रेखा जैसे, धब्बे होतेहैं ।

फूलने फलने का समय—आसोजसे फागुन तक इसके फल पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके बीज कृमिनाशक है (२) इनकी फकी लेनेसे अर्श मिटतेहैं (३) इसके कोमल पत्ते और सोंठके क्वाथके गंडूष करनेसे गले के छाले मिटतेहैं (४) इसकी जड़की सूखी छालका मंजन करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (५) इसके बीजोंके चूरणको मक्खनमें मिलाके ललाटपर लेप करनेसे पार्श्वशूल मिटतीहै (६) ये पेटकी बादी और बांइटोंको मिटातेहैं (७) ओड़ीसामें इसके फल खाने के काममें आते है । इनको कालीमिरचोंमें मिलाके बेच देतेहैं ।

संख्या (४८९)

(सं०) विदारी, इक्षुगंधा, क्षीरशुक्ला, स्वादुक्ला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
विदारीकंद	विदारीकंद	भोंकोलुं	भुय कोहळा	भूँइ कुमड़ा	बिल्लियाकंद	तेल्लनेलगुम्मुडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
—	विळीनेल-गुम्मड			Ipomaea digitata Batatas paniculata	

स्थान—विदारीकंद हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें बङ्गाल और आसामसे सीलोन तक होताहै ।

पहिचान—वर्षाऋतुमें इसके बैंजनी पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) विदारीकंद-मधुर, शीतल, स्निग्ध, भारी, बृंहण, बल्य और वीर्यवर्द्धकहै (२) इसकी बड़ी जड़—रुधिरको शुद्ध करनेवाली चरपराहट मिटानेवाली और दूध बढानेवालीहै (३) विदारीकंदके चूर्ण की फकी दूधके साथ देनेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ताहै (४) विदारीकंदके १ मासे चूर्णको मधुके साथ चटानेसे बच्चेकी निर्बलता मिटतीहै (५) विदारीकंद और पीपलका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे बच्चोंकी पाचनशक्ति बढतीहै (६) बालक का शरीर पुष्ट करनेके लिये विदारीकंदके चूर्णको मुनक्कामें मिलाके देना चाहिये (७) विदारीकंदके चूर्णको घी, खांडके साथ चटानेसे स्त्रियोंके मासिक धर्ममें रजका अधिक जाना बन्ध हो जाताहै (८) विदारीकंदके चूर्णको घीमें सेक, शक्कर मिलाकर उसकी फकी देके ऊपरसे दूध पिलानेसे शरीर पुष्ट होताहै (९) तिल्लीवालेको इसके चूर्णकी फकी देना चाहिये (१०) इससे विरेच होताहै (११) यकृत् बढ़जानेमें इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होताहै (१२) इसके रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे पित्तशूल मिटतीहै (१३) इसको दूधके साथ पीस, रस निकाल, उसमें शक्कर मिलाकर पिलानेसे स्त्रीके दूध बढ़ताहै (१४) इसके रसमें दूध डाल ओटाके पिलानेसे या इसके रसमें भैसका घी मिलाके पिलानेसे भस्मकरोग मिटताहै (१५) इसके चूर्णके इसीके स्वरसकी भावना देकर घृत और मधुके साथ सेवन करनेसे पुरुषार्थ बढताहै (१६) निवाये दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी नित्य लेनेसे पुरुषार्थ बढताहै और बुढापा जल्दी नहीं आताहै ।

संख्या (४९०)

(सं०) विभीतकः, अक्षः, कर्षफलः, कलिद्रुमः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बहेड़ा	बहेड़े	बहेडा	बेहेडा.(ळा)	बहेड़ा	बहेड़ा	ताड़िकाय

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तानिक्काय	तारेकायि	बलैलज	बलैलाह	Terminalia belerica	Bellericmyrobalan

स्थान—यह बहुधा हिन्दुस्थानके छोटे पहाड़ों और जङ्गलोंमें सब ठौर होताहै ।

पहिचान—इसका वृक्ष ८० से १०० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ लम्बी सीधी और गुलाईमें ६ से १० फुट और कभी कभी १६ से २० फुट होतीहै । इसकी छाल आध इंच मोटी, धुंधले सफेद रंगकी और ऊंची नीची होतीहै । इसके पत्ते माघ, फागुनमें गिर जाया करतेहैं, और चैत्रमें नवीन आजातेहैं, इसके छोटे पत्ते तांबेके रंगके होतेहैं। इसकी शाखाओंके अन्तमें पत्ते लगतेहैं, वे बहुत छोटे होतेहैं और नीचेसे चन्दनियां रंगके होतेहैं । पूरे बढ़ेहुए पत्ते ३ से ८ इंच लम्बे, आकारमें अंडे जैसे और कुछ चौड़े होतेहैं । इसके पुष्प, मैले, सफेद, या कुछ हरे पीले रंगके होतेहैं उनमें बहुत बुरी गंध आतीहै

फूलने फलनेका समय—माघ फाल्गुनमें यह वृक्ष फूलताहै और शीतकालके प्रारम्भमें इसके फल लगतेहैं, कातीसे पोष तक पकतेहैं । छोटे बड़ेके भेदसे ये दो प्रकारके होतेहैं। इसके बंबूलके गोंद जैसा एक प्रकारका गोंद लगताहै। इसकी छालमेंसे कुछ पीला या भूरासलिये पीला रंग निकलताहै इसकी १०० तोले मींगीमेंसे ३०॥ तोले तेल निकलताहै वह दो प्रकारका होताहै, एक पतला और पीले रंगका, दूसरा सफेद, और घी जैसा गाढ़ा होताहै ।

प्रयोग—(१) बहेड़ा–चरपरा, कड़वा, कषेला, सारक विपाकमें मीठा और पचनेमें लघुहै (२) इसकी मींगीका लेप करनेसे पित्तशोथ बिखर

जातीहै (३) नेत्रकी पित्तशोथपर बहेड़ेका लेप करतेहैं (४) इसका क्वाथ पिलानेसे पित्त कफ ज्वर छूटताहै (५) बहेड़े और जवासेके क्वाथमें घी डालके पिलानेसे भँवल और चक्कर मिटतेहै (६) इसका आधा पका हुआ फल रेचकहै और पूरा पका हुआ या सूखा हुआ फल ग्राहीहै (७) इसकी छालका मधुके साथ लेप करनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (८) इसकी मींगीका तेल बालोंमें लगाया जाताहै (९) इसका गोंद रेचकहै और चरपराहटको मिटाताहै (१०) इसके पत्तोंके चूर्णकी फक्की लेनेसे मन्दाग्नि मिटतीहै (११) बकरीके मूत्रमें अडूसा, कंटाली, काला नोंन और बहेड़े, डाल, पका, सुखाकर उनको चूसनेसे रूक्ष और स्निग्ध दोनों प्रकारकी खांसी मिटतीहै (१२) इसकी छाल और लोंगोंको पीस मधुमें चटानेसे अतिसार मिटताहै (१३) इसकी मींगी खानेसे जो शरीरमें विष होजाताहै उसके लक्षण ये हैं–आलस्य, अचेतपन, मस्तकपीड़ा और वमन होतीहै। इसकी ३०, ४० मींगी खानेसे शरीर शीतल होजाताहै और किसीको उसी दिन और किसीको दूसरे दिन विष चढ़ जाताहै (१४) इसको मुखमें रख कर चूसते रहनेसे श्वास कास मिटताहै (१५) इसकी मींगीका अंजन करनेसे नेत्रोंका शुक्ररोग मिटताहै (१६) बहेड़े और हरड़की छाल बराबर २ ले चूर्ण बनाके ४ मासेकी मात्रा नित्य लेनेसे श्वास और कास मिटताहै (१७) इसकी मींगीका लेप करनेसे भिलावेकी शोथ उतरतीहै (१८) कोकन देशवाले इसकी और भिलावेकी मींगीको पानमें रख कर खातेहैं ॥

संख्या (४६१)

(सं०) बिम्बिका, बिम्बी, पीलुपर्णी, ओष्ठी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
किन्दूरी	कदूरी	तोंडली	तोंडली	कुन्दुरुकी	कंदूरी	दोंडा, दोंड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कोवैयले	तोगड़े दोंडेगिड			Cephalandra indica Coccinia	

स्थान—यह हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बहुधा बोई जातीहै।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसकी बेल वर्षाऋतुमें उगती है और फूलती फलतीहै। यह फलनेके पीछे सूखजातीहै। इसके पत्ते गहरे हरे रंगके होतेहैं। जबतक इसका फल कच्चा रहताहै तबतक हरे रंगका रहताहै और जब वह पक जाताहै तब गिरदार चिकना, लाल रंगका और दो, ढाई इंच लम्बा और स्वादमें मीठा होजाताहै। इसके पत्ते रंगतके काममें आतेहैं।

प्रयोग—(१) बिम्बिका (कन्दूरी) के फल—पचनेमें भारी, मधुर, शीतल और लेखन होतेहैं मलको स्तंभन करतेहैं, पेटमें वायु और स्त्रियोंके दूध बढातेहैं। अरुचि, पित्त, रुधिरविकार, श्वास, सूजन, दाह और कासको मिटातेहैं बुद्धिका नाश करतेहैं (२) इसके पुष्पकंडू, पित्त और कामलाको मिटातेहैं (३) इसके पत्तोंका शाक शीतल, मधुर, पचनेमें हल्का, ग्राही, कषेला, कड़वा, पाकमें चरपरा और वातलहै कफ और पित्तको मिटाताहै (४) इसकी जड़ शीतल और धातु बढ़ानेवालीहै। प्रमेह, हाथोंकी दाह, भँवल और वमनको मिटातीहै (५) बहुमूत्रकी चिकित्साकी रसादिक औषधियों के इसकी जड़के स्वरसकी भावना देतेहैं। उनकी नित्य प्रातःकाल एक गोली देके ऊपरसे इसका १ तोला स्वरस पिलादिया करतेहैं (६) जब इसकी जड़को काटतेहैं तो उसमेंसे कुछ चेपदार रस निकलताहै वह सूखने पर कुछ लाल गोंद जैसा जम जाताहै। यह बहुत ग्राहीहै परन्तु फल जैसा कड़वा नहीं होताहै (७) इसकी जड़की छालके दो मासे चूर्णकी फक्की देने से अच्छा विरेचन होताहै (८) इसके पत्तोंको घीके साथ पीसके घावों पर लेप करतेहैं (९) छालों पर इसके पत्तोंको बांधतेहैं या उनका लेप करतेहैं (१०) इसके पत्तोंका स्वरस मूत्रकृच्छ्रवालेको पिलातेहैं (११) जिह्वाके ऊपरके घाव मिटानेके लिये इसके हरे फलको चूसतेहैं (१२) इसके हरे फलका शाक बनाके खातेहैं। पके हुए फल कच्चेही खानेके काममें आतेहैं।

संख्या (४९२)

(सं०) बिल्वः, श्रीफलः, मालूरः, लक्ष्मीफलः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बीलो, बील	बेल	बिलीबीली	बेलफल	बेल	बेल	मारेडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
बिल्वं	बिलपत्रि	सफरजले ऽहन्दी	नारवां	Aegle marmelos Cralaeva M.	The Bael or Bel fruit tree The Bengal quince.

स्थान—बीलके वृक्ष जेलम से आसाम तक, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, अवध, बिहार, बंगाल और ब्रह्मा आदि देशोंमें होतेहैं और कहीं २ जंगलके जंगल खड़ेहैं।

पहिचान—इसकी उंचाई ३५ फुटकी और इसकी छोटी खड़ी पेदड़की गुलाई ७ फुटकी होतीहै इसके थोड़ी शाखे लगतीहैं डालियों के अंत बहुधा लटके हुए रहतेहैं। इसकी पेदड़की और बड़ी डालियोंकी छाल आध या पौन इंच मोटी, साफ कुछ नीले, सफेद रङ्गकी होतीहै। फागुन चैतमें इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं और चैत वैशाखमें नवीन निकल आतेहैं। इसके १–१॥ इंच लम्बे सीधे, दृढ और तीखे कांटे लगतेहैं इसकी डाली पर एक २ सींक पर तीन २ और किसी२ के पांच पत्ते लगतेहैं, इसके मधु जैसी गंधवाले कुछ हरे श्वेत रंगके पुष्प लगतेहैं। इसका फल कुछ गोल और उसकी मध्य रेखा २ से ५ इंचकी होतीहै और उसका छिलका कठोर, चिकना, सफेद या पीले रङ्गका और उसमें गिर नारजी रंगकी होतीहै। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने फलनेका समय—वैशाखमें यह वृक्ष फूलताहै और आसोज कातीमें इसके फल पकते हैं। इसके फलके छिलकेमेसे पीला रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) बील-मधुर, कपेला, रूक्ष, उष्ण, ग्राही, गुरु, कड़वा, चरपरा, अग्निवर्द्धक और पाचक होताहै (२) बीलके कच्चे फलकी गिरीको ७ दिनतक तिल्लीके तेलमें रखकर स्नान करनेके पहिले शरीरपर उस तेलका मर्दन करनेसे पैरके तलवोंकी जलन मिटजातीहै (३) बीलका फल–प्रतिश्याय और अतिसार

में बहुत उपकारीहै परन्तु तीव्र आमातिसारमें इतना गुण नहीं करताहै (४) कच्चे फलका क्काथ पिलानेसे पुराना अतिसार मिटताहै, यदि इसमें अफीम मिला दिया जायतो इसका गुण अधिक बढ जाताहै (५) इसके कच्चे फल के गूदेको सेककर मिश्रीके साथ खिलानेसे पुराना अतिसार और आमातिसार मिटताहै (६) इसके पक्के फलका शर्बत स्वादिष्ट होताहै परन्तु पचनेमें भारी होताहै इससे पित्त विगड़के खट्टी डकारें आने लगतीहै और हृदयमें दाह हो जातीहै (७)इसके पक्के फलकी गिरको खांडके साथ खातेहैं (८) बीलगिरका मुरब्बा बनाया जाताहै और उसके खानेसे पित्तातिसार मिटताहै (९) बीलगिरको बहुत दिनों तक खाते रहनेसे अर्शरोग होजाताहै परंतु उसको शकरके साथ खानेसे वह रोग नहीं होताहै (१०) तीक्ष्ण रोगोंमें बीलगिरका चूर्ण और पुराने रोगोंमें इसका शर्बत बहुत लाभकारी है (११) तीक्ष्ण आमातिसारमें इसके चूर्णकी बहुत अधिक मात्रा देनी चाहिये, इसका पहिला उत्तम गुण यहहै कि इससे रुधिर तुरंत बन्ध हो जाताहैं, और दस्त में मल आने लगताहै । इसका ऐसा प्रभाव प्रतीत होताहै कि यह दस्तकी हालत पलट देताहै और उनके बेगकी संख्या कम नहीं करता, बेगकी संख्या कम करनेके लिये इसमें कुछ अफीमका योग करना चाहिये (१२) शीत ज्वर, व्रणादिकका ज्वर और जिस ज्वरका कारण निश्चय न हो उन सब ज्वरोंको मिटानेके लिये, बीलगिरके चूर्णकी फक्की देनी चाहिये। इससे ज्वरका न्यूनाधिक बेग कम हो जाताहै (१३) आमातिसारमें इसके चूर्णकी सवामासेसे चार मासे तककी मात्रा दिनमें तीन चार वेर या ६ वेर देनी चाहिये और दूसरे रोगोंके लिये ५ रतीसे सवा मासे तककी मात्रा देनी चाहिये और इसके शर्बतकी ८ से १६ या २४ मासे तक मात्रा दिनमें तीन चार वेर देनी चाहिये (१४) बीलगिर, आमकी गुठली, कत्था, ईसरबोलकी भुस्सी, बिदामकी गुली और शकरकी फक्की, पुराने अतिसार और आमातिसारमें बहुत उपकारीहै (१५) पक्के ताजे फलकी गिर-चेपदार, ग्राही और कुछ खट्टी होतीहै । यह अतिसारमें बहुत गुणकारीहै (१६) सूखे फलका चूर्ण या क्काथ इसकी ठौर काममें ला सकतेहैं (१७) इस का चूर्ण अरारूटके साथ बच्चोंके पेटकी शिकायतोंमें बहुत उपकारीहै (१८) जिस संग्रहणी या अतिसारमें मसूड़ोंका रोग होजाया करताहै उसमें इसका द्रव सत्व

अच्छा काम देताहै (१९) इसकी पकी गिरमें ग्राहीपनकी शक्ति बहुत कम होतीहै और कच्ची गिर पूरी ग्राहीहै। इसके कच्चे साबित फलको थोड़ा सेक उसमेंसे प्रायः आधा या तृतीयांश भाग एक मनुष्यको एक दिनमें एक वेर खिलाना चाहिये। इसको सेकनेसे इसकी गिर नर्म और पचनेमें बहुत हल्की हो जातीहै (२०) कच्चे फलकी गिरको बनाए धूपमें सुखा कुछ शकरके साथ ओटा छानके पिलाना चाहिये। उक्त दोनों क्रम हल्के ग्राही, मरोड़ोंको मिटानेवाले, नीरोगता बढ़ानेवाले, वेगोंकी संख्या और मवादको अवश्य धीरे२ कम करनेवाले और पुराने अतिसार और आमातिसारको मिटानेवालेहैं (२१) इसके पके हुए फलका शर्बत हल्का सारक और ठण्ढा होताहै और उसमें थोड़ा दही या इमली और शकर मिलानेसे कुछ खटास आजाताहै और उसकी ठण्ढेपन और सारकपनकी शक्ति बढ जातीहै (२२) ताजे फलके गूदेको पीस दूधके साथ छान उसमें शीतल मिरचका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै, मूत्रवृद्धि होतीहै, और प्रजोत्पादक इन्द्रियोंकी झिल्ली सुकड़ जातीहै (२३) बीलके कच्चे साबित फलको भोभलमें कुछ सेक छिलके सहित कूट, उसमें चाहिये जितना जल और ताड़की थोड़ी मिश्री मिला छानके पिलानेसे पुराना आमातिसार मिटताहै (२४) बीलगिरका सार बनानेकी यह रीतिहै कि बीलकी कच्ची गिर ६ रत्ती पलासका गोंद एक रत्ती, खांड २ रत्ती इनको पीस जलकी साथ छान और मंद २ आंचसे ओटावे जब वह चाटने लायक या गाढा हो जाय तब उतार लेवे। इसको छोटे बच्चेके पुराने अतिसारमें देनेसे बड़ा लाभ होताहै (२५) कच्चे फलकी गिरका अचार और मुरब्बा बनातेहैं जो बहुधा अतिसार और आमातिसारवालेको दिया जाताहै (२६) विसूचिका और दस्तोंकी बीमारी फैलनेके समयमें पके फलका शर्बत काममें लाना बहुत अच्छाहै (२७) कच्चे फलको सेक उसकी गिरको छानके सार बना लेवे। यह सार अतिसार और आमातिसारको मिटाताहै (२८) इसका पका हुआ ताजाफल अच्छा सारकहै (२९) इसकी जड़ विषैले सांपके विषको उतारतीहै (३०) बद्धकोष्ठकी प्रकृतिवालेको इसकी जड़की २॥ तोले छालको २५ तोले जलमें ओटाके उसमें से २॥ या ५ तोला देना चाहिये (३१) इसका पका हुआ फल कुछ मीठा, नीरोगता बढ़ानेवाला, शरीरको पुष्ट करनेवाला, स्वादिष्ठ है और

सब प्रकारके मनुष्योंके खानेके काममें आताहै (३२) इसके पके हुए फलके गूदेको पानीमें छान थोड़ी इम्ली और शक्कर मिलानेसे वह मधुर, ठण्ढा और खट्टा पानक बनजाताहै (३३) इसके पत्तोंको विदून पानीके पीस टिकिया बनाके खराब फोड़ोंपर बांधतेहैं (३४) इसके पत्तोंका ताजा रस हल्का सारकहै ज्वर और प्रतिश्यायमें दिया जाताहै (३५) इसके पत्तोंके क्वाथसे ज्वर और सूखी खांसी मिटतीहै (३६) इसके द्रवसारकी पिचरकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३७) इसकी पकीहुई गिरका गाढा कियाहुआ शर्बत बहुत अच्छा और सच्चा सारक है यह प्रभाव पैदा करनेकेलिये ५ तोले शर्वतमें ५ तोले दूध मिलाना चाहिये शर्वत ऐसा गाढा होना चाहिये जो चम्मचसे खाया जावे, पीनेके लायक नहीं होवे (३८) इस शर्वतमें बराबर दूध मिलाकर मसूड़ोंके असाध्य रोगमें पिलाना चाहिये (३९) पके हुए फलकी ताजी गिर सारक होतीहै, परंतु सूखनेपर कुछ ग्राही होजातीहै (४०) कच्चे बीलकी धूपमें सुखाई हुई गिर—पाचक, पेटकी शूल मिटानेवाली और गुदाकी त्रिवलीकी झिल्लीका बल बढानेवालीहै। जब इसका सेवन कियाजावे तब भोजनका समय बदल देना चाहिये और भोजनकी मात्रा घटादेनी चाहिये (४१) मन्दाग्नि और ज्वर मिटानेकेलिये इसका पका फल अच्छाहै (४२) अतिसार और आमातिसार बन्ध होनेके पीछेकी निर्वलता मिटानेकेलिये प्रातःकालके समय बीलका मुरब्बा भोजनके साथ खिलाना चाहिये (४३) इसकी जड़की छालके क्वाथसे छोड़ छोड़के आनेवाला ज्वर छूटता है (४४) इसकी जड़की छालका क्वाथ पिलानेसे हृदयका नियमसे अधिक फड़कना और पागलपन मिटजाताहै (४५) इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे आंखका दुखना और अधिक गीडोंका आना मिटताहै (४६) इसके कच्चे फलको सेक उसकी एक तोले गिरमें शक्कर मिलाके खिलानेसे संग्रहणी मिटतीहै (४७) इसको गुड़के साथ खानेसे रक्तातिसार मिटताहै (४८) इसकी और आमकी गुठलीकी गिरमें शक्कर और मधु मिलाकर चटानेसे वमन और अतिसार मिटताहै (४९) कच्चे फलकी गिरी और तिल बराबर ले, कल्क बना, उसमें दही और स्नेह पदार्थ मिलाकर खिलानेसे प्रवाहिका मिटतीहै (५०) इसके पत्तोंके रसका मर्दनकरनेसे शरीरकी दुर्गंध मिटतीहै (५१) इसकी छालके क्वाथमें मधु मिलाकर

पिलानेसे त्रिदोषकी वमन बन्ध होतीहै (५२) इसके फलकी गिरको पीस चांवलोंके पानीके साथ पिलानेसे गर्भवती स्त्रीकी वमन बन्ध होजातीहै (५३) बीलगिर और (अरणी) का काथ ठण्डा करके पिलानेसे गर्भवतीके वातरोग मिटतेहैं (५४) इसके फलकी गिरका अर्क पिलानेसे अतिसार मिटताहै (५५) बीलगिर और कत्था बराबर ले पीसके देनेसे अतिसार मिटताहै (५६) इसके पत्तोंके रसमें कालीमिरचका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे पाण्डुशोथ, बद्धकोष्ठ, अर्श और कामलारोग मिटताहै (५७) बीलगिरको गोमूत्रसे पीस, उससे जल और दूधके साथ तेल बना कर कानमें डालनेसे बधिरता मिटतीहै।

संख्या (४६३)

(सं०) विशल्यकृत्, आचरतिप्रयः, आस्फोतः, भूपलाशः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
				आयापाना हापरमाली		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Vallaris Heynei V Dichotoma	

स्थान—यह बहुधा हिन्दुस्थानके बागोंमें बोया जाताहै। दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थान, बंगाल, ब्रह्मा, सीलोन, सीलहट और हिमालयमें कमाऊं और गंगाके पश्चिमतक पैदा होताहै।

पहिचान—इसका वृक्षपर चढनेवाला बड़ा झाड़ होताहै। इसकी छाल खाखी रंगकी और चीकनी होतीहै। इसकी डंडीके दोनों ओर आमने सामने अंडेके आकारके लम्बे पत्ते लगतेहैं। इसके सुगंध युक्त, श्वेत रंगके पुष्प लगतेहैं। इसके कुछ लम्बा बड़ा फल लगताहै उसमें दो खानें होतीहैं उनमें लम्बे और रुएंदार बहुतसे बीज होतेहैं।

फूलने फलनेका समय— यह मार्गशीर्षसे चैत्रतक फूलताहै।

प्रयोग—(१) इसका दूध घाव और पुराने फोड़ोंकी चांदियोंपर लगाया जाताहै (२) भगंदरपर इसका लेप किया जाताहै (३) इसका रस लगानेसे चमड़ी जलजातीहै (४) पुराने घाव और हड्डियोंको बिगाड़नेवाले फोड़े और विशालीपर इसका दूधिया रस लगाया जाताहै (५) इसके लगानेसे शोथ घटके घाव जल्दी भरनेकी सूरत बनजातीहै ।

—— ० ——

संख्या (४९४)

(सं०) विषं, वत्सनाभः, कालकूटं, रक्तशृङ्गिकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सींगीमोरो	वचनाग	बछनाग	बचनाग	विष	सिंगियाविष	वसनाभि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वत्सनाभि	वत्सनाभि	वीष	विचनाग	Acenitum ferox	Indian aconite

स्थान—बचनाग हिमालयमें सिक्कमसे गढ़वाल तक होताहै। यह २ से ५ इंच लम्बा और ऊपरकी तरफ आध से डेढ इंच चौड़ा होताहै, इसकी जड़ही बचनागहै, दूसरोंकी जड़ इसकी प्रतिनिधिमें या धोखेमें देदेतेहैं । दक्षिण हिन्दुस्थानमें यह कई प्रकारका मिलताहै, जैसे, सफेद, लाल, काला और मीठा, इनमेंसे सफेद और लालको खानेकी औषधियोंके काममें लातेहैं ।

इसको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि इसके छोटे छोटे टुकड़ोंको एक थैली में बांध, दूधमें अधर लटकाके आध घंटे तक अच्छी आंच देवे। ऐसे ७ बेर औटानेसे इसका विष कम हो जाताहै। शुद्ध किये हुए बचनागकी एक रती के ४० वें हिस्सेसे ३२ वें हिस्से तककी मात्रा देनी चाहिये ।

प्रयोग—(१) बचनाग—अत्यन्त मधुर, चरपरा, कड़वा, कषेला, उष्ण, व्यवायी, विकाशी, योगवाही, मदकारी, रसायन, रूक्ष, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, विशद लघु, पुष्टिकारक और बलवर्द्धकहै । इसमें दूधिया बचनागसे गुण

अधिकहै (२) दूधिया विषकी अपेक्षा इसमें विष अधिकहै इसलिये इसको लेपादिकके काममें लाना चाहिये (३) यह उत्तेजकहै और दिलकी हरकतको कम करताहै (४) ज्वर और स्नायुसम्बन्धी मस्तकके रोगोंमें उपकारीहै (५) गलरोग, मंदाग्नि और गठियाको मिटाताहै (६) स्नायुपीड़ा और फोड़े फुन्सियों पर इसका लेप करतेहैं (७) इसके प्रयोगसे जीर्णज्वर छूट जाताहै (८) गठिया और छोटे जोड़ोंकी सूजन पर इसके तेलका मर्दन करतेहैं (९) हृदयके बढे हुए धड़कनेको घटानेके लिये यह दिया जाताहै, (१०) वातघ्न औषधियोंके साथ गठिया की पीड़ा मिटानेके लिये इसकी मात्रा देतेहैं (११) दालचीनी, गंधक, सोहागा और दूसरी चरपरी सुगंधित चीजोंके साथ इसकी बहुत थोड़ी मात्रा देनेसे बार २ आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (१२) स्नायु और पट्ठे सम्बन्धी गठियामें इसका लेप करतेहैं (१३)शरीरका बल बढ़ानेके लिये और बारीसे आनेवाले वेगको रोकनेके लिये इसका एक रतीके ८० वें भाग से ६० वें भाग तक देना चाहिये (१४) यह पुरुषार्थ बढाताहै (१५) इसका तेल निकाला जाताहै, जो बादीकी पीड़ामें मर्दन के काममें आताहै (१६) ज्वरमें बद्धकोष्ठवालेको बचनाग देतेहैं (१७) रसकपूर और हिंगुलू के साथ इसकी दस्तावर गोलियां बनातेहैं (१८) इसकी ताजी जड़की बहुत कम मात्रा देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१९) हृदय का धड़कना, कम करनेके लिये और स्नायुजालकी शक्ति बढानेके लिये बहुत थोड़ी मात्रा देनेसे यह बहुत गुणकारीहै परन्तु अधिक मात्रा देनेसे तीव्र विषका काम देताहै (२०) यह मूत्रातिसार और मधु प्रमेहमें बहुत उपकारी है। जिस दिनसे इसको लेनेका प्रारम्भ किया जाताहै, उसी दिनसे मूत्रका तोल और उसी प्रमाण से उसका मिठास कम होने लगताहै (२१) यह स्वतः वीर्य निकल जानेको बहुत रोकताहै और पक्षाघात और कुष्ठमें बड़ा उपकारी है। यह अपना प्रभाव दिखानेमें चूकता नहींहै दूसरा ललाई लिया हुआ सफेद बचनाग भी ऐसा ही गुणकारीहै। एक तोले सफेद या लाल जातिके बचनागमें ७ तोले अरारूट या गेहूंका आटा मिलाके खरलमें खूब महीन घोट कर एक से तीन रती तक की मात्रा धीरे धीरे बढाना चाहिये और दिनमें तीन बेर देना चाहिये (२२) सांप और बिच्छूका विष उतारनेके

लिये उत्तेजक औषधियों के साथ इसकी कुछ अधिक मात्रा देनी चाहिये (२३) जो कूट किये हुए ढाई तोले वचनागको अलसीके आधसेर तेलमें ओटाकर उस तेलका मर्दन करनेसे मात्र प्रकारकी बादीकी पीड़ा मिटतीहै और खांसी और श्वास मिटानेके लिये भी इसी तेलको पानपर थोड़ासा लगाके खिलातेहैं (२४) जिसके मूत्रकी शंका न रुकती हो उसको वचनाग सेवन कराना चाहिये (२५) ज्वरकी उष्मा कम करनेके लिये यह बहुत उपकारीहै (२६) इसको नींबूके रसके साथ पीस लेप करनेसे गडमाला मिटतीहै (२७) इसका लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२८) इसको मनुष्यके मूत्रमें पीस, अचेत मनुष्यको चैतन्य करनेके लिये उसके मस्तकके केश मुंडवा, पछने लगाके मलना चाहिये ।

संख्या (४६५)

(सं०) विषभेदः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दूधियो सी गंमिरो	दूधिया बछनाग	दूधियो बछनाग				वसनाभि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		वीष		Aconitum Napellus	This is the true Monk's hood or wolve's bane Aconite

स्थान—दूधिया वचनाग मनीपुरके उत्तरमें, आसामके आस पास और हिमालयमें बहुत ऊंचा पैदा होताहै ।

पहिचान—यह चार प्रकारका होताहै ।

प्रयोग—(१) लू की गर्मी कम करनेके लिये इसकी बहुत कम मात्रा देनी चाहिये (२) फैंफड़ेके रोग अर्थात् गुजराती रोगमें इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होताहै (३) मुखकी स्नायुसम्बन्धी पीड़ामें इसका लेप करतेहैं ।

संख्या (४६६)

विषमंडलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	पिंडार	नागदमनी	नागदडन	नागदौन		लक्ष्मीनारायन चेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
विषमुंगिल				Crinum asiaticum C toxicarium	

स्थान—विषमंडलके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं।

प्रयोग—(१) इसके रसदार कुछ कड़वे पत्तोंको (जो प्रायः दो इंच चौड़े और तीन फुट लम्बे होतेहैं) कूटकर थोड़े एरंडके तेलमें मिलाके लगानेसे विषैली अथवा दूसरे प्रकारकी पित्तशोथ (जो अंगुली या अंगूठेके अंतके घेरवेमें होतीहै) मिट जातीहै (२) इसके पत्तोंका अर्क कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (३) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे वमन होतीहै (४) इसकी जड़को चूंस थोड़ासा रस निगलनेसे वमन होतीहै (५) इसकी साढे सात मासेसे सवा तोले तक ताजी जड़ या शाखाको महीन पीस उसका अर्क निकालके पिलानेसे थोड़ी देर पीछे वमन होतीहै (६) इसकी थोड़ी मात्रासे दस्त और पसीना होताहै । इसके प्रयोगसे कोई उपद्रव नहीं होताहै (७) कतरके सुखाये हुए कंदके चूर्णकी फकी देनेसे वमन होतीहै परन्तु गीले कंद से सूखे कंदकी मात्रा दुगुनी लेनी चाहिये (८) इसके शर्बतमें ताजेपोधे जितने गुणहैं (९) इसके पत्तों पर सरसोंका या नारियलका तेल चुपड़कर सूजी हुई जोड़ों पर बांधना चाहिये (१०) इसके पत्तोंको अग्निपर तपा हथेलीमें मल, उनका अर्क लेप करनेसे वादीकी कानमें निचोड़ देनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (११) इसके पत्तोंके रसका पीड़ा मिटतीहै ।

संख्या (३६७)

(सं०) बीजपूरः, फलपूरः, रुचकः, मातुलुङ्गकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बिजारो	बिजौरा	बीजोरा(रुं	महाळुंग	टावालेबुगाछ	बिजौरानिंबू.	नारदब्ब

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कडारानार्तीकायु	मादळरणु	उत्रज,उत्रुज		Citrus medica	The citron Cedrat tree, Adam's apple Citrus

स्थान— बिजौरा हिन्दुस्थान के उष्ण और आर्द्र देशोंमें बहुत बोया जाताहै इस वृक्षके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

(१) इसका तेल निकालनेकी यह रीतिहै कि इसके पुष्पोंका भभकेमें अर्क निकालनेसे उसके साथ बहुत सुगन्धयुक्त तेल निकल आताहै (२) बिजौरेके छिलकेमेंसे भी ऐसेही या किसी यंत्र (सांचे) में दबाकर तेल निकालतेहैं ।

प्रयोग—(१) बिजौरा खट्टा, रसमें मधुर, दीपन, पचनेमें हलका, रोचक, उष्ण और तीक्ष्णहै (२) बिजौरेका छिलका उष्ण, रूक्ष और बलवर्द्धकहै (३) इसकी गिरी रूक्ष और शीतलहै (४) इसके बीज पत्ते और पुष्प उष्ण और रूक्षहैं (५) इसका रस चित्त प्रसन्न करनेवाला है (६) विष खाये हुए मनुष्यको इसका फल खिलानेसे उसकी आंतों पर ऐसा भारी प्रभाव होजाताहै कि जिससे विष बाहिर निकल जाताहै (७) इसके सेवनसे श्वासकी दुर्गंध मिटतीहै (८) इसके फलका अर्क खैंचके पिलानेसे शरीर शिथिल होजाताहै (९) इसके छिलकेका अचार बनाके खानेसे मसूड़ोंका असाध्य रोग मिटताहै (१०) आमातिसार मिटानेकेलिये इसका अचार खिलातेहैं (११) इसके ८० बीजोंकी गिर निकाल उसमें ५ तोले शक्कर मिलाकर खानेसे हिचकी मिटतीहै (१२) इसके ४० बीजोंकी गिरीमें दुगुना गुड़ मिला, गोली बनाके, मासिकधर्मके दिनोंमें तीन दिन तक खिलानेसे गर्भ रहताहै । इसमें दूध चांवलोंका पथ्य देना चाहिये (१३) ४० बीजोंकी गिरको

हरड़के साथ खानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (१४) इसके २१ बीजोंकी गिर बालकको खिलानेसे दांत जल्दी निकल आतेहैं (१५) ८० बीजोंकी गिर और २० मासे पीपलको पीस गोलियां बना २१ दिन तक खानेसे श्वास मिटताहै (१६) १०० बीजोंकी गिर और १०० कालीमिरचको खरल कर नींबूके रसके साथ पिलानेसे सब प्रकारके विष उतरतेहैं (१७) ६ बीजोंकी गिर और ४ मासे सोंठको सवातीन तोले अदरकके रसमें खरल कर गोलियां बनाके खिलानेसे अफारा मिटताहै (१८) ५० बीजोंकी गिर और ५० पीपलको सवातीन तोले घृतमें ४८ दिन तक पीनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै (१९) इसकी केसर और सैंधेनमकको मधुके साथ चटानेसे जीभ, तालु और गलेका सूखना मिटताहै (२०) इसकी जड़ या पुष्पोंको पीसकर चांवलोंके धोवनके साथ पिलानेसे नकसीर बन्ध होतीहै (२१) इसकी जड़, चांवलोंकी खीलें, सैंधेनमक और पीपलके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे वमन बन्ध होतीहै (२२) इसके रसमें कालानमक और मधु मिलाके पिलानेसे हिचकी मिटतीहै (२३) इसकी केसरमें बराबर सैंधानमक या मधु मिलाकर एक तोले भर खानेसे मुखकी विरसता मिटतीहै (२४) इसके रसमें मधु मिलाकर पीनेसे दाह मिटता है (२५) इस के रस में गुड़ मिला के पीनेसे कफ और वातकी शूल मिटतीहै (२६) इसके रसमें दूध और मधु मिलाकर पिलानेसे पार्श्व, हृदय, बस्ति और कोष्ठ इन सबकी वातशूल मिटतीहै (२७) इसके रसमें सैंधानमक मिलाके पिलानेसे पथरी मिटतीहै (२८) इसकी केसरको कांजीके साथ पीसके लेप करनेसे मसूरिका पक जातीहै (२९) इसकी केसरका रस कानमें डालनेसे कर्णशूल मिटतीहै (३०) इसकी जड़ और मुलहटीको मधु और घृतमें मिलाकर चटानेसे बालक सुखसे पैदा होजाता है (३१) बिजोरे का अवलेह चटानेसे उदरके रोग और बादीका उन्माद मिटताहै ।

संख्या (४९८)

(सं०) मधुकर्कटी, मधुबीजपूरः, मधूली, महाफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
		पंपैयो	गोड़महालुंग	वातावितेबु	गिद्दानिबू	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
			लीमूनेशरबती	Citrus Var 4 Limetta, C nobilis	The sweet lime of India

स्थान—यह हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोया जाताहै, विशेषकरके दक्षिण हिन्दुस्थान और नीलगिरी पहाड़में होताहै।

प्रयोग—(१) ज्वरकी घबराहट मिटानेकेलिये इसकी केसर खिलातेहैं (२) इसके प्रयोगसे कामला रोग मिटताहै (३) इसका ताजा फल खानेके काममें आताहै। इसका अचार और मुरब्बा बनातेहैं।

संख्या (४९९)

(सं०) वीरवृक्षः, अश्मरीहरः, वीरतरः, वृहद्वातः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
(अजमेर,में खेड़ी	विलवान्तर वरवल	वेलतरु	वेलतूर	वीरतरु		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Dichrosta Chyscinerea mimosa C	

स्थान—खेड़ीके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थान, पश्चिम और मध्य हिन्दुस्थान, राजपूताना, मद्रास अहाता और सीलोनके सूखे पथरीले पहाड़ोंमें होतेहैं। गंगाके किनारे फतेहगढ़ तक, जैपुरके पास और टाटगढ़के पास मेरवाड़ेके डूंगरोंमें भी होतेहैं।

पहिचान–(१) इसका झाड़ या छोटा वृक्ष होताहै, इसके सीधे, दृढ़ और तीखे कांटे लगतेहैं। इसके छोटे पत्तोंके १२ से १५ जोड़े लगतेहैं। इसके ऊपरके उपजाऊ पुष्प पीले रंगके और नीचेके वंजड़ पुष्प सफेद, बैंजनी या गुलाबी

रंगके होतेहै । इसके २ से ८ फलियोंके गुच्छे लगतेहैं। वे फलियां २, ३ इंच लम्बी, चौथाई इंच चौड़ी और विना क्रम मुड़ी हुई होतीहैं। १ फलीमें १०, १५ वीज निकलतेहैं । इसमेंसे एक प्रकारका रंग निकाला जाताहै ।

उष्णकालमें इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग-(१)यह—चरपरा, उष्ण, पचनेमें कड़वा, ग्राही, और अग्निवर्द्धकहै । मूत्रकृच्छ्र, पथरी, संधियोंकी शूल, योनी रोग और मूत्राघातको मिटाताहै (२) इसकी नर्म टहनियोंको कूट पीसके दुखती हुई आंखपर लेप करतेहैं ।

संख्या (५००)

वूई ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजावी	तैलङ्गी
वूई			कपूर मधुरा	चय	वूई कल्लन	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Aerua lanata Achyranthes lanata	

स्थान---वूई हिन्दुस्थानके वहुतसे जंगलोंमें होतीहै ।

इसके पुष्पोंमें मीठी गंध आतीहै ।

प्रयोग--(१) ललाट पर इसकी जड़का लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२) एक थैलीमें वूईकी कलियें भर कर उसको पैरके नीचे विछी हुई रखनेसे पैरकी फूटनी मिटतीहैं (३) चूहोंको इसके वीज अतिप्रियहैं ।

संख्या (५०१)

(सं०) वृक्षाम्लं, फलाम्लकं, तिन्तिडीकं, चुक्राम्लम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजावी	तैलंगी
डांसरघा	विषाम्विल		आमटै	तेंतुल	डासरा समाकदाना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Garcinia indica G purpurea	

प्रयोग—(१) पकेहुए डांसरे—खट्टे, पचनेमें भारी, ग्राही, चरपरे, कषेले, लघु, उष्ण, रोचक, दीपन, रूक्ष, कफ और वातवर्द्धक और कृमिनाशकहैं। तृषा, संग्रहणी, गुल्म, शूल, हृद्रोग और अर्श को मिटातेहैं (२) इसके कचे फलका स्वाद खट्टा होताहै और पके हुएका खटमीठा होताहै।

संख्या (५०२)

(सं०) वृद्धदारकः, छागलांत्री, जुंगा, अतरुणदारुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजावी	तैलङ्गी
बिधायरो	विधारा	वरधारो	वरधारा	विद्धडक	भिधरा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Gmelina asiatica G parvifolia Rourea santaloid	

स्थान—विधारा—दक्षिण हिन्दुस्थान और सीलोनके जंगलोंमें होताहै और बंगालमें बोया जाताहै।

पहिचान—इसका बड़ा झाड़ होताहै। इसके बहुतसी शाखें फूटतीहैं। इसकी छोटी डालियोंके कांटे लगतेहैं। इसकी डालियोंके अन्तमें पीले पुष्प लगतेहैं। इसके आध इंच लम्बा फल लगताहै।

फूलने फलनेका समय—इसके बारह महीने पुष्प लगते रहतेहैं।

प्रयोग—(१) यह चरपरा, कड़वा, कषेला, उष्ण, रसायन और सारकहै (२) गठिया और स्नायुजालके रोगमिटानेकेलिये विधारेका प्रयोग किया जाताहै (३) विधारेमें चेप बहुत होताहै (४) इसके प्रयोग से रुधिर शुद्ध होताहै (५) शरीरकी विगड़ी हुई प्रकृतिको सुधारनेकेलिये दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (६) इसके पत्तोंको पानीमें

भिगोनेसे पानी गाढा होजाताहै उसमें मिश्री डालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र अथवा वैसेही दूसरे रोग मिटतेहैं (७) मूत्राशयकी दाह और प्रतिश्याय मिटानेकेलिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (८) शतावरके साथ विधारेका क्वाथ करके पिलानेसे गठिया मिटतीहै (९) त्रिफला और विधारेका क्वाथ पिलानेसे उपदंश मिटताहै (१०) इसके चूर्णको कांजीके साथ पीनेसे श्लीपद मिटताहै (११) इसकी जड़के चूर्णके शतावरीके स्वरसकी ७ भावना देकर उसमेंसे एक तोले भर घृतके साथ नित्य १ महीने तक चाटनेसे स्मरणशक्ति और बुद्धि बढतीहै (१२) दूसरी औषधियोंसे भी पानी जमकर गाढ़ा होजाताहै परन्तु उसको हिलानेसे ढीला पड़ जाताहै इससे जमाया हुआ पानी ढीला नहीं पड़ताहै ।

———·०·———

संख्या (५०३)

(सं०) वृन्ताकः, निद्रालुः, शाकश्रेष्ठा, नीलफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बैंगण	बैंगन, भटा	वंताकड़ी	वांगें, वांगी	वेगुनगाछ	बैंगन	–

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
–		बाजजान	बादंजान	Solanum melongena S. Esculentum	Egg-plant Brinjal

स्थान—बैंगन हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं ।

पहिचान—बैंगन ४ प्रकारके होतेहैं, इसके पत्ते जहरी होतेहैं ।

प्रयोग—(१) बैंगन-मीठा, चरपरा, कड़वा, उष्ण, पचनेमें चरपरा, सलौना, दीपन, रोचक और पचनेमें हल्का है । वीर्य्य, रुधिर और हृदय के बल को बढाता है (२) ज्वर, वात, कफ, हृल्लास, कास और अरुचिको मिटाताहै (३) कच्चा बैंगन कफ और पित्तको मिटाताहै (४) पका बैंगन पित्तको बढाता है और पचनेमें भारी है (५) बैंगनका भुरता पचनेमें बहुत हल्का और दीपन है । कफ, मेद और वादीको मिटाताहै (६) बैंगनका शाक

तेलमें बनानेसे पचनेमें भारी होजाताहै (७) बारह मासिया बैंगन-त्रिदोष और रक्तपित्तको मिटाताहै (८) मारू बैंगन-सारक, मधुर और पचनेमें हल्काहै (९) इसके भुरते के रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे निद्रा आजातीहै (१०) बैगन और पोस्तके डोडेके काथमें हाथ पैरोंको भिगोनेसे पुस्तवाय मिटतीहै (११) इसकी जड़को पानीके साथ घिसकर अंजन करनेसे जाला कटताहै (१२) धतूरेका विष उतारनेके लिये बैंगनोंके टुकड़ोंको पानीमें मलकर पिलाना चाहिये (१३) इसके प्रयोगसे योनीका ढीलापन मिटताहै (१४) बैंगनके बीज उत्तेजक होतेहैं (१५) बैंगनका शाक और भोजनके कई प्रकारके पदार्थ बनाये जातेहैं ।

संख्या (५०४)

(सं०) वृश्चिकाली, वृश्चिपत्री, विषघ्नी, युग्मफला ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बिछुटी	बिछवाघास	खाजवणी	वृश्चिकाली	बिछुटि।टी)	बिछुटि,	तेलुमुन्ना

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तेलकोंडि	तेलुकोंडीगिड़			Tragia involucrata	

स्थान—बिछुवा हिन्दुस्थानके सूखे स्थानोंमें सब ठौर होताहै ।

प्रयोग—(१) वृश्चिकाली-कड़वी, चरपरी पिच्छिल, खट्टी, उष्ण, और सारकहै (२) इसकी जड़का काथ पिलानेसे ज्वर सम्बन्धी रोग मिटते हैं (३) जड़को घिसके लगानेसे त्वचाकी खुजली मिटतीहै (४) शरीर की प्रकृतिको सुधारनेके लिये और बदलनेके लिये बिछुवका प्रयोग किया जाताहै (५) वीर्य्य सम्बन्धी पुराने रोगोंको मिटानेके लिये इसको साढे बारह २ तोले काथ दिनमें दो बेर पिलाना चाहिये (६) इसकी जड़को घिसके लगानेसे कोढ़ मिटताहै (७) इसके सूखे पत्तोंको सोंठ और कायफलके साथ पीसकर नस्य देनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (८) इसकी जड़को घिसकर लेप करनेसे

नारू निकल जाताहै । (९) तुलसीके रसमें इसकी जड़को पीस लेप करनेसे खाज युक्त फोड़े मिटतेहैं (१०) जब ज्वर में हाथ पैर ठंण्ढे हो जातेहै तो इसकी जड़को महीन पीसके मर्दन करतेहैं क्योंकि यह स्वेद जनकहै (११) हाथ पैरोंकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके काथका मर्दन करना चाहिये (१२) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसकी जड़का काथ पिलातेहैं (१३) ज्वरका वेग घटाने के लिये इसका साढे बारह बारह तोले हिम, फांट या काथ दिनमें दो वेर यथा दोष पिलाना चाहिये (१४) इसके फलको पानीके साथ गंजवालेके शिर-पर रगड़ना चाहिये (१५) इसकी जड़को दूधके साथ औटाके पिलानेसे रूक्ष कास मिटताहै ।

संख्या (५०६)

(सं०) वेतसः, विदुलः, वञ्जुलः, अम्रपुष्पः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
वेत	वैंत	नेतर	वेत	वेत, वेत्र	बैंत	हव्वे

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वंजि	वंजि	खीरज़ा	खिरजा	Calemus Rotang C Roxburghu	Cane

स्थान— वेतके पेड़—बंगाल, आसाम, दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोनके उष्णभाग, देहरादूनके पूर्व भाग, शिवालिकके जंगल, नैपाल, कमाऊं, गढ-वाल, खेड़ीघाट, गोंडा, अवध, सिकमकी तराई, सतपुड़ाकी घाटी और पश्चि-मघाटमें होतेहैं । यह निपजाऊ तर जमीनमें हुआ करतीहै ।

पहिचान—इसकी डालियां पतली और लम्बी होतीहैं वे वृक्षपर चढ जातीहैं । इसके कुछ चन्दनियां रंगके फल लगतेहैं उनमें आधर इंच लम्बे बीज निकलतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—वर्षाऋतुमें इसके पुष्प लगतेहैं और सर्दीके दिनोंमें इसके फल पकतेहैं ।

प्रयोग-(१) यह कपेली, शीतल, कड़वी और चरपरीहै। कफ, वात, पित्त, दाह अर्श, शोथ, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, विसर्प, अतिसार, रुधिरविकार, योनीरोग, तृषा, व्रण, प्रमेह, रक्तपित्त, कुष्ठ, और विषका नाश करतीहै (२) इसके अङ्कुर सलौने पचनेमें हल्के, चरपरे और उष्णहैं कफ और वातको मिटातेहैं (३) इसके पत्ते भेदक, कपेले, पचनेमें हल्के, शीतल, कड़वे, चरपरे और वातलहैं (४) रुधिरविकार और कफ पित्तको मिटातेहैं (५) इसके बीज कपेले, मीठे, खट्टे, रूक्ष और पित्त बढानेवालेहैं। रुधिरविकार और कफको मिटातेहैं। इसके फलकी गिर और छोटी कोमल डालियां खानेके काममें आतीहैं।



संख्या (५०६)

(सं०) जलवेतसः, वानीरः, नादेयः, परिव्याधः।

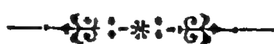
मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जलवेत	जलवेत	जलवेतस	जलवेतस	जलवेत	जलवैंत	प०म्रइ०ो

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नीरवंजि	नीरवजि			Calamus fasciculatus	

स्थान—जल वेतके वृक्ष बंगाल, ओडीसा, चटगांव और ब्रह्मा आदि देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—जलवेत छोटी अवस्थामें खड़ी रहतीहै और जब बढ़ जाती है तब आश्रय ढूंढनेके लिये झुककर वृक्ष और झाड़ियों पर चढ़तीहै।

प्रयोग—(१) यह–शीतल, कड़वी, कपेली, वातल, ग्राही और रूक्ष होतीहै व्रणको शुद्ध करतीहै। पित्त, रुधिरविकार, व्रण और कफको मिटातीहै



संख्या (५०७)

(सं०) वैडूर्यं, केतुरत्नं, विदूरजं, अभ्ररोहम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लहसणियो	लहसुनिया	लसणियो	वैडूर्यरत्न	वैडूर्य	लहसुनिया	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
					Cat's eye.

गुण—(१) लहसुनिया-उष्ण और खट्टा होताहै। रक्तपित्त, पैत्तिकशूल, गुल्म, उदररोग और कफ वातको मिटाताहै। बुद्धि, आयु, बल और अग्निको बढाताहै और रसायन है।

संख्या (५०८)

(सं०) बोलं, गंधरसं, व्रणारिः, रक्तापहम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बीजाबोल	बीजाबोल	हिराबोल	बोळ	गंधरस	बीजाबोल	बोलमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
करियपोळ	मूमाम्बर	मुर्र, मुर		Balsamodendron myrrha	Myrrh.

स्थान—बीजाबोलके वृक्ष हिन्दुस्थानके पश्चिमभागमें पैदा होतेहैं।

प्रयोग—(१) यह-शीतल, दीपन, पाचन, मधुर, चरपरा और कड़वा है (२) पुराने बिगड़ेहुए और देरीसे भरनेवाले फोड़ोंको इसके क्वाथसे धोने चाहिये (३) मुख और मसूड़ोंके छालोंको मिटानेके लिये इसको मुंहमें रखना चाहिये (४) इसके कुल्ले करनेसे गलेके छाले और पीड़ा मिटतीहै (५) इससे सूखी खांसी तर होजाती है (६) वृद्ध मनुष्योंका श्वास मिटानेके लिये इसका प्रयोग अच्छाहै (७) आंतोंके कीड़े मारनेके लिये इसको एरंडके तेलके साथ देना चाहिये (८) इसका लेप करनेसे ठण्डी गांठें बिखर जातीहैं (९) इसको स्त्रीके या गधीके दूधमें गलाके आंखमें डालनेसे आंखकी पीड़ा मिटतीहै और गीड आना बन्ध होजाताहै (१०) अपस्मार मिटानेवाली औ-

पथियोंमें इसको मिलानेसे उनकी शक्ति बढ़जातीहै (११) शोरेके हल्के तिजाब में इसको मिलाकर लगानेसे पुराने बिगड़े हुए फोड़े मिटतेहैं (१२) श्वासनलिकाके बिगड़ेहुए द्रवके निकासको रोकनेकेलिये इसकी फकी देनी चाहिये (१३) बीजाबोलको गुड़में मिलाकर देनेसे स्त्रियों के दूध बढ़ता है (१४) इसका लेप करनेसे अंडकोषकी सूजन उतर जातीहै (१५) यह उष्ण और रूक्षहै (१६) इसको गुलाबके गुलकंदमें मिलाके देनेसे ढीलेमलके एक दो वेग होजातेहैं (१७) सोंठके साथ फकी देनेसे मन्दाग्नि मिटतीहै (१८) इसको मिट्टीके बरतनमें पानीके साथ घिस लपटे जैसा गाढा करके चटानेसे पेटका अफारा मिटताहै (१९) चिरायतेके अर्कके साथ इसकी फकी देनेसे ज्वर छूटताहै (२०) इसको और हल्दीको घी और मधुमें मिलाकर चटानेसे हलीमक रोग मिटताहै (२१) तिलोंके क्वाथके साथ इसकी फकी देनेसे स्त्रियोंका कष्टसे मासिकधर्म होना मिटजाताहै (२२) इलायची, वंशलोचन और बोलको मधुके साथ चटानेसे शरीरकी निर्बलता मिटतीहै (२३) ४ मासे बीजाबोलको रात भर पानीमें भिगो उसके नितरे हुए पानीमें थोड़ी मिश्री मिलाकर प्रातःकाल पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२४) इसको सिरकेमें पीसकर मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (२५) बीजाबोल और लौंग बराबर ले, महीन पीस वस्त्रमें बांधके गर्भाशयके मुंह तक पहुंचानेसे गर्भाशय शुद्ध होजाताहै ।

संख्या (५०६)

(सं०) व्रीहिः, तण्डुलः, शालिः, षष्टिकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चांवल	चाँवल	चोखा	साळ	आशुधान्य	चाँवल	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		उरुज़	बिरंज	Oryza Sativa	Rice.

स्थान—चांवल हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

चांवल कई प्रकारके होतेहैं।

प्रयोग—(१) जियादे गर्मी पड़नेसे विना समयके पके हुए नये चांवलोंको खानेके काममें लानेसे मंदाग्नि होकर विषूचिका होनेका बड़ा भारी भयहै। जैसेकि नये चांवलोंको खानेसे सन् १८१७ ई० में बडी भारी विसूचिका फैली थी, इसके पहिले भी हिन्दुस्थानमें विसूचिकाका रोग होताथा, परंतु इसके पीछे प्रतिवर्ष यह रोग फैलने लग गया। नये चांवल रोग पैदा करतेहैं इसलिये पुराने चांवल भोजनके काममें लाने चाहियें (२) बंबईके पास जल युक्त स्थानोंमें जो विना बोये चांवल पैदा होतेहैं उनको देवभात कहतेहैं, वे औषधि के प्रयोगमें काम आतेहैं (३) रोगी और निर्बल मनुष्यको चांवलोंका पथ्य दिया जाताहै (४) भुस्सी समेत चांवलोंको भिगोके सेक लेवे। पीछे उनको कूट, भुस्से से अलग कर दहीके साथ खिलानेसे आमातिसार मिटता है (५) चांवलोंका मांड ज्वरमें और पित्तशोथमें बड़ी शान्ति करनेवालाहै (६) मूत्राघात और उसी प्रकारके रोगोंमें चांवलोंके मांड में शक्कर मिलाके पिलाना चाहिये (७) मांडमें नींबूका रस और शक्कर मिलाके अथवा और कोई रोचक चीज मिलाके खिलाने और पिलानेसे अरुचि मिटतीहै (८) गुदामें मांडकी पिचकारी देनेसे आंतोंकी पीड़ा मिटतीहै (९) चांवलोंका पुल्टिस अलसी जितना काम देताहै (१०) जौंके औटाये हुए जलकी ठौर चांवलोंका मांड दे सकतेहैं (११) अतिसार मिटानेके लिये चांवलोंका मांड पिलाना चाहिये (१२) चांवलोंको तरबूजमें भर उसका मुंह बन्द कर ७ दिनतक पड़ा रखकर उसमेंसे चांवल निकाल सुखा पीसके पीठी करनेसे मुखकी झांई मिटतीहै (१३) चांवलोंको घीके साथ पीस कर लेप करनेसे विसर्प रोग मिटताहै (१४) चांवलोंके आटेके थूहरके दूध की भावना दे उसके पूए निकालके ७ दिनतक खानेसे उदर रोग मिटतेहैं।

संख्या (५१०)

(सं०) शंखः, महानादः, पावनध्वनिः, कंबुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शख	शख	शख	शखो	शांक्, शख	शख	शखमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शख	शख				Conch Monovalve shell

दक्षिणावर्त्त और वामावर्त्तके भेदसे शंख दो प्रकारके होतेहैं, दक्षिणावर्त्त शंख बहुत कम मिलताहै, इसलिये वामावर्त्त शंखही औषधियोंके काममें आताहै, निर्मल और चन्द्रमाके समान उज्ज्वल चमकदार शंख औषधियोंके काम में लाना चाहिये।

शंखको शुद्ध करनेकी रीति यहहै कि इसके छोटे २ टुकड़े कर पोटलीमें बांध एक हंडीमें खटाई और कांजी भर उसके बीचमें उस पोटलीको लटका उस के नीचे चार पहर तक मंद अग्नि देना चाहिये। पीछे उसमेंसे निकाल उष्ण जलसे धो सुखाके रख छोड़ना चाहिये।

शंख भस्म बनानेकी रीति—शंखको अग्निमें लाल कर २ नीबूंके रसमें बुझाना चाहिये, जबतक वह बिखरके टुकड़े २ न हो जाय तबतक बुझाते रहना चाहिये, पीछे एक सकोरेमें गवारपाठेकी गिरके बीचमें उसको रख उसका मुंह कपड़ मिट्टीसे बन्ध कर, सुखा, गजपुटकी अग्निमें भस्म कर लेना चाहिये।

प्रयोग—(१) शंख भस्म—सलौनी, शीतल और ग्राही होतीहै, संग्रहणी, नेत्रका फूला, पेटकी पीड़ा और मुखपरकी जवानीकी फुंसियोंको मिटातीहै (२) शंख भस्म और सेंधानमक बराबर ले शहदमें मिलाकर एक टंककी मात्रा देनेसे संग्रहणी मिटतीहै (३) शंखभस्मकी मात्रा उष्ण जलके साथ देनेसे पंक्तिशूल मिटतीहै (४) इसका शहदके साथ अंजन करनेसे अर्जुन रोग मिटताहै (५) शंख चूर्ण और मूलीकी भस्मका लेप करनेसे कफकी ग्रन्थी और अर्बुद मिटताहै।

———o———

संख्या (५११)

(सं०) शंखजीरकं, कम्बुजीरः, श्लक्ष्णजीरः, श्लक्ष्णमृदा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
घीयेमाटो पत्थरपक	संगजराहत	शंखजीरुं	शंखजीरें		सेलखडी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हजरुल् एराबी	संगेजराहत	Silicate of magnesia	Soap stone.

प्रयोग—(१) यह शीतलहै । दाह और रुधिरस्रावको मिटाताहै (२) इसका लेप करनेसे शोथ, विसर्प, कक्षा के रोग और रक्तविकार मिटते हैं (३) इसकी फक्की लेनेसे व्रण और दाह मिटतीहै ।

———— ०————

संख्या (५१२)

(सं०) शंखपुष्पी, कंबुपुष्पी, शंखाह्वा, शंखमालिनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शंखावली	शंखाहुली	शंखावली	शंखोली	शङ्खाहुलुङ्	कौडियाली	शंखपुष्पि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	गुंव्वाचि			Evolvulus alsinoides E hirsutus	

स्थान—शंखाहुली हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतीहै ।

प्रयोग—(१) शंखाहुली–उष्ण तीक्ष्ण, सारक, कषैली, चरपरी, शीतल, पाचक, मनके रोगोंको हरनेवाली, रुधिर शुद्ध करनेवाली, स्मरणशक्ति और बलबढानेवालीहै (२) दूधके साथ इसकी फकी देनेसे स्नायुजालकी शक्ति बढ़तीहै (३) इसका घी बनाके खिलानेसे पागलपन मिटताहै (४) इसके योगसे कई प्रकारके घी बनाकर पीनेसे अपस्मार मिटताहै (५) इसका २॥ तोला ताजा रस पिलानेसे सब प्रकारके उन्माद रोग मिटतेहैं (६)

इसके पंचांगको ठंडाईकी तरह पीस दूधमें छानकर पिलानेसे स्नायुजालकी निर्वलता मिटतीहै (७) दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (८) इसको ओटाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (९) इसके ८ मासे स्वरसमें वरावर मिरचका चूर्ण और मधु मिलाकर पिलानेसे वमन बन्ध हो जाताहै (१०) दूधके साथ इसका सेवन करनेसे कई प्रकारके रोग मिटतेहैं (११) इसकी जड़को कंठमें बांधनेसे कंठमाला मिटतीहै (१२) इस की जड़के काथसे बच्चोंका सतत ज्वर छूट जाताहै (१३) इसके पत्तोंकी बीड़ी बनाके पीनेसे कास और श्वास मिटताहै (१४) यह भीतरके अर्शको मिटातीहै ।

संख्या (५१३)

(सं०) शठी, द्राविडकः, कर्चूरकः, कल्पकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कचूर	कचूर	कचूरो	कचोरा	गंधशठी	नरकचूर	गंदूला कचोरमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	गंटकचोरा	ज़रम्बात	इरकुलकाफूर	Curcuma zedoaria C Zeram	The long & the round zedoary

स्थान—कर्चूर हिन्दुस्थानके बहुतसे बागोंमें बोया जाताहै ।

प्रयोग-(१) कचूर—कड़वा, चरपरा, उष्ण, लघु, रोचक, दीपन, सुगन्धयुक्त और उत्तेजक होताहै और पेटकी बादीकी पीड़ा मिटाताहै (२) इसके चूर्ण की फकी लेनेसे पेटकी शूल मिटती है (३) चोट और मोचपर इसका लेप किया जाताहै (४) मुखका चिप चिपाट मिटानेके लिये इसको चूसतेहैं (५) बच्चा होनेके बाद स्त्रियोंकी निर्वलता मिटानेके लिये जो पाकादि बनातेहैं उनमें कचूर मिलाया जाताहै (६) सर्दी या प्रतिश्याय मिटानेके लिये, कचूर पीपल और दालचीनीके काथमें मधु मिलाके पिलातेहैं (७) शरीरकी बादी की पीड़ा मिटानेके लिये इसका लेप करतेहैं (८) इसका काथ पिलानेसे

पेटकी बादीकी पीड़ा मिटतीहै (६) इसको फिटकरीके साथ पानीमें पीसके सन्धियोंकी चोट और चोटसे नीलपड़ जाने पर लेप करतेहैं (१०) खांसी और कफको मिटानेके लिये इसके छोटे२ टुकडोंको मुखमें रखके चूसना चाहिये (११) सूखी खांसी मिटानेके लिये इसके पौने चार मासे चूर्णकी फक्की देनी चाहिये (१२) कचूर-ठंढा, औषधिकी तीक्ष्णताको कम करनेवाला और बल बढानेवालाहै (१३) गलेका कफ मिटानेके लिये गवैया लोग कचूरको चूंसा करतेहैं (१४) अपशब्दकी नलीके ऊपरके भागकी और मल की दाहको मिटानेके लिये इसको जलमें पीसकर पिलाना चाहिये (१५) काली मिरच, मुलहटी और मिश्रीके साथ कचूरको ओटाके पिलानेसे कफ और श्वासकी नलिकाके रोग मिटतेहैं (१६) विषूचिकामें इसका काथ पिलातेहैं (१७) इसका गुनगुना लेप लगाकर ऊपर पान बांधनेसे अंडकोष की सर्दीकी सूजन उतर जातीहै (१८) इसको दांतोंमें रखनेसे दांतोंमें रोग नहीं होताहै (१९) इसकी मूंग प्रमाण गोलियां बनाके २-३ गोली देनेसे हृल्लास और वमन मिटतीहै (२०) इसको पीसकर लगानेसे मुहांसे मिटतेहैं इसकी जड़ हल्दी जैसी पीली होतीहै ।

संख्या (५१४)

(सं०) शणः, माल्यपुष्पः, वमनः, त्वक्सारः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सण	शन	शण, सण	ताग	शनगाछ	सणी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Crotolaria juncea C tenuifolia	Sunn or san hemp Indian hemp False, Brown or Flax hemp

स्थान— सनके वृक्ष हिमालय से सीलोन तक हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं ।

प्रयोग—(१) सण--खट्टी, कषैली और उष्ण होतीहै (२) वात, कफ और आलस्यको मिटातीहै (३) यह वामक और आमनाशकहै (४) जिस

के समयपर बालक होनेमें पीड़ा अधिक हो, और विलम्ब हो, उसको इसका सेवन कराना चाहिये (५) इसके सेवनसे मलकी रुकावट मिटतीहै (६) जमेहुए रुधिरपर इसका लेप करनेसे विखर जाताहै (७) इसके पुष्प मदर और रक्तविकारको मिटातेहैं (८) रुधिर शुद्ध करनेके लिये सनके बीजोंका प्रयोग करतेहै (९) इसके बीजोंको पीस कर बुरकानेसे कांचका निकलना बन्ध होताहै (१०) इसकी छाल, उड़द और हल्दीके चूर्णका धुंआ पिलानेसे श्वास, उर्ध्ववात, कास, गल रोग और सब प्रकारकी हिचकी मिटतीहै (११) इसके बीज और गेहूंका आटा बराबर २ ले, उनको बराबर घीमें पकाके, गुड़के साथ ३ तीन दिन तक खिलानेसे स्नायुक (नारू) मिटताहै ।

संख्या (५१५)

(सं०) शणपुष्पी, शणघण्टिका, पीतपुष्पी, स्थूलफला, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजावी	तैलङ्गी
वनशण	शणहुली	शणपुष्पी	खुळखुळ	झनझनिया	छोटीशण	जनुमु, गोंगुरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
जणप	सणबुगिड़	--		Crotâlaria verrucosa	--

स्थान—शणपुष्पीके पौधे हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें होतेहैं ।

यह पोधा २—३ फुट ऊंचा होताहै, इसके नीले पीले और श्वेत पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह-कड़वी, कषेली, और वामकहै । अजीर्ण, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, सन्निपात, और कंठ, मुख, हृदय और पित्तके रोगोंको मिटातीहै (२) इसके बीज शीतल, ग्राही और पचनेमें भारी होतेहैं (३) इसके पत्तोंका रस मुंहसे लार गिरनेको कम करताहै (४) इसके पत्तोंका रस मर्दन करनेसे खुजली और पीपवाली पीले रंगकी फुन्सियां (जो बहुधा हाथ पैरोंमें इकट्ठी छत्तेके छत्ते होतीहैं) मिट जातीहै (५) इसके पत्तोंका रस पि-

लानेसे फुन्सियां और खुजली मिटतीहै अथवा इसकी कोमल शाखाओंका रस मर्दन करनेसे और पिलानेसेभी उक्त रोग मिटतेहैं ।

संख्या (५१६)

(सं०) शतपुष्पा, शताह्वा, कारवी, शताची ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोवा, सुवा	सोया	शवादाणा	बाळंतशोप	शुल्फा	सोयेकेबीज	सदाप

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शतकुप्पै (इ)	सदाप	शवित		Peucodanum graveolens P Sowa	Dill

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै ।

इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ३– या ४ तोले सुगन्धित तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) सोया–हल्का, तीक्ष्ण, कडवा, चरपरा, उष्ण और अग्निदीपन है (२) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड़ गर्म करके फोड़े फुन्सियों पर बांधनेसे वे जल्दी पक जातेहैं (३) पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके बीजोंका क्वाथ करके पिलातेहैं (४) सोंठके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे अजीर्ण और मन्दाग्नि मिटतीहै (५) गुड़के साथ ओटाके पिलानेसे स्त्रियों की पेटकी पीड़ा मिटतीहै (६) इसका पाक बनाके खानेसे या इसके चूर्ण में मिश्री मिलाके दूधके साथ फकी लेनेसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (७) बालक होनेके पीछे स्त्रियोंको इसका हिम या फांट पिलानेसे हृदयको लाभ होताहै (८) इसके चूर्णमें मिश्री मिला, दूधकी लस्सीके साथ फकी लेनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (९) तिल या तिलकी जड़के क्वाथके साथ इसके बीजोंके चूर्णको फकी देनेसे स्रोतोंका अवरोध मिट जाताहै (१०) इसके बीजोंको इंडोलीके साथ पीस गर्मकर लेप करनेसे गांठ बिखर जातीहै (११) इसकी भस्मके बुरकानेसे पुराने घाव भर जातेहैं (१२) यह दोषोंको पचानेवाला और बद्धकोष्ठको मिटानेवालाहै (१३) इसके शाकको सिरके नीचे रखनेसे

निद्रा अधिक आने लगतीहै (१४) इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै शाकमें इसके बीजोंका छौंकन दिया जाताहै ।

संख्या (५१७)

(सं०) शतावरी, नारायणी, इन्द्रीवरी, शतपदी, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सतावर	शतावर	शतावरी	शतमूली	शतमूली	सताउर	पिल्लपीचर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
*	आषाडि(ढि)			Asparagus racemosus	

स्थान—शतावरी हिन्दुस्थानमें सब ठौर होतीहै ।

प्रयोग—(१) शतावर-शीतल, कड़वी, मधुर, पचनेमें भारी, स्निग्ध पौष्टिक और दूध, बल, वीर्य और अग्निवर्द्धकहै (२) इसका पाक बनाके सेवन करनेसे अथवा दूधके साथ इसके चूर्णकी खीर बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढताहै (३) गीली सतावरको चीर बीचका तुनका निकाल, दूधके साथ पीस मिश्री मिलाके पीनेसे धातु बढतीहै (४) शतावर, अडूसेके पत्ते और मिश्रीको ओटाकर पीनेसे रूक्ष कास मिटताहै (५) जिसको निद्रा नहीं आती हो उसको शतावरकी खीरमें घी मिलाकर खिलाना चाहिये (६) इसके और गिलोयके रसमें गुड़ मिलाकर पीनेसे अथवा इसके और गिलोयके क्वाथमें मधु मिलाकर पीनेसे वात ज्वर मिटताहै (७) शतावर्यादि तैलके मर्दन करनेसे मात्र वातव्याधि मिटतीहै (८) शतावर और गोखरूका शर्बत बनाके पीनेसे मूत्रविकार मिटतेहैं (९) शतावरीका घृत मर्दन करनेसे शरीरकी निर्बलता मिटतीहै (१०) शतावरी घृत खाने और पीनेसे वीर्य बढताहै (११) गोखरूके पंचांगके साथ शतावरको ओटा छान उसमें मिश्री और मधु मिलाकर पिलानेसे मूत्रदाह और मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१२) गीली शतावरको

* तएणीर विट्टान् क्रिडंग्

दूधके साथ पीस छानकर पीनेसे रक्तातिसार मिटताहै (१३) शतावर का प्रयोग करनेसे चेचकके व्रण आपसमें नहीं मिलतेहैं (१४) रुधिर शुद्ध करनेवाली औषधियोंमें शतावर मिलाई जातीहैं (१५) शतावरकी ताजी जड़को कूट रस निकाल उसमें बराबर तिलोंका तेल डाल औटा तेल सिद्ध-कर उसका मर्दन करनेसे मस्तकपीड़ा और आधाशीशी मिटतीहै (१६) इसके स्वरससे घृत सिद्धकर उसको पिलानेसे रक्तातिसार मिटताहै (१७) शता-वर, खरैंटी और शकरको मधुके साथ चाटनेसे स्वरभेद मिटताहै (१८) इसके और चांवलोंकी कीलोंके चूर्णमें शकर और मधु मिलाकर लेनेसे भी स्वरभेद मिटताहै (१९) इसका रस मुलहटीका कल्कके और दूध इन तीनों से घृत सिद्ध करके पीनेसे मदात्यय मिटताहै (२०) इसके चार सेर रस और सेर कल्कमें चार सेर दूध और सेर भर घी डाल औटाकर घृत सिद्ध करके पिलानेसे वातरक्त मिटताहै (२१) इसके रसमें मधु और दूध मिलाकर प्रातःकाल पि-लानेसे दाह, शूल और सब प्रकारके पित्तरोग मिटतेहैं (२२) इसके रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे दाह और शूल मिटतीहै (२३) इसके जड़के काथ में मधु और शकर मिलाकर पीनेसे त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२४) इस के रसमें बराबर गायका दूध मिलाकर पिलानेसे पुरानी पथरी शीघ्रतासे गल जातीहै (२५) इसका कल्क एक भाग, घृत एक भाग, दूध चार भाग इन सबको औटाकर घी सिद्ध करके बलानुसार पीनेसे अम्लपित्त, रक्तपित्त वात और पित्तके विकार, श्वास, मूर्च्छा और तृषा आदि रोग मिटतेहैं (२६) इसके स्वरसमें मधु मिलाकर पिलानेसे पित्तका प्रदर मिटताहै (२७) दूधके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे स्त्रीके दूध बढ़ताहै (२८) इसकी जड़का रस दूधमें मिलाकर पिलानेसे विषकी शान्ति होतीहै ।

संख्या (५१८)

(सं०) शमी, शक्तुफला, शान्ता, शिवा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खेजड़ी	छोंकर छिकुर	खीजडी	शमी	शाँइगाछ	जंड (जंडी)	जम्मि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वन्निमरं	वन्निमर			Prosopis spicigera P Spicata	

स्थान—खेजड़ के वृक्ष पंजाब, सिन्ध, राजपूताना, गुजरात, बुंदेलखंड और दक्षिण आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष-३०,४० फुट ऊंचा और सिन्धमें ६० फुट ऊंचा होताहै। इसके छोटे खड़े पेदड़की गुलाई ६ और कहीं १०,१२ फुटकी होतीहै। इसकी छोटी शाखें लटकती रहतीहै, इसकी छाल पौन इंच मोटी धुंधले सफेद या हल्के कुछ भूरे सफेद रंगकी और खरदरी होतीहै। कुछ समय तक इसके सबके सब पत्ते गिर जातेहैं, फागुनमें इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं। इस वृक्षके ठौर २ छोटे २ कांटे लगे रहतेहैं, इसकी एक सींकपर सातसे दस जोड़े पत्तोंके लगतेहैं उनका आकार इम्लीके पत्तों जैसा होताहै परन्तु उनसे छोटे होतेहैं, इसके पीले रंगके छोटे पुष्प लगतेहैं। इसके ५ से १० इंच लम्बी गोल फलियोंके झूमके लगतेहैं, इसकी फलियोंमें भूरे रंगका आटे जैसा पदार्थ होताहै, इसकी फलीको मारवाड़ी भाषामें "सांगरी" कहतेहैं। इसकी जड़ जमीनमें ६४ फुट ऊंडी चली जातीहै, उसकी लम्बाई ८६ फुट तक होतीहै। परन्तु हरेक वृक्षकी जड़की लम्बाई इतनी नहीं होतीहै।

फूलने फलनेका समय—गुजरातमें इसके माघके महीनेमें, सिन्धमें फागुन चैतमें और पंजाबमें चैत वैशाखमें पुष्प लगतेहैं। वैशाखसे श्रावण तक इसकी फलियां पक जातीहैं।

प्रयोग—(१) यह-कड़वी, चरपरी, शीतल, रूक्ष, कषेली, रोचक और पचनेमें हल्कीहै। कफ, कास, भ्रम, श्वास, अर्श, कुष्ठ, अतिसार और रक्तपित्त को मिटातीहै (२) इसकी फलियां (सांगरी) पचनेमें भारी, रूक्ष और कषेली होतीहैं। इनको ओटाकर अथवा उनको अतिसार मिटानेवाली औषधियोंके साथ ओटाकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (३) खेजड़ीके वृक्ष पर बड़े छेदवाले लकड़ीके "डींडू" लगतेहैं वे ग्राही होतेहैं (४) इसकी छाल को घिस गर्म कर लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (५) सांगरी और चांवलोंको

रांधके खिलानेसे अतिसार मिटताहै (६) इसकी भस्म-बुद्धि, केश और नखोंका नाश करतीहै (७) कई देशोंमें सांगरीका शाकव्बनाकर खातेहैं । अकालके दिनोंमें इसकी छालके आटेकी रोटी बनाकर खातेहैं । इसकी पकी हुई फलीको मारवाड़ी भाषामें "खोखा" कहतेहैं ।

संख्या (५१६)

(सं०) शरः, इषुः, कांडः, उत्कटः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शरकंडा	कांडा	तीरकांडा	तिरकाडे	शरगाछ	सर	तिप्परेल्लु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नाणल्	काळीकड्डि			Saccharum ciliare S Sara	

स्थान—शरकंडा, संयुक्त प्रदेश, विशेष करके, पंजाब और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होताहै ।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ८ से १२ फुट तककी होतीहै ।

वर्षा ऋतुके पीछे इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) शरकंडा-मीठा, कड़वा, कुछ उष्ण, बलकारक, वात और वीर्यवर्द्धक होताहै (२) कफ पित्त, भ्रांति और मदको मिटाताहै (३) यह बाल्य अवस्थामें शोथ, दाह, तृषा और वमनको मिटाताहै (४) जिस कोठेमें प्रसूता स्त्री सोती हो उसमें यह जलाया जाताहै (५) अग्निसे जले हुए व्रणके अथवा उष्ण जल आदि से जलनेसे जो व्रण हो जाताहै उसके इसकी धूनी देनी चाहिये (६) इसकी जड़को मिश्रीके साथ ओटाके पिलानेसे मूत्राघात मिटताहै (७) इसकी जड़ और सोंठको पीस उसमें मीठा तेल मिला गुनगुना लेप करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (८) इसकी जड़को पीस दूधकी लस्सीके साथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (९) हुक्केमें मूंजका धुंआ पिलानेसे हिचकी बन्ध होतीहै ।

संख्या (५२०)

(सं०) शरपुंखा, कांडपुंखा, वाणपुंखा, सायकपुंखा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शरपंखो	शरफोंका	शरपुखा	उन्हाळी	वननील	झोजरू	मुलुवेम्पलि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	शरपुखा			Tophrosia purpurea Galega p	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर होताहै ।

प्रयोग—(१) शरपुंखा--कड़वा, कषेला, लघु, उष्ण, और ज्वरनाशक है (२) इसकी कड़वी जड़ ओटाके पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (३) जड़के काथमें सेकी हुई हींग बुरकाके पिलानेसे अफारा मिटताहै (४) इस काथमें सोंठ डालके पीनेसे संग्रहणी और लोगोंका चूर्ण बुरकाके पीनेसे पुराना अतिसार मिटताहै (५) बच्चोंके पेटके कीड़े मारनेके लिये इसमें वाय विडङ्गका चूर्ण बुरकाके पिलातेहैं (६) इसके पंचांगके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होताहै और शरीरके फोड़े फुन्सी मिट जातेहैं (७) इसके और भंगके पत्तोंको पीस लुगदी बनाके गुदापर बांधनेसे रक्तार्श मिटताहै (८) मूत्रकृच्छ्रमें मूत्रकी अधिक प्रवृत्ति होनेके लिये इसके पत्तोंको काली मिरचके साथ पीस छानकर पिलाना चाहिये (९) इसके बीजोंको उष्ण या ठण्डे जलमें भिगो मल छानके पिलानेसे शरीरकी दाह और ऊष्मा मिटतीहै (१०) इसकी जड़की ताजी छाल और काली मिरचकी गोलियां बनाकर देनेसे पुरानी शूल मि तीहै (११) इसके पुष्प निकल जानेपर इसको छायामें सुखाकर औषधिके काममें लाना चाहिये। यह बलवर्द्धक और सारकहै (१२) इसकी जड़ स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे बालक होनेके समय कष्ट नहीं भोगना पड़ताहै (१३) इसकी २ मासे जड़को पीसके पिलानेसे विषूचिका मिटतीहै (१४) इसके पत्तोंका रस पीनेसे कुष्ठ मिटताहै (१५) इसके खार में बराबर हरड़का चूर्ण मिलाकर ४ मासेकी मात्रा देनेसे गुल्म रोग मिटताहै

(१६) इसकी जड़के कल्कको छाछके साथ पिलानेसे बढा हुआ प्लीह कम पड़ जाताहै (१७) मधुके साथ इसका लेप करनेसे दुष्ट व्रण मिटताहै (१८) शरपुंखेको औटाकर पिलानेसे बालकोंकी पित्तशोथ मिटतीहै ।

संख्या (५२१)

(सं०) शर्करा, मीनाण्डी, अहिच्छत्रा, सुसिकता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खाड	चीनी,खाड	शाकर साकर	साकर साखर	चिनि	खंड	पञ्चदार

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शर्करै	सक्करे			Saccharum	Sugar.

हिन्दुस्थानमें कई प्रकारकी शक्कर बनाई जातीहै । अजमेरमें कई देशोंसे कई प्रकारकी शक्कर आतीहैं उनमें चीनी, छायल और मुरती बहुत प्रसिद्धहै इनका रंग और मिठास अलग २ होताहै । बनारसकी चीनी बहुत प्रसिद्ध और उत्तम गिनी जातीहै । मुरतीका दूसरा नाम " कड़कड़ " है । चीनी खांडको शुद्ध करके बूरा, कंद, मिश्री, बतासे और कई प्रकारके भोजनके पदार्थ बनाते हैं ।

(१) चीनीके गुण–यह बादी, पित्त, तृषा, मोह, मूर्छा और शोषको मिटातीहै, इन्द्रियोंका तर्पण करतीहै और शीतल होतीहै (२) बूरेके गुण–यह मधुर, शीतल, सारक, स्निग्ध और कफ कारकहै वीर्य और बलको बढाताहै । क्षय, कास, तृषा, विषदोष, मद, श्वास, मोह, मूर्छा, वमन, अतिसार, रुधिरविकार, पित्त, वात, कृमि, भ्रांति, दाह, श्रम और अर्श को मिटाताहै (३) मिश्री के गुण—यह सारक स्निग्ध, मधुर और शीतल है । धातु, बल और वीर्यको बढातीहै । मुखको प्यारी, इन्द्रियोंको तृप्त करने वाली और पचनेमें हल्कीहै । तृषा, क्षय, क्षत, रक्तपित्त, मोह, मूर्छा, कफ,

वात, पित्त, दाह और शोषको मिटातीहै (४) जवारकी शक्करके गुण—यह कुछ उष्ण, कड़वी, बहुत पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, रोचक और सारक होतीहै। दाह, वात, पित्त और रुधिरविकारको मिटातीहै (५) जवासेकी शक्कर-ठण्ढी, दीपन और रेचक होतीहै, पित्तको कम करतीहै, और ज्वरको मिटातीहै। गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक, क्षीण और वृद्ध मनुष्यको इससे विरेचन करानेसे कोई उपद्रव नहीं होताहै। (६) मधुशर्कराके गुण-यह पचनेमें भारी, शीतल, रूक्ष, कपेली, छेदक, पाकमें मधुर और वीर्यवर्द्धक होती है। वमन, दाह, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त, तृषा और पित्त कफको मिटातीहै।(७) पुष्प शर्कराके गुण—यह स्वादिष्ट, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकारोंको मिटानेवालीहै।

संख्या (५२२)

(सं०) शल्लकी, महेरुणा, कुंदुरुकी, सुरभिः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सेळो	सालई	सालेडा	सालई	शलइ	सलई	अङ्गुग

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	आनेव्याल			Boswellia sorrata B thurifo a	Indian Olibanum tree

पहिचान—इस वृक्षकी उंचाई ३० फुटकी और पेड़की गुलाई ५-६ फुटकी होतीहै, इसकी छाल प्रायः आध इंच मोटी होतीहै। यह जबतक ताजी रहतीहै तबतक रसदार रहतीहै, यह बहुधा कुछ हरे, खाखी रंगकी होतीहै, फागुन चैतके आस पास इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं, और जेठमें नवीन पत्ते आजातेहैं, इसकी कोमल डालियें और पत्ते रूएदार होतेहैं। इसकी डालियोंके अन्तमें ८-१५ इंच लम्बी पत्तोंकी सींकें लगतीहैं। उनके ८ से १५ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं वे आमने सामने या कुछ अन्तरसे लगा करतेहैं। इसके श्वेत

रंगके पुष्प लगतेहैं । इसके नीमके पत्तों जैसे पत्ते लगतेहैं और तिखूंटे पीले फल लगतेहै ।

फूलने फलनेका समय—जब इसके पत्ते गिरजातेहैं तब पुष्प निकलने लगतेहैं कभी पुराने पत्ते गिरनेके पहिले और कभी नवीन पत्ते निकलनेके पीछे पुष्प निकलतेहैं ।

गुण–(१) यह कषेली, शीतल, मधुर, कड़वी और शरीरको पुष्ट करनेवालीहै । कफ, पित्तातिसार, रक्तपित्त, व्रण, रुधिरविकार, वात, पित्त, कफ, अर्श, पक्वातिसार और कुष्ठको मिटातीहै (२) इसके फल और पुष्प, कुष्ठ अरुचि, कफ और वातार्शको मिटातेहै (३) इसके गोंदको कुन्दरुगोंद कहतेहैं उसके प्रयोग कुन्दरुके साथ लिखेहैं ।

संख्या (५२३)

(सं०) शाकः, क्रकचपत्रः, खरपत्रः, श्रेष्ठकाष्टः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सागवान	सागवान	शाग, साग	सागवान	शेगुनगाछ	सागान	टेंक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	त्याग			Tectona grandis	Teak The teak tree.

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिमोत्तर प्रदेश, दक्षिण और मध्यहिन्दुस्थान, बंगाल, आसाम, सिक्कम, मनीपुर, ओडीसा और झांसी आदि कई देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—यह वृक्ष बहुत ऊंचा होताहै इसकी ६० से ६० फुट उंचाई पर शाखा फूटने लगतीहै । इसके स्कंध (पेड़) की गुलाई १० से २५ फुट तक होतीहै, सागवानके पत्तेको पहिचाननेके लिये उसको थोड़ा रगड़ के उस ठौर अपने मुंहका थूंक लगाके रगड़तेहै जो वह लाल होजाय तो पत्ता सागवानका है नही तो और किसीका है । इसकी लड़की की दरारोंमें

एक प्रकारका श्वेत द्रव जम जाताहै वह पानमें चूनेकी ठौर काममें आताहै, शुष्क और उष्ण ठौरमें, कार्ती, मँगशिर, या पौषके प्रारम्भमें इसके पत्ते गिर जातेहैं। जो वृक्ष आर्द्रभूमिमें होतेहैं उनके पत्ते माघ - फागुन तक नहीं गिरतेहैं वैशाखमें इसके नवीन पत्ते आजातेहैं इसकी छोटी शाखें चोखूंटी होतीहैं और उनके कूटोंके बीचमें नालियें होतीहैं। इसके पत्ते दो तीन फुट लम्बे होतेहैं, वे ऊपरसे खरदरे और नीचेसे सफेद रुंएदार होतेहैं, इसके सफेद रंगके पुष्प लगतेहैं। इसके फलकी मध्य रेखा आध इंच लम्बी होतीहै, और फलमें १–२ या ३=४ बीज निकलतेहैं। इसके बीजकी खोखल ५ खानेकी दीखतीहै।

फूलने फलनेका समय—असाढ श्रावणमें यह वृक्ष फूलताहै कार्तीसे पौष तक इसके फल पकतेहैं। इसके बीजोंको पोषमें डालियों परसे ही उतारके एकत्र कर लेने चाहिये। इसकी लकड़ीको ओटानेसे राल जैसा एक प्रकारका पदार्थ निकलताहै, इसके पत्तोंमेंसे लाल या पीला रंग निकलता है। इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका गाढा तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) शाक-(सागवान) कषेला, शीतल, और रक्तपित्त-नाशक है (२) इसकी लकड़ीको घिसकर लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (३) पित्तशोथको बखेरनेके लिये इसकी लकड़ीको घिसके लेप करना चाहिये (४) पित्तबढ़नेसे जो मंदाग्नि होकर आमाशयमें दाह हो जातीहै उसको मिटानेके लिये इसके चूर्णकी साढे पांच मासेसे लेके १२॥ मासे तककी फकी देनी चाहिये (५) इसकी लकड़ीके कोयलेको पोस्तके पानीमें बुझा पीसके लेप करनेसे पपोटोंकी सोई उतरतीहै (६) आंखोंकी ज्योति बढ़ानेके लिये उक्त लेप करतेहैं (७) इसकी छालके चूर्णकी फकी अतिसारको मिटातीहै (८) इसके फलोंमेंसे गाढा और सुगंधवाला तेल निकलताहै उस तेलके लगानेसे मस्तकमें बाल उगजातेहैं (९) शरीरपर इसका मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (१०) इसकी छालका हिम पिलानेसे श्वेत-प्रदर मिटताहै (११) इलायची, वंशलोचन, मिश्री और इसकी छालके चूर्णकी दूधके साथ फकी देनेसे बल बढताहै (१२) इसकी लकड़ीको जलमें घिसकर लगानेसे भिलावेके तेलसे अथवा काजूगुलीके छिलकेके तेलसे पैदाहुई

दाह युक्त शोथ मिटजातीहै (१३) इसके फलको पीस पुल्टिस बनाके इन्द्रीके पासके बालोंपर बांधनेसे मूत तुरंत उतर जाताहै (१४) भारवाही चौंपायों के घाव पर इसके राल जैसे गोंदका लेप करनेसे उनमें कीड़े नहीं पड़तेहैं ।

—※—

संख्या (५२४)

(सं०) शाखोटः, पिशाचद्रुः, घूकावासः, क्षीरनाशनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	सहोड़ा(रा)	साहोडा	साहोडा	शेउडागाछ	सहोड़ा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Streblus asper Trophis aspera	

स्थान—शाखोटके वृक्ष हिन्दुस्थानके जांगल देशोंके अधिक शुष्कभागों में रुहेलखण्डसे पूर्व और दक्षिणकी ओर ट्रैवनकोर तक बहुत होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई २० फ़ुटकी होतीहै । इसकी छाल आध इंच मोटी, सफ़ेद, कुछ हरी, श्वेत भूरे रंगकी, चिकनी होतीहै और पुरानी होनेपर खरदरी होजातीहै । इसकी अंतर छालमें दूध निकलताहै । इसके पत्ते कुछ गोल दोनों ओरसे खरदरे और २–४ इंच लम्बे होतेहैं उनपर छोटी २ उठीहुई बूंदें होतीहैं, इसके पुरुष और स्त्री जातिके पुष्प अलग २ लगतेहैं, इसके पीले रंगका फल लगताहै उसमें एक बीज निकलताहै । स्त्री जातिके वृक्षोंकी अपेक्षा पुरुष जातिके वृक्ष बहुत होतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—पोषसे फागुन तक इसके पुष्प लगतेहैं वैशाखसे अषाढ तक इसके फल पक जातेहैं ।

प्रयोग—(१) सहोड़ा—रक्तपित्त, बवासीर, वात, कफ और अतिसारको मिटाताहै (२) इसकी छालको ओटाके पिलानेसे ज्वर छूट जाताहै (३) बेलगिर और इसकी छालको ओटाकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (४) इसकी छालके क्वाथमें एरंडका तेल डालकर पिलानेसे आमातिसार

मिटताहै (५) इसका दूधिया रस बिवाई में लगानेसे उसका घाव मिट जाताहै (६) फोड़े फुन्सी या घावोंपर इसका दूधिया रस लगानेसे दुर्गंध या विष युक्त हवा का असर नहीं होताहै (७) बिगड़े हुए घाव या ऐसे घाव जो हड्डीतक पहुंच गये हों उनपर इसकी जड़का लेप करतेहैं (८) इसकी जड़को घिसके सांपके दंशपर लेप करतेहैं (९) इसकी सूखी जड़के २॥ से ५ रती तक चूर्णकी फकी देनेसे आमातिसार मिटताहै (१०) पेशियोंकी सूजनपर इसके रसका लेप करते हैं (११) इसकी टहनियां दांतुन के काममें आतीहैं (१२) इसके दूधिया रसका जामन देनेसे दूध बहुत शीघ्रतासे जम जाताहै और उसका दहीभी गाढ़ा रहताहै (१३) दक्षिण हिन्दुस्थानके लोग अपने घरोंको बिजलीसे बचानेकेलिये चैत वैशाखमें इसकी टहनियोंको काटके छप्परमें और उनके चारों ओर जमादेतेहैं (१४) इसकी छालको कांजीके साथ पीस, उसमें घी मिलाकर लेप करनेसे वातशोथ मिटतीहै (१५) इसके पत्तोंके रसमें पारा मिलाकर नाभिके आस पास मलनेसे वायु शूल मिटतीहै ।



संख्या (५२५)

(सं०) शालपर्णी, एकमूला, अंशुमती, ध्रुवा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	सरिवन	समेरवो	साळवण	शालपान	सरिबन	मुय्याकुपोन्ना

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	मूरुयलहोन्न			Desmodium gangeticum Hedysarum g	

स्थान---शालपर्णी हिन्दुस्थानके छोटे २ पहाड़ और जंगलोंमें सब ठौर होतीहै ।

पहिचान-इसका छोटा क्षुप होताहै । एक २ डंडी पर तीन २ पत्ते लगतेहैं । इसके बहुतसी छोटी २ फलियां लगतीहैं ।

प्रयोग-(१) यह-कड़वी, पचनेमें भारी, उष्ण, मीठी और रसायनी, है वीर्य और धातुको बढ़ातीहै, विषमज्वर, वादी, ममेह, अर्श, शोथ, दाह, ज्वर, श्वास, विष, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, कास, अतिसार और कृत्रिम विषको मिटातीहै (२) यह दशमूलकी औषधियोंमें है। इसकी जड़को ओटाके पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (३) चिरायतेके साथ इसकी जड़को ओटाके पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) नाभि, वस्ति और भग पर इसकी जड़का लेप करनेसे मूढ गर्भ वाहिर निकल आताहै।

संख्या (५२६)

(सं०) शालमली, रक्तपुष्पा, तूलवृक्षः, मोचा।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सेमलसामले	सेमल(र)	शेमळो	काटेसांवर	शिमुलगाछ	सेमर	मुल्लबूरगा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
यलवंगर	यलवदमर			Bombax mala baricum Salamalia mabarica	Silk cotton tree

स्थान—सेमलके वृक्ष हिन्दुस्थानके राजपूताना आदि अधिक उष्ण जंगलोंमें होतेहैं।

पहिचान—सेमलका बड़ा भारी वृक्ष होताहै। इसकी ऊंचाई १५० फुट और इसकी पेदड़की गुलाई ४० फुटकी होतीहै, यह सीधी होतीहै। इसकी और पुरानी डालियोंकी छाल, सफेद और खाकी रंगकी होतीहै। उसमें आरपार खड़ी दरारें होतीहैं। इसकी डालियों पर काली नोकके आध इंच लम्बे वहुतसे कांटे लगतेहैं। इसके ५, ७ पत्ते लगतेहैं। इसके पुष्प वड़े और किरमची रंगके होतेहैं। इनकी पंखड़ियां मोटी होतीहैं। काती मॅगशिरमें इसके पत्ते गिरजातेहैं। और चैत्रतक पीछे नहीं आतेहैं।

फूलने फलनेका समय—माघ और फागुनमें इसके पुष्प लगतेहैं। चैत वैशाखमें इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग-(१) सेमल-मधुर, पिच्छिल, शीतल, कषेला, हल्का, स्निग्ध, वृष्य और बल्यहै (२) इसका गोंद ग्राहीहै, अतिसार मिटाताहै और पुष्टाईकी औषधियोंमें काम आताहै (३) इसके गोंदको दूधमें डालके पीनेसे बल बढताहै (४) इसके सूखे पुष्प, पोस्तके दाने और बूरा, इन सबको दूधमें औटा गाढा कर आठ आठ मासेकी मात्रा दिनमें तीन बेर देनेसे रक्तपित्त और रक्तार्श मिटताहै (५) इसकी जड़को औटाकर पिलानेसे बल बढ़ताहै (६) इसकी जड़को सामलेका मूशला कहतेहैं । यह उत्तेजकहै (७) इसकी अधिक मात्रा देनेसे वमन होतीहै (८) इसकी छोटी जड़ोंको छायामें सुखाकर उसका पाक बनाके खाने से पुरुषार्थ बढताहै और नपुंसकता मिटतीहै (९) सवा मासेसे दो मासे तक मोचरसमें बराबर शक्कर मिलाकर फक्की देनेसे बच्चोंका अतिसार मिटता है (१०) छोटे वृक्षकी जड़की अन्तकी नोकोंको पीसकर दूध मिश्रीके साथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै और उनके चूर्णकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटताहै (११) इसके पत्तोंका कल्क बांधनेसे पेशियोंकी सूजन मिटतीहै (१२) रसोतको गला छान उसपर मोचरस बुरकाके पिलानेसे रक्तप्रदर मिटता है (१३) इसके ३, ४ बीज निगलनेसे शीतला कम निकलतीहै अथवा बिलकुल ही नहीं निकलतीहै (१४) इसकी छालका काथ पिलानेसे सुरा प्रमेह मिटताहै (१५) इसके पुष्पोंको रातभर पानीमें भिगो मल छान उसमें राईका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे प्लीह मिटताहै (१६) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधुमें मिलाकर चाटनेसे रक्त पित्त मिटताहै (१७) इसके कांटोंको दूधके साथ पीसके लेप करनेसे मुखकी कांति बढतीहै ।

संख्या (५२७)

(सं०) मोचरसः, पिच्छः, शाल्मलीवेष्टः, मोचस्रावः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोचरस	मोचरस	मोचरस	मोचरस	मोचरस	मोचरस	बूरगुबंक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
यलवपिशिन्	यलवन्हागिनु				Gumof silk cotton tree

मोचरस शामलाका गोंद होताहै ।

प्रयोग—(१) सेमलका गोंद—कषेला, ग्राही, शीतल, मधुर, रसायन, स्निग्ध, पचनेमें भारी, आयुर्दाको स्थिर करनेवाला तथा बल, बुद्धि, वीर्य और धातुको बढ़ानेवाला, शरीरका रंग उज्ज्वल करनेवाला, गर्भस्थापक और कफकारकहै (२) वात, अतिसार, प्रवाहिका, रुधिरविकार, पित्त, दाह, आमातिसार और रक्तातिसारको मिटाताहै (३) एक महीने तक इसका सेवन करनेसे धातुके विकार मिटतेहैं (४) मोचरस और समुद्रफेनको खरलकर लेप करनेसे शरीरकी दुर्गंध मिटतीहै (५) कई मनुष्य मोचरसकी ठौर सुपारीके पुष्प काममें लातेहैं ।

संख्या (५२८)

(सं०) श्वेतशाल्मली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सफेदसामलो	सफेदसेमर	धोलेशेमलो	पांढरासांवर	श्वेतशिमुल	सफेदसिम्बल	तेल्लबूरगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वेल्लैयलव	बिळीमुल्लु बूरगा			Eriodendron anfractuosum Bombax pontan drum	The white cotton tree Kapok floss

स्थान—सफेद सेमलके वृक्ष हिन्दुस्थान और सीलोनके उष्ण भागोंके जंगलोंमें बहुत होतेहैं ।

पहिचान—यह एक सीधी पेदड़का ऊंचा वृक्ष होताहै, जब यह छोटा होताहै तब इसके कांटे लगा करतेहैं। इसके मैले सफेद पुष्प लगतेहैं वे लाल पुष्पके सेमलके पुष्पोंसे बहुत छोटे होतेहैं । इसका फल कुछ बड़ा, जियादा धुंधले रंगका और गोल होताहै । कोनेदार नहीं होता, माघके महीनेमें इसके पत्ते गिर जातेहैं । इसके धुंधले लाल रंगका गोंद लगताहै ।

फूलने फलने का समय—इसके पत्ते गिरनेके पीछेही पुष्प लग जातेहैं और वैशाखमें फल पकतेहैं ।

इसके बीजोंमेंसे तेल निकलताहै वह अच्छे लाल या धुंधले, भूरे रंगका होताहै ।

प्रयोग—(१) इसका गोंद ग्राहीहै (२) इसकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (३) इसकी रूई अधिक ठण्ढी और लचलची होतीहै इसलिये रोगीके तकिये आदिमें भराई जातीहै और औषधिके काममें आतीहै (४) इसके सूखे कच्चे फल औषधिके काममें आतेहैं । अत्तार लोग इसके फलोंके बदलेमें दूसरे वृक्षोंके फल देदिया करतेहैं, जिनमें कई विषैल फल होतेहैं । इसलिये उनको वृक्षके नीचेकी पृथ्वी परसे एकत्र करलेना चाहिये । लाल सेमलके फलसे इनमें गुण कुछ कम होताहै (५) इसके कच्चे फल ग्राही और चरपराहट मिटानेवालेहैं (६) इसकी जड़को भी सेमलका मूशला कहतेहैं । लाल पुष्पके सेमलकी जड़से इसकी जड़में गुण अधिकहैं। इसकी जड़को कतर, छायामें सुखा, पीस, उसमें इसकी छालका रस और शकर मिलाके खातेहैं । इसके पत्ते और बीज औषधिके प्रयोगमें आतेहैं (७) जब बच्चेके मूत्रकी शंका नहीं रुकतीहो तो उसको इसके गोंदकी फकी देनी चाहिये (८) इसके छोटे वृक्षकी जड़का काथ पिलानेसे पुराना अतिसार और आमातिसार मिटताहै (९) इसका काथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होकर जलंधर और सर्वांग जलमय शोथ मिटजातीहै (१०) इसके एक तोले कोमल पत्तोंको जलके साथ पीस छान, उसको पीके ऊपरसे मक्खन निकाला हुआ दूध पीवे, ऐसे ३, ४ दिन तक प्रातःकाल पीनेसे नवीन मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) इसके छोटे या कच्चे फलोंका शाक बनाया जाताहै ।

संख्या (५२९)

(सं०) शिरीषः, भण्डिलः, मृदुपुष्पः, शुकप्रियः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सिरंस	सिरस	शरशड़ो	शिरस	शिरीषगाछ	सिरस	दिरसेनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
काड़वाडई	बागेमर	सुल्तानुल् अशजार	दरख्तेज़क-रिया	Albizzia Lebbek. Acacia sirissa	The siris tree

स्थान—शिरषके पेड़ हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं और अपने आप भी उगतेहैं।

पहिचान—इसकी उंचाई ४० से ६० फुटकी होतीहै। इसकी पेदड़ छोटी होतीहै। उसकी छाल आध इंच मोटी और धुंधले या कुछ भूरे रंगकी और उसमें बहुतसी छोटी बड़ी दरारें होतीहैं। इसके ३ से ६ तक जोड़े लम्बे और चौड़े पत्तोंके लगतेहैं। पत्तोंकी बिचली सींकके दोनों ओर के भाग बराबर नहीं होतेहैं। इसके सुगंधयुक्त सफेद पुष्प लगतेहैं, इसकी फलियां ८ से १२ इंच लम्बी दो इंच चौड़ी और पतली, हल्के पीले रंगकी होतीहैं जिनमें ८ से १२ तक बीज निकलतेहैं। उष्णकालमें इसके कुछ पत्ते गिर जातेहैं और फागुन, चैतमें नये आजातेहैं।

चैत वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं परन्तु दूसरे समयमें भी लगतेहैं। भादवेमें इसकी फलियां पकतीहैं वे शीतकाल और उष्णकालमें वृक्ष पर ही लगी रहतीहैं। इसके बंबूलके गोंद जैसा एक प्रकारका गोंद लगताहै वह पानीमें गल जाताहै। इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) सिरस-मधुर, शीतल, कड़वा, कषेला, और पचनेमें, हल्काहै त्रिदोष, विसर्प, कास, व्रण, विष, स्वेद, त्वग्दोष, पामा, कुष्ठ और कंडू को मिटाता है। इसके बीज आंखके अंजनकी औषधियों में डाले जाते हैं (२) इसका तेल कोढमें लगाया जाताहै (३) नेत्रकी पीड़ामें इसकी छालका लेप करते हैं (४) इसके पुष्प ठण्ढे हैं (५) गर्मीके फोड़े, फुन्सी और पित्तशोथपर इनका लेप करतेहैं (६) विषैल जीवोंके दंशपर इसके पुष्पोंका लेप करतेहैं (७) इसके ६ मासे बीजोंको पीसके फकी देनेसे गंडमालाकी पेशियोंकी सूजन उतरतीहै (८) बीजोंको पानीके साथ पीसके लेप करनेसे गंडमालाकी सूजन उतरतीहै (९) इसकी जड़की छालके चूर्णका मंजन करनेसे पके हुए मसूड़ोंका रोग मिटताहै

और दांत दृढ़ हो जातेहैं (१०) पत्तोंका लेप करनेसे आंखकेगोलेकी सूजन मिटतीहै और पीप बन्ध हो जाताहै (११) दूधकी लस्सीमें इसके तेलकी बूंदें डालके पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१२) इसके बीजोंके चूर्णकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (१३) इसके तेलका लेप करनेसे अर्श मिटताहै (१४) इसके पत्तोंके कल्कको पानीमें छान मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१५) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे जलंधरवालेकी सूजन उतर जातीहै (१६) इसके बीजोंको पानीके साथ पीस, पोटली बांध जिस ओर मस्तक पीड़ा हो उसी ओरके नाकके छिद्रमें २॥ बूंदें टपकानेसे मस्तक पीड़ा मिटतीहै (१७) इसके पत्तोंके रसका अंजन करनेसे नेत्र पीड़ा मिटतीहैं (१८) इसके गोंद, और काली मिरचको पीसकर मंजन करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१९) इसके बीजोंके तेलके लगानेसे श्वेतकुष्ठ मिटताहै (२०) इसके डेढ तोले पत्ते, समदो मासे काली मिरचको पीसके ४० दिन पीनेसे कुष्ठ मिट जाताहै (२१) पुराने शिरसकी पेड़ और जड़की छाल, बीज और पुष्पोंको एक चम्मच गोमूत्रके साथ एक दिनमें ३ वेर पिलानेसे विष उतर जाताहै (२२) मिथुन की संक्रांतिमें इसकी ७ मासे छालको पीसकर चांवलोंके धोवनके पानीके साथ ३ दिन पीनेसे एक वर्षतक सर्पादिक का विष नहीं चढताहै (२३) इसके बीज और काली मिरच बराबर ले बकरीके मूत्रमें पीसकर अंजन करनेसे सन्निपातकी मूर्च्छा मिटतीहै (२४) इसकी छालके चूर्णको १०० वेर धोये हुए घीमें मिलाकर लेप करनेसे विसर्प रोग मिटताहै (२५) इसकी जड़ और बीजके चूर्णकी नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त मिटताहै (२६) इसके और करंजके बीजोंको पीसकर अंजन करनेसे नेत्ररोग, उन्माद और अपस्मार मिटतेहैं (२७) इसके पत्ते या पुष्पोंके रसकी सफेद मिरचोंके सातदिनतक भावना देकर, सर्प काटे हुए मनुष्यको वे मिरचें खिलानेसे या उसके उनका अंजन करनेसे विष उतर जाताहै (२८) इसके बीजोंको थूहरके दूधमें पीसके लेप करनेसे मंडूकके दंशका विष उतरताहै (२९) इसके और आमके पत्तोंके रसको गुन गुनाकर कानमें टपकानेसे कर्णपीड़ा मिटतीहै (३०) इसके बीजोंको महीन पीसकर सुंघानेसे बन्ध जुकाम मिटताहै (३१) इसकी छालको औटाकर कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (३२) इसके पत्तोंके रसमें कपड़ा भिगो, सुखा,

ऐसे तीन वेर भिगो, सुखाकर, उसकी वत्ती बनाके चमेलीके तेलमें जला, काजल पाड़ कर उसका अंजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै (२३) इसकी छालको पीसकर लेप करनेसे अडकोपोंकी खुजली मिटतीहै ।

———— ० ————

संख्या (५३०)

(सं०) पीतशिरीषः ।

L, Albizzia odoratissima, Mimosa o.

स्थान—पीली शिरसके वृक्ष सिन्धु नदीसे पूर्व बङ्गाल, आसाम, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान आदि बहुत देशोंमें होतेहैं । इसके गहरा भूरा फीका और पानीमें गलनेवाला गोंद लगताहै। इसकी छालमेंसे रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) इसकी छालका लेप करनेसे कुष्ठ मिटताहै (२) पुराने और कठोर-फोड़ेपर इसका लेप करतेहैं (३) इसके पत्तोंको घृतमें तलके खिलानेसे कफ मिटताहै (४) इसकी सूखी छालको पीसके बुरकानेसे घाव भर जाताहै (५) इसके, सम्भालूके और सहिंजनेके पत्तोंको पानीमें ओटाके बफारा देने और उनको बांधनेसे सन्धिकी वातपीड़ा मिटतीहै (६) इसकी छाल और काले तिलोंको बराबरले सिरकेमें पीसके मुखपर मलनेसे कालापन मिटताहै (७) इसके बीजोंकी माला बनाके बच्चोंके गलेमें पहिरानेसे उनके दांत आनेके समय कष्ट नहीं होताहै ।

संख्या (५३१)

(सं०) शिलाजतु, शैलनिर्यासं, अश्मजं, अश्मलाक्षा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सलाजीत	शिलाजीत	शिलाजित	शिलाजित	शिलाजित्	शिलाजीत	शिलाजतु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शिलाजित्त	सिलाजितु			Asphaltum punjabinum Bitumen judaicum	Jews's pitch Asphaltum

उत्पत्ति स्थान—जिन२ पहाड़ोंमें शिलाजीत होताहै, वे पहाड़ उष्ण-कालकी अत्यन्त ऊष्मासे बहुत तप जानेके कारणसे एक प्रकारका लाख या गोंद जैसा पदार्थ छोड़तेहैं उसको शिलाजीत कहतेहैं। सोने, चांदी, तांबे और लोहके भेदसे शिलाजीत चार प्रकारका होताहै (१) सोनेके शिलाजीतका रंग गुडहलके पुष्प जैसा लाल होताहै (२) चांदीके शिलाजीत श्वेत होताहै (३) तांबेका शिलाजीत मोरके कंठके रंग जैसा होताहै (४) लोहेका एक, गिद्धकी पांख जैसा होताहै वह सबमें उत्तम गिना जाताहै। दूसरा गोमूत्र जैसी गंधवाला और काला होताहै। तीसरा, गूगल जैसा होताहै।

शिलाजीत बनाने और शुद्ध करनेकी रीति—(१) जहां शिलाजीत निकलता हो वहांके पत्थरका टुकड़ा ले उसके बहुत छोटे २ टुकड़े कर, उष्णजलमें एक या दो पहर तक भिगो रक्खे, पीछे उनको मलकर निर्मल[illegible] निकालके मृत्तिकाके पात्रमें भरकर धूपमें रख देवे, जब उसका मैल नीचे बैठ जावे, तब उस नितरे हुए पानीको मृत्तिकाके दूसरे पात्रमें लेलेवे। ऐसे दो महीने तक धूपमें रख२ कर पलटते रहनेसे निर्मल शिलाजीत होजाताहै। इस की नीचेकी तलछटको भी ऐसेही शुद्ध करनेसे उसमें जो कुछ शिलाजीत रह गया हो, वह निकल आवेगा और नीचे केवल मैल रह जावेगा, इस निर्मल शिलाजीतको मंदाग्नि पर चढ़ाके, गोली बनानेके लायक गाढा कर लेना चाहिये (२) बेचनेवाले जो शिलाजीत लातेहैं, उसको लोहेके पात्रमें डाल दुगुने उष्णजलमें भिगोकर धूपमें रख देना चाहिये जब वह सब गलकर पानी जैसा होजावे दूसरे पात्रमें अफीमके जेठेकी भांति उसका चोवा टपका लेना चाहिये। ऐसे करते २ जब इसके नीचे कुछ भी मैल नहीं रहे और केवल जेठाही रह जावे, तब उसको उक्त रीतिसे गाढा कर लेवे, इस प्रकार से निकाले हुए शिलाजीतको गोदुग्ध, त्रिफलाके काथ और जल भंगरेके स्वरसमें अलग २ एक २ दिन खरल कर धूपमें सुखा लेनेसे शुद्ध हो जाताहै (३) लोहेके शिलाजीत को केवल जलसे धोनेसे शुद्ध हो जाताहै (४) नीमकी अंतर छालके काथ में शिलाजीतको भिगो कसूंबेके जेठेकी भांति टपका कर मंदाग्निसे गाढा कर लेना चाहिये (५) अथवा गिलोयके काथमें इसी रीतिसे शुद्ध कर लेना चाहिये। शुद्ध शिलाजीत की परीक्षा यह है कि निर्धूम अग्निमें रखनेसे उस-

की निर्धूम लौय उठने लगतीहै । अथवा थोड़ासा टुकड़ा पानीमें डालनेसे जो वह तैरता रहे तो उस टुकड़ेमें से कुछ पिलास लिये हुए काले रंगके धारवे पानीके पेंदे तक चले जातेहैं जबतक वह टुकड़ा नहीं गलजाताहै तबतक उसी प्रकारके धारवे उसमेंसे निकलते रहतेहैं, जब वह पेंदे बैठ जाताहै तो उसमें से धारवे निकलके पानी के ऊपर तक चले आतेहैं ।

(१) धातु भेदसे शिला जीतके गुण—सोनेका शिलाजीत-कड़वा, मधुर, चरपरा, शीतल और विपाकमें चरपरा होताहै वात और पित्तके रोगों मिटाताहै (२) चांदीका शिलाजीत-शीतल, चरपरा और विपाकमें मधुर होताहै कफ और पित्तके रोगोंको मिटाताहै (३) तांबेका शिलाजीत-तीक्ष्ण और उष्ण होताहै और कफके रोगोंको मिटाताहै (४) लोहेका शिलाजीत-उदर रोगोंको मिटाताहै। यह तीन प्रकारकाहै। जिनमें एक, गिद्धकी पांख जैसा होताहै। यह कड़वा, सलोना, विपाकमें चरपरा और शीत वीर्य होताहै, यह सबमें उत्तम गिना जाताहै (५) दूसारा, गोमूत्र जैसी गंध वाला और काला होताहै। यह स्निग्ध, मृदु तथा पचनेमें भारी, कडवा, कषैला और शीतल होताहै (६) तीसरा–गूगल जैसा होताहै। यह कड़वा, सलौना, विपाकमें कटु और शीतवीर्य होताहै (७) शुद्ध शिलाजीत–चरपरा, कड़वा, उष्ण, विपाकमें चरपरा और रसायनहै। कंपवायु, प्रमेह, पथरी, मूत्रशर्करा, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, क्षय, श्वास, वात, अर्श, पांडु, अपस्मार, उन्माद, शोफ, कुष्ठ, उदररोग और और कृमि रोगको मिटाताहै (८) एक मासे शिलाजीतको पीपल और इलायचीके साथ लेनेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात मिटताहै (९) इसको त्रिफला और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै (१०) इसको मधुके साथ चाटनेसे शुक्रज मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) गोमूत्रमें शिलाजीत मिलाके पीनेसे कुम्भकामला मिटताहै (१२) गिलोयके काथसे शुद्ध किये हुए शिलाजीतका सेवन करनेसे पंचकर्मसे शुद्ध हुए मनुष्य का वातरक्त मिटताहै (१३) इसको शकर युक्त दूधके साथ २१ दिन तक लेनेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटतेहैं (१४) इसको शकर और कपूरके साथ लेनेसे मूत्रजठर और मूत्रातीत मिटताहै (१५) इसको मधुके साथ चाटनेसे प्रमेह मिटताहै ।

संख्या (५३२)

(सं०) शिवलिंगी, आपस्तम्भिनी, चंडा, चित्रफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शिवलिंगी	शिवलिंगी	शिवळिंगी	शिवलिंगी	शिवलिंगिनी		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Bryonia Laciniosa	The Bryony.

स्थान—इसकी बेलें हिमालयसे सीलोन तक सब ठौर होतीहैं ।

पहिचान—शिवलिंगीकी बेल होतीहै । इसके तीन २ पत्ते लगतेहैं । इसके कच्चे फल गोल और हरे रंगके होते हैं । वे पकजाने पर कुछ लाल होजाते हैं । उनके ऊपर श्वेतचित्र होते है, इसके फलोंमें गोंद जैसा चेप निकलता है । उसचेप के भीतर कुछ चपटे बीज रहते हैं । उनके दोनों ओर नलेरी सहित शिवालिंग के आकार का चिन्ह रहता है ।

गुण—(१) शिवलिंगी–तिक्त, सारक, बलवर्द्धक, चरपरी, उष्ण दुर्गंधयुक्त और रसायन है और सिध्मरोग को मिटाती है (२) यह पारे को बांधती है (३) इसके बीज बहुत वामक हैं (४) इसके पत्तों को उबाल के उनका शाक बनाते हैं । इसके फल पकजानेके पीछे इसको औषधि के काम में लाना चाहिये ।

संख्या (५३३)

(सं०) शिंशपा, कृष्णसारा, पिच्छिला, भस्मगर्भा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सीसम	सीसम	शीशम	शिसवा	शिशुगाछ	सीसम	इरुवुड्ड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अँग्रेज़ी
शिंशपा	अगरुगिड्ड			Dalbergia sissoo.	The sissoo, The black wood, 'Rosewood'

स्थान—सीसम के वृक्ष हिन्दुस्थान में सब ठौर उगते हैं। ये बहुधा नदियों के किनारे बालूरेत या कंकरीली जमीन में बहुत होते हैं, ये हल्की जमीनमें अच्छे बढ़तेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ६० फुट या इससे कुछ अधिक ऊंचा होजाताहैं, इसकी पेदड़ सीधी नहीं होतीहै और उसकी गुलाई ६ से १२ फुट तक होतीहै। इसकी छोटी शाखें लटकतीहुई और रूंएदार होतीहैं। इसकी पेदड़की छाल एक इंच तक मोटी भूरे या कुछ पीलास लियेहुए भूरेरंगकी होतीहै और उसकी पुरानी दरारें ऊंडी पड़कर एक दूसरीसे मिलजातीहैं। इसके पत्ते पुराने होनेपर कुछ लाल भूरे रंगके होजातेहैं। पत्ते गोल और नोकदार होतेहैं वे मार्गशीर्ष से गिरने लगतेहैं जो माघ या फागुन तक गिरते रहतेहैं। फिर नये पत्ते निकलने लगतेहैं, जो चैत वैशाख तक निकल चुकतेहैं। पूरे बढ़ेहुए पत्ते अच्छे साफ हरे रंगके होतेहैं, इसके कुछ चन्दानियां सफेद रंगके पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं। इसकी फलियां बहुत पतली और चपटी होतीहैं। उनमें छोटे २ दो तीन चपटे बीज निकलतेहैं। इसकी लकड़ी बड़ी दृढ होतीहै। उसके बाहिरका भाग सफेद और भीतरका कुछ ललाई लियेहुए काले रंगका होताहै।

फूलने फलनेका समय—फागुन से जेठ तक इसके पुष्प लगते रहतेहैं। कभी २ इसके अषाढ से आसोज तक दुबारा पुष्प लगतेहैं। काती से माघ तक इसके बीज पकते रहतेहैं। इसकी लकड़ी और बीजोंमेंसे तेल निकालाजाताहै जो औषधिके काममें आताहै।

प्रयोग—(१) सीसम–चरपरा, कड़वा, कषैला, उष्ण वीर्य्य और अग्निवर्द्धक है (२) इसकी लकड़ीका बुरादा रक्तशोधकहै (३) इसकी जड़ शोषकहै (४) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहैं इसके बुरादेके क्वाथमें भी यही गुणहैं (५) इसका तेल त्वग्दोषमें काम आताहै (६) कोढ़में भी इसके पत्तोंका या बुरादेका क्वाथ पिलातेहैं (७) इसके प

त्तोंके लुआब को मीठे तेलमें मिलाकर छिली हुई या रगड़ खाई हुई चमड़ी पर लगानेसे शान्ति रहतीहै (८) मूत्रकृच्छ्रकी अत्यन्त पीड़ामें इसके पत्तोंका काथ पिलातेहैं (९) सुगंधित और चरपरी औषधियोंके साथ इसकी छालकी गोलियां बनाके विसूचिकामें देतेहैं (१०) इसके पत्ते या बुरादेका काथ पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (११) इसके बुरादेका शर्वत बनाके पिलानेसे रुधिरविकार मिटताहै (१२) इसका काथ पिलानेसे वसा प्रमेह मिटताहै (१३) इसके १० मासे बुरादेको आध पाव पानीमें ओटा आधा रख छान उसमें इसका शर्वत मिलाकर नित्य पीवे, ऐसे ४० दिन तक पीनेसे कोढ मिटताहै (१४) इसके पाव बुरादेको तीन सेर पानीमें रात दिन भिगो, ओटा, आधा रखके छान लेवे, फिर उसमें तीन पाव बूरा डालके शर्वत बनालेवे यह शर्वत रक्तशोधकहै (१५) इसके पत्तोंको गर्म करके बांधने और उनके काथसे धोनेसे स्तन शोथ उतर जातीहै ।

संख्या (५३४)

(सं०) शुक्तम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सिरको	सिरका				सिरका	पुल्लनीम्लु, निड्डुद

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		खल	सिरकाह	Actum	Vioegar.

स्थान—हिन्दुस्थानमें कई प्रकारके सिरके बनाये जातेहैं, और वे सब औषधिके काममें आतेहैं ।

प्रयोग—(१) सिरमें जमे हुए दूषित पदार्थको निकालनेके लिये सिरकेको मीठे तेल या जलमें मिलाकर लगाना चाहिये (२) लूकी दाह मिटानेके लिये सिरकेको मीठे तेल या जलमें मिलाकर शरीरपर मर्दन करना चाहिये (३) ईंटके टुकड़ेको गर्मकर सिरकेमें बुझाके सूंघनसे प्रतिश्याय मिटताहै

(४) इसका वफारा देनेसे ज्वरकी उष्मा कम हो जातीहै (५) सिरकेके लेप या बफारेसे बाहिर के, कीड़े और खिलाने पिलानेसे भीतरके कीड़े मर जातेहैं (६) कानमें सिरकेका बफारा देनेसे कानकी शूल और बहिरापन मिटताहै (७) मंदाग्निके कारणसे जो श्वासमें दुर्गंध हो जातीहै उसको मिटाने के लिये सिरकेमें नोंन डालके पिलातेहैं (८) सिरकेमें नोंन और फिटकड़ी डालके लगानेसे या कुल्ले करानेसे मसूढ़ोंमेंसे रुधिरका वहना बंद हो जाताहै (९) सिरकेको उष्णजलमें मिलाके कुल्ले करानेसे गलेके घाव या छाले मिटतेहैं (१०) ठण्ढे जलमें सिरका मिलाके पिलानेसे दाह और तृषा मिटतीहै (११) अंगूरी सिरकेमें नोंन मिलाके पागल कुत्तेके दंश पर लगातेहैं (१२) सिरकेको हल्का करके अग्निदग्धपर या उष्णजल आदिसे जो छाले हो जातेहैं उनपर लगातेहैं (१३) सिरकेमें गंधक पीसके लेप करनेसे गठिया और छोटे जोड़ोंकी शोथ उतर जातीहै (१४) सिरकेमें मीठा तेल मिलाके कड़ी पड़ी हुई जोड़ों पर और गठियापर लगातेहैं (१५) पुरुषार्थ बढानेके लिये सिरकेका कुछ दिनतक लगातार सेवन करना चाहिये (१६) सिरकेमें सोहागेको पीसकर दाद पर लगातेहैं (१७) ताड़की ताड़ीका बनाया हुआ सिरका बहुत दुखदाई हिचकीको रोकताहै (१८) ताड़ीके सिरकेको चर्मदल कुष्ठपर मर्दन करना चाहिये (१९) महुवेके सिरकेको जलमें मिलाके पिलानेसे विषूचिकाकी तृषा कम पड़तीहै। सांठेका सिरकाभी इसी काममें आताहै (२०) थोड़ी लाल मिरच पीस सिरकेमें मिलाकर कुल्ले करनेसे गलेकी पीड़ा मिटतीहै (२१) बालक होनके पीछे रक्त बन्ध करनेके लिये ५ तोले सिरका पिलाना चाहिये । परन्तु जबतक आवल नहीं निकल जाय तब तक नहीं पिलाना चाहिये क्योंकि इसके पिलानेसे गर्भाशयसे मवादका बहना बन्ध हो जानेसे कदाचित् आवल भीतरही रह जातीहै (२२) मेद रोगको मिटानेके लिये सिरकेका प्रयोग बहुत अच्छाहै (२३) महुवेका सिरका पिलानेसे पसीना आताहै (२४) सिरकेको शिरपर मलने और कानोंमें डालनेसे कानमें भिनभिनाहट और नाना प्रकारके शब्द होना मिट जाताहै (२५) सिरकेमें गुलाब जल मिलाके कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (२६) सिरकेमें शहद मिलाके मलनेसे मसूढ़ोंके रोग मिटतेहैं (२७) सिरका पिलानेसे जलधर मिटताहै (२८)

सिरकेमें राई मिलाकर कुल्ले करनेसे कंठकी सूजन मिटतीहै (२९) सिरकेको चूनेमें मिलाकर मस्तकके घावोंपर लगानेसे रुधिर बन्ध होजाताहै (३०) बालक का काग लटक आने पर मुलतानी मिट्टीको सिरकेमें मिलाकर तालू पर रखना चाहिये अथवा सिरकेमें माजूफलको घिस तर्जनी अंगुलिके लगाकर उससे कागको उठाना चाहिये (३१) बालूरेतमें सिरका मिला उसको गर्मकर पोटली बांधके पेटपर सेक करनेसे उदरपीड़ा मिटतीहै (३२) सिरका पिलानेसे तृषा मिटतीहै (३३) सिरकेमें कपूर मिलाकर लगानेसे बिच्छू का विष उतरताहै (३४) सिरकेमें मधु और कूट मिलाकर मलनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (३५) कांजीमें वस्त्र भिगोके ओढानेसे दाह मिटतीहै ।

संख्या (५३५)

(सं०) शुक्तिः, मुक्ताप्रसूः, मुक्तास्फोटः, महाशुक्तिः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सीपड़ी	मोती कीसीप	मोतीनी छीप	मोत्याचीशिंप	झिनुक	सीप	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
					Oyster shell. Bivalve shell

स्थान—सीप—समुद्र, नदी, और तलाव आदि जलाशयोंमें होतीहै ।

सीप दो प्रकारकी होतीहै, एक मोतीकी और दूसरी जलकी—सीप को शुद्ध करने और भस्म बनानेकी रीति—शंखको शुद्धकरनेकी जो रीतिहै उसी रीतिसे इसको शुद्ध करलेना चाहिये । जैसे कौडीकी भस्म बनानेकी रीति लिखीहै वैसेही इसकी भस्म बनाना चाहिये ।

प्रयोग—(१) इसकी भस्म—ठण्ढीहै । रक्त पित्त और ज्वरका नाश करतीहै (२) मोतीकी सीप—चरपरी, स्निग्ध, मधुर, रोचक और बहुत दीपन होतीहै । श्वास हृद्रोग और शूलको मिटातीहै (३) जलकी सीप—चरपरी, स्निग्ध, दीपन, रोचक, पाचक और बलवर्द्धकहै । गुल्म, शूल, और

विषके दोषोंको मिटातीहै (४) इसकी भस्मको अदरकके रसमें घोट, चने बराबर गोलियां बनाके, २ गोली नित्य देनेसे श्वास और कास मिटताहै (५) इसकी भस्मसे दांतोंको मलनेसे उनकी पीड़ा मिटतीहै और निर्मल होजातेहैं (६) इसकी भस्मका अंजन करनेसे पलकोंकी खुजली और नेत्रपीड़ा मिटतीहै (७) इसकी भस्मको सिरकेमें मिलाकर मलनेसे मस्से और तिल मिटतेहैं (८) सीपको पीसके नित्य दो वेर भगमें मलनेसे उसका ढीलापन मिटताहै (९) इसको पीस कर नाभिके आस पास लेप करनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१०) बच्चेके गलेमें सीप लटकानेसे दांत निकलनेका कष्ट नहीं भोगना पड़ताहै (११) सीपको सिरकेमें घिसकर कानोंकी लोरों पर लेप करनेसे जुकामकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै।

संख्या (५३६)

(सं०) शुंठी, महौषधं, विश्वं, नागरम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सूठ	सोंठ	सुं (सूं) ठ	सुंठ	शुँठि	सुंड	सोंठि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शुक्कु	शोंठि ओणशुंठि	जञ्जबील-याबस	ज़ञ्जबीलखुश्क		Dry gingor

प्रयोग—(१) सोंठ–रोचक, पाचक, चरपरी, हल्की, स्निग्ध, उष्ण वीर्य्य, वृष्य, हृद्य, पाकमें मधुर, सारक, अग्निदीपन और वीर्य्यवर्द्धक है। (२) बकरीके दूधके साथ सोंठके १॥ मासा चूर्णकी फकी देनेसे गर्भवती स्त्रीका विषमज्वर छूटताहै (३) इसको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे आधाशीशीकी पीडा मिटतीहै (४ इसके कल्कको बकरीके दूधमें मिलाकर नस्य देनेसे कई प्रकारके दोषोंसे पैदाहुई मस्तकशूल मिटतीहै (५) सोंठ और नीम के पत्ते या निबोलीको पीस, कुछ गर्मकर, उसमें थोड़ा सैंधा नमक डाल टिकिया बनाके नेत्रों पर बांधनेसे खुजली, पीड़ा और सूजन मिटजातीहै (६) इसका

गुनगुना क्वाथ पीनेसे हृद्रोग मिटताहै (७) इसके १ तोले चूर्णको कांजीके साथ नित्य पीनेसे आमवात मिटतीहै (८) इसके चूर्णकी नित्य फकी लेनेसे वादीके रोग मिटतेहैं (९) सोंठ और गिलोयका क्वाथ बनाकर पीनेसे बहुत दिनोंकी आमवात मिटतीहै (१०) इसके चूर्णको गुड़में मिलाकर नियमपूर्वक सेवन करनेसे अग्निदीपन होतीहै (११) सोंठ और बीलका क्वाथ पिलानेसे वमन और विसूचिका मिटतीहै। इस क्वाथमें कायफल मिलानेसे अधिक गुण करताहै (१२) सोंठ और हरड़के कल्कको खिलाकर गर्मजल पिलानेसे श्वास और हिचकी मिटतीहै (१३) सोंठ, आंवले और पीपलके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे हिचकी मिटतीहै (१४) सोंठके चूर्णकी फकी देके गर्म किया हुआ छालीका दूध पिलानेसे हिचकी मिटतीहै (१५) सोंठ और सैंधे नमकको महीन पीसके सुंघानेसे पक्षाघात मिटताहै (१६) सोंठको पानीमें घिस, उसकी २-३ बंद नेत्रमें टपकानेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (१७) इसका पाक बनाके खानेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै (१८) सोंठको एरंडके तेलमें घिसकर गुनगुना लेप करनेसे सर्दीकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१९) बछनागका विष उतारनेके लिये सोंठ खिलाना चाहिये (२०) ४ मासे सोंठका क्वाथ करके पिलानेसे मंदाग्नि उदररोग और जलके दोष मिटतेहै (२१) सोंठ और जोखारकी गर्म जलके साथ फकी लेनेसे कई देशोके जल पीनेसे पैदाहुए जलके दोष मिटतेहैं (२२) सोंठ और ...रकी फकी देनेसे हिचकी बन्ध होतीहै (२३) सोंठ और धनियेका क्वाथ पिलानेसे आमाजीर्ण मिटताहै (२४) सोंठ और एरंडकी जड़को ओटाकर पिलानेसे वादी और सर्दीकी पीड़ा मिटतीहै (२५) सोंठ, कायफल और असगंधको पीसकर मर्दन करनेसे वादीकी पीड़ा मिटतीहै (२६) पावभर सोंठमें एक तोला पारा मिला, खरलकर, मर्दन करनेसे संधिवाय वाय मिटतीहै (२७) कच्चे बीलकी गिर और सोंठको गुड़में मिलाकर छाछके साथ पीनेसे संग्रहणी मिटतीहै (२८) सोंठके कल्कसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे ज्वर, कास, संग्रहणी, प्लीह और पांडुरोग मिटताहै (२९) सोंठके क्वाथमें एरंडका तेल मिलाके पीनेसे वस्ति, कुक्षि और कमरकी शूल मिटतीहै (३०) सोंठ और गोखरूका क्वाथ प्रातः काल नित्य

पीनेसे आमवात और कटिशूल मिटताहै। इसी काथमें जोखार मिलाके पिलानेसे मूत्र-कृच्छ्र मिटताहै (३१) गोमूत्रके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे श्लीपदरोग मिटताहै।

संख्या (५३७)

(सं०) शूरणः, अर्शोघ्नः, दुर्नामारिः, कंडूलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सूरण	सूरण	सुरण	सूरण	ओल	ज़िमीकंद	सूर्णगड्डु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
किळंग	सूर्णगड्डुः		जिमीकंद	Amorphoplallus campanulatus Arum campanulatum	

स्थान—सूरण हिन्दुस्थान और सीलोनमें बहुत बोया जाताहै।

प्रयोग—(१) सूरण—दीपन, रूक्ष, कसेला, चरपरा, विष्टंभी, रोचक, पाचक, लघु और विशदहै। गुल्म, प्लीहा, कफ और अर्शको मिटाताहै और खुजली पैदा करताहै (२) इसका गूदा और बीज जलन पैदा करतेहैं, परंतु गठिया पर लगानेसे उसकी पीड़ा मिट जातीहै (३) सूरण का अचार उष्ण और वायुनाशक है (४) ताजा सूरण बहुत उत्तेजक और कफकारक है (५) सूरण पर गार लपेट आगमें भून, नमक और तेल मिलाके काममें लानेसे अर्श मिटताहै (६) सूरणका शाक पौष्टिकहै (७) सूरणको इम्लीके पत्ते और धानके तुषोंके साथ उबाल, धोकर, शाक बनाके खिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (८) कच्चा कंद खानेसे जिह्वा पर कांटे पड़ जातेहैं, इसलिये इसको पकाते समय इसमें इम्ली डाली जातीहै (९) इसके टुकड़ोंको पानीमें खूब उबाल कर खोपरेके साथ खानेसे रक्तार्श मिटताहै (१०) इसका पुल्टिस बांधनेसे बिच्छूका और दूसरे विषैले कीड़ोंका विष उतरताहै (११) इसके लगानेसे आंखकी गूंमड़ी और पीड़ा मिटतीहै (१२) इसके टुकड़ोंको पुटपाकमें पका-कर खानेसे अर्श मिटताहै (१३) इसके टुकड़ोंको छायामें सुखा चूर्ण बना-कर १० मासेकी नित्य प्रातःकाल फकी लेनेसे अर्श मिटताहै (१४)

सूरण कंदमें आटे जैसा बहुतसा पदार्थ होताहै, उसमें तीव्र विष युक्त रस होताहै, उसको धोकर या तपाकर निकाल दिया करतेहैं। इस कंदका शाक बनाया जाताहै।

संख्या (५३८)

(सं०) शृङ्गाटकं, जलफलं, जलवल्ली, शृङ्गरुहः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शिंघाड़ा	सिंघाड़ा	शिंगोड़ा	शिंगाडे	शिंगाडे	सिंघाडा	दुम्पगड्डु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Trapa bispinosa T quadrisPinosa	Water caltrep The singhara nut

स्थान—सिंघाड़े हिन्दुस्थान और सीलोनके तालाब, और झील, आदि जलाशयोंमें हुआ करतेहैं।

प्रयोग—(१) सिंघाड़े–शीतल, मधुर, गुरु, वृष्य, ग्राही, रुचिकारक, कषेले और शुक्रलहैं। ये पित्तके रोगोंमें बहुत उपकारीहै (२) सिंघाड़ेके सेवनसे अतिसार मिटताहै (३) सिंघाड़ेकी बेलको पीसकर लेप करनेसे दाह मिटतीहै (४) सिंघाड़ेके आटेकी रोटी बनाके खानेसे रक्तप्रदर मिटताहै (५) सिंघाड़ेके एक तोले चूर्णकी फक्की नित्य लेनेसे मूत्रातिसार मिटताहै, या इसके आटेकी दूधके साथ फक्की लेनेसे या उसका हलुवा बनाके खानेसे वीर्य्य बढ़ाताहै और पुष्ठ होताहै (७) पुष्टाईकी औषधियोंमें सिंघाड़ेका आटा मिलाया जाताहै। सिंघाड़ेमें मैदा बहुत निकलतीहै और उसकी गुलाल बनाई जातीहै। सिंघाड़ेको कच्चा, या उबालके खातेहैं।

संख्या (५३९)

(सं०) शैलेयं, शिलोद्भवं, स्थविरं, शिलापुष्पम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
छड़छड़ीलो,	भूरि छरीला	पथरफुल	दकड़फूल	शैलज,	छैलछलीरा	रातिपुव्वु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कल्पाशि	कल्लुहुव्वु	उशनाह	दोवालाह	Parmelia kamtschadalis P perlata P perforta	Lichens

स्थान—छड़ीला हिमालय और नीलगिरी आदि कई पहाड़ोंमें तोताहै ।

प्रयोग—(१) छड़ीला—शीतल, हृद्य, लघु, कड़वा, चरपरा, रोचक, ग्राही, वल वढ़ानेवाला, रेचक और कृमिनाशकहै (२) छड़ीला औषधियों की चरपराहट मिटाताहै और ज्वरको छुड़ाताहै (३) कुत्तेका विष उतानेकेलिये इसका प्रयोग किया जाताहै (४) कागला रोगमें यह वहुत उपकारीहै (५) इसके सेवनसे मंदाग्नि मिटतीहै (६) फुप्फुस सम्वन्धी रोगोंमें इसका सेवन वहुत उपकारीहै (७) इसकी धूनीसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (८) इसके चूर्णकी नस्य लेनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (९) यह सारकहै और व्रणादिकको सुखा देताहै (१०) मासिकधर्ममें कष्टसे रजका निकलना, वमन, पथरी, नाकसे गाढे पीपका निकलना, यकृत, गर्भाशय और आमाशयकी पीड़ामें यह काम आताहै (११) साधारण पीड़ा, मुंहसे लाळ गिरना, गले और दांतोंके रोगको मिटाताहै (१२) पित्तकी मस्तकपीड़ामें इसका लेप करतेहैं (१३) इसको पानीमें औटा पीस पुल्टिस वनाके वृक्क, पृष्ठ वंश और कमर पर वांधनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै और मूत्रवृद्धि होतीहै ।

संख्या (५४०)

(सं०) शैवालं, शैवलं, जलनीली, हटपर्णी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कांजी, काई	काई, सिवार	शेवाल	शेवाळे	शेहाला	काई	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन
				(1) Blyxa octan dra. Vallisneria o. (2) Seratophyllum submersum (3) Vallisneria spiralis V.spiraloides.

स्थान—यह तालाबोंमें और बहुधा बहते जलमें बहुत होतीहै । तीन आचार्योंने शैवालके अलग अलग तीन लैटिन नाम लिखेहैं इसलिये यह निश्चय नहीं है कि कोनसा नाम ठीकहै ।

प्रयोग—(१) यह—शीतल, कड़वी, मधुर, सारक, रूक्ष, सलोनी, पचनेमें हल्की और स्निग्ध होतीहै (२) तृषा, रक्तपित्त, ज्वर शोष, दाह और व्रणको मिटातीहै (३) काईको एक मिट्टीके ठीकरेमें भर चूल्हेपर चढा उसकी भस्मकर उसमें बराबर बुरा मिलाकर चार मासे नित्य लेनेसे वीर्यका पतलापन और प्रमेह मिटताहै (४) काईको निचो उसका पानी निकालके इन्द्रीके छिद्रमें टपकानेसे घाव भर जाताहै ।

संख्या (५४१)

(सं०) शोभाञ्जनः, शिग्रुः, हरितशाकः, शाकपत्रः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सहिंजणो।	सहिंजना।	शरघवो	शेवगा	सजिना,	सोहजना	मुनग, मुनगा,

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मुरगे,	नुगे			Moringa pterygosperma Hyperanthera Moringa	The horse Radish tree

स्थान—सहिंजनेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं । और अपने आपभी उगतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष २० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेड़ सीधी और गुलाईमें ४–५ फुटकी होतीहै इसके बड़ी २ थोड़ी शाखें लगतीहैं इसकी छाल कोमल और भूरे रंगकी होतीहै उसमें गहरी दरारें होतीहैं । इसके पत्ते आकारमें

इम्लीके पत्तों जैसे होतेहैं, परन्तु लम्बाई चौड़ाईमें उनसे कुछ बड़े होतेहैं । वे सींकके दोनों ओर आमने सामने लगतेहैं । इसके सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं, जिनमें मधु जैसी तीव्र गंध आतीहै । इसके ६ से १० इंच लम्बी लटकती हुई फलियें लगतीहैं । मृगशिर पोषमें इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं और फागुन चैतमें नये निकल आतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—पोष से चैततक इसके पुष्प लगतेहैं । फागुन और चैतके महीनेमें इसके लम्बी लम्बी फलियें लगतीहैं । चैतके पीछेतक इसकी फलियां पकती रहतीहैं जबतक वे नहीं तोड़ी जावे तबतक वृक्ष परही लटकती रहतीहैं । इसके बीजोंको सफेद मिरच कहतेहैं । इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै, इसकी लकड़ीमेंसे नीला रंग निकाला जाताहै, इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ३६ तोले स्वच्छ निर्मल सफेद तेल निकलताहै, यह तेल बिगड़ता नहींहै, इसमें सुगंध और स्वाद नहीं होताहै ।

प्रयोग—(१) सहिंजना—चरपरा, तीक्ष्ण, उष्ण, मधुर, लघु, दीपन, रोचक, रूक्ष, दाहकारक, सलोना, कड़वा, ग्राही, हृद्य, शुक्रवर्द्धक और पाकमें चरपरा है (२) इसकी जड़ चरपरी, उत्तेजक और मूत्रवर्द्धक है (३) जलंधर, तिल्ली, यकृत, भीतरकी सूजन, और पथरी आदिके रोगोंमें इसकी जड़की छालका क्वाथ या ताजा रस पिलातेहैं (४) सोजिश मिटानेके लिये इसकी छालका लेप करतेहैं या उसके क्वाथको गाढा करके लेप करतेहैं (५) इसके ताजे रसको कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (६) सहिंजनेका गोंद कानमें बुरकानेसे कानका पीप बन्ध होजाताहै (७) इसके पुष्प उष्ण और रूक्षहैं (८) ये ठण्डे दोषोंको निकालतेहैं और इनका लेप करनेसे सूजन मिटतीहै (९) इनको पीसकर मिश्रीके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (१०) इनको ओटाकर पिलानेसे पित्तका निकास बढाताहै (११) इसकी जड़के रसको दूधके साथ पिलानेसे शर्कराश्मरी मिटतीहै और मूत्रवृद्धि होतीहै (१२) इसकी जड़के रसमें सोंठ डालके पिलानेसे पाचनशक्ति बढतीहै (१३) अदरकका रस और इसकी जड़का रस दोनोंको मिलाकर पिलानेसे श्वास मिटताहै (१४) इसकी जड़का पुल्टिस बांधनेसे सोजिश उतर जातीहै परंतु त्वचामें बहुत दाह और पीड़ा होतीहै (१५) इसकी फलीका शाक खानेसे

आंतोंमें कीड़े नहीं पड़तेहैं (१६) इसके छोटे पेड़की जड़का क्वाथ पिलानेसे पुरानी गठिया, अर्द्धांग और जलंधर मिटताहै (१७) इसके बीजोंको यंत्रमें दबाके तेल निकालतेहैं उस तेलका मर्दन करनेसे छोटे जोड़ोंकी सूजन और गठियाकी तीव्रपीड़ा मिटतीहै (१८) इसकी सवा मासे ताजी जड़को ओटाके पिलानेसे ठहर २ के आनेवाला ज्वर छूट जाताहै। अपस्मार और स्त्रियोंके अवेशके रोगमें भी यही क्वाथ पिलातेहैं (१९) इसकी ताजी जड़ सरसों और अदरकको पीसकर लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (२०) तिल्ली और मंदाग्नि वालेको इन तीनोंकी गोलियां बनाके खिलातेहैं (२१) यकृत्, तिल्ली, रुधिर के वहनेवाली नसोंकी पीड़ा, धनुस्तंभ, स्नायुकी निर्बलता, किसी अंगका शून्यपन, पीपवाली फुन्सियां, शरीरपरके दाग और कोढमें इसके फलका सेवन करना बहुत लाभकारीहै (२२) मुख और गलेके छाले मिटानेके लिये इसकी जड़के क्वाथसे कुल्ले करने चाहिये (२३) इसका गोंद मुखमें रखनेसे दांतका सड़ना बन्ध हो जाताहै (२४) इसकी जड़की छालका क्वाथ पिलानेसे वांइटे मिटतेहैं (२५) जङ्गली सहिजनेकी छाल चित्रककी जड़ कबूतरकी और मुर्गेकी बींटका नारूपर लेप करतेहैं (२६) बोये हुए सहिजनके पत्तोंका ४ तोले रस वमन करानेकेलिये पिलातेहैं (२७) सहिजनेकी सवा तोले छालका क्वाथ पिलानेसे छोड़ गर्भाशयसे बाहिर निकल जातीहै (२८) छोड़ निकालनेकेलिये इसकी जड़का प्रयोगभी करतेहैं (२९) इसकी जड़को पानीमें भिगोके ओटानेसे तेल निकल जाताहै, उसमें बहुत दुर्गंध और चरपराहट होतीहै (३०) बच्चोंका यकृत् बढ़ जाने पर इसकी जड़का लेप करतेहैं (३१) गला पड़ जानेसे जो स्वर भंग होजाताहै उसको मिटानेकेलिये इसकी ताजी जड़के क्वाथके कुल्ले करातेहैं (३२) गिल्टियोंकी सूजन विखेरनेकेलिये बहुधा इसके गोंदका लेप करतेहैं (३३) इसके पुष्प बलवर्द्धकहैं इनके क्वाथसे प्रतिश्याय मिटताहै (३४) इसके पत्ते, थोड़ा लहसन, एक टुकड़ा हल्दीका, थोड़ा नमक और काली मिरच पीसके पिलानेसे बावले कुत्तेका विष उतरताहै। इन सब चीजोंका पीसकर उसके दंशपर लेप करनेसे ५, ६ दिनमें उसका घाव भर जाताहै, पित्त शोथ उतर जातीहै और ज्वर छूटजाताहै (३५) इसके पुष्पोंको दूधमें ओटाकर पीनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (३६) गठियाकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसकी जड़का लेप

फतेहैं (३७) इसकी जड़की या वृक्षकी छालको पानीमें पीस, टिकिया बनाके बांधनेसे छाला होजाता है (३८) इसकी छालमें कुछ हींग और सोंठ मिला जलके साथ पीसकर गोलियां बना, दो मासेकी मात्रा दिनमें २, ३ बेर देनेसे पेटकी बादीकी पीड़ा, शूल और अफारा मिटताहै (३९) इसके पत्ते और फलियां उष्ण हैं (४०) इसके गोंदका लेप करनेसे गठियाकी सूजन मिटतीहै (४१) इसकी जड़का हिम या फांट पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके जलंधर मिटता है (४२) इसके पत्तोंके रसमें कालीमिरचको पीसकर लेप करनेसे मस्तक की शूल मिटतीहै (४३) इसके बीज और पोखरमूलको देनेसे बालकोंके पेटके कीड़े मरतेहैं (४४) इसके बीज, जड़ और सेंधे नमकको कांजीके साथ पीस कर लेप करनेसे स्नायुक पीड़ा मिटतीहै (४५) इसके पत्तोंको पानीके साथ पीस गर्म कर लेप करनेसे सर्दीकी या अन्य प्रकारकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (४६) इसके पत्तोंके रसमें थोड़ा मधु मिलाकर नेत्र पर लेप करनेसे नेत्रके गोलेकी पित्तशोथ मिटतीहै (४७) इसकी नरम डालियोंके रसमें मधु मिलाकर नेत्रोंमें टपकानेसे रतौंधा मिटताहै (४८) इसके एक तोले गोंदको नित्य दहीके साथ ७ दिन तक खानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४९) इसके पत्तोंको पानीके साथ पीस गर्मकर गुन गुना लेप करनेसे वायुकी पीड़ा मिटतीहै (५०) इसकी छालके काथमें गुड़ मिलाकर पिलानेसे आंवल जल्दी गिर जातीहै (५१) इसके बीजोंको महीन पीस, गायके घी और मधुमें मिला बत्ती बनाकर ऋतुधर्मके पीछे योनिमें रखनेसे गर्भ धारण होनेकी शक्ति जाती रहतीहै (५२) इसके बीजोंको महीन पीस उसका गुन गुना लेप करनेसे घुटनोंकी पुरानी पीड़ा मिटतीहै (५३) इसके पत्तोंको बराबर तेलके साथ पीस, चोट या मोचकी पीड़ा पर लेप कर, धूपमें बैठनेसे उस ठौरकी पीड़ा मिटतीहै (५४) इसकी छाल और राईको पीसकर लेप करनेसे कान के नीचेकी सूजन मिटतीहै (५५) इसकी जड़की छाल और आकके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे अर्श मिटताहै (५६) इसके और कासमर्दके पत्तोंका यूष बनाके पिलानेसे हिचकी मिटतीहै (५७) इसकी जड़की छालको पीसकर लेप करनेसे स्नायु रोग मिटताहै (५८) इसके पत्तोंको भिगोकर खानेसे छातीकी पीड़ा मिटताहै (५९) इसकी जड़के कल्कको सरसोंके तेलमें औटा

जलाकर उस तेलका मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (६०) इसके पत्तोंका यूष बनाकर पिलानेसे श्वास मिटताहै (६१) इसकी जड़को पीस उष्ण करके लेप करनेसे श्लीपद मिटताहै (६२) इसके क्काथमें हींग और सैंधा नमक मिलाकर प्रात काल नित्य पिलानेसे विद्रधि मिटजातीहै (६३) इसके गोंदको तिलोंके तेलमें मिला गर्म कर कानमें टपकानेसे कर्णशूल मिटतीहै (६४) इसकी जड़का रस, सैंधा नमक, मधु और तेलको गर्म कर कानमें टपकानेसे कानकी शूल मिटतीहै (६५) इसके पत्तोंके रससे नेत्रोंको तपानेसे नेत्र रोग मिटतेहैं (६६) इसकी जड़का गुन गुना क्काथ पिलानेसे पथरी मिट जातीहै (६७) इसको और देवदारुको कांजीके साथ पीसकर गुन गुना लेप करनेसे दुस्साध्य अपची मिटतीहै (६८) इसकी जड़की छाल और वच्छनागको पीसकर लेप करनेसे विद्रधि मिटतीहै (६९) जड़के रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे अन्तर्विद्रधि मिटतीहै (७०) इसके पत्तोंको पीस, टिकिया बनाकर, नेत्रोंपर बांधनेसे श्लेष्माभिष्यंद मिटताहै । इसके कोमल पत्ते, पुष्प, फालियां और कोमल टहनियोंके शाक आदि खानेके कई प्रकारके पदार्थ बनातेहैं ।

संख्या (५४२)

(सं०) श्यामाकः, त्रिबीजः, अविप्रियः, राजधान्यम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सावों	सावां, समा	शामो, सावा	सावे, सावे	श्यामाधान	सुवाक	चामलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शामै	शामे			Panicum frumentaceum Oplismenus frumentaceus	

स्थान—हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें सांवांकी खेती बहुत होतीहै इसकी खेतीका प्रारम्भ वर्षाऋतुमें होताहै । यह इतनी शीघ्रतासे बढताहै कि प्रायः ६ सप्ताहमें पकजाताहै । इसको रेतीली जमीन बहुत मानतीहै । उसमें, यह, बीजसे पचासगुना पैदा होताहै । संयुक्तप्रदेशमें वसंतऋतुमें इसकी दूसरी बेर खेती बोनेका प्रारम्भ होजाताहै ।

१०० तोले सांवांमें साढे बहत्तर तोले मैदा और तीन तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) यह मधुर, स्निग्ध, कषेला, शीतल, पचनेमें हल्का और ग्राहीहै। वादीको बढाताहै। कफ, पित्त और विषके दोषको दूर करताहै (२) इसकी प्रकृति उष्णहै (३) यह पुराना पड़नेसे नीरोगदायक होजाताहै।

यह—दूसरे अन्नोंसे सस्ता मिलनेके कारण दीन या गरीब नीच जातिके मनुष्योंके खानेके काममें बहुत आताहै। इसको सेककर अथवा दूधमें रांधकर खातेहैं।



संख्या (५४२)

(सं०) श्योनाकः, मंडूकपर्णः, भूतसारः, भल्लकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	सोनापाठा	मरमढच	दिंडा	शोनागाछ		दुन्दिलमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	हेग्गुग्गटे			Calosrnthus indica Proxylum indicum	

स्थान-श्योनाकके वृक्ष हिन्दुस्थान भरमें सब ठौर बोये जातेहैं।

पहिचान-इसका बड़ा वृक्ष होताहै। इसके नीम जैसे बड़े पत्ते सलीके दोनों ओर लगतेहैं इसके पतली और पोली फलियां लगतीहैं।

प्रयोग—(१) यह-कड़वा, कषेला, चरपरा, शीतल, दीपन और ग्राही होताहै। सन्निपात ज्वर, कफ, अरुचि, आम वात, कृमि, वमन, अतिसार, तृषा और कोढ़को मिटाताहै (२) इसकी जड़की छाल ग्राही और बलवर्द्धकहै इसका क्वाथ बनाकर पिलानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (३) इसकी जड़की छालका कुडाके पत्तोंमें पुट पाककर, उनका स्वरस निकाल उसमें मोचरस मिलाके चटानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (४) इसकी जड़की छालको महीन पीस, तिलोंके तेलमें ओटाकर, उस तेलको कानमें डालनेसे कानकी शूल और पीड़ा मिटतीहै (५) इसकी जड़की छालको हल्दीके साथ पीसकर घोड़े

और बैलोंकी पीठके घावपर लेप करतेहैं (६) जड़की छालके क्राथको गाढा करके लेप करनेसे गठियाकी सूजन उतरतीहै (७) इसकी जड़की छालके चूर्ण और क्राथसे वहुत पसीना आता है । परन्तु उनमें रोग मिटानेकी शक्ति कमहै (८) इसकी जड़की छालके चूर्णकी फकी लेनसे गठियाकी तेज पीड़ा मिटतीहै (९) इसकी छालका और कुटजकी छालका रस मिलाकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै ।

संख्या (५४४)

(सं०) अरलुः, कट्वंगः, प्रियजीवः, कुटंनटः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	अरलु, टेंटु	अरडूशो	पिंवळाटेंटू			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Ailanthus excelsa	

स्थान—अरलूके वृक्ष संयुक्तप्रदेश, विहार, पश्चिमी प्रायद्वीप, कर्नाटक, बम्बई, कैरा, पंचमहल, गुजरात और राजपूताना आदि देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ६०, ८० फुट होतीहै, इसकी छाल सफेद होतीहै, इसके पत्तोंकी डालयें ८ से १२ इंच लम्बी और कभी कभी दो तीन फुट लम्बी हो जातीहै । इसके पत्ते गहरी कटी हुई कोरोंके कंगूरेदार होतेहैं । उनके ८ से १४ जोड़े एक सींकके ऊपर प्रायः आमने सामने लगतेहैं इसके पुष्प कुछ पीले रंगके होतेहैं । शीतकालके पहिले भागमें इसके सब पत्ते गिर जातेहैं, फागुन चैतमें नवीन आजातेहैं ।

फूलने फलने का समय—चैत वैशाखमें यह वृक्ष फूलताहै इसके लाल गोंद लगताहै ।

प्रयोग—(१) अरलू-रूक्ष, अग्नि और बलवर्द्धक, कषेला, शीतल और कड़वाहै (२) इसकी छालके चूर्णकी फकी लेनेसे मंदाग्नि मिटती है

(३) निर्बलतामें आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसकी छालके चूर्णकी फकी देतेहैं (४) इसकी फकी लेनेसे निर्बलता और खांसी मिटतीहै (५) इसके चूर्णको अदरकके रस और मधुके साथ चटानेसे श्वास मिटताहै (६) इसकी छालको ठण्ढे या गर्म पानीमें चार पहर भिगो मल छानकर दिनमें दो वेर पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (७) सूखे कफको निकालनेके लिये इसके क्वाथमें मधु मिलाकर पिलाना चाहिये (८) इसकी ३ मासे छाल और तीन मासे सोंठको ओटाकर पिलानेसे वांइंट और आक्षेप वायु मिटतीहै (९) वालक होनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये इसकी छाल और पत्तोंको काममें लातेहैं (१०) इसके गोंदके चूर्णको थोड़ा २ दूधके साथ पिलानेसे आमातिसार और खांसी मिटतीहै (११) इसके गोंदको दहीके साथ देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (१२) इसकी छाल वहुत कड़वी होतीहै ।

संख्या (५४५)

(सं०) श्रीवल्ली, शिववल्ली, कंटवल्ली, कटुफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजावी	तैलङ्गी
सीकाकाई	सीकाकाई	सीकेकाई	शिकेकाई	काटागाछ		शिकाया

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रज़ी
चिकाकायि	सीगेयवल्ली			Acacia conciuna	

स्थान—सीकाकाईके पेड़, दक्षिण, मालवा, राजपूताना, वंगाल और अवध आदि वहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका वड़ा झाड़ होताहै । इसकी शाखाओंमें तीखे और मुड़े हुए कांटे ठौर २ लगे रहतेहैं । इसके पुष्पोंकी कलियां वैंजनी रंगकी होती हैं । पुष्प पीले रंगके होतेहैं, इसकी फलियां मोटी, गिरदार और सीधी, ३, ४ या ५ इंच लम्वी, पौन या एक इंच चौड़ी और वीजोंके वीच वीचमें चिपी हुई होतीहैं ।

फूलने फलने का समय—फागुन से अषाढ तक वर्षा ऋतुमें यह वृक्ष फूलताहै, शीतकालके प्रारंभमें इसके फल पक जातेहैं। इसकी छालमेंसे एक प्रकारका रंग निकलताहै। हल्दी और इसके पत्तोंको मिलाकर बहुत सुंदर नीला रंग निकालतेहैं।

प्रयोग—(१) पित्तकी वमन मिटानेके लिये, इसके कोमल पत्ते, कुछ नमक, इम्ली और कुछ लाल मिरचोंको पीसकर चटनी बनाके खातेहैं (२) इस चटनीको रोटीके साथ खानेसे अरुचि मिटतीहै (३) इस चटनीके खानेसे विरेचनके एक या दो अच्छे वेग हो जातेहैं और उनमें पित्त निकलताहै (४) इससे अपशब्द और डकारकी दुर्गंध मिटतीहै (५) इसके पत्तोंको जलमें भिगो छानकर पिलानेसे हल्का विरेचन लगताहै (६) इसके कोमल पत्तोंको ओटाकर पिलानेसे हल्का विरेचन होताहै (७) इसकी फलियों को ओटाके पिलाने से दूषित वायु आदि से पैदा हुआ ज्वर छूट जाताहै (८) कोमल पत्तों का हिम या फांट पिलाने से आफरा मिटताहै (९) कोमल पत्तोंको पीस गर्मकर पेटपर लेप करनेसे आफरा मिटताहै और हल्के दस्त लगतेहैं (१०) इसकी फलियोंको पीसकर लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (११) फोड़ोंको साफ करनेके लिये भी इनका लेप करतेहैं (१२) पेटमें तिल्ली आदि अंगोंमेंसे जो उनके रसका बहना बन्ध होजाताहै उनकी रुकावटको मिटानेके लिये इसके कोमल पत्तोंका काथ पिलातेहैं (१३) इसकी फलीके चूर्णकी फक्की देनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (१४) इसकी फली हल्की, रेचक, वामक और हल्लास पैदा करनेवाली है। फलीकी रेचक शक्ति सोनामुखीसे अच्छीहै। परन्तु इसकी गंध और स्वादसे हल्लास पैदा होजाताहै। इसकी रेचक शक्ति बढानेके लिये इसकी साथ कोई क्षार मिलादेना चाहिये (१५) कामलारोग जो हृदयकी रुकावटसे नहीं पैदा हुआ हो, वह इसकी फलीसे वमन करानेसे मिटजाताहै (१६) सवा तोले सीकाकाई को ढाईपाव पानीमें ओटाकर उससेशिरको धोनेसे बाल अच्छे बढतेहैं और शिरमें खोरा जमना बन्ध होजाताहै (१७) इसकी थोड़ी मात्रा देनेसे बल बढताहै और अधिक मात्रा लगातार देनेसे वमन और विरेचन होने लगतेहैं। (१८) इसकी फली—केश और कपड़े धोनेके काममें आतीहै।

संख्या (५४६)

(सं०) श्लेष्मान्तकः, शेलुः, उद्दालः, बहुवारकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लेसवो	लिसोडा(रा)	गुदो	शेलवट	च.लता	लिमूडा	चेन्ननकर (।)

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नेरिविलि	चल्लेकायि		सपिस्ता	Cordia myxa	Sebesten

स्थान–लिसोडेके वृक्ष चनावसे आसाम तक, खासिया पहाड़, बंगाल, ब्रह्मा, सिन्ध, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान–गूंदे दो प्रकारके होतेहैं । एकतो वहहै कि जिसके बड़ा फल लगताहै उसको राय गूंदा कहतेहैं । और दूसरा छोटे फलका, उसको कठगूंदा कहतेहैं । यह वृक्ष ३०,४० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेदड छोटी सीधी या कुछ २ मुड़ी हुई होतीहै । इसकी गुलाई ४-६ फुट होतीहै । इसके फैलीहुई और ऊंची बहुतसी शाखें होतीहैं । इसकी छोटी शाखें कुछ ललाई लिये हुए भूरे रंगकी होतीहैं । इसकी छाल एक इंच मोटी, हल्के भूरे रंगकी, खरदरी और कभी २ कुछ-काले रंगकी होतीहै । इसके छोटे पत्ते चिकने होतेहैं जो पूरे बढनेपर थोड़े बहुत खरदरे होजातेहैं, इसके सफेद रंगके पुष्पोंके गुच्छे और हरे रंगके फलोंके झूमके लगतेहैं । इसके फल पकजानेपर कुछ लाल भूरे रंगके होजातेहैं । उनका छिलका मोटा होता है और चेपदार पदार्थसे भराहुआ होताहै । इसकी गुठलीमें एक या दो खाने होतेहैं उनमें मींगी होतीहै । चैतमें इसके पत्ते गिर जातेहैं और थोड़े दिनों पीछे नवीन निकल आतेहै ।

फूलने फलनेका समय–फागुन और चैतमें इसके पुष्प लगतेहैं वैशाख, से अषाढ तक फल पक जातेहैं । इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै । इसके हरे पत्ते और गूंदेका रस रंगतके काममें आताहै । इसकी मींगींमेंसे तेल निकला-जाताहै वह सूंघने और लगानेके काममें आताहै ।

प्रयोग—(१) लसवा—मीठा, कपैला, कड़वा, चरपरा, पाचक, स्निग्ध और पित्तको शांत करनेवालाहै (२) इसके फलका चेप औषधियोंकी चरपराहटको कम कर देताहै (३) छातीके रोग और सूखी खांसी मिटानेके लिये इसके फलका काथ पिलातेहैं (४) फलोंके चेपमें मिश्री डालकर पीनेसे मूत्राशय और मूत्रनाली की दाह मिटताहै (५) इसके काथके कुल्ले करनेसे मसूड़े दृढ हो जातेहैं (६) पित्तके रोगोंमें मृदु विरेच करानेके लिये गूंदेका बहुतसा काथ पिलातेहैं (७) गूंदेकी मींगीको पीसकर लेप करनेसे दाद मिटताहै (८) इसके पत्तोंको फोड़ेपर बांधतेहैं (९) मस्तकपीड़ा मिटानेके लिये, मस्तक पर गूंदेके पत्ते बांधने चाहिये (१०) गूंदेकी छालका रस और नारियलके तेलको मिलाकर पिलानेसे पेटके मरोड़े मिटतेहैं (११) इसकी छालको पीसकर लेप करनेसे खुजली मिटतीहै (१२) छालको औटा पिलानेसे ज्वर छूटताहै (१३) छालके चूर्णकी फकी देनेसे बल बढ़ताहै (१४) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड़, उनको तपाकर पेटपर बांधनेसे बादीसे कठोर पड़ा हुआ पेट ढीला पड़ जाताहै (१५) गूंदेकी छालको पानीमें भिगो मल छानकर पिलानेसे पथरी मिटतीहै (१६) गूंदेकी छालके हिममें मिश्री डालकर पीनेसे मूत्रकी दाह मिटतीहै (१७) गूंदेकी छालका काथ पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (१८) इसका पकाहुआ फल मीठा, स्निग्ध, पचनेमें भारी, विष्टंभी, शीतल और चरपराहट मिटानेवालाहै (१९) इसके कोमल पत्तोंका १ तोला चेप निकाल, उसमें बूरा मिलाकर पीनेसे मूत्रातिसार मिटताहै (२०) इसकी कोंपलोंको पीस, गोलियां बनाके देनेसे अतिसार मिटताहै (२१) इसके कोमल पत्तोंको अग्नि पर तपाकर १० दिन तक बांधनेसे कंठमाला मिटतीहै (२२) यह पित्त, खांसी, ज्वर और प्यासको मिटाताहै (२३) इसका लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२४) गूंदा मुंहमें रखनेसे जीभका फटना बंध होजाताहै (२५) गुदाको घी से चुपड़, उसपर गूंदेकी भस्म बुरकानेसे उसका निकलना बन्ध होजाताहै (२६) इसके एक तोला पत्ते और १५ काली मिरचको पीस छानके पिलानेसे बावले कुत्तेका विष उतरताहै । पके हुए गूंदे खानेके काममें आतेहैं, कच्चे गूंदेका अचार बनातेहैं।

संख्या (५४७)

(सं०) लघुश्लेष्मांतकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गूंदा	छोटागूंदा	नहानूगूंदो	लहानभोंकर	छोटोबहुयार		चन्ननक्करा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शिरुनरिवि-लि				Cordia obliqua C, Latifolia	

स्थान—छोटे गूंदेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं ।

प्रयोग—(१) सूखी खांसी मिटानेकेलिये गूंदेका काथ करके पिलातेहैं (२) गुठली निकाले हुए गूंदेको सुखा चूर्ण बनाके फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (३) फुप्फुसके रोगमें गूंदेका सेवन अधिक लाभकारीहै (४) गूंदेके कच्चे फलमें एक प्रकारका गोंद होताहै वह मूत्रकृच्छ्रमें काम आताहै (५) इसके पत्तोंकी राखको घीमें मिलाकर लगानेसे घाव भरजाताहै (६) इसके पत्तोंको गर्मकर बद पर बांधनेसे बद बैठजातीहै ॥ अकालके समयमें गूंदेके फल और पुष्प खानेके काममें आतेहैं ।

संख्या (५४८)

(सं०) (लघुश्लेष्मांतकभेद) मुक्ताफलः, बिन्दुफलः, पक्वरक्तफलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गूंदी	गोंदी	गुंदी	गोंदनी		गूंदी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Cordia Rothii C angustifolia	

स्थान—यह संयुक्त प्रदेश, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताने आदि देशोंमें होतीहै ।

पहिचान—गूंदीका वृक्ष—३०, ४० फुट ऊंचा होताहै। इसकी पेदड़ छोटी होतीहै और उसकी गुलाई ३–५ फुट तक होतीहै। इसकी शाखें फली हुई और उनके अन्तका भाग बहुधा झुका हुआ रहताहै। इसकी पेदड़की छाल मोटी, हल्के या गहरे भूरे रंगकी होतीहै, यह बहुत नहीं तड़कतीहै । इसके पत्ते खरदरे होतेहैं। इसके छोटे सफेद पुष्पोंके और छोटे २ हरे फलोंके गुच्छे लगतेहैं, जब फल पक जातेहैं तब हल्के सिंदूरी रंगके होजातेहैं वे चेपदार पदार्थसे भरे रहतेहैं उनमें एक बीज होताहै । माघ फागुनमें इसके नवीन पत्ते आतेहैं इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

फूलने फलने का समय—चैतसे जेठ तक इसके पुष्प लगतेहैं । वर्षा ऋतुमें फल पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) गूंदी–मीठी, कुछ शीतल, कृमिनाशक और वातलहै (२) इसकी छालका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (३) मुखपाक पिटानेके-लिये इसकी छालके काथसे कुल्ले करतेहैं (४) गूंदीके पत्तोंको काली मिरचके साथ घोट छान कर पीनेसे धातु पुष्ट होतीहै (५) इसकी ३ वर्षकी जड़ जमीनके नीचेसे निकाल उसका टुकड़ा मुंहमें रखनेसे पित्तके विकारसे पड़ा हुआ गला खुल जाताहै (६) गूंदीके रसमें मिश्री मिलाके पीनेसे अथवा इसके पत्तोंके चूर्णकी शकरके साथ फकी लेनेसे धातु पुष्ट होतीहै, परन्तु विशेष खानेसे वादी बढ़ जातीहै (७) सूखी गूंदीके चूर्णसे शकर साफ करतेहैं। पके हुए फल खानेके काममें आतेहैं ।

संख्या (५४६)

(सं०) षड्भुजा, दशाङ्गुलं, खर्बूजं, षड्रेखा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खरबूजो	खरबूजा	खरबूज	खरबूज	खर्भूजा	खरबूजा	मोलाम्पराडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मोलांपळे	कर्बूज	बित्तीख़	ख़रपुजाह	Cucumis melo	Melon The sweet melon

स्थान—खरबूजे बहुधा नदियोमें और उनके किनारे वालू रेतमें बोये जातेहैं । खरबूजेके बीजोंमेंसे मीठा और खानेके लायक तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) पका हुआ खरबूजा-स्निग्ध, मीठा, शीतल, पचनेमें भारी, मूत्रवर्द्धक, तृप्तिकारक, वृष्य, बल्य, कोष्ठ शुद्धिकारक, और पौष्टिकहै (२) खरबूजेके बीज ठण्डे होतेहैं और इनकी मींगी कई प्रकारके पाकोंमें पड़तीहैं (३) इसकी मींगीका सेवन करनेसे शरीर पुष्ट होताहै (४) इसकी मींगीको मिश्री और कालीमिरचके साथ पीसकर पीनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (५) इसकी मींगीको कच्चे दूधके साथ पीसकर पीनेसे मूत्रनालीकी दाह मिटतीहै (६) मींगीको जलके साथ पीस, उसमें चन्दनके तेलकी १५-या २० बूंद डालकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (७) इसकी मींगीका दूधिया रस बना, उसमें जोखार और कलमीशोरा मिलाके पिलानेसे वृक्कमें मूत्र पैदा होने लग जाताहै (८) खरबूजेकी और खीराकी मींगीको कालीमिरचके साथ घोट छान मिश्री मिलाकर पिलानेसे हृदय और शरीरमें ठण्ढाई होजातीहै (९)-इसकी मींगीको पीस गर्मकर बच्चोंके पेट पर लेप करनेसे अफारा उतर जाताहै (१०) खरबूजे खानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (११) खरबूजा खिलानेसे बच्चोंके वे फोड़े मिटतेहैं कि जिनपर खुरंट आके खुजली चला करतीहै (१२) खरबूजे खानेसे गुदामें खुजलीका चलना और रुधिर निकलना बन्ध होजाताहै (१३) बच्चा होनेके पीछे गर्भाशयकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसके छिलकोंको सोंफके अर्कमें पीसके पिलाना चाहिये (१४) इसके बीजोंको धूपमें सुखाकर बोतलमें भर मजबूत काक़ लगा देवें कि जिसमें हवा नहीं लग सके । जिन दिनोंमें खरबूजे नहीं मिलें उन दिनोंमें इन बीजोंको काममें लानेसे उतनाही लाभ होताहैकि जितना खरबूजेसे ।

संख्या (५५०)

(सं०) सप्तपर्णः विशालत्वक्, शारदः, विषमच्छदः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	छतिवन	सप्तपर्ण	सातविण	छातिमगाछ	सतोना	एडाकुल

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	एलेलेग			Alstonia Scholaris Echitess S	Commercially known as Dita Bark

स्थान-यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै। हिमालयमें जमुनासे पूर्व की ओर और बंगाल और दक्षिण हिन्दुस्थानमें बहुत होताहै ।

पहिचान—यह वृक्ष ४० से ६० और कहीं ८० से ६० फुट ऊंचा होताहै और जल्दी बढ़ताहै । इसकी पेड़ लम्बी और शाखें फैली हुई होतीहैं। इसकी छाल काली, भूरी और खरदरी होतीहै परन्तु तड़कती नहींहै । इसके पत्ते ऊपरकी ओरसे चमकदार और नीचेकी ओरसे चन्दनियां रंगके ४ से ८ इंच लम्बे और थोड़े चौड़े होतेहैं । इसके पुष्प कुछ हरे श्वेत रंगके होतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—मँगशिरसे फागुन तक इसके पुष्प लगते रहतेहैं, जेठमें फल लगतेहै ।

प्रयोग—(१) सप्तपर्ण-कषेला, उष्ण, कड़वा, सारक, स्निग्ध, हृद्य और दीपन होताहै (२) इसके दूधिया रसको फोड़ों पर लगातेहैं (३) इसके दूधिया रसमें तेल मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द मिटताहै (४) इसकी छालका काथ बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकताहै (५) इसकी छालके काथ पर अतीस बुरकाके पिलानेसे पुराना अतिसार मिटताहै (६) इसकी छाल और सोंफको ओटाके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (७) इसकी छालके काथके साथ वायविडंगकी फकी देनेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (८) त्रिफला और इसकी छालको ओटा छान ठण्डी कर मधु मिलाकर पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै (९) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये और पाचन शक्ति बढ़नेके लिये इसकी छालके काथमें पीपल बुरकाके पिलाना चाहिये (१०)

इसकी छालका सत गुणमें उत्तम कुनैनके बराबर होताहै (११) जिन बिगड़े हुए व्रणोंमें दुर्गन्धियुक्त पूय निकलता हो तो इसके कोमल पत्तोंको अग्निपर तपा पीस पुल्टिस बनाकर उनपर बांधना चाहिये (१२) इसका क्वाथ पीनेसे सांद्रमेह मिटताहै (१३) दूधके साथ इसके पत्तोंके कल्कका लेप करनेसे दुष्ट व्रण मिटतेहैं ।

संख्या (५५१)

समुद्रपात ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
फ॰बेल	समुद्रपात		समुद्रशोख	गुगुली		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Argyreia speciosa Lettsomia nervosa	The elephant creeper

स्थान—समुद्रपातकी बेल हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतीहै ।

पहिचान—यह बहुत बड़ी बेल होतीहै । इसकी शाखा और पत्तोंके नीचे सफेद कोमल रेशमीन रुंए होतेहैं। इसके पत्ते ४ से १२ इंच लम्बे नागरबेलके पान जैसे नोकदार होतेहैं और प्रायः उतनेही चौड़े होतेहैं । इसके गहरे गुलाबी रंगके पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं । इसके बीजोंमेंसे तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) दूधके साथ इसकी जड़के चूर्णकी फक्की देनेसे घुटनेकी झिल्लीकी पीड़ा या सूजन मिटतीहै (२) गांठ या फोड़ेको पकानेके लिये इसके पत्तोंको रुंएकी ओरसे बांधना चाहिये (३) गांठ या फोड़ेको बिखेरनेके लिये पत्तोंको उलटे बांधतेहैं (४) इसकी जड़को ओटा छान ठण्ढाकर उसमें मधु मिलाकर पिलानेसे रक्त शुद्ध होताहै (५) इसके स्वरसमें सिरका मिलाकर शरीर पर मर्दन करनेसे मेदका भाग कम होजाता है (६) इसकी जड़को ओटाकर पीनेसे गठिया मिटतीहै (७) इसके रसका लेप करनेसे बच्चोंके, पुराने दादकी जातिके, फोड़े मिटतेहैं (८) इसके पत्तोंका पुल्टिस बांध-

नेसे सूजन बिखर जातीहै (९) इसकी जड़के चूर्णकी २॥ रतीसे सवा मासे तककी मात्रा देनेसे गठिया मिटतीहै (१०) स्नायुक पर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधतेहैं (११) इसका अर्क, तिल्लीका तेल और सोयेके बीजोंको एकत्र पीसकर लेप करनेसे खुजली और बच्चोंके त्वचाके दूसरे रोग मिटतेहैं (१२) बिगड़े हुए फोड़े, नाड़ीव्रण और लम्बे घावों पर इसके पत्तोंको रुंएकी ओर से बांधनेसे वे साफ होजातेहैं और उनमेंसे साफ पीप निकलने लगताहै, जब वे फोड़े शुद्ध होजावें तब उनपर पत्तोंको उल्टे बांध देना चाहिये (१३) इसकी जड़के चूर्णकी १॥ मासे तककी फक्की देके ऊपर दूध पिलानेसे स्नायुजालकी शक्ति बढतीहै ।



संख्या (५५२)

(सं०) समुद्रफलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
समदरफल	समुद्रफल	समदरफल	समुद्रफल	समुद्रफल		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Barringtonia acutangula	

स्थान—इसके वृक्ष यमुनाजीके पूर्व, अवध, बंगाल, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान आदि हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होतेहैं। नदियोंके किनारे दल २ में और बहुधा तर जमीनमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष ३० फुट तक ऊंचा होताहै। इसकी पेदड़ छोटी और उसकी गुलाई ५ फुटकी होतीहै। इसकी शाखें मुड़ी हुई फैली हुई और बड़ी २ होतीहैं। इसकी छाल कुछ भूरी, काली और एक इंच मोटी होतीहै, इसके पत्ते फागुन चैतमें गिरकर उन्हीं दिनोंमें पीछे नये आजातेहैं। इसके पुष्प लाल रंगके होतेहैं। इसका फल चोखूंटा, एक इंच या कुछ अधिक लम्बा होताहै, उसमें निशास्ता बहुत निलताहै। इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै।

फूलने फलनेका समय-वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं । भादवे और आसोजमें फल पकतेहैं ।

प्रयोग-(१) बच्चोंको उल्टी कराने और कफ निकालनेके लिये इसके थोड़ेसे बीजोंको पीस अदरकके रसके साथ पिलाने चाहिये । ये इसकामके लिये बहुत उपयोगीहैं (२) पत्तोंका स्वरस पिलानेसे अतिसार मिटताहै (३) फल को पीसकर सुंघानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (४) सोंठ और इसके फलको पीसकर मर्दन करनेसे बहुत पसीना आना बन्ध होजाताहै (५) इसके फलको मालकांगनीके साथ पीसके लेप करनेसे चमड़ीके दाग मिटकर साफ होजातेहैं (६) ज्वरमें स्नायुपीड़ाको मिटानेकेलिये इसके फलके चूर्णका मर्दन करना चाहिये (७) इसकी जड़ कड़वीहै और कुनेन जैसा काम देतीहै (८) इसके चूर्णसे शरीरकी दाह मिटतीहै (९) मुनक्काके साथ लेनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (१०) इसके फलको पानीमें पीसकर पिलानेसे वमन होतीहै (११) इसके फलकी फक्की देनेसे अजीर्णसे तथा आमाजीर्णसे पैदाहुई पेटकी शूल मिटतीहै (१२) इसके बीजोंको पीस गर्मकर लेप करनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (१३) ठंढी हवासे पैदाहुई पीड़ाको मिटानेके लिये इकल्ले समन्दर फलका या ऐसेही गुणवाली दूसरी औषधियोंके साथ इसका लेप करना चाहिये (१४) बच्चोंकी छातीमें जो सर्दीसे जमाव हो जाताहै उसको वमन कराके निकालनेके लिये इसके थोड़ेसे बीज पीसकर पिलाने चाहिये, (१५) इसके फलकी मींगी और साबूदानेको पीसकर मक्खनके साथ चटानेसे अतिसार मिटताहै, (१६) इसके फलोंको औटाकर पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (१७) इसकी जड़ शीतल, तिक्त और सारकहै (१८) इसके फल बहुत तिक्त, सुगंधयुक्त, उष्ण, उत्तेजक और वामकहैं (१९) इसके पत्तोंके स्वरसमें मधु मिलाकर पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (२०) इसकी मींगीको पानीमें घिसकर जो पीड़ा दहनी ओर हो तो बांए ओर और बांए ओर हो तो दहनी ओरके नथनेमें टपकानेसे मस्तक पीड़ा मिटतीहै जो इससे उपाड़का डर होतो स्त्रीके दूधमें घिसकर टपकाना चाहिये (२१) फलकी मींगीको बकरीके मूत्रमें घिसकर नेत्रमें अंजन करनेसे नेत्ररोग मिटतेहैं (२२) फलकी मींगीको स्त्रीके दूधमें घिसकर नाकमें टपकानेसे नजलेकी पीड़ा मिटतीहै और मस्तकसे मवाद निकल

जाताहै (२३) इसके फलके चूर्णको गंगेरनके रसमें मिलाके कानमें ७ दिन डालनेसे बहिरापन मिटताहै (२४) इसके फलको भांगरके रसके साथ ७ से १४ दिन तक खानेसे श्वेत कुष्ठ मिटताहै (२५) इसके फलको बकरीके मूत्रमें घिसकर अंजन करनेसे फूना कटताहै (२६) इसके फलकी बकरीके मूत्रके साथ नस्य देनेसे आधाशीशी मिटतीहै (२७) इसको अजवायनके साथ खानेसे पेटकी शूल मिटतीहै और एकांतरा छूटताहै (२८) खुरासानी अजवाइनके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे रक्तपित्त मिटताहै (२९) इसके फलको बकरीके मूत्रके साथ पीस नस्य देनेसे मूर्छा मिटतीहै (३०) गुड़के साथ ३ दिन तक खिलानेसे मासिकधर्म शुद्ध होने लगताहै (३१) पीपलके साथ खानेसे शूल मिटतीहै (३२) नींबूके रसके साथ पीसकर लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (३३) पानीके साथ पीसकर ८४ दिन तक मस्तकपर लेप करनेसे ८४ दिनमें केश काले होजातेहैं (३४) इसका फल और आककी जड़की नस्य देनेसे उन्माद मिटताहै (३५) तुंबीकी गिरके रसके साथ पीसकर २१ दिन तक लेप करनेसे इन्द्री मोटी होतीहै (३६) हरड़के साथ लेनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (३७) इसको मधुके साथ लेनेसे श्वास रोग मिटताहै (३८) घीके साथ मलनेसे पसीना बन्द होताहै (३९) हल्दीके साथ खानेसे पित्तविकार मिटतेहैं (४०) अकदरके रसके साथ खानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (४१) छालीके मूत्रमें घिसके अंजन करनेसे नेत्रोंका झरना बन्द होताहै (४२) हिंगोटेके रसके साथ पीसके लगानेसे कांखोलाई मिटतीहै (४३) मधुमें मिलाके लगानेसे तलवारका घाव भर जाताहै (४४) जलभंगरेके रसके साथ लेनेसे कामला रोग मिटताहै (४५) गुड़के साथ लेनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (४६) दहीके साथ लेनेसे नाभ (धरन) ठिकाने अजातीहै (४७) पानीमें पीसकर लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (४८) इसको महीन पीसकर दोनों नेत्रोंमें अंजन करनेसे सर्पका विष उतरताहै (४९) इसको दहीके साथ खिलानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (५०) एक भाग समुद्र फल और दो भाग पीपलको जला एक मासेकी मात्रा पानमें रखकर खानेसे श्वास रोग मिटताहै (५१) बकरीके मूत्रके साथ घिसकर अंजन करनेसे रतौंधा मिटताहै और चांफनी आजातीहै (५२) गुड़ और

शक्करके साथ देनेसे पेटके कीड़े मरजातेहैं (५३) अगस्त्याके रसके साथ देनेसे नपुंसकता मिटतीहै (५४) गधेके मूत्रमें घिसके अंजन करनेसे भूत प्रेतका आवेश मिटताहै (५५) अकलकरेके साथ २१ दिन तक देनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (५६) काले धतूरेके रसके साथ पीसकर लेप करनेसे वायशूल मिटतीहै (५७) आककी जड़के साथ पीसके लेप करनेसे कमरकी पीड़ा मिटतीहै (५८) आककी जड़ और समंदर फलको घिसकर नस्य देनेसे सन्निपात दूर होताहै (५९) सफेद आककी जड़ और समंदर फलको पीसके नस्य देनेसे सर्प और विच्छूका विष उतरताहै (६०) इसको बचके साथ देनेसे पित्तविकार मिटतेहैं (६१) भगके गोबरके रसके साथ देनेसे रक्तमदर मिटताहै (६२) भांगके रसके साथ देनेसे पित्त मिटताहै (६३) भांगरेके रसके साथ देनेसे वायगोला मिटताहै (६४) तुलसी और लौंगके साथ देनेसे ज्वर छूटताहै (६५) बकरीके मूत्रके साथ देनेसे अजीर्ण मिटताहै (६६) नींबूके रसके साथ अंजन करनेसे आंखका दूखना मिटताहै (६७) मुंडीके रसके साथ देनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै (६८) मिरच और काले धतूरेके रसके साथ देनेसे अर्श मिटतेहैं (६९) गायके दूधके साथ खिलानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (७०) गौघृतके साथ घिसकर लगानेसे कंठमाला मिटतीहै (७१) थूहरके दूधके साथ लगानेसे सर्पका विष उतरताहै (७२) लहशनके साथ खानेसे पित्तकी भंबल मिटतीहै (७३) निर्गुंडीके रसके साथ घिसकर अंजन करनेसे फूला कटताहै (७४) मधुके साथ कानमें डालनेसे बहिरापन मिटता है (७५) गायकी छाछके साथ महीने तक खानेसे प्लीहरोग मिटताहै (७६) हींगके साथ देनेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (७७) हरड़के साथ पीसकर लगानेसे दाद मिटताहै (७८) पानीमें घिसकर गुदद्वार पर लगानेसे अफारा मिटता है (७९) चार मासे कमलगट्टे, ४ मासे पोखर मूल और समन्दर फलको चांवलोंके पानीके साथ पिलानेसे वमन मिटतीहै (८०) गोहेकी लीदके रसमें इसको और समुद्र झागको पीसकर कानोंमें डालनेसे बहिरापन मिटताहै (८१) चारमासे दाख, घोड़ेके नख और समुद्रफलको घोड़ेके मूत्रमें खरलकर अंजन करनेसे पटल और जाला दूर होताहै (८२) ढाककी जड़की छाल ४ मासे, नागरमोथा ४ मासे गजपीपल ६ मासे और समन्दरफल ४

मासे इन सबको पीसकर गायके दूधके साथ ३ दिन लेनेसे वन्ध्यापन मिटताहै।

संख्या (५५३)

(सं०) समुद्रफेनः, हिण्डीरः, अब्धिकफः, सुफेनम् ।

मॉरवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
समदर झाग	समुद्रफेन	समुद्रफीण	समुद्रफेण	समुद्रफेन	समुद्रझाग	समुद्रपनुरुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कड़लनोरे	समुद्रनोरे			Sepia officinalis	Cutle fishbone

प्रयोग—(१) यह—शीतल, कषेला, लेखन, सारक, पचनेमें हल्का, और रोचकहै विष, पित्तविकार, नेत्र और कानके रोगोंको मिटाताहै (२) समुद्र फेनको केवल या बिनौलेक तेलमें पीसके लगानेसे नेत्रका जाला मिटता है (३) मधु को ओटा गाढाकर उसमें समुद्रफेन मिला उसमें बत्ती भिगोके नासूरमें रखनेसे वह भर जाताहै (४) समुद्रझागको गुलाबके तेलमें मिलाकर मलनेसे मुखकी झांई दूर होतीहै (५) इसको और हरड़की मींगीको पीस योनीमें रखनेसे ढीलापन मिटताहै (६) इसका चूर्ण कानमें डालनेसे कानसे पूयका बहना बन्ध होताहै (७) इसको और शक्करको पीसकर अंजन करनेसे अर्जुन रोग मिटताहै (८) समुद्रफेन और नरकचूर जलमें पीसकर उबटना करनेसे मुहांसे मिटतेहै (९) समुद्रफेनकी भस्म बना सिरकेमें मिलाके लगानेसे बालोंका निकलना बन्ध होताहै ।

संख्या (५५४)

(सं०) सरलः, पीतद्रुः, पूतिकाष्ठम्, पीतवृक्षः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
-	सरल, चीड	देवदारु	सरल	सरलगाछ		सरल, देवदा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
-	देवदारु			Pinus Longifolia,	The longleav ed or three leaved Pine

स्थान—सरलके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थानके कमाऊं ब्रिटिस गढवाल नैनीताल और रानी खेत आदि वहुतसे भागोंमें और हिमालयमें सिन्ध नदी से भूटान तक होतेहैं।

पहिचान—सरलका वृक्ष ७० फुट और कहीं कहीं १०० से ११० फुट ऊंचा हो जाताहै। इसकी पेदड़ लम्बी और सीधी होतीहै उसकी गुलाई ५, ७ फुट और कहीं कहीं १०,१२ फुटकी होतीहै। इसके पत्ते बहुधा २, ३ वर्ष तक नहीं गिरतेहैं जब बहुत पुराने हो जातेहैं तब वैशाख जेठमें गिरतेहैं इसकी शाखें इसकी पेदड़की और ऊंची बढ़तीहै जिससे गोल शिर बन जाताहै। इसके ९ से १२ इंच लम्बे तीन २ पत्ते लगतेहैं कभी कभी इससेभी अधिक लम्बे होजातेहैं।

फूलने फलने का समय—माघसे चैत तक इसके पुष्प लगते हैं वर्ष सवा वर्षमें इसके फल या डोडे पकतेहैं, चैत वैशाखमें वे फट जातेहैं, और उनमेंसे बीज निकल पड़तेहैं परन्तु वे वृक्षपरही लगे रह जातेहैं जिससे वसंत ऋतुमें वृक्षके ऊपर वहुतसे खाली डोडे दीखने लगतेहैं। इस वृक्षमेंसे गंधावेरजा निकाला जाताहै अर्थात् इसकी सवा छः सेर लकड़ीके टुकड़ोंमेंसे सेर भर वेरजा निकलताहै। इसकी छाल और पत्तोंके कोयले रंगतके काममें आतेहैं। गंधे वेरजेमेंसे तेल निकाला जाताहै सात छटांक गधे वेरजेमेंसे छटांक भर तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) सरल—रस और पाकमें चरपरा, कड़वा, उष्ण, रूक्ष, मीठा, हल्का, स्निग्ध, और कान्तिवर्द्धकहै (२) इसकी लकड़ी उत्तेजक और पसीने लानेवालीहै। शरीरकी दाह, कफ, निर्बलतासे मूर्च्छा, फोड़े फुन्सी आदि रोगोंमें उनकी ओषधियोंके साथ काममें आतीहै (३) गंधे विरोजेके तेलसे पुराना सुजाक मिटताहै (४) मूत्र सम्बन्धी अंगोंकेरोग, पुरानी खांसी, किसी अंगसे रुधिरका बहना, गठिया और ज्वर आदि रोगोंमें

गंधाबेरजा काम आताहै (५) तिल्ली और शीतज्वरमें ४ से ८ मासे तक गंधाबिरोजा देतेहैं (६) गंधबिरोजेको किसी गांठ या दूसरी गिल्टियोंकी सूजनपर लगानेसे उसको पकने नहीं देता और बिखेर देताहै (७) इसको खिलानेसे यह वीर्य्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंकी झिल्लियोंपर अपना असर करताहै इसलिये मूत्रकृच्छ्रका यह बहुत अच्छा उपायहै । ३॥ मासेसे ११ मासे तक गंधेबिरोजेका किसी चेपदार चीजके साथ द्रव बनाकर दिनमें चार बेर देना चाहिये । जैसेकि यह गाढा होताहै तो इसको धीरे २ अच्छी तरह किसी चेपदार चीजमें मिलाना चाहिये (८) गंधेबिरोजा विशेष करके फोडेके लिये बहुत उत्तेजकहै (९) पकेहुए और पीपदार फोडे और गांठोंके ऊपर इसका लेप बहुत उपकारीहै (१०) पकनेवाली सूजनको बिखेरनेके लिये चीडकी लकड़ीके टुकड़ोंका क्वाथ पिलाना चाहिये (११) गंधेबिरोजे की धूनी कई बेर देनेसे मासिक धर्म फिर होने लग जाताहै (१२) कहीं २ के मनुष्य इसके फलोंको खानेके काममें लातेहैं परन्तु न उनका स्वाद अच्छा है और न वे शरीरका पोषण करनेवालेहैं ।

संख्या (५५५)

(सं०) सर्जकः, अजकर्णा, मरिचपत्रकः, पीतफलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
-	बडाशाल	रालनु झाड़	सर्जवृक्ष		सर्जराल	शालमु
द्राविड़ी	**कर्नाटकी**	**अरबी**	**फ़ारसी**	**लैटिन**		**अंग्रेज़ी**
वेल्लैकुन्तारिक	सज्जरदगर			Vateria indica V Malabarica		The white dammer † Piney Varnish or Indian Copal

स्थान—चन्द्रसके वृक्ष पश्चिमी प्रायः द्वीपमें कनारेसे ट्रावनकोर तक होतेहैं ।

पहिचान—यह वृक्ष बड़ा होताहै इसके पत्ते बारह महीने लगे रहतेहैं । इसके वृक्षमेंसे राल जैसा एक पदार्थ निकलताहै ।

इसके बीजोंमेंसे बहुतसा गाढा तेल इस रीतिसे निकाला जाताहै कि बीजोंको साफ कर सेकके पीस लेतेहैं पीसेहुए पांच सेर बीजोंको बारहसेर पानीमें इतने समय तक औटावें कि तेल पानी पर तैरने लगजावे तब उसको पानी परसे उतार फिर उन बीजोंके आटे और जलको खूब हिलादेवें और आठ पहर तक पड़ा रक्खें कई लोग घीके बदलेमें इसको वेच देतेहैं ।

प्रयोग- (१) चन्द्रसकी फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै (२) तेल और मोमको मंद आंच पर गलाकर उसमें चन्द्रस मिला मरहम बनाके फोड़े फुन्सी पर लगातेहैं (३) इसके तेलका मर्दन करनेसे पुरानी गठिया मिटतीहै (४) दूसरे कई प्रकारके रोग कि जिनमें पीड़ा हुआ करतीहैं इसके तेलके मर्द्दन करनेसे मिटतेहैं (५) चन्द्रस और बूरेका धुंआ लेनेसे सर्दगर्मीका जुकाम मिटताहै (६) चन्द्रसको मलनेसे दांतोंसे रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै (७) इसकी छालके चूर्णमें कपासके फलका रस और मधु मिलाकर कानमें डालनेसे कर्णस्राव मिटताहै ।

संख्या (५५६)

(सं०) सर्पाक्षी, फणिहंत्री, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	सरहटी	नकुलकंद	मुगुसकांदा	पानशिउली	सरहटी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Ophiorrhiza mungos	The mongoose plant

स्थान—सरहटीके गुल्म खासिया पहाड़ आसाम पश्चिम प्रायद्वीप और सीलोन आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

प्रयोग-(१) इसका पंचांग कड़वा होताहै परन्तु जड़ बहुतही कड़वी होतीहै यह आमाशयकी शूल मिटानेके लिये दीजातीहै (२) इसके पंचांगका सवा तोले क्वाथ पिलानेसे सर्प का विष उतरताहै सांप और नोलेकी लड़ाईमें

जब नोलेको सर्प काटखाताहै तब वह नोल उसका विष उतारनेके लिये इस सरहटीको खाताहै (३) पानीजरे और दुष्ट वायु आदिसे पैदाहुए कई रोग को मिटानेके लिये इसका क्वाथ पिलाया जाताहै (४) पागल कुत्तेके काटे हुए रोगीको इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (५) इसकी जड़को घिसकर सर्पके दंश पर लगाना चाहिये (६) इसकी जड़को चंद्रग्रहणमें निमंत्रण दे दूसरे दिन लाकर कालेसूतसे वाम कानमें बांधनेसे एकांतरा छूट जाताहै और दक्षिण कानमें बांधनेसे द्व्याहिक ज्वर छूटजाताहै (७) श्मशानमें पैदा हुई सरहटी की जड़को रविवारके दिन लाकर उसको घीमें घिसकर ललाट पर तिलक करनेसे एकाहिकज्वर छूटताहै (८) इसकी जड़को लाल सूतमें बांधकर कमरमें बांधनेसे अतिसार मिटताहै ।

घोज़े

संख्या (५५७)

(सं०) सर्वजया ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	सभाजय		देवकेली	सर्वजया	हकीक	गुरिगेंजाचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कुन्दमनी-चेद्दि				Canna indica.	Indian shot

स्थान—सर्वजया हिन्दुस्थान और सीलोनमें प्रायः सबठौर बागोंमें लगाई जातीहै ।

पहिचान—इसके पत्ते बड़े और कठोर होतेहैं । इसके बीज काले चमकदार, शख्त, और मटर जैसे गोल होतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—इसके बारह महीनेही पुष्प आते रहतेहैं ।

प्रयोग—(१) ज्वरमें पसीना लानेकेलिये इसकी जड़का क्वाथ पिलाते हैं (२) इसकी जड़को पीसकर ठंढाईकी तरह पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (३) मूत्रवृद्धि होनेसे जलंधर मिटताहै (४) इसकी जड़ चरपरी और उत्तेजकहै

(५) विपल घासके खानेसे जब चौपायोंका पेट फूल जाताहै तो उनको इ-सकी जड़के टुकड़े और कालीमिरचोंका चांवलोंके धोवनके पानीके साथ ओटाके पिलातेहैं (६) हृदयकी निर्बलता मिटानेकेलिये इसके बीजोंका प्र-योग करतेहैं (७) इसके बीजोंका लेप करनेसे घाव भरजाताहै (८) इसकी जड़को काट कर पानीमें भिगो देतेहैं पीछे उसको मल छान कर कुछ समय तक रख छोड़तेहैं जब पानी नितर कर गाद नीचे बैठ जातीहै तब उस पानी को निकाल देतेहैं और गादको सुखा पीसकर रोटी बनाके निर्बल मनुष्यको खिलातेहैं क्योंकि इससे उसको खट्टी डकारें नहीं आतीं और जल्दीसे पचजा-तीहै । इसकी जड़में मैदा होतीहै इसलिये उसको पकाकर खातेहैं ।

काम

संख्या (५५८)

(सं०) सर्षपः, कटुस्नेहः, तन्तुभः, कदम्बकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सरसों	सरसों	सरसव	शिरष	सरिषा	सरों	आवालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कडुह	सासुवे	खर्दले अवयज	सिपन्दान सुफीद	Brassicacampestris Var I Dichotoma Sinapis dichotoma	Kali sarson

एक मन सरसोंमेंसे तेरह सेर तेल निकलताहै इसके तेलको गन्धकके ति-जाब और पानीके साथ ओटानेसे शुद्ध होजाताहै ।

प्रयोग—(१) सरसों—रस और पाकमें चरपरी, हृद्य, कड़वी, ती-क्ष्ण, उष्ण, अग्निवर्द्धक, और कुछ रूक्षहै । वात, कफ, कंडू, कुष्ठ, शूल, कृमि, ग्रहपीड़ा और पीड़ाको मिटातीहै (२) इसके तेलमें कपूर मिलाके मर्दन क-रनेसे पेशी सम्बन्धी गठिया मिटतीहै (३) मन्या स्तंभ और बादीसे अकड़े हुए अंगपर इसका मर्दन करना बहुत उपकारीहै (४) सरसोंके तेलका सब शरीर पर मर्दन करके स्नान करनेसे त्वचा शीतल, कठोर और नीरोग हो-जातीहै (५) सरसोंको पीस गर्म पानीमें मिला पुल्टिस बनाके बांधनेसे बादी

के रोग मिटतेहैं (६) इसके तलका मर्दन करनेसे वात पित्त ज्वरमें बहुत लाभ होताहै (७) बच्चोंकी खांसी मिटानेकेलिये उनकी छाती पर इसके तेलका मर्दन करना चाहिये (८) सरसोंको पीस मधुके साथ चटानेमे कफकी खांसी मिटतीहै (९) यह-उग्र गंधवाली और दीपनहै पित्त और रक्त पित्त को पैदा करती है (१०) सरसों पीसकर मासिकधर्म के स्नानके पीछे तीन दिन तक उसका शाफा बनाकर भगमें रखनेसे गर्भ धारण होताहै (११) सरसोंको दूधमें ओटावे जब सब दूध जल जावे तब सुखा पीसकर उबटना करनेसे शरीरका रंग गौरा होजाताहै (१२) आकके दूधमें रूई भिगो छायामें सुखा वत्ती बनाकर उससे सरसोंके तेलमें काजल पाड़के लगानेसे नाड़ी व्रण मिटताहै (१३) इसके तेलका मर्दन करनेसे जृंभाका वेग मिटताहै (१४) इसके तेलमें आकके पत्तोंका रस और हल्दीका कल्क डालकर ओटावे जब तेल सिद्ध होजावे तब उतार छानके लगानेसे पामा और विचर्चिका मिटतीहै (१५) सरसोंका तेल कानमें डालनेसे कानके कीड़े मरते जातेहैं (१६) इसके तेलको पेट पर मलनेसे तिल्ली कम होजातीहै (१७) सरसों और वचको पीसके लेप करनेसे शोथ उतर जातीहै (१८) सरसों, नीमके पत्ते और भिलावेको सराय संपुटमें बंध कर जला छालीके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे अपची मिटतीहै (१९) सरसोंको गोमूत्रके साथ पीस गर्मकर लेप करनेसे श्लीपद मिटताहै (२०) इसके तेलको कानमें डालनेसे वादीकी कर्णशूल मिटतीहै।

संख्या (५५९)

(सं०) साजकः, अग्रधान्यं, नीलकणा, वर्जरी,।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बाजरो	बाजरा	बाजरो	बाजरी		बाजरी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		जावरस	गावरस	Pnnisetum typhordium Panicum spicatum	The Bubiush, Cumboo, or spiked millet Millet

स्थान—बाजरा हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होताहै। बाजरेकी डंडीकी राख रंगतके काममें आतीहै। १०० तोले बाजरेमेंसे ७१॥ तोले मैदा और ३। तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग-(१) बाजरा-उष्ण, रूक्ष, और दुर्जरहै। पित्त, अग्नि और बलको बढ़ाताहै। पित्त प्रकृतिवालेके वीर्यको पतला करदेताहै। कफ और वातको मिटाताहै (२) बाजरेके फूंवी जो सिट्टेके ऊपर लगतीहै उसकी एक मासेकी गुड़में गोली बनाकर खिलानेसे बावले कुत्तेका विष उतरताहै।

—:-*:-—

संख्या (५६०)

(सं०) श्वेतसारिवा, काष्ठशारिवा, शारदा, गोपी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोरीसर	अनतमूल	धोलीउपल-सरी	पाढरीकावली	शुक्लासारिवा		मामेन

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन्	अंग्रेज़ी
				Hemicsmus indicus. Asclepias pseudosarsa	Indian sarasparilla

स्थान—सारिवा उत्तर हिन्दुस्थानमें बांदासे अवध और सिक्कम तक और दक्षिणमें ट्रावनकोर और सीलोन तक होतीहै।

पहिचान—यह-वृक्षके लपटनेवाला झाड़ होताहै, इसके पत्तोंके नीचे लोहके जंगके रंगके रुए होतेहैं, डंडी पर इसके पत्ते आमने सामने लगतेहैं। वे कुछ लम्बे होतेहैं। इसके छोटे सफेद रंगके पुष्प लगतेहैं उनमें गंध नहीं आतीहै। इसके फल दो तीन इंच लम्बे होतेहैं उनमें लम्बे २ बीज होतेहैं। उनकी जड़ पर लम्बे बालोंका गुच्छा रहताहै। इसकी जड़ लम्बी चली जातीहै और उसमें कोईसी ठौर शाखा फूटतीहै। इसकी लम्बी जड़ोंकी पूलियें बंधी हुई बिकतीहैं।

प्रयोग—(१) श्वेत सारिवा—शीतल, मधुर, पचनेमें भारी, स्निग्ध, कड़वी, शुक्रल और सुगन्धित होतीहै। इसकी जड़ रुधिरशोधक और बलवर्द्धकहै

(२) मंदाग्नि, त्वचाके रोग, उपदंश और श्वेतप्रदरमें इसका प्रयोग किया जाताहै (३) सारक औषधियोंके साथ भी इसका प्रयोग किया जाताहै (४) इसकी जड़के चूर्णकी गायके दूधके साथ फक्की देनेसे पथरी और पीड़ा से मूत्रका उतरना बन्ध होजाताहै (५) सफेद जीरा और इसका क्वाथ पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै और पित्तकी तेजी मिटजातीहै (६) फोड़ फुन्सी, गंडमाला, और उपदंश सम्बन्धी रोग मिटानेके लिये, इसका ७॥ तोले से १० तोले तक क्वाथ दिनमें तीन वेर पिलाना चाहिये (७) बच्चोंके मुंहके सफेद छालोंको मिटानेके लिये इसकी जड़को पीस मधुके साथ लगातेहैं। अथवा इसकी सूखी छालको पीस मक्खनमें तल रात दिनमें १ मासे से ३॥ मासे तक चटादेना चाहिये (८) आंखमें छोटी २ लाल फुन्सियां होजातीहै उनके ऊपर इसका दूधिया रस लगातेहैं (९) इसकी छोटी जड़को केलेके पत्तेमें लपेट पुटपाक कर, पत्तेमेंसे निकाल, जीरे और शक्करके साथ पीस, घीमें मिलाके चटानेसे वीर्य्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंके रोग मिटतेहैं (१०) इसकी जड़का लेप करनेसे सूजन उतरतीहै (११) इसकी जड़ सारसपरेलकी ठौर काममें आतीहै। इसकी ताजी जड़ काममें लानी चाहिये। पुरानी होनेसे और सूख जाने से इसका गुण कम होजाताहै (१२) शरीरकी निर्बलता मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै (१३) इसके साथ कंटालीको औटाकर पिलानेसे पुरानी खांसी मिटतीहै (१४) इसके क्वाथके साथ अतीसकी फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै (१५) बच्चोंका रुधिर शुद्ध करके निर्बलता मिटानेके लिये अनंतमूलको दूध और शक्करके साथ औटाके पिलाना चाहिये (१६) अनंतमूल और हींगका चूर्ण खिलानेसे वमन बन्ध होजातीहै (१७) इसके पत्तोंको पीसकर दांतोंमें दबानेसे दांतोंके कीड़े निकलजातेहैं (१८) इसकी जड़का प्रयोग करनेसे व्रणशुद्ध होजाताहै।

संख्या (५६१)

(सं०) कृष्णसारिवा, श्यामा, अनन्ता, कृष्णमूली।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कालीसर	करियासाउ	कालीउपल-सरी	कालीकावली	श्यामालता	करिय्यासाऊ	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Ichnocarpus frutescens Echites f	

स्थान—सारिवा पश्चिम हिमालयमें सिरमोरसे नैपाल तक, गंगाके ऊपरके मैदानोंसे बंगाल, आसाम, और सिलहट तक दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन पश्चिमोत्तर हिमालय और शिमले आदि कई उष्ण प्रान्तोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१) कालीसर—शीतल, वृष्य, मधुर, स्निग्ध, शुक्रल और लघुहै । दोनों सारिवाओंके गुणोंमें कुछ विशेष अन्तर नहींहै (२) इसकी जड़ रक्तशोधक और बलवर्द्धकहै और सारसापरेलाकी ठौर काममें आतीहै (३) इसके डंठल और पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) इसकी ५ तोले जड़को ढाई पाव पानीमें ओटा कर उसमेंसे ५, ७॥ तोले क्वाथ पर पीपल बुरकाके दिनमें दो वेर पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (५) इसकी जड़के क्वाथमें मधु मिलाकर पिलानेसे त्वचाके रोग मिटतेहै (६) इसकी जड़को चोपचीनीके साथ ओटाकर पिलानेसे उपदंश मिटताहै (७) इसकी जड़के क्वाथमें मधु मिलाकर पीनेसे नेत्रोंका शुक्र रोग मिटताहै ।

संख्या (५६२)

(सं०) सिद्धेश्वरः, सिद्धाख्यः, सिद्धनाथः, कृष्णचूडा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गुलतुर्री	गुलतुर्रा	संधेशरो	गुलतुर्रो	कृष्णचूड़ा		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Caesalpinia pulcherrima. Poinciana f	

स्थान—कृष्ण चूड़ाके वृक्ष हिन्दुस्थानमें हरेक बागमें लगाये जातेहैं ।

पहिचान—इसके बारह महीने पुष्प लगते रहतेहैं । यह लाल और पीले पुष्पोंके भेदसे दो प्रकारका होताहै । इसका झाड़ बड़ा होताहै इसके कहीं २ कांटे लगतेहैं, इसकी एक सीक पर ५—१० जोड़े पत्तोंके लगतेहैं, इसके लम्बी पतली चपटी फलियें लगतीहैं ।

प्रयोग—(१) यह-शीतल, स्निग्ध, कड़वा और कपैला होताहै (२) इसके पत्तोंको पीसकर लगानेसे गांठ और नासूर मिटताहै (३) यह त्रिदोषनाशकहै (४) इसके पत्ते, पुष्प, और बीज औषधिके प्रयोगमें आतेहैं ।

संख्या (५६३)

(सं०) सिन्दूरं, गणेशभूषणं, शृङ्गारकं, नागजम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सिंदूर	सिंदूर	सिंदूर	शेन्दूर	सिन्दूर	सिन्दूर	चेंदिरमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सिन्दूर	सिन्दूरः			Plumbi oxydum rubrum	Minium Read lead

प्रयोग—(१) यह उष्ण है, विसर्प, कुष्ठ, कंडू और विषको मिटाताहै (२) टूटीहुई हड्डीको जोड़ताहै, व्रणको शुद्ध करताहै और भर देताहै ।

संख्या (५६४)

(सं०) सिन्दूरी, रक्तबीजा, करच्छदा, रक्तपुष्पा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सिन्दूरपुष्पी	सिंदूरिया	सिंदूरी	शेंदरी	सिन्दूरपुष्पी	लटकण ज.फर	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	सिंदूरी			Bixa Orellana	Ornottoc Ornott

स्थान—सिन्दूरी हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै ।

पहिचान—यह–सफेद और गुलाबी या पियाजी रंगके पुष्पोंके कारण से दो प्रकारकी होतीहै । इसका वृक्ष छोटा होताहै इसके शाखें थोड़ी लगतीहैं।

फूलने फलनेका समय—उष्णकालमें इसके पुष्प लगतेहैं शीतकालमें इसके फल पकतेहैं । इसके फलके गूदेमें से लाल या नारंजी रंग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) यह–शोपक और कुछ रेचकहै और आमातिसार और वृक्कके रोगोंकी बहुत अच्छी औषधिहै (२) इसके फलकी गिर ग्राहीहै (३) इसके बीज हृदयको हितकारी, ग्राही और ज्वर मिटानेवालेहैं ।

संख्या (५६५)

(सं०) सीताफलं, गंडगात्रं, कृष्णबीजं, आतृप्यम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सीताफल	सीताफल	सीताफळ	सीताफल	आतागाछ	शरीफा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		शरीफा	काज	Anona squamosa	Custard apple

स्थान—सीताफलके वृक्ष बंगाल, संयुक्त प्रदेश, राजपूताना, पंजाब, मध्य हिन्दुस्थान, बुन्देलखण्ड, कमाऊं, दक्षिण, सिन्ध, पंचमहल और बम्बई, आदि प्रदेशोंमें बोये जातेहैं और अपने आपभी पैदा होतेहैं ।

पहिचान—इसका झाड़ या छोटा वृक्ष होताहै, पेदड़ सीधी और छोटी होतीहै, इसके पत्ते लम्बे, कुछ चौड़े और तीखे होतेहैं । वे वसंतमें सबके सब

नहीं गिरतेहैं, और फागुन तक नये आजातेहैं। इसके एक ठौर, एक या दो पुष्प लगतेहैं, इसकी मध्य रेखा २ से ४ इंच तक लम्बी होतीहै, इसके फल का रंग कुछ पीलास लिये हुए हरा होताहै। इसके बीज–लम्बे, काले या कुछ भूरे रंगके होतेहैं। वे गिरमें गडे हुए रहतेहैं।

फूलने फलनेका समय—ग्रीष्मऋतुमें इसके पुष्प लगतेहैं। आषाढसे आसोज तक इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) सीताफल,–मधुर, शीतल, हृद्य, वातल, पौष्टिक, बलवर्द्धक और पित्तनाशकहै (२) इसके पके हुए फलको कूट नमक मिलाके बांधनेसे दुष्ट वायु, जल, और पृथ्वीसे पैदा हुई गांठें जल्दी पकतीहैं (३) इसके बीजोंका लेप करनेसे कीड़े मरतेहैं (४) इसके कच्चे फलको सुखा पीस चनेके आटेमें मिलाकर खिलानेसे या लेप करनेसे कीड़े मरतेहैं (५) इसके पत्तोंके हिम या फांटसे गुदा धोनेसे बच्चोंकी कांचका निकलना बन्ध होजाताहै (६) इसकी जड़ बहुत भारी रेचकहै (७) तेज आमातिसारमें इसके चूर्णकी फकी देतेहैं (८) इसके बीजोंको पीसकर गर्भाशयके मुख पर लगानेसे बालक सुखसे पैदा होजाताहै (९) इसके पत्तोंकी टिकिया बनाकर बांधनेसे स्नायुक बाहिर निकल आताहै (१०) इसके गीले पत्तोंको पीस टिकड़ी बनाके बिगड़े हुए फोड़ों पर बांधतेहैं (११) इसके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे जूएं लीखें आदि कीड़े मरतेहैं (१२) इसके पत्ते, तमाखू और बिन बुझे हुए चूनेको पीसकर जिन घावोंमें कीड़े पड़ जातेहैं उन पर लेप करतेहैं (१३) इसके फलसे मन्दाग्नि मिटतीहै (१४) इसकी छालका क्राथ पिलानेसे श्वास मिटताहै (१५) ज्वर छुड़ानेकेलिये इसकी छालका क्राथ पिलातेहैं (१६) गांठको जल्दी पकानेकेलिये इसके ताजे पत्तोंको पीस लुगदी बनाके बांधतेहैं (१७) इसके बीजोंकी मींगीको पीस कपड़ेकी बत्तीमें रख जलाकर उसका धुंआ नाकमें पहुंचानेसे मिरगीके समग्र लाभ होताहै (१८) सीताफलके बीजोंको पीसकर शिरमें लगानेसे जूएँ लीखें मर जातीहैं (१९) इसके बीज और बेरीके पत्तोंको बराबर ले पीस बालोंकी जड़में मल कर ४ घड़ी पीछे अर्द्धोष्ण जलसे धोडालनेसे बाल लम्बे बढ़ने लग जातेहैं।

संख्या (५६६)

(सं०) सीसकं, नागं, यवनेष्टं, भुजङ्गमम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सीसो	सीसा	शीसु	सिसें	सीसा	शीशा	सीसमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
करुनाइ	सीसा	रिसामेअस्वद	सुरबस्याह	Plumbum	Lead

परीक्षा–सीसा दो प्रकारका होताहै एक कुमार और दूसरा समल, इनमें कुमार उत्तम होताहै वह रसादिक के काममें आताहै। जो सीसा गलनेसे बहुत पतला हो जाय, तोलमें भारी, काटनेमें बहुत उज्ज्वल और बाहिरसे काला हो वह उत्तम होताहै ।

इसको शुद्ध करने की रीति—(१) इस सीसेको गला गलाके आकके दूधमें तीन वेर बुझानेसे यह शुद्ध हो जाताहै (२) अथवा खैरके कोयलोंकी अग्निसे इसको गला २ के त्रिफलेके काथमें सातवेर बुझाना चाहिये (३) अथवा ग्वारपाठेके रसमें ७ वेर बुझाना चाहिये (४) अथवा हाथीके मूत्रमें ७ वेर बुझाना चाहिये ।

नागेश्वर बनानेकी रीति—(१) १ सेर सीसेको मृत्तिकाके पात्रमें गलाके इम्ली और पीपलकी पाव अंतर छालका चूर्ण उसपर थोड़ा २ बुरकाता जाय और लोहेकी कड़छीसे रगड़ता जाय, ऐसे करते २ जब उसकी भस्म हो जाय, तब उसकी बराबर शुद्ध मैनसिल ले, दोनोंको कांजीसे खूब घोट, टिकियां बना, सुखा, उनको सराव संपुटमें कपड़ मिट्टीसे बन्दकर, गज भर गढ़ेमें जङ्गली कंडोंकी आंच देवे, जब स्वांग शीतल हो जाय, तब निकाल कर, उसके उक्त रीतिसे ६० आंच देनेसे उत्तम भस्म होतीहै (२) शुद्ध सीसेके बराबर शुद्ध मैनसिलको नागरवेलके पानमें खरल कर, उस सीसेके पतले पत्रोंपर लेप कर, सुखा, सराव संपुटमें कपड़ मिट्टीसे बंधकर, गजपुटमें धरके फूंक देवे स्वांग शी-

तल होजानेपर निकाल, फिर बराबर मैनसिल ले, नागरबेलके पानके रसमें खरल कर, टिकिया बनाके उक्त रीतिसे गजपुटकी आंचमें फूंक लेवे इसी भांति ३२ बेर आंच देनेसे उत्तम नागेश्वर बन जाताहै। नागेश्वर बनानेकी और भी कई रीतेंहैं। (१) विना शुद्ध किये हुए सीसेकी भस्मका सेवन करनेसे कुष्ठ, अरुचि, गुल्म, पाण्डु, क्षय, कफ, रक्तविकार, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अश्मरी, शूल, भगंदर और प्रमेह आदि रोग पैदा होतेहैं (२) शुद्ध कियेहुए सीसेकी भस्मके सेवनसे क्षय, वातविकार, गुल्म, पाण्डु, भ्रम, कृमिरोग, कफ, शूल, प्रमेह, कास, संग्रहणी, अर्श, मंदाग्नि, जलके विकार और आमवात आदि कई रोग मिटतेहैं। अलग अलग अनुपानके साथ इसका सेवन करनेसे हरेक रोग मिटतेहैं (३) गिलोयके स्वरस और मधुके साथ अथवा हल्दी आंवले और मधुके साथ दो रती नित्य लेनेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटतेहैं।



संख्या (५६७)

(सं०) सुधामूली, अमृतोत्था, वीरकन्दः, प्राणदा।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सालममिश्री	सालममिश्री		सालंमिश्री	सालममिछरी	सालम	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		खमियुस्सालब		Eulophia campestris.	Salep

स्थान——सालम मिश्री, अवध, रुहेलखण्ड, गङ्गाका अंतरवेद, पंजाब, सिरोही और राजपूतानेके पश्चिमके भागमें होतीहैं।

प्रयोग——(१) सालममिश्री--मीठी, कषेली, उष्णवीर्य्य, विपाकमें भारी और रसायनहै (२) शरीरको सुखानेवाले क्षय रोग आदि दूसरे रोगोंमें बहुत हितकारीहै और शरीरको पुष्ट करतीहै (३) बच्चेकी माको इसकी कांजी करके पिलानेसे बच्चा पुष्ट होताहै (४) शर्कराश्मरी मिटानेके लिये

इसका प्रयोग करना चाहिये (५) मिश्रीके साथ इसकी फक्की देनेसे वीर्यकी क्षीणता मिटतीहै (६) पुष्टाईकी औषधियोंके साथ इसका अवलेह बनाकर चटानेसे पुरुषार्थ बढताहै और नपुंसकता मिटतीहै (७) इसको पीस दूधमें ओटाके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (८) सालममिश्री—पचनेमें हल्कीहै। यह खानेके काममें भी आतीहै।

संख्या (५६८)

(सं०) सुधामूली भेदः । हिं० एक प्रकारकी सालममिश्री

E Salep

स्थान—सालममिश्री की यह जात योरूप और उत्तर एशियामें होतीहै।

गीली सालममिश्रीकी सुगंध वीर्य जैसी होतीहै। पंजेकी सालम सबसे अच्छी होतीहै। आलुओंको सुखा पीस छान उस आटेको गोंदके पानीसे ओसनकर उसके सालम जैसे दाने बना डालतेहैं, उनको नकली सालम कहतेहैं।

प्रयोग –(१) सालम मिश्री ४० गुने पानीको चेपदार कर देतीहै अगर इसमें थोड़ासा सोहागा डाल दिया जाय तो वह जल औरभी गाढा हो जाताहै। सालम मिश्रीमें शक्कर होतीहै (२) गीली सालम मिश्रीमें उड़नेवाला तेल होताहै (३) नपुंसकता मिटानेके लिये इसके कई प्रकारके योग बनातेहैं (४) गीली सालममिश्रीको मुट्ठीमें रखनेसे एक प्रकारकी नपुंसकता मिटतीहै (५) स्नायुजालकी निर्बलता मिटानेके लिये सूखी सालममिश्रीके चूर्णकी फक्की देना चाहिये (६) स्नायुजालका बल बढ़ानेवाली दूसरी औषधियोंके साथ इसका प्रयोग किया जाताहै। पक्षाघातमें इसका प्रयोग बहुत किया जाता है (७) लोंग, जायफल, आदि चीजोंके साथ इसको दूधमें मिलाकर पिलानेसे शरीर पुष्ट होताहै।

संख्या (५६९)

(सं०) सुवर्चिका, सूर्यक्षारः, तीक्ष्णरसः, ताक्ष्र्यः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कलमीसोरो	शोरा	सुरोखार	सोरा		शोरा	सूरकारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कम्पियुप्पु	कञ्जिउप्पु	अबूकर	श्योरा	Potassium nitras P. Nitrate	Saltpetre Nitre

प्रयोग-(१) शोरा-तीक्ष्ण, अत्यंत उष्ण, रेचक, चरपरा, कड़वा, अग्निको दीपन करनेवाला, सलौना, सूक्ष्म, लघु, दाहजनक, शोषक, ग्राही, और वातनाशकहै (२) कलमीशोरा बहुधा मूत्रमेंसे निकलताहै। यह अपने मार्ग में झिल्लीको उत्तेजित करनेके कारणसे मूत्रवृद्धि करताहै (३) इसमें पसीना लानेकी शक्तिहै इसलिये इससे ज्वरकी ऊष्मा कम होजातीहै (४) मूत्रकृच्छ्र और पथरीके रोगोंमें शोरेका प्रयोग करना चाहिये (५) शिरमें जो एक प्रकारका स्नायुका रोग होताहै उसको मिटानेके लिये शोरेका पानी शिरपर डालतेहैं (६) ५ से ६ रत्ती शोरा बार २ पिलानेसे तृषा और ऊष्मा कम होजातीहै (७) रक्तकी चालकी तेजीको कम करनेके लिये भी ऐसे ही पिलाया जाताहै (८) इसको दूधके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (९) यह जहरीली छूतको मिटाताहै (१०) इसको कड़वे तेलमें जलाकर मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (११) शोरा और सफेद कत्था पीसकर बुरकानेसे मुंहके छाले मिटतेहैं (१२) एक मासे शोरा और एक मासे राईको पीस, उसमें बराबर बूरा मिला, दो मात्राकर, दो दिन प्रातःकाल देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१३) शुद्ध कलमीशोरेमें रंगत आनावे जितनी हल्दी मिलाकर अंजन करनेसे जाला, नाखूना आदि नेत्ररोग मिटतेहैं और नेत्रोंकी ज्योति बढतीहै (१४) इसको सिरकेमें पीसकर कनपटी पर लेप करनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (१५) शोरेमें कपड़ा भिगोकर नाभिके नीचे रखनेसे बन्ध हुआ मूत्र उतरने लगजाताहै (१६) २ से १० मासे तक शोरा भोजन किये पहिले खिलानेसे मरा हुआ बालक गर्भाशयमेंसे निकलजाताहै। शोरा रंगतके काम में आताहै।

संख्या (५७०)

(सं०) सुवर्णम्, कनकम्, हिरण्यम्, हेमम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोनो	सोना	सोना	सोने	सोना	सोना	बगारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रज़ी
तगं	स्वर्ण, चिन्न	ज़हब	ज़र, तिला	Aurum.	Gold.

(१) सुवर्णको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि चिन्ह वल्मीकमृत्तिका (उदेईके बांबलेकी मिट्टी) धूमसा, सोना गेरू, ईंट और नमक इन सबको पीस जमेरीके रसमें या कांजी के साथ सुवर्णके पतले पत्रों पर लेप करदेवे, पीछे उनको निर्वात स्थानमें २० छाणोंके बीचमें जुदे २ धर कर आंच लगादेवे। जब ठण्डे होजावें तब निकाल खटाईके जलसे धोकर, कसौटी पर परीक्षा करे, जबतक कसौटी पर उत्तम सुवर्ण जैसा कस न आवे तबतक इसी प्रकारसे उसका शोधन करे (२) अथवा सुवर्णको गला २ कर कचनारके रसमें तीन बेर बुझा देनेसे सुवर्ण शुद्ध होजाताहै।

सुवर्ण भस्म बनानेकी रीति—शुद्ध सुवर्णके महीन पत्रे करा उनमें दुगुना पारा मिला नींबूके रसके साथ घोट उसकी गोली बनाके या टिकड़ी बनावे, उस टिकड़ीके बराबर शुद्ध आमलासार गंधक पीस सरावेमें उस गंधकको टिकड़ी के ऊपर नीचे रख कपड़मिट्टीसे बन्ध कर, सुखा ३० छाणेकी आंच दे, ठंढा होने पर सरावेमेंसे उस सुवर्णको निकाल नींबूके रसमें खरल कर टिकिया बना के सुखादेवे, पीछे उससे दुगुना शुद्ध गंधक उसके ऊपर नीचे देकर सरावसम्पुटमें बन्ध कर उक्त रीतिसे आंच देवे। इस प्रकार १४ आंच देनेसे सुवर्णकी निरुत्थभस्म होजातीहै। इस भस्मको खानेकेलिये काममें लाना चाहिये।

जबतक सुवर्ण भस्मका सेवन करे तब तक ऐसे अन्न और शाकादिक कि जिनका नाम ककारसे प्रारंभहो (जैसे कोद्रव, कर्कटी आदि) उनका

त्याग रक्खे । सुवर्ण भस्म सेवन करनेके पीछे जो इन पदार्थोंका सदैवकोलिये त्याग रक्खे तो सुवर्णके गुण बहुत समय तक ठहरतेहैं ।

प्रयोग—(१) सुवर्ण भस्म-कषैली, तिक्त, शीतल और मधुरहै । इसके सेवनसे आयुर्दा, कान्ती, पराक्रम, विषयशक्ति, भोजनकी-रुचि, और क्षुधा बढ़तीहै । स्वास, कास, क्षय, वात, पित्त, प्रमेह, संग्रहणी, अतिसार, कुष्ठ, ज्वर, अरुचि, देहका दुवलापन, विष, उन्माद, रक्तपित्त, अपस्मार, शूल और नेत्र रोग आदि कई प्रकारके रोग मिटतेहैं । रोगी मनुष्य सुवर्ण भस्मका सेवन करे तो उसके रोग नष्ट होजातेहैं, और नीरोग मनुष्य इसका सेवन करे तो उसकी आयुर्दा बढ़तीहै । अशुद्ध सुवर्णकी भस्मका, या सुवर्ण भस्म बनाते समयमें वह कच्चा रहगया हो तो उसका सेवन करनेसे मनुष्यके बल और वीर्य नष्ट हो जातेहैं और शरीरमें कई प्रकारके रोग पैदा होजातेहैं इसलिये सुवर्ण को शुद्ध करके उसकी भस्म बनाना चाहिये (२) जल भंगरेके रसके साथ सुवर्णभस्मका सेवन करनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (३) दूधके साथ लेनेसे बल बढ़ताहै (४) साटेकी जड़के साथ देनेसे नेत्र रोग मिटतेहैं (५) घृतके साथ देनेसे आयु बढ़तीहै (६) केसरके साथ देनेसे कान्ति बढ़तीहै (७) दूधके साथ देनेसे राजयक्ष्माकी शुष्क खांसी मिटतीहै (८) निर्विषीके साथ देनेसे विष उतरताहै (९) सोंठ, लोंग और मिरचोंके साथ देनेसे त्रिदोषका उन्माद मिटताहै (१०) आंवले और मधुके साथ चटानेसे क्षय सम्बन्धी शोष रोग मिटताहै (११) शंखपुष्पीके साथ सुवर्णभस्मका सेवन करनेसे आयु बढ़तीहै (१२) विदारी कंदके चूर्णके साथ सेवन करनेसे वीर्यमें बालक पैदा करनेकी शक्ति बढ़तीहै (१३) इसकी भस्मको इलायची, वंशलोचन और मधुके साथ चटानेसे पराक्रम बढ़ताहै (१४) सुवर्णके वरक या भस्मको बच के चूर्ण और मधुके साथ चटानेसे स्मरण शक्ति बढ़तीहै (१५) ज्वरघ्न औषधियोंके साथ सुवर्ण भस्म देनेसे ज्वर छूटताहै (१६) अरडूसेके पत्ते और मधुके साथ चटानेसे राजयक्ष्मा (खैनरोग) मिटताहै (१७) ब्राह्मी, शंखाहोली और मधुके साथ चटानेसे उन्माद मिटताहै (१८) कोंचबीज आदि पुष्टाईकी औषधियोंके साथ सेवन करनेसे नपुंसकता मिटतीहै (१९) सुवर्णभस्मकी मात्रा दो रती तकहै । सुवर्णभस्मको वच, शंखाहुली और मधुके साथ बालकको

चटानेसे बल, बुद्धि और आयु बढतीहै और शरीर पुष्ट होताहै (२०) सोनेके वरकोंके साधारण गुण ये सब प्रकारके विष, शूल, अम्लपित्त, हृदयकी निर्बलता, हृद्रोग, शरीरका दुबलापन, क्षय, व्रण, मंदाग्नि, हिचकी, आनाह, कफ और वातरोग आदि कईप्रकारके रोगोंको अलग २ अनुपानके साथ मिटातेहैं (२१) सोनेके वरकों को शहदके साथ चटानेसे सब प्रकारके विष उतरतेहैं परन्तु एक दो वरकसे काम नहीं चलता, इसलिये जबतक विष नहीं उतरे तबतक थोडे २ समयके अन्तरसे चटाते रहना चाहिये (२२) मक्खन और मिश्रीके साथ सोनेके वरक चटानेसे पित्तके रोग मिटतेहैं (२३) स्नायुजालको बलवान् करनेके लिये वरक काममें आतेहैं (२४) सूर्यके देखनेसे जिसकी दृष्टि विदग्ध होगई हो तो घीके साथ सुवर्ण घिसकर आंखमें अंजन करना चाहिये।



संख्या (५७१)

(सं०) सुवर्णमाक्षिकम्, ताप्यम्, मधुधातुः, तापीजम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोनमक्खी	सोनामाखी	सोनामाखी	सोनामुखी	स्वर्णमाक्षिक	सोन्नेमखी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		मरक़शीशा		Ferri sulphuretum	Iron sulphide or sulphuret of iron,

स्थान—सुवर्णमाक्षिक हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंमेंसे निकलताहै।

पहिचान—कुछ काले रंगके पत्थरमें पीतलके रंगकी एक धातु होतीहै उसको सोनमक्खी कहतेहैं, जिसमें पत्थर कम हो, और यह धातु अधिक हो, वैसे टुकडे लेने चाहिये। जो सफेदी लिये हुए पीतलके रंगके कुछ घिसे हुए धातुके टुकडे होतेहैं, और जिनमें पत्थरका मिलाप नहीं होताहै उसको रूपमक्खी कहतेहैं। इसको यहां लिखनेका यह प्रयोजनहै कि औषधियां बेचनेवाले बहुधा रूपामक्खीको सोनमक्खीकी ठौर दे दिया करतेहैं और अनजान लोग

उसको निर्मल और चमकदार देखकर मोल लेलिया करतेहैं।

सोनमक्खीको शोधनेकी रीति–(१) तीनभाग सोनमक्खीमें एकभाग सैंधानमक मिलाकर नींबू और बिजौरेके रसके साथ लोहके पात्रमें इतने समय तक खरल करे कि जबतक वह लाल न होजाय। (२) सोनमक्खीको गलार कर एरंडके तेल, बिजोरे और केलेकी जड़के रस और त्रिफलेके काथ आदि प्रत्येकमें सात सात बेर बुझावे (३) सहिंजनेकी जड़को पीस उसको अगस्तिके पत्तोंके रसमें घोल उसमें सोनमक्खीको सातबेर बुझावे अथवा नींबूके रसमें सातबेर बुझानेसे सुवर्णमाक्षिक शुद्ध होजातीहै।

(१) सुवर्णमाक्षिककी भस्म करनेकी रीतिः–शुद्ध सोनमक्खीको पीस मिट्टीके खप्परमें डाल, चूल्हे पर चढाकर उसके नीचे आंच जलावे और उसमें नींबूका रस डालकर लोहेकी कुड़छीसे हिलावे ज्यों २ रस जलताजावे त्यों २ उसमें रस डालता जाय और हिलाता जाय जब उसका रंग लाल होजाय तब नींबूका रस डालना, हिलाना और आंच देना बन्ध करदेवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब उसको काममें लाना चाहिये।

(२) रीति–महीन पीसी हुई सोनमक्खी तीनभाग सैंधानमक एक भाग ले दोनोंको लोहेकी कढ़ाईमें डाल, चूल्हे पर चढाकर उसमें नींबू अथवा बिजौरेका रस डालकर लोहेके डंडेसे घोटता रहे और तीक्ष्णाग्नि देता रहै जब लाल होजाय तब उतार लेवे और स्वांग शीतल होजाने पर काममें लावे।

प्रयोग—(१) स्वर्णमाक्षिक–तिक्त, और मधुरहै। प्रमेह, अर्श, क्षय, कुष्ठ, कफ और पित्तके रोग, पांडु, कामला, विष और हलीमक आदि कई रोगोंको मिटतीहै (२) इसकी भस्मको मधुके साथ चटानेसे अथवा गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे पित्त प्रमेह मिटताहै (३) अतीसके चूर्णके साथ देनेसे ज्वर छूटताहै (४) पीपल और मधुके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (५) सोंठके साथ देनेसे अतिसार मिटताहै (६) मधुके साथ इसका अंजन करनेसे नेत्रका शुक्ररोग मिटताहै (७) अशुद्ध सोनमक्खीका सेवन करनेसे मंदाग्नि, अफारा, नेत्ररोग, कुष्ठ, खैन और कृमिरोग आदि बहुतसी व्याधियां पैदा होतीहैं।

संख्या (५७२)

(सं०) सूर्यावर्ता, रविप्रीता, रविक्रान्ता, सौरी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हुल्हुल	हुलहुल	सूर्यमुखीफुल	तिलवण	हुडहुडिया		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Gynandropsis pontaphylla Cleome p,	

स्थान–सूर्यावर्त्त हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें बहुत होताहै ।

ताजी हुल हुल को कूट अर्थात् दरगच कर जल के साथ उस का अर्क खैंचनेसे उसका तेल निकल आताहै, इस तेलमें लहसन या राई के तेल के जैसे गुण होतेहैं ।

प्रयोग—(१) ब्रह्म सुवर्चला–उष्ण, लघु, कषेली, सारक और चरपरी है (२) इसके पत्तोंके क्वाथकी ६ तोलेकी मात्रा दिनमें दो बेर देनेसे वांइंट मिटतेहैं (३) पानीजरेका ज्वर छुडानेके लिये बीजोंके क्वाथकी उतनी ही मात्रा देनी चाहिये (४) छाला उठानेके लिये इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधा जाताहै । उस छालेमेंसे बहुतसा मवाद वह निकलताहै (५) इसके बीजोंके चूर्ण की शक्करके साथ फक्की देनेसे आंतोंके कीड़े बाहिर निकल जातेहैं (६) बीजोंका लेप करनेसे दाह मिटतीहै (७) कानके भीतरकी सूजन और पीड़ा मिटानेके लिये इसके केवल पत्तोंका विना जलसे निकाला हुआ रस कान में डालना चाहिये (८) फोड़के ऊपर इसके पत्ते बांधनेसे उसकी सूजन विखर जातीहै । इसके पत्तोंको सिरके या नींबूके रस या उष्ण जलमें बांटकर लेप या पुल्टिस बनाके बांधना चाहिये (९) इसकी जड़का क्वाथ पिलानेसे हल्का ज्वर छूट जाताहै (१०) दो मासेसे चार मासे तक इसके बीजोंके चूर्णमें बराबर शक्कर मिलाकर, उसकी फक्की प्रभात और संध्याके समय दो दिन तक देकर, तीसरे दिन प्रभातके समय एरंडके तेलकी मात्रा देनी चाहिये, इससे कृमि मरतेहैं, बच्चोंको आयुके अनुसार २॥ से १० रत्ती तककी मात्रा देनी चाहिये

(११) इसके पत्तोंके रसको गुनगुनाकर कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (१२) श्वास सम्बन्धी नालिकाके रोगोंको मिटानेके लिये इसके पत्तों का स्वरस पिलातेहैं (१३) इसके पत्तोंका रस रेचकहै (१४) इसके पत्तोंको ठंढाईकी तरह घोट छानकर पीनेसे और उनका फोक बांधनेसे उपदंश मिटताहै (१५) इसके पत्ते और काली मिरच प्रत्येक बराबर ले, पीस, काली मिरचके बराबर गोलियां बनाकर एक एक गोली तीन दिन तक देनेसे शीतज्वर छूट जाताहै (१६) इसकी जड़ कानमें बांधनेसे भूतज्वर छूटताहै (१७) इसके पत्ते और लहशनको पीस टिकिया बनाके बांधनेसे गलगंड फूट जाता है और बहकरके साफ हो जाताहै (१८) इसके १७ मासे बीजोंको पीस कर खिलानेसे सब प्रकारके विष उतरतेहैं (१९) इसके रसमें सैंधानमक, मधु, और कड़वा तेल मिला, उष्णकर कानमें डालनेसे कानकी शूल मिटतीहै। इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै ।

संख्या (५७३)

(सं०) सेवम्, सिवितिकाफलम्, सेविफलम्, मुष्टिप्रमाणबदरम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सेव	सेव	शेव, सेव	सेवफल	सेउफल	सेव	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		तुफ्फाह	सेब	Pyrus Malus P, Communis	Applo

स्थान—सेवके वृक्ष हिमालय, पंजाब, सिन्ध, संयुक्त प्रदेश, मध्य हिन्दुस्थान और दक्षिण आदि देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होताहै इसके पत्तोंके नीचेके अन्त का भाग सफेद रुएंदार होताहै, इसके पुष्पोंका रंग सफेद होताहै और उनमें लाल छींटे होतेहैं । इसके फलका रंग हरा पीला और लाल होताहै, इसके कच्चे फलका स्वाद खट्टा या फीका होताहै और पकने पर मीठा होजाताहै ।

फूलने फलने का समय—फागुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगतेहैं अषाढसे भादों तक फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) सेव-ठंढी, रस और पाकमें मीठी, रोचक और पचनेमें भारी होतीहै, वात और पित्तको मिटातीहै और नीरोगताको बढ़ातीहै (२) अन्य फलोंकी अपेक्षा इसका फल सुगमतासे पचताहै यह-वीर्य और कफको बढ़ातीहै। (३) इसके खानेसे शरीर पुष्ट होताहै और रुधिर शुद्ध होजाताहै (४) सेव खानेसे मुखका स्वाद सुधरताहै गलेकी पीड़ा मिटतीहै, और मस्तिष्ककी शक्ति बढ़तीहै क्योंकि इसमें फासफोरिक एसिडका तत्व अधिकहै (५) अफीम खाने या मदिरा पीनेका व्यसन छुड़ानेके लिये इसका प्रयोग अच्छाहै (६) निद्रा नाशवाले को सेव खिलाना चाहिये (७) हृदकी पीड़ावालेको सेव खिलाना लाभकारीहै (८) पोस्तके क्वाथमें सेवका शर्वत मिलाकर पीनेसे रक्तातिसार मिटताहै (९) सेवके रसमें आधी मिश्री डालकर शर्वत बनातेहैं। शर्वतकी २ तोलेकी मात्रा देनी चाहिये (१०) इसके पानी में ४ रती कपूर मिलाकर पिलानेसे बिच्छूका विष उतरताहै जो इससे न उतरे तो आध २ घंटेके अन्तरसे २-३ वेर पिलाना चाहिये (११) सेवका फल खानेके काम में आताहै (१२) इसका मुरव्वा बनातेहैं (१३) इसका मुरव्वा खानेसे हृदय और मस्तिष्कका बल बढताहै (१४) इसके शर्वतमें ब्राह्मीका चूर्ण मिलाके चटानेसे पित्तोन्माद मिटताहै (१५) पित्तातिसार मिटानेके लिये इसका मुरव्वा खिलाना चाहिये (१६) पके हुए सेवके रसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे सूखी खांसी और मूर्च्छा मिटतीहै (१७) कच्चे सेवके रसमें सैंधा नमक मिलाकर पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (१८) इसके टुकड़ेको मुहमें रखनेसे तृषा मिटतीहै (१९) इसको पीसके लेप करनेसे आंखकी पित्तकी पीड़ा मिटतीहै (२०) जो सेव नहीं मिले तो इसकी ठौर बीहको काममें लाना चाहिये (२१) कच्ची सेव ग्राहीहै और अतिसारको मिटातीहै (२२) इसके पत्तोंको औटाकर पिलानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२३) बहुत सेवके खानेसे जो उपद्रव हो जातेहैं उनको मिटानेके लिये गुलकंद खिलाना चाहिये अथवा दालचीनी शहदमें चटाना चाहिये।

संख्या (५७४)

(सं०) सैंधवं, नादेयं, सिन्धुजं, माणिमन्थम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सांधोलूण	सींधानोंन	सिंधालूण	शेंधेलोण	सैंधवलवण	सेंधानमक	सैंधवलवणमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सैंधवलवणं	सैंधवलवण			Sodii chloridum Chloride of sodium.	Rock or Bay salt

यह नमक सफेद और गुलाबी रंगके भेदसे दो प्रकारका होताहै । इसको लाहोरी नमक भी कहतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह–पाचन, दीपन, रोचक स्निग्ध, सूक्ष्म, पचनेमें हलका, विपाकमें मधुर, हृदय और नेत्रोंको हितकारीहै । त्रिदोष, व्रण, और विबंधको मिटाताहै और पुरुषार्थको बढाताहै (२) इसको गुदामें रखनेसे बद्धकोष्ठ और मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (३) इसकी सलाई बनाकर नेत्रोंमें फेरनेसे जाला कटताहै (४) इसमें दुगुनी मिश्री मिला पीस कज्जल बनाके अंजन करनेसे मोतियाबिन्द और जाला आदि मिटजातेहैं (५) श्वास रोग मिटानेके लिये पहिले दिन दो मासे सैंधानमक पीसकर सोते समय शहदकी साथ चाटे, ऐसे नित्य आध २ मासे बढाते हुए ६ मासे तक बढालेवे इसके ऊपर पानी न पीवे, जो तृषा लगे तो कुछ गुनगुना पानी पीना चाहिये (६) ८ मासे सैंधानमकको तीन तोले गौ घृतके साथ चटानेसे सर्पका विष उतरताहै (७) सैंधे नमकको पानीमें मिलाकर नस्य लेनेसे हिचकी बन्ध होजातीहै (८) घृतमें सैंधा नमक मिलाके पीनेसे वातसे पैदा हुई वमन मिटतीहै (९) मधुके साथ सैंधानमकका अंजन करनेसे नेत्रका शुक्ररोग मिटताहै (१०) इसका मंजन करनेसे दांतोंका कुंदपन मिटताहै (११) गायका गोबर और नोंन मिलाके लेप करनेसे जलंधर कम होजाताहै (१२) नोंन और सफेद बूरा बराबर लेके फकी लेनेसे चोटकी पीड़ा मिटतीहै (१३) नोंन और मुर्दासिंगको पीसकर लेप करनेसे बन्दरके विषकी शान्ति होतीहै (१४) सैंधा नोंन और हरड़के

चूर्णकी नित्य फकी लेनेसे अग्निदीपन होताहै (१५) ८ मासे सेंधे नमकको ३ तोले गो घृतमें मिलाकर चटानेसे विषैल जीवोंका विष उतरताहै ।

संख्या (५७५)

(सं०) सोमलता, सोमवल्ली, सोमक्षीरा, द्विजाप्रिया ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोमलता	सोमलता	सोमलता	सोमवल्ली	सोमलता	सोमलता	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Sarcostemma brevistigma - Asclepias acida.	The Moon plant

इसके सिवाय तीन जातिके सोम और मिलतेहैं उनको भी हिन्दुस्थान वाले इन्ही नामोंसे पुकारतेहैं अपने २ अलग देशी नाम नहींहैं ।

प्रयोग—(१) सोमलता–कड़वी, चरपरी, रसायनी, शीतल, और मीठीहै। त्रिदोष, पित्तदाह, तृषा और शोथको मिटातीहै (२) गन्नोंके खेतमें जो सफेद कीड़े लगजातेहैं, उनको मारनेके लिये सोमलताको काममें लानेकी यह रीतिहै, कि इसकी टहनियोंकी पूली बनाके, उसके भीतर एक डाटके भरी हुई नमककी थैली बांधके, कुएकी मोरीमें रखदेतेहैं, कि जिसमें होके खेतमें पानी जाया करताहै (थैलीको नमकसे गाढ़ा भरके दृढ बांधनेका प्रयोजन यहहै कि वह नमक धीरे २ गलजावे) उस पानीसे कीड़े मरजातेहैं और खेतीको हानि नहीं पहुंचतीहै (३) इसके पोधेमें बहुतसा दूधिया रस निकलताहै वह तृषा कम करनेके लिये पिलाया जाताहै ।

—— ० ——

संख्या (५७६)

(सं०) सौराष्ट्री, सुराष्ट्रजा, काक्षी, स्तुत्या ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोपीचन्दन	गोपीचन्दन	गोपीचन्दन	गोपीचन्दन		सोरटामट्टी	सौराष्ट्रिकमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
					Silicateof alumina.

गुण—(१) गोपीचन्दन-शीतल और दाहनाशकहै। व्रण, विप, विसर्प, रुधिर विकार, पित्त, कफ और प्रदररोगको मिटाताहै (२) इसका पेटपर लेप करनेसे गिरता हुआ गर्भ स्थिर होजाताहै (३) इसको पानीमें छान शक्कर मिलाकर पीनेसे प्रदर मिटताहै (४) फोड़े फुन्सी पर इसका लेप करतेहैं।

संख्या (५७७)

(सं०) सौवर्चलं, रुचकं, हृद्यगंधकं, कृष्णलवणम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सचललूण	कालानोंन	सचल(ळ)	सचळलोण	सैंचलवण	कालानमक	नल्लअट्टुपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सूरुतउप्पु	मूरुतउप्पु			Unaqna sodium chloride	

गुण—(१) यह-चरपरा, उष्ण, रेचक, पचनेमें हल्का, दीपन, और विशद होताहै। विबंध, आनाह, शूल, गुल्म, कृमि, आमकी शूल और अरुचिको मिटाताहै।

संख्या (५७८)

(सं०) स्नुही, सुधा, समन्तदुग्धा, सेहुण्डः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
थोर	थुहर	कटालोथोर	निवडुग	मनसागाछ	दूण्डेथोहर	जेमुडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कल्लिमर	कल्लिमर			Enphorbia nerifolia E -ligularia E Tirucalli	Milk hedge Milk bush or Indian tree spurge

स्थान—दंडाथुहरके वृक्ष हिन्दुस्थान और बंगाल आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसकी ऊंचाई २० फुटकी होतीहै, इसकी पेदड़की मध्यरेखा एक फुटकी होतीहै। वसंत ऋतुमें इसके पत्ते गिर जातेहैं, फागुन और चैतमें नये पत्ते निकल आतेहैं। इसके हरेक भागमें दूध होताहै।

इसको ओटानेसे गोंद निकलताहै।

फूलने फलने का समय-माघ और फागुनमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग-(१) थुहर-चरपरा, कड़वा, उष्ण, तीक्ष्ण, दीपन, सारक, और गुरुहै (२) इसका दूधिया रस या इसके दूधमें दूसरी औषधियोंको भिगोके खिलाने पिलानेसे विरेचन होताहै। इसका दूध-उष्णवीर्य्य, स्निग्ध, रसमें चरपरा और लघुहै—कुष्ठ, गुल्म, और उदररोग वालेके लिये इसका विरेचन बहुत उत्तमहै (३) हरड, पीपल और निसोत आदि रेचक औषधियोंको इसके दूधमें भिगोके खिलानेसे तीव्र विरेचन होके जलंधर, सूजन और अफारा मिटताहै (४) इसकी जड़को काली मिरचके साथ पिलानेसे और दंशपर लेप करनेसे सर्प का विष उतरताहै (५) इसका दूध लगानेसे मस्से और त्वचाके फोड़े फुन्सी मिटतेहैं (६) जिस मनुष्यको पागल कुत्ता काटा हो उसके वहकनेके पहिले थूहरके डंडेकी गिरी और अदरकको मिलाकर देनेसे उसका विष उतरताहै (७) थूहरके रसकी कुछ बूंदें कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (८) थूहर के रसमें चिराकके काजलको खरल करके अंजन करनेसे आंखका दुखना और गीड आना बन्ध हो जाताहै (९) इसके अन्तके कोमल डंडोंको आगमें गर्मकर उनका रस निकाल उसमें गुड़ मिलाके पिलानेसे बच्चेको वमन और विरेचन होकर खांसी मिटतीहै (१०) इसको मक्खन या घीमें मिलाकर बिगड़े हुए फोड़ोंपर लगाना चाहिये (११) खुजली मिटानेके लिये थूहरके रसको घीमें मिलाके मर्दन करना चाहिये (१२) पेशियोंकी सूजन पर इसका दूध लगानेसे सूजन बिखर जातीहै। और पकती नहीं है (१३) इसका दूध हिलते हुए दांत पर लगानेसे वह दांत सहजसे गिर जाताहै। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि इसका दूध दूसरे दांतके नहीं लग जाय (१४) थूहरका खार बनाके खिलानेसे कफ और श्वास मिटताहै

(१५) थूहरके दूध और पियाजके अर्कमें महीन कपड़ेको तीन वेर भिगो २ और सुखा २ के अलसीके तेलमें ८ पहर रक्खे इन्द्रीका शिर वचाकर उसपर मक्खन लगाके उस कपड़की पट्टी इन्द्रीपर ४ घड़ी तक वंधी रख कर खोल डालनेसे इन्द्री पुष्ट होतीहै जो आवश्यकता हो तो फिर भी ऐसेही उसकी पट्टी बांधे और सब समय कपड़ेको अलसीके तेलमें भीगा रक्खे (१६) इसकी जड़को लाल सूतसे कमरमें बांधनेसे अतिसार मिटताहै (१७) हल्दीके चूर्णके इसके दूधकी कई वेर भावना देकर उसको बांधनेसे भगंदर और अर्श मिटतेहैं ।

संख्या (५७९)

(सं०) कन्थारी, दुर्धर्षा, दुष्प्रवेशा, तीक्ष्णकंटका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नागफनीथा।	नागफनी थूहर	हाथलोथोर	फडीचेंनि वड्डंग	फनिमनसा	नागफनी	नागजमड्डू

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शप्पातकळ्ळि	पापासकळ्ळि			Opuntia Dillenii Cactus indicus	The prickly pear

स्थान—नागफना थुहर हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर पैदा होताहै ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई १०—१५ फुट होतीहै। इसके पत्ते जिनको पंजा कहतेहैं ६ से ९ फुट लम्बे होतेहैं । इसके लाल छींटोंके पीले पुष्प लगते हैं, वे केवल दिनमें खुलतेहैं रात्रिमें नहीं खुलतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंको कूट पुल्टिस वनाके बांधनेसे दाह और पित्त शोथ मिटतीहै (२) कूकरखांसीवालेको इसका फल सेकके खिलाना चाहिये (३) इसके फलका शर्वत दिनमें तीन चार वेर पोने—चार २ मासे पिलानेसे पित्तकी थैलीमेंसे पित्तका निकास बढ़ताहै (४) इसके दूधकी १० वूंद शक्करमें मिलाके देनेसे विरेचन होताहै (५) इसका पक्का फल खानेसे मूत्रका रंग लाल होजाताहै (६) इसके फलके पौने चार मासे शर्वतमें

चन्दनके तेलकी १५ बूंद डालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (७) फोड़ेको जल्दी पकानेकेलिये इसके पत्ते गर्म करके उसपर बांधना चाहिये (८) इसके पत्तेका गूदा आंखपर बांधनेसे आंखका दुखना मिटताहै (९) इसके पत्तोंके पुल्टिसको गर्म करके बांधनेसे मसूड़ोंके असाध्य रोग मिटतेहैं (१०) इसके दूधका विरेचन देतेहैं (११) स्नायुक पर इसके पत्तोंकी गिरका पुल्टिस बांधतेहैं (१२) इसका फल मोती जैसा होताहै वह शान्ति पैदा करने वाला और खा के काममें आताहै ।

संख्या (५८०)

(सं०) त्रिधारस्नुही, त्र्यस्त्रः, धारास्नुही ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
तिधारीथोर	तिधाराथूहर	तरधारोथोर	तिधारीनिवडुग		--	मूडधारजेमुडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मुक्कोणकल्लि	मूरुमूलेफल्लि	जक्कूमेहिंदी		Euphorbia antiquorum.	

स्थान—तिधारा थूहर हिन्दुस्थानके सूखे पहाड़ोंमें कई ठौर मिलताहै ।

पहिचान—इसकी त्रिखूंटी त्रिधारी और पचधारी डालियां होतीहैं । इसके बहुत छोटे पत्ते लगतेहैं, किसीके नहीं भी लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसका दूध पिलानेसे विरेचन होके कमरका दर्द मिटताहै (२) गाठियाकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसको सूजन पर लगाना चाहिये (३) इसके दूधमें रूईका फोया भिगो उसको घीमें जला कर डाढमें रखनेसे उसका दर्द मिटताहै (४) इसके दूधको किसी औषधिके साथ खिलाने पिलानेसे तीक्ष्ण विरेचन होके जलंधर मिटताहै (५) इसके दूधमें तेल सिद्ध करके कानमें डालनेसे बहिरापन मिटताहै (६) स्नायुक पीड़ा मिटानेकेलिये इसके दूधका लेप करतेहैं (७) इसकी जड़ और हींगको पीस कर पेट पर लेप करनेसे बच्चेकी आंतोंके भीतरके कीड़े मरजातेहैं (८) इसकी जड़की

छालको ओटाकर पिलानेसे विरेचन होताहै (९) इसकी टहनियोंको ओटाके पिलानेसे छोटे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (१०) इसके रसमें अरडूसेके पत्तोंको पीस छोटी गोली बनाके चूंसनेसे खांसी मिटतीहै (११) इसके ताजे रसका लेप करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (१२) इसके ताजे रसमें फुलाया हुआ सोहागा और नमक मिलाके लेप करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै, और सूजन उतरतीहै (१३) विरेचनकेलिये इसके दूधकी बहुत थोड़ी मात्रा देनी चाहिये (१४) सर्प का विष उतरनेकेलिये भी इसका प्रयोग किया जाताहै (१५) जिस घरकी छत पर तिधारी थुहरके गमले पड़े रहतेहैं उस पर बिजली नहीं गिरतीहै।

संख्या (५८१)

(सं०) सातला, सप्तला, भूरिफेना, विदुला।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहट्टी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
एकजात कोथोर	सातला	साथेर	निवडुंगाचे-भेद	*		सम्बरेनु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	नीरुवाल्लि				Marjoram

स्थान—सातला, हिमालय में कश्मीर से सिक्कम तक और शिमले में होताहै।

प्रयोग—सातला–लघु, तिक्त, तीक्ष्ण, कषेला, सारक, रेचक, शीतल और पाकमें चरपराहै (२) इसमेंसे एक प्रकारका उड़नेवाला तेल निकलता है, वह–सुगंध युक्त, उत्तेजक और बलवर्द्धक होताहै। इस तेलकी ५ बूंद १॥ मासे गुड़में मिलाके खिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (३) आमकी गुठलीको सेक उसकी गिरके दो मासे चूर्णमें इसके तेलकी ५ बूंद डालके देनेसे साधारण अतिसार मिटताहै (४) एक रत्ती सेकी हुई हींगको इसके साथ चटानेसे स्त्रियोंके आवेशके रोगका वेग मिटताहै (५) इसके तेलका मर्दन करनेसे

* मनसाविशेष, बडिलसोनुली

पुरानी गठिया मिटतीहै (६) इसके तेलमें फोया तर करके डाढमें रखनेसे डाढकी पीड़ा मिटतीहै (७) इसकी बूंदे कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (८) इसको घालों पर लगानेसे घाल बढ़तेहैं । इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै ।

संख्या (५८२)

(सं०) स्फटिका, दृढरङ्गा, शुभ्रा, रंगदा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
फिटकड़ी	फिटकड़ी	फटकी	फटकी	फट्किरि	फिटकिरी	पटिकारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पटिकारं	पटिकारः	ज़ाज़, शिव	ज़ाफसफेद	Hydrargyrum sulphuratum	Alum Vitriol white

स्थान—फिटकड़ी—विहार, कच्छ और पंजाबमें बनतीहै ।

यह सफेद, पीली, लाल, गुलाबी और कालेरंगकी होतीहै । इसको बनाते समय इसमें जिस प्रकारका मल रह जाताहै उसी प्रकारके रंगकी होजातीहै ।

प्रयोग—(१) फिटकड़ी,-कड़वी, चरपरी, कषेली, खट्टी, लेखन, ग्राहीणी, स्निग्ध और उष्णहै । कुष्ठ, व्रण, प्रदर, विष दोष, मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोष, प्रमेह, वमन और विसूचिका को मिटातीहै (२) इसको फुलाकर सुंघानेसे नकसीर बन्ध होजातीहै (३) इसका मंजन करनेसे सड़ेहुए दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै (४) पानीको शुद्ध करनेके लिये इसकी डली उसमें रख देतेहैं (५) इसके कुल्ले करनेसे गलेकी गांठें मिटतीहैं (६) फुलाई हुई फिटकड़ीका लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (७) नाभ टलजानेके बाद जो नाभि में फोड़ा हो जावे सो जलाई हुई फिटकड़ीका उसपर लेप करनेसे लगानेसे जल्दी मिट जाताहै (८) फुलाई हुई एक मासे फिटकड़ीमें तीन मासे बूरा मिलाकर ४ पुड़ी बनावें, दो २ घटेके अंतरसे एक एक पुड़ी देनेसे छातीमेंसे रुधिरका आना बन्ध हो जाताहै (९) गर्भपात होनेके पीछे गर्भाशयमेंसे दूपित रक्त आदि

को पूरा निकालनेके लिये और रुधिर बन्ध करनेके लिये, फिटकड़ीका प्रयोग इस प्रकारसे करना चाहिये, कि फिटकड़ीको महीन पीसकर, मलमलकी थैली मे एक अखरोट या बड़ी गोली जितनी पोटली बना उसके एक डोरा बांध, पोटलीको गर्भाशयके मुंहके पास चौबीस घंटे तक रख देवे, जो उस समयमें वहां खुजली और दाह नहीं होवे तो उस पोटलीको फिर २४ घंटे तक रहने देवे, इससे जितना उपद्रवी रुधिर आदि मल होगा, वह गर्भाशयमेंसे निकलके योनीके मुख तक भर जायगा, उसको सुगमतासे निकालदेवे (१०) फिटकड़ी और बबूलकी छालके काथकी पिचकारी देनेसे आमातिसार मिटताहै (११) नींबूके रसके साथ फुलाई हुई फिटकड़ीका लेप करनेसे आंखकी पीड़ा मिटतीहै (१२) कुत्ताखांसीके लिये फुलाई हुई फिटकड़ीकी ५ से १० रती तककी मात्रा दिन में तीन वेर देना चाहिये (१३) ढाईरती फिटकड़ीकी फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै (१४) अफीमके साथ फिटकड़ीकी फकी देनेसे पुराना अतिसार मिटताहै (१५) दो रती फिटकड़ीको ढाई तोले गुलाब जलमें पीसके कुछ बूंदे आंखेंमे डालनेसे आंखकी ललाई और गीडोंका वहुत आना मिटताहै (१६) पावभर मीठे दहीमें एक मासे फिटकड़ी डालके खिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै। इसके खानेकी यह रीतिहै कि पहिले दहीमें एक ठौर फिटकड़ी डाल के उसके ऊपर थोड़ासा दही ढककर फिटकड़ी सहित दहीको एक ग्रासमें खाकर फिर बाकीका दही ऊपरसे चाटजावे और गेहूंकी अलूणी रोटी और दालमें सैंधा नमक और काली मिरच डालकर खावे (१७) फुलाई हुई फिटकड़ीकी एक मासे तककी फकी लेके ऊपर दूध पीनेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१८) एक तोलेभर फिटकड़ीको सेर भर जलमें ओटाके कुल्ले करानेसे मुंह से लालका गिरना बन्ध होताहै (१९) मुखपाक मिटानेके लिये फिटकड़ी और चमेलीके पत्तोंको ओटाकर कुल्ले कराने चाहियें (२०) भुनी हुई फिटकड़ी और गैरू, दोनों बराबर ले, उसमें दुगुनी मिश्री मिला, ७ मासेकी फकी गायके दूधके साथ लेनेसे सुजाक मिटताहै (२१) ७ मासे फिटकड़ीको जलमें पीसकर पिलानेसे सर्पका विष उतरताहै (२२) थूहरकी लकड़ीको पोलीकर उसमें फिटकड़ी भर, कपड़ मिट्टीसे बन्धकर कंडोंकी आगमें जला, स्वांगशीतल होनेपर निकाल उसमेंसे दो रतीकी मात्रा पानमें रखकर देनेसे श्वास

और कास मिटताहै (२३) फिटकड़ीको फुला उसमें बराबर मांजूफलका चूर्ण मिलाकर बुरकानेसे मुंहके छाले मिटतेहैं (२४) एक मासे फिटकड़ी दो मासे अलसीका बांट पोटली बना पानीमें भिगो २ कर नेत्रों पर फेरनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (२५) दो भाग फिटकड़ी और एक भाग नोंनको पीसकर मंजन करनेसे दांत दृढ होतेहैं (२६) एक तोले फिटकड़ी और ६ मासे मोचरसको आधसेर पानीमें ओटा आधा पानी रखके कुल्ले करनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै और दांत दृढ होतेहैं (२७) घावके मुर्दार मांसपर फुलाई हुई फिटकड़ी बुरकानेसे घाव भर जाताहै (२८) फिटकड़ीको कमरमें बांधनेसे वीर्य स्तंभन होताहै (२९) भुनी हुई फिटकड़ीमें बराबर मिश्रीका चूर्ण मिलाके एक से ६ मासे तक फक्की देनेसे कफ और श्वास मिटताहै (३०) भुनी हुई फिटकड़ी और बीजाबोल बराबर ले मधुके साथ बत्ती बनाकर कानमें रखनेसे कर्णपीडा मिटतीहै (३१) एक तोले फिटकड़ीको ४ तोले घीमें भूने जब वह घीमें जम जावे तब ऊपरके घीको लेकर उस घीका खांड और मैदाके साथ हलुवा बनाकर उसमें उस फिटकड़ीको रखके तीन दिन खिलानेसे चोट और शरीरमें रुधिरका जमाव बिखर जाताहै (३२) फिटकड़ीको पानीकेसाथ पीसकर मलनेसे बगल गंध मिटतीहै (३३) योनी में इसके पानी की पिचकारी देनेसे प्रदर और उसका ढीलापन मिटताहै ।

संख्या (५८३)

(सं०) स्वर्जिकः, सुखार्जिकः, सुखवर्च्चकः, स्वर्ज्जक्षारः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
साजी	सज्जी	साजीखार	सज्जीखार	साजिमाटी	सज्जी	सज्जिक्षारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सज्जीकार	सज्जीखार	कला, किलि	अजगार शखार		Barilla Carbonate of soda

सज्जी दो प्रकारसे बनतीहै एक वह है कि जहां पृथ्वी फूल जातीहै वहां की मिट्टीमेंसे सज्जी निकाली जातीहै । (२) कई वृक्षोंकी भस्मीमसे सज्जी

निकाली जातीहै ।

प्रयोग—(१) सज्जी—चरपरी, उष्ण, तीक्ष्ण, गुल्मनाशक, और अग्निवर्द्धकहै कृमिरोग, आध्मान, उदरकी वातपीड़ा खट्टी डकारें और अम्लपित्तको मिटातीहै (२) साजीखार और जौखार बराबर ले पानीसे पीस पीपवाले फोड़े पर लेप करनेसे उसका मुंह खुल जाताहै (३) सज्जीको महीन पीस मधुके साथ मलनेसे विच्छूका विष उतरताहै (४) सज्जी और चूनेकी कलीको बराबर ले पीसके श्वेत दागपर लगावे जब सूखजाय तब गाढे वस्त्रसे छील फिर दूसरी बेर लगावे ऐसे कई बेर लगानेसे उस जगहकी त्वचा अलग होके वहां एक दाग पैदा होगा उसपर मीठा तेल मलनेसे वहांकी चमड़ी अपने रंगकी होजातीहै (५) काच ढालते वक्त जो मैल पीछे रहजाताहै उसको यांगड़ खार कहतेहैं इसीको साफ करनेके पीछे सूरतीखार कहतेहैं । यह खार कृमिरोग, आध्मान, उदरकी वात पीड़ा, मिटाताहै ।

संख्या (५८४)

(सं०) स्वर्णक्षीरी, पटुपर्णी, हैमवती, पीतदुग्धा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	कर्नाटकी
सत्यानाशी	सत्यानाशी	दारुडी	पिसोळा	सोनाखिरुइ	सत्यानासी	चिकणिक्यभेद

द्राविड़ी	तैलंगी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Argemone mexicana.	The Mexican or prickly poppy

स्थान—सत्यानासीके क्षुप बंगालसे पंजाब तक, पंचमहल और मारवाड़ आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका २-२॥ फुट ऊंचा क्षुप कटेलीकी जातका होताहै । इसके पत्ते फल और शाखा आदि सब अंग पर कांटे होतेहैं, इसका पत्ता या टहनी तोड़नेसे पीला दूध निकलताहै । इसके पीले रंगके पुष्प लगतेहैं । इसका फल एक या डेढ इंच लम्बा होताहै, उसमें काले बीज निकलतेहैं । इसकी जड़को मारवाड़ीमें "चोक" कहतेहैं ।

इसके बीजोंमें से एक प्रकारका पीला, साफ, और पारदर्शक तेल निकलताहै। इसको खुला पड़ा रखनेसे यह उड़ जाताहै, बीजोंमेंसे जब तेल निकाला जाताहै तब गदला होताहै कुछ दिन पड़ा रहनेसे उसके नीचे सफेद गाद बैठ जातीहै और तेल नितर कर साफ और चमकदार होजाताहै, इसकी गंधसे कुछ जी मचलाताहै। परन्तु बहुत बुरी दुर्गंध नहीं आतीहै। इसका स्वाद कुछ चरपरा होताहै । इस तेलकी परीक्षा यहहै कि इसमें शोरेका तेज तिजाब मिलानेसे इस तेलमें नारंजियां लाल रंग पैदा होजाताहै । यह तेल जलानेके काममें भी आताहै ।

प्रयोग—(१) इसके पंचांगका हिम या फांट पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (२) मूत्रनालीकी दाह मिटानेके लिये इसका फांट पिलातेहैं (३) (४) रगड़से छिली हुई चमड़ी पर इसका हिम लगानेसे घाव भर जाताहै (५) इसके बीज अहिफेनकी अपेक्षा अधिक मादक, नींद लानेवाले, अचेत करनेवाले और वामकहैं (६) आमाशयकी या अंतड़ियोंकी शूल मिटानेके लिये इसके तेलकी ३० से ६० बूंदें तक खांडमें डालके देना चाहिये। इससे शूल आदि बंध होकर रोगीको बहुत अच्छी निद्रा आजातीहै (७) इस तेलकी इस मात्रासे मल खुल जातेहैं अर्थात् बद्धकोष्ठ मिटजाताहै (८) आमातिसारमें मलका रेच होनेके लिये इसके तेलकी ३० से ६० तक बूंदें खांडमें डालके फका देतेहैं (९) किसी २ को १५ से ३० बूंदेंही सारक हो जातीहैं । बाजारमें इसका असली तेल नहीं मिलनेसे उसका असर ऐसा नहीं होताहै (१०) इसके पंचांगको कूटकर अर्क निकालतेहैं वह सारक होताहै (११) इसका दूध या रस देरीसे अच्छे होनेवाले व्रणोंको अच्छा करताहै (१२) तिलोंके तेलमें सत्यानाशीका तेल मिला उससे बनाया हुआ पदार्थ भोजन करनेसे विसूचिकाके जैसे वमन और विरेचन होने लग जातेहैं (१३) इसके बीजोंकी ४ मासेसे ८ मासे तक फकी देनेसे श्वासका रोग बढने नहीं पाताहै (१४) श्वास रोग मिटानेके लिये इसके तेलकी बूंदें खांडमें डालकर फकी देनी चाहिये (१५) इसके असली ताजे तेलकी २५ बूंदोंसे और पुरानेकी ३५ बूंदोंसे विरेचनके ५ से १०—१२ वेग हो जातेहैं । जुलाफा, रेवंद चीनी और एरंडके तेलसे यह तेल विरेचनके लिये इस वास्ते अच्छाहै कि

इसकी मात्रा बहुत थोड़ीहै और जमाल गोटेके तेलसेभी यह तेल इस वास्ते अच्छाहै कि जमाल गोटेके तेलका स्वाद चरपरा, जीमचलानेवाला और बुरा होताहै। इसके स्वादमें ये दोष नहींहैं। विरेचनके लिये इसका तेल देनेमें दो दोषहैं। पहिला यहहै कि इससे सब मनुष्योंको विरेचनके वेग बराबर नहीं होतेहैं, किसीको ३—४ ही होतेहैं और किसीको १५—१६ हो जातेहैं। इसका दूसरा दोष यहहै कि इसके असरके प्रारम्भमें ही वमन हो जातीहै परन्तु बहुत भारी नहीं होती, कि जैसे जमाल गोटेके तेलसे, अथवा और किसी विरेचनसे, जैसे बहुत दु ख दायक उपद्रव और निर्बलता हो जातीहै वैसे उपद्रव और निर्बलता इससे नहीं होतीहै (१६) इसके पीले रसको घीके साथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१७) इसके तेलकी ३० बूंदें मासे भर सोंठके साथ देनेसे शूल मिटतीहै (१८) इसका अर्क लगानेसे उपदंशकी टांकियां, पांव और खजली आदि रोग मिटतेहैं (१९) इसकी जड़ (चोक) के ४ मासे चूर्णकी फक्की देनेसे पेटमेंसे पिटाट निकल जातीहै (२०) विना अग्निसे निकाले हुए इसके तेल और इसके पीले अर्कका गुन खजलीमें एकसा होताहै (२१) इसका अर्क लगानेसे विगड़े हुए पुराने फोड़े साफ हो जातेहैं (२२) इसके अर्कको आंखमें लगाने में बड़ी सावधानी रखनी चाहिये (२३) इसका तेल लगानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२४) जिस चर्म रोगमें फुन्सियां होके फैलती जातीहैं उनके भी इस तेलको लगानेसे लाभ होताहै (२५) सांभरे नोंनमें इस तेलकी बूंदें डालकर जलंधरके रोगीको फकी देतेहैं (२६) गिलोय के रसमें इसके तेलकी बूंदें डालके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै ।

संख्या (५८५).

(सं०) स्वर्णपत्री, कल्याणी, स्वर्णमुखी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सनाय सोनामुखी	सनाय	–	सोनामुखी	सोनामुखी	सनामक्की सरना.	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		सना	सना	Cassia angustifolia C lanceolata	Senna, Country senna Indian or Tinnovelly senna

स्थान—सनायके वृक्ष सिन्ध, गुजरात, पंजाब, दक्षिण हिन्दुस्थान, संयुक्त प्रदेश और बंबई आदि हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं।

पहिचान—इसकी एक सींकके ५ से ८ तक जोड़े पत्तोंके लगतेहैं। इसके पत्तोंका आकार इम्लीके पत्तों जैसा होताहै परंतु लम्बाई और चौड़ाई में ये उनसे कुछ बड़े होतेहैं। इसकी फलियां लम्बी, थोड़ी चौड़ी और कुछ मुड़ी हुई और दोनों ओर गोल किनारोंकी होतीहैं। इसके पत्ते साबित, साफ, कुछ चमकदार, पीलापन लिये हुए हरे या पीले और बहुत सुगंधवाले होतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी न्यूनाधिक मात्रा लेनेसे साधारण और तीक्ष्ण विरेचन होताहै। अलग्जेंड्रियन सोनामुखी टिन्नेवल्ली सोनामुखीसे अधिक गुणकारीहै और टिन्नावेली को अरब और मक्काकीसे अधिक गुणकारीहै (२) इसका क्वाथादिक लेनेसे जो पेटमें ऐंठन, मरोड़ी और दाह पैदा होतीहै उसको मिटानेके लिये उनमें बादामका तेल डाल देतेहैं। अथवा सनायके पत्तोंको पानीमें रख चाबके निगलजानेसे उक्त उपद्रव नहीं होतेहै (३) सनायके २॥ तोले पत्ते जौकूटकी हुई सोंठ और लोंग हरेक ३॥। मासेको औटते हुए २५ तोले पानी में एक घंटे भिगो मल छानकर ३॥। तोलेसे ५ तोले तक बद्धकोष्ठवालेको पिलानेसे निरुपद्रव और उत्तम रेच होताहै। बच्चेकी आयु और बल देखके इसकी आधी या कम मात्रा देनी चाहिये (४) ज्वरमें इसका क्वाथ पिलातेहैं (५) सनायका हिम, फांट या क्वाथ पीनेके पीछे २० या ३० मिनटमें मूत्र लाल या सुनहरी होजाताहै (६) नये बच्चेको रेच करानेके लिये उसको दूध पिलानेवाली धायको सोनामुखी किसी रीतिसे देनेसे उस के दूधपर असर होके बच्चेको जुल्लाब लग जाताहै (७) इसके हिम, फांट या क्वाथ को पिचकारी द्वारा रुधिरमें मिला देने विरेचन होताहै (८) इसका विरेचन लेनेसे शरीर सम्बन्धी उपद्रव मिटतेहैं (९) इसका हिम पीनेसे आम बहुत निकलतीहै और पेटमें ऐंठन बहुत होतीहै (१०) पेटकी आम

निकालनेके लिये सोनामुखीका हिम, फांट या क्वाथ पिलाना चाहिये (११) इसके हृल्लास पैदा करनेवाले स्वाद और गुनसे आंतोंमें मरोटी और कुछ दाह पैदा होनेके कारणसे बहुतसे मनुष्य इसको काममें कम लातेहैं । इसके साबित साफ चमकदार चन्दनियां हरे या पीले और भारी सुगंधवाले पत्ते काममें लाने चाहियें (१२) सोनामुखीको खांडके साथ लेनेसे पित्त मिटताहै (१३) गुड़के साथ देनेसे निर्बलता मिटतीहै (१४) शक्करके साथ देनेसे वीर्य वृद्धि होतीहै (१५) घृतके साथ देनेसे नीरोगता बढतीहै (१६) नोंनके साथ लेनेसे मस्तिष्क के रोग मिटतेहैं (१७) तक्रके साथ लेनेसे ज्वर मिटताहै (१८) बकरीके दूधके साथ लेनेसे शरीर पुष्ट होताहै (१९) लरड़ीके दूधके साथ देनेसे पुरुषार्थ बढताहै (२०) ऊंटनीके दूधके साथ लेनेसे मस्तककी वायु पीड़ा मिटतीहै (२१) आमलीके पत्तोंके रसके साथ लेनेसे शीतांग मिटताहै (२२) लवंगके साथ लेनेसे ऊर्द्ध्श्वास मिटताहै (२३) गायके घीके साथ लेनेसे पुरुषार्थ बढताहै (२४) जलभंगरेके रसके साथ लेनेसे केश काले होतेहैं (२५) छालीके मूत्रके साथ देनेसे पेटकी शोथ उतरतीहै (२६) ढाकके रसके साथ लेनेसे मुखकी दुर्गंध मिटतीहै (२७) काली बकरीके दहीके साथ लेनेसे विष उतरताहै (२८) अनारदानेके रसके साथ लेनेसे छातीकी रुकावट (हूजा) मिटताहै (२९) आंवलोंके रसके साथ लेनेसे कोढ और जलंधर मिटताहै (३०) अदरकके रसके साथ लेनेसे अजीर्ण मिटताहै (३१) पीपलकी छालके साथ खिलानेसे स्त्री की छोड़ गिरजातीहै (३२) दाखके रसके साथ लेनेसे नेत्रों की ज्योति बढतीहै (३३) जंगली आंवलोंके रसके साथ लेनेसे ऊर्द्ध्श्वास मिटताहै (३४) निर्गुंडीके रसके साथ देनेसे वाय और चित्तभ्रम मिटताहै (३५) नीमके पत्तोंके रसके साथ देनेसे श्वेत कोढ मिटताहै (३६) वचके साथ खानेसे वाय गोला मिटताहै (३७) पीपलके साथ लेनेसे शीतांग मिटताहै (३८) खांडके पानीसे या बिजौरेके रसके साथ लेनेसे क्षुधा बढतीहै (३९) अनारके रसके साथ लेनेसे दाह मिटतीहै (४०) खांड और सोंठके साथ देनेसे बादी मिटतीहै (४१) ताजी कच्ची आमलीके रसके साथ देनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै ।

संख्या (५८६)

हजारदाना ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	छोटीदूधी			दूदिया	हजारदाना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		फाशरा	हजारफिशां	Euphorbia thymifolia E foliata	

स्थान—हजारदाना हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होताहै ।

प्रयोग (१) इसके पंचांगका रस तीव्र, रेचकहै (२) इसके सूखे पत्ते और बीज सुगंधयुक्त चरपरे और ग्राहीहैं (३) बच्चोंके अतिसार और आमातिसारमें मट्ठेके साथ पत्तोंके चूर्णको देतेहैं (४) यह—उत्तेजक और सारकहै (५) इसके अर्कका लेप करनेसे दाह मिटताहै (६) इसकी डंडी और पुष्पोंका रस तीव्र विरेचकहै (७) इसके गीले पंचांगको पीसके घावपर लेप करतेहैं (८) बच्चोंके पेटके कीड़े मारनेके लिये और अतिसार मिटानेकेलिये इसके पत्ते और बीजोंकी फक्की देतेहैं (९) इसकी जड़को घोट छानकर पिलानेसे श्वेत और रक्तप्रदर मिटतेहैं ।

संख्या (५८७)

हरमल ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ईसबंद	हरमल	इसपन	हरमल	इसबंद	इसबंद लाहौरी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हुरमुल	इसबंद	PeganumHarmala	

स्थान—हरमलके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थानमें सिन्ध पंजाब और

कश्मीरसे दहली आगरा दक्षिण हिन्दुस्थानके पश्चिम भाग तक होतेहैं ।

पहिचान—यह गुल्म १ से ३ फुट ऊंचा होताहै इसके बीजोंमेंसे लाल रंग निकालाजाताहै । इसके बीजोंमेंसे तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) हरमल—रुधिर शुद्ध करनेवाला, पुरुषार्थ और दुग्ध-बढानेवालाहै (२) पित्तके रोगोंमें इसका प्रयोग बहुत लाभकारीहै (३) इसके बीजोंको पानीमें इतनी देर तक ओटावे कि उनका काथ गाढा होजावे तब उसको छान तिल्लीका तेल और मधु मिलाकर सर्दीसे पैदा हुए पक्षाघात और कमरकी स्नायुपीड़ा पर मर्दन करतेहैं (४) इसके बीज मादक और विषैलहैं (५) इनके प्रयोगसे ज्वर छूटताहै (६) इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे गठिया मिटतीहै (७) इसकी जड़को पीस सरसोंके तेलके साथ बालों पर लगानेसे जूऐं लीखें मरतीहैं (८) इसके पत्तोंके काथसे मासिकधर्म्म शुद्ध होने लगताहै (९) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं (१०) इसके पंचांगमें इसके बीज अधिक गुणकारीहैं । ये—बांइटे और बादीकी पीड़ा को मिटातेहैं इनसे हृल्लास और वमन होतीहै (११) श्वास हिचकी स्त्रियोंके आवेशका रोग, गठिया, मूत्राशय और पित्तकी पथरी, शूल, कामला, कष्टसे मासिकधर्म्मका होना और स्नायुपीड़ा इन सब रोगोंमे इसके बीजोंका यथोचित प्रयोग करनेसे मिटतेहैं और इनसे निद्रा आतीहै (१२) इसके बीजोंको कपड़ छानकर शीशीमें बन्ध करके धर रक्खें उसमें से २ मासेसे धीरे २ बढाते हुए ७॥ मासे तक आवश्यकतानुसार बढावे इतनी मात्रा बढानेसे हृल्लास और वमन होने लगजातीहैं (१३) रोगीके पास इसकी धूनी देनेसे दृष्टिदोष और भूतादिकके आवेशका भय नहीं रहता है (१४) इसका काथ पिलानेसे श्वास मिटताहै (१५) विषूचिकावालेके पास इसके पंचांगकी धूनी देतेहैं (१६) जिन व्रणोंमें पीड़ा हुआ करती हो उनके और उपदंशके व्रणोंके इसके बीजों की धूनी देनी चाहिये (१७) इसके बीजोंकी धूनीसे हवा शुद्ध होतीहै (१८) जिस मकानमे घाववाला रोगी सोता हो उसमें बहुधा इसके बीजोंको जलाना चाहिये (१९) इसके बीजोंको तेलमें जला उस तेलको छानकर घावपर लगातेहैं ॥

संख्या (५८८)

(सं०) हरितालं, आलं, नटमण्डनं, पीतकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हरताल	हरताल	हड़तल	हरताल(ळ)	हरिताल	हड़ताल	हरिदळमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
अरिदळं	हरिदाल	अरगीख		Yellow sulphidum arsenicum	Orpiment Yellow arsenic Yellow sulphide of arsenic

पहिचान—हरताल आठ प्रकारकी होतीहै, उनमें से तीन प्रकारकी हरताल यहां मिलतीहै (१) गोदंती (२) तबकिया और (३) मिटिया, इनमें से तबकिया और गोदंती औषधी के प्रयोगके काम में आती है, गोदंती हरताल कुछ गूगली सफेद रंगकी होतीहै और उसके अभ्रकके जैसे पत्र होतेहैं (२) तबकिया हरताल—चमकदार पीले रंगकी होतीहै, इसके भी पत्र होतेहैं परन्तु वैसे पीले नहीं होते जैसे कि अभ्रक और गोदंतीके होतेहैं।

हरताल को शुद्ध करने की रीति—हरतालके छोटे छोटे टुकड़े कर कपड़ेकी थैलीमें बन्धकर कांजीके बीचमें लटकाके एक पहर तक स्वेदन करना चाहिये, फिर इसी रीतिसे पेठेके रस अथवा इसके क्वाथ, तिलोंके तेल, और त्रिफलाके क्वाथमें क्रमसे हरेकमें एक एक पहर तक स्वेदन कर पीछे गायके दूधमें चार पहर तक स्वेदन करना चाहिये।

हरताल भस्म करने की रीति-(१) शुद्ध की हुई हरतालको साटे के रसमें एक दिन खरलकर टिकिया बनाके सुखा लेवें, फिर साटेकी राखसे एक हंडीको आधीभर उसमें हरतालकी टिकिया रखकर उसपर फिर साटेकी राख मुंहतक डाटके भर देवें। उसके ५ दिन तक लगातार आंच लगावें जब स्वांग शीतल हो जाय तब उस टिकियाको निकालके काममें लावें । (२) शुद्ध हरतालको पीपलकी जड़की अंतर छालके क्वाथमें खरलकर टिकिया बना सुखा पीपलकी राखके बीचमें हांडीमें रखके ५ दिन तक लगातार आंच देनेसे भस्म हो जातीहै।

मानक रस बनाने की रीति-(१) हरतालके टुकड़ोंको अभ्रकके पत्रपर बिछा ऊपर दूसरा पत्र देकर उसको कोयलोंकी अग्नि पर रख उसके ऊपरभी कोयलोंकी अग्नि रख देवे और थोड़ा दबा देवे, जब उसमेंसे पीला धुआं निकलने लगे और हरताल पिगलके सब ओरसे लाल रंगकी होजावे तब अग्निमेंसे भोडलके पत्रोंको निकाल उनपर जमी हुई हरताल खुरच लेवे। इसका रंग माणिक जैसा लाल हो जाताहै। (२) अथवा कपड़ मिट्टी की हुई कच्ची शीशी में हरतालके टुकड़े भर कर कोयलोंकी आंचके वीचमें रख देवे, जब उसमेंसे पीला धुआं निकलने लगे तो उसके रुई की डाट देदेवे और थोड़ी २ देर लोहेकी सलाईसे जांच लेवे कि जबतक सब हरताल पिघलकर लाल रंगकी न हो जावे तबतक उसको आंच में रहने देवे जब सब हरताल पिघल कर लाल रंगकीहो जावे तब उसशीशीको अग्निमेंसे निकाल फोड़के उसको निकाल कर काममें लावे। हरताल भस्मकी परीक्षा यहहै कि लोहेकी पत्तीको अग्निमें लाल कर उस पर हरताल भस्मको डालकर देखे जो उसमेंसे धूआं निकलें तो जानना कि हरताल भस्म कच्ची रह गई और जो धूआं न निकले तो जानना कि हरताल भस्म अच्छी होगई। निर्धूम हरताल भस्म काममें लाना चाहिये।

प्रयोग-- (१) अशुद्ध हरतालके दोष-अशुद्ध हरतालके सेवनसे आयुर्दा घटतीहै, कफ और वात सम्बन्धी रोग, प्रमेह, दाह, छाले, शरीरका संकोच आदि कई रोग पैदा होतेहैं (२) शुद्ध हरतालके सेवनसे कांति और वीर्य बढताहै, कुष्ठ आदि त्वचाके रोग, कफ, खांसी और श्वास आदि के रोग मिटतेहैं (३) यह कटु, स्निग्ध, उष्ण और कषेलीहै (४) आध चांवल से एक रत्ती तक हरताल भस्मको आंवा हल्दीके साथ देनेसे अपस्मार मिटता है (५) इसको समुद्रफलके साथ देनेसे जलंधर मिटताहै (६) चिंदाल रसके साथ देने से भगंदर मिटताहै (७) मधुके साथ चटानेसे उपदंश मिटताहै (८) चोबचीनीके चूर्ण और मधुके साथ चटाने से गठिया मिटती (९) गिलोयके क्काथके साथ देने से वातरक्त मिटताहै (१०) गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै (११) आधी रत्तीसे एक रत्ती या डेढ रत्ती तक माणक रस पानमें रखकर खिलानेसे शीत ज्वर का आना बन्ध हो जाताहै (१२) इलायची, वशलोचन और माणक रसको मधुके साथ

चटाने से कफ और कास मिटताहै (१३) कूठ और मधुके साथ माणकरस चटानेसे श्वास मिटताहै (१४) पीपल और मधुके साथ माणक-रस-चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१५) सोंठ और जायफलके घासेके साथ देनेसे अतिसार मिटताहै (१६) हरतालको गोमूत्रमें पीसकर कानमें डालनेसे कानकी दुर्गन्ध मिटतीहै और कीड़े मरतेहैं (१७) हरताल और हींगको साठी चावलोंके पानीमें पीसकर लेप करनेसे बिच्छूका विप उतरताहै (१८) आठ मासे हल्दी के साथ एक रती हरताल भस्म लेनेसे उभरा हुआ कोढ मिटताहै (१९) ८ मासे हरड़ और ८ मासे वायविडंगके साथ हरताल भस्म देनेसे सफेद कुष्ठ मिटताहै (२०) ८ आठ मासे बापची और ८ मासे सोहागेके साथ इसकी एक रती मात्रा लेनेसे कोढ मिटताहै (२१) आठ मासे अडूसा और ४ मासे वचके साथ इसको लेनेसे पांडुरोग मिटताहै (२२) पोइके रसके साथ इसको लेनेसे भगंदर मिटताहै (२३) ४ मासे शंखाहोलीके साथ इसकी भस्म लेनेसे अपस्मार मिटताहै (२४) हरतालका तेल बनानेकी रीति—एक सेर हरताल के टुकड़ोंको कपड़ेकी थैलीमें बांधकर ५ सेर तेलमें चारपहर तक मंदाग्निसे औटावे पीछे उस थैलीमेंसे पाव भर हरताल निकाल महीन पीसकर या उसी तेलके साथ खरल करके उस तेलमें डालकर उसको काचकी शीशीमें भरकर खाम लगाके धूपमें २१ दिन तक रख छोड़े इस तेलके लगानेसे खुजली, पांव, फोड़े, फुन्सी और दाद आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (२५) पाव भर तेलको अग्नि पर चढा जब वह लाल होजाय तब उसमें आधपाव दरगची हुई हरताल थोड़ी २ डालके लकड़ी से हिलावे जब तेल हरा होकर जलने लगे तब ढक देनेसे उसकी ज्वाला बुझ जातीहै फिर इसी भांति ५ वेर उसको उघाड़ें और जल उठे तब ढक देवे फिर उसको ठंढा होनेपर शीशीमें भरके रख छोड़े इस तेलको खुजली आदि त्वचाके रोगों पर मलकर थोड़ी देरतक धूपमें बैठ जाय और गर्म पानीसे स्नान करले ।

संख्या (५८९)

(सं०) हरिद्रा, पीतिका, गौरी, दीर्घरागा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलगी
हलदी	हलदी	हलदर	हळद	हरिद्रा	हलदी	पसुपु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मंजल	अरिसिन	उरूकुस्सुफ	जर्दचोबाह	Curcuma longa	Turmeric

स्थान—इसके पौधे हिन्दुस्थानमें बहुतसे पहाड, जंगल और खेतों बोये जातेहैं।

इसमेंसे पीला रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग-(१) हलदी-कपेली, कडवी, रूखी, उष्ण, उत्तेजक और शोधनी होतीहै पांडु, पीनस, प्रमेह, अपची, पित्त, त्वग्दोष कंडु, कुष्ठ और कृमिरोगको मिटातीहै (२) सूजन और रगडपर इसका लेप किया जाताहै (३) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका खाने पीनेका प्रयोग किया जाताहै (४) जोंकके डंकका रुधिर बंध करनेके लिये उस पर हलदीका चूर्ण बुरकातेहैं (५) हल्दीकी ताजी गांठमेंसे रस निकालकर पिलानेसे आंतोंके कीडे मरतेहैं (६) हल्दीके क्काथको गाढा करके शिरपर लेप करनेसे जुकाम मिटताहै (७) आंखों पर लेप करनेसे ललाई फट जातीहै और पीप बन्ध होजाताहै (८) इसके पुष्पोंको पीसकर लेप करनेसे दाद और त्वचाके कृमिसंबन्धी रोग मिट जातेहैं (९) हल्दीका धूआं नाकमें चढानेसे जमा हुआ पानी आदि दुष्ट पदार्थ बहके प्रतिश्याय मिटजाताहै (१०) इसमेंसे बहुत सुगंधयुक्त तेल निकलताहै वह उत्तेजक होताहै (११) हलदीके २ मासे चूर्णकी फक्की देनेसे खांसी मिटतीहै (१२) बिच्छुके दंशपर हलदीकी धूनी देने और तपानेसे विष उतरताहै (१३) भंवल, चक्कर और मस्तकपीडा मिटानेकेलिये ताजी हलदीको पीस मस्तक और ललाटपर लेप करतेहैं (१४) इसका ताजा रस ठंढाहै (१५) नाकमें हलदीकी भोंगली देनेसे स्त्रियोंके आवेशका वेग मिटताहै (१६) फिटकडीका बीसवां भाग हलदी ले दोनोंको पीसके बुरकानेसे कानका बहना बन्ध होजाताहै (१७) हलदी और चूनेको रगडके घावपर लेप करतेहैं, इससे दाहसहित शोथ बिखर जातीहै

और पीड़ा मिटजातीहै (१८) इसका लेप करनेसे या इसके काथादिकसे धोनेसे घावके कीड़े मरजातेहैं (१९) प्रतिश्यायके प्रारम्भमें भोंगलीद्वारा हलदीका धूआं रातको नाकसे पीकर कुछ घंटोंतक उसके ऊपर जलआदि कोई पदार्थ नहीं पीनाचाहिये. इससे प्रतिश्याय तुरंत मिटजाताहै (१०) निवाये दूधपर हलदी और कालीमिरचका चूर्ण बुरकाके पीनेसे ज्वरसहित प्रतिश्याय मिटताहै (२१) खुजलीआदि त्वचाके दूसरे रोगोंमें हलदीका लेप करना चाहिये (२२) कपड़ेको हलदीके पानीमें रंगकर दूखतीहुई आंखके सामने लटकताहुआ बांधतेहैं (२३) यकृत्के रोगोंमें हलदीका प्रयोग किया जाताहै (२४) एक तोले हलदीके चूर्णको चार तोले दहीके साथ चटानेसे कामला रोग मिटताहै (२५) हलदी और ऊंटके मेंगनोंको ओटाकर उस काथको गाढा करके लेप करनेसे अंडकोषकी सूजन उतरतीहै (२६) घावपर हलदी बुरकानेसे वह जल्दी भरताहै (२७) हलदीको पानीके साथ पीसकर जो पीड़ा दहनी ओर हो तो बांईओर और बांई ओर हो तो दहनीओरके कानमें टप-कानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२८) हलदीको महीन पीस कपड़ेमें धरकर जिस दांतमें पीड़ा होती हो उस दांतके नीचे रखनेसे दंतपीड़ा मिटती है (२९) बत्तीपर हलदी और घीका लेपकर उसको गर्भाशयके मुंहतक पहुंचानेसे गर्भाश-यकी सूजन उतरतीहै (३०) हलदी और तिलोंकी खलको पीसकर लगानेसे मकड़ी का विष उतरताहै (३१) गुड़ डालेहुए सोंठके काथ पर हलदीका चूरण बुरकाके पीनेसे मेद्र शर्करा मिटतीहै (३२) हल्दी और दारुहलदीका काथ पीनेसे पिष्ट प्रमेह मिटताहै (३३) इसके काथ या कल्कमें ८ तोला गोमूत्र मिलाकर पिलानेसे पामा मिटतीहै (३४) हलदीकी गुडमें गोली बनाकर गोमूत्रके साथ लेनेसे श्लीपद, कुष्ठ और दाद मिटतेहैं (३५) सूतके डोरेके हलदीके रस और थूहरके दूध [illegible] सात २ भावना देकर उससे अर्शको गाढा बांधनेसे खिर जाताहै (३६) साढे तीन मासे हलदी और एक मासे सज्जीको पीसकर छोटे बेरकी बराबर गोलियां बना दोनों समय एक २ गोली खानेसे खांसी मिटतीहै (३७) हलदी और आंवले दोनों समान भाग ले पीस छान उसमें बराबर बूरा मिला कर एक तोले फकी नित्य पानीके साथ ७ दिन तक देनेसे नया मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३८) हल्दी और तिलोंको पीस मुखपर मलने से मुखकी झांई दूर होतीहै ।

संख्या (५६०)

(सं०) कर्पूरहरिद्रा, सुरभिदारुः, आम्रगन्धा, पद्मपत्रा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आम्बाहलदी	आंबाहलदी	आंबाहळदर	आंबेहळद	आमआदा	+	कस्तूरिपसुपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कस्तूरिमंजल	*			Curcuma Amada	Mango ginger.

स्थान—आम्बाहलदी बङ्गालमें बहुत होतीहै ।

पहिचान—जब इसकी गांठ ताजी होतीहै तो उसमें कैरी जैसी गंध आतीहै ।

फूलने फलने का समय—वर्षाऋतुके पिछले आधे भागमें इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) आम्बा हल्दी–शीतल, वृष्य, बातल, मीठी, कड़वी, रोचक, लघु दीपन और सारकहै (२) इसका लेप उस रोगमें किया जाताहै कि जिसमें चमड़ी मोटी पड़ जातीहै उसका रंग पलट जाताहै और खुजली बहुत चलतीहै (३) इसकी ३॥ मासेसे ७॥ मासे तक फकी देनेसे पेटका अफारा मिटताहै (४) काले नमकके साथ इसकी फकी देनेसे पेटका दर्द मिटताहै (५) इसकी सोंठके साथ फकी देनेसे पाचनशक्ति बढतीहै (६) रगड़ और मोचपर इस का लेप करतेहैं (७) नमकके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (८) इसको तेलमें ओटाकर गठियापर लेप करतेहैं (९) इसके चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (१०) सोंठ और जायफलके साथ इसको घिसकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (११) भिलावेके धूंएसे पैदा हुई सूजनको मिटानेकेलिये आंबाहलदी साठीचांवल और दूबको बासी पानीके साथ पीसकर मलना चाहिये ।

संख्या (५६१)

(सं०) दारुहरिद्रा, कटंकटेरी, पर्जन्या, पचंपचा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दारुहलदी	दारूहलदी	दारुहळदर	दारुहळद	दारुहरिद्रा	दारुहलदी	मानुपमुपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रज़ी
गरमंजल (ळ	मरदआर्नि.सिन			Berberis aristata	Barberry

स्थान—दारुहल्दीके वृक्ष हिमालयमें भूटानसे कनावार तक और नीलगिरी और सीलोन आदि देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका झाड़ सीधा कांटेदार होताहै । इसकी जड़ और शाखाओंमेंसे पीला रंग निकाला जाताहै। इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै ।

फूलने फलने का समय-चैत वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) दारुहळदी-कड़वी, चरपरी, सूखी, उष्ण और व्रणनाशकहै (२) बच्चोंको इसके फलका ठंढा विरेचन दियाजाताहै (३) इसकी टहनियोंको ओटाके पिलानेसे पसीना और विरेचन होके गठियाकी पीड़ा मिटजातीहै (४) इसकी जड़का सूखा सत्व बच्चोंको विरेचनके लिये बहुत दिया करतेहैं (५) दूखती हुई आंख पर इसके सत्व का लेप करतेहैं (६) सूर्यके देखनेसे जो आंखकी ज्योति घटजाया करतीहै वह इसके लेपसे ठीक हो जातीहै (७) इसकी जड़की छालमें बहुतसा कड़वा सत्व होताहै इसलिये वारीसे आनेवाले ज्वरको छुड़ानेके लिये काममें आतीहै (८) यह विसर्गी और अविसर्गी ज्वरकी बहुत उत्तम औषधिहै (९) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये इसकी जड़के छालके चूर्णको मधुके साथ चटाना चाहिये (१०) इसकी जड़की छालको गुड़के साथ ओटाके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (११)इसकी जड़की छाल और सोंठ बराबर ले चूर्ण बनाके दिनमें दो तीन वेर फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (१२) इसके फलके क्वाथके गंडूप करानेसे शीताद रोग मिटताहै (१३) इसकी जड़में भी इसकी

जड़की छालके समान गुणहैं। ज्वरको रोकने और उतारनेमें यह कुनैनकी बरा बरहैं (१४) इसके प्रयोग से शोथयुक्त ज्वर छूटताहै (१५) निरंतर रहने वाले ज्वरमें इसका काथ पिलानेसे। वह ज्वर उतर २ के आने लगताहै और अन्तमें उसका आना बन्ध होजाताहै इसको लगातार देनेसे न तो स्नायुकी जड़में किसी प्रकारका दबाव पहुंचताहै और न आमाशय, आंतें, मस्तिष्क और सुननेकी इंन्द्रियोंमें कोई प्रकारका विकार होताहै जैसे कि कुनैनके लगातार देनेसे होजाया करताहै (१६) इसका २-२ तोला काथ, ज्वरकी बारीके दिन २,३ घंटेके अंतरसे दिनमें दो तीन वेर देनेसे बहुत पसीना आके ज्वर छूटजाताहै। अथवा जलके साथ इसकी जड़के चूर्णकी दो वेर फकी लेनेसे भी ऐसाही गुण होताहै। ज्वरकी बारीके बीचके दिनोंमें और ज्वर छूटनेके पीछे ४-५ दिन तक इसका चूर्ण या काथ थोड़ा २ लेते रहना चाहिये (१७) दूषित वायु आदिसे जो ज्वर हुआ हो, अथवा जंगलका ज्वर हो और जो कुनैन संखिये आदिके प्रयोगसे न छूटताहो वह इसका चूर्ण या काथ देनेसे छूटजाताहै। इसकी टहनियों में ज्वर छुड़ानेकी वैसीही शक्तिहै कि जैसी इसकी जड़मेंहै। इसका काथ बनाने की यह रीतिहै, कि इसकी १५ तोले जड़को दरगच करएकसेर ६ छटांकजलमें मंद आंचसे ओटावे, जब १० छटांक रहजावे, तब उसमेंसे ५ तोले से १५ तोले तक पिलाना चाहिये (१८) इसका सत (रसोत) बनानेकी यह रीतिहै कि इसकी जड़को कूट पानीमें आठपहर तक भिगोकर मुंह बन्ध किये हुए बरतनमें मंद आंचसे ओटावे, जब उसका काथ गाढा होजाय तब उसको मलकर छानलेवे, फिर उस छने हुए काथको बालूके यंत्रपर चढ़ाके, मंद आंचसे उसको बहुत गाढ़ा करके उतारलेवे। इसको रसोत कहतेहैं। रसोत और अफीमको नीबूके रसमें घिसकर लेप करनेसे आंखकीपीड़ा मिटतीहै (१९) भरे नीगले फोड़ेपर रसोतका लेप करतेहैं (२०) जिसकी तिल्ली या यकृत् बढगया हो उसको इसकी जड़की छालका काथ पिलाना चाहिये (२१) इसके फांटमें मधु मिलाकर प्रातःकाल पिलानेसे कामला रोग मिटताहै (२२) इसके काथमें गोमूत्र मिलाकर पीनेसे अंडवृद्धि मिटतीहै (२३) कपीले और इससे सिद्ध कियेहुए तेलके लगानेसे व्रण जल्दी भरतेहैं (२४) आंवलोंके रसमें इसका चूर्ण डालकर पीनेसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र मिटताहै।

———.०.———

संख्या (५६२)

(सं०) वनहरिद्रा, शोली, वनारिष्टा, शोखिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जंगलीहलदी	वनहलदी	वनहळदर	रानहळद	वनहरिद्रा	जंगलीहलदी	अडाविपसुपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		जदवार		Curacuma aromatica, C Zedoaria	Wild turmeric, Cochin Turmeric Yellow Zedoary

स्थान—जंगली हल्दी बहुधा बंगालमें होतीहै ।

पहिचान—उष्णकालमें इसके नवीन पत्ते और पुष्प लगतेहैं। इसके पुष्पोंमें बड़ी सुगंध होतीहै । यह हलदी रंगतके काममें आतीहै । पहिले इसकी अबीर बनाई जातीथी ।

प्रयोग—(१) जंगली हल्दी–चरपरी, कड़वी, अग्निदीपन, और मीठीहै (२) मोच और रगड़पर दूसरी औषधियोंके साथ इसका लेप करतेहैं (३) तबकिया हरताल, कूठ और अजवानके साथ इसकी गोली बनाके देनेसे सर्पका विष उतरताहै (४) खुजली और माताकी फुन्सियों पर इसका लेप करतेहैं (५) लोहबानके साथ इसको पीस उष्णकर ललाटपर लेप करनेसे मस्तक-पीड़ा मिटतीहै (६) इसको पीस गर्मकर ललाटपर लेप करनेसे स्नायुसम्बन्धी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (७) इसका धूआं पीनेसे पेटकीपीड़ा मिटतीहै ।

संख्या (५६३)

(सं०) हरिद्रुः, कदम्बकः, पीतकाष्ठः, सुराह्व. ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	हलदिया	हळदरवो	हळदेवावृक्ष			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Adina cordifolia Nauclea c	

स्थान—हलदिवाके वृक्ष बहुत करके हिन्दुस्थानके तर देशोंमें होतेहैं। जैसेकि रतनागिरके जंगलोंमें, कोकनदेशके थाना ज़िलेमें, सूरत, बरोदा, मैसोर और मध्य हिन्दुस्थानके जंगलोंमें बहुत होतेहैं।

पहिचान—इस वृक्षकी उंचाई ८० फुटकी और कहीं२ इससे भी अधिक होतीहै। इसकी पेदड़ सीधी और लम्बी होतीहै। उसकी गुलाई १० से १८ फुटकी होतीहै। इसके पत्ते हल्के हरे रंगके होतेहैं। इसकी छाल १–२ इंच मोटी भूरे रंगकी और खरदरी होतीहै, इसमें खड़ी तेड़े (दरारें) चलतीहैं, आडी नहीं चलतीहैं। अन्तर छाल कुछ ललाई लिये हुए कुछ भूरे रंगकी धब्बे और चूंसेदार होतीहै। चैत वैशाख में इसके पुराने पत्ते गिर जातेहै और जेठ तक नये निकल आतेहैं। इसके कोमल पत्तोंको बहुधा कीड़े खा जाया करतेहैं जिससे यह नंगा हो जाताहै, बरसातमें फिर नये पत्ते आजातेहैं। इसके पत्ते ४ से ६ इंच लम्बे और प्रायः इतने ही चौड़े होतेहैं।

फूलने फलनेका समय—जेठ अषाढ में या कुछ और भी देरीसे इसके पुष्प लगतेहैं। मृगशिरसे फाल्गुन तक फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) हलदुवा रस और विपाक में कटु, उष्णवीर्य, कषेला लघु, शीतल, कड़वा, मङ्गलकारक और बलवर्द्धकहै। पित्त, कफ, त्वचाके रोग, वमन और व्रणको मिटाताहै और कान्तिको बढाताहै (२) इसकी छोटी कलियों को काली मिरचके साथ पीसके सूंघने से मस्तक की तीव्र पीड़ा मिटतीहै।

संख्या (५६४)

(सं०) हरीतकी, चेतकी, अमृता, विजया।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हरड़े	हरडा,हर्डे	हरडे	हिरड़ा	हरीतकी	हड़,हरड	करकाय्

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कडुक्काय्	अरळेकाय्	अहलीलज़	हलैलाह	Terminalia Chebula T reticulata.	The chebuelic or black myrobalan.

स्थान-हरड़के वृक्ष हिन्दुस्थानके उत्तरमें कमाऊंसे बंगाल तक दक्षिण में मद्रास विभाग, कोयंबटूर, कनारा, पूर्वी पश्चिमी घाट, गंजाम, गोदावरी की तलहटी, सतपुड़ा पहाड़ गुजरात और बम्बई विभागोंमें घाटोंके पास ऊंचे जङ्गलोंमें होतेहैं ।

पहिचान-इसके वृक्षकी ऊचाई ८० से १०० फुट तक होतीहै । इसकी पेदड़ लम्बी और सीधी होतीहै, इसकी गुलाई ८ से १२ फुट तक होतीहै । इसकी छोटी शाखें निकलते हुए पत्ते और छोटे कोमल पत्तों पर लम्बे कोमल चमकते हुए लोहेके जङ्कके या मोरचेके रङ्गके और कभी २ रूपहरी रङ्गके रूएं होतेहैं । इसके अलग थोड़ी २ दूर पर अडूसे के पत्ते जैसे तथा धावड़ेके पत्तों जैसे ३ से ८ इंच लम्बे पत्ते लगतेहैं, वे माघ फागुनमें गिर जातेहैं और चैतमें नये आ जातेहैं । इसके पुष्प थोड़े सफेद या पीले रङ्गके होतेहैं, उनमें बहुत दुर्गंध आतीहै । इसका फल १-१॥ इंच लम्बा, जिसके न्यूनाधिक स्पष्ट ५ रेखा होतीहैं और छोटा फल, जो जितना बड़ा होताहै । इसके पेड़ोंके बहुतसा गोंद लगताहै जो बराड़ के जिलेमें इकट्ठा किया जाताहै ।

फूलने फलनेका समय—पत्ते निकलने के थोड़े दिन पीछे पुष्प लगते हैं पौषसे फागुन तक इसके फल निकलतेहैं ।

हरड़ेकी मींगीमेंसे स्वच्छ पारदर्शक और प्रायः सफेद रंगका पतला तेल निकलताहै । आचार्योंने मत भेदसे हरड़ ५, ६ या ७ प्रकारकी लिखीहै ।

प्रयोग—(१) हरड़-कषेली, खट्टी, कड़वी, चरपरी, हृद्य, योगवाही, रसायनी, अग्निदीपन, सारक, लेखन, पचनेमें लघु, नेत्रोंको हितकारी, स्मृतिकारक, बल, बुद्धि और आयुर्वर्द्धकहै (२) बद्धकोष्ठ मिटानेके लिये सोते समयमें हरड़का मुरब्बा खिलाना चाहिये (३) इसकी मींगीको बिना सेकी हुई खातेहैं (४) मंदाग्नि और आमातिसार मिटानेके लिये हरड़का मुरब्बा बहुत उत्तम पदार्थहै (५) हरड़को जो कूट कर चिलम में भरके पिलानेसे श्वास के बेगकी शान्ति होतीहै (६) फैले हुए घावको इसके काथसे धोनेसे वह सिमिट जाताहै (७) इसको थोड़े पानीके साथ घिस उसमें क्षारोदक और अलसीका तेल बराबर मिलाकर अग्निसे जले हुए या उष्ण जलादि से जले

मलछान, उसमें फिर ११ नग वड़ी हरड़की छाल डालकर तीन दिन धूपमें रख छानकर उसमें आधसेर बूरा डाल शर्बत बनाके पीनेसे मस्तकपीड़ा और पित्तके विकार मिटतेहैं ।

—:*:—

संख्या (५६५)

(सं०) हबुषा, हपुषा, वपुषा, विस्रा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हाऊबोर	हाउबेर	होश	लघुया। थोरशेरणी	हवुषफल	हाऊबेर	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	हवुवेर	अरअर	ओरस	Juniperus communis J nana	The juniper.

स्थान—इसके वृक्ष हिमालय के पश्चिमोत्तर भागमें कम.ऊंसे पश्चिमकी ओर होतेहैं ।

पहिचान—यह ६-७ फुट ऊंचा वृक्ष होताहै, इसकी पेदड़की गुलाई डेढ दो फुटकी होतीहै, और यूरोपमें यह ३०-४० फुट ऊंचा होताहै उसके पेदड़की गुलाई४-५ फुटकी होतीहै। इसकी छाल कुछ सफेद भूरे रङ्गकी होतीहै इसकी छोटी शाखा सुगंधयुक्त होतीहै इसका फल मीठा और सुगंधयुक्त होताहै इसके पत्त कुछ भूरे हरे रंगके होतेहैं इसके छोटे २ फल लगतेहैं उनमें बहुधा तीन २ बीज निकलतेहैं जब इसके फल पूरे बड़े होजातेहैं और नहीं पकतेहैं तवतक उनमें बहुत तेल रहताहै जब वे पकजातेहैं तो उस तेलका राल जैसा पदार्थ बनजाताहै जो बहुत हल्के पीले रंगका होताहै और उसमें फल जैसी बहुत तीव्र गंध होतीहै ।

इसकी लकड़ी और पके फलोंमेंसे राल जैसा पदार्थ निकलताहै १०० तोले हाउबेरको पानीमें भिगो उनका अर्क खेंचनेसे ६ मासे से ।। तोले तक उड़नेवाला तेल निकलताहै इसकी लकड़ी और कोमल टहनियोंमेंसे भी उड़नेवाला तेल निकलताहै ।

इसके फल गोल, गहरे, कुछ बैंजनी काले रंगके और मटर जितने बडे होतेहैं। उनमें तेलके सिवाय एक औरभी पदार्थ होताहै उसको अंग्रेजीमें "ग्लूकोस" कहतेहैं। १०० तोले बीजोंमेंसे ३२ तोले नहीं उडनेवाला तेल निकलताहै। जब हाउबेरको तोडतेहैं तो उसमें से उत्तम और चरपरी सुगंध आतीहै। हाऊबेरका स्वाद कुछ उष्ण, कुछ गर्म मसाले जैसा, कुछ और मीठा कुछ ताडपीन जैसा होताहै। इसके फल और तेलके गुण ये हैं।

प्रयोग—(१) हाउबेर--चरपरा, कडुवा, उष्ण, भारी, अग्निदीपन और कपेलाहै। ये दोनों पेटकी बादीकी पीड़ा मिटानेवाले, उत्तेजक और मूत्रवर्द्धकहैं (२) इसका तेल वृक्कको बहुत उत्तेजित करताहै, इसलिये सावधानी के साथ इसका प्रयोग करना चाहिये क्योंकि इसकी अधिक मात्रा देनेसे वृक्कमें सोजिश और मूत्र करते समय पीड़ा हो जातीहै। (३) जो जलंधर वृक्कके रोगसे नहीं, अर्थात् यकृत् और हृदयके रोगसे हो उसको मिटाने के लिये मूत्रवृद्धि करने के लिये इसके तेलकी एक से चार बूंद तक देनी चाहिये (४) मूत्रकृच्छ्र, पुराना मूत्रकृच्छ्र, श्वेतप्रदर और कुछ त्वचा सम्बन्धी रोगोंके पीप .. रोकने के लिये इसके तेलका प्रयोग किया जाताहै (५) त्वचा के रोग मिटाने के लिये इसका साबुन बहुत अच्छाहै (६) इसके फल मूत्रवर्द्धक और उत्तेजक हैं (७) मूत्रकृच्छ्र मिटानेकोलिये इसके फलके चूर्णकी फकी देनी चाहिये।

संख्या (५६६)

(सं०) हंसपदी, रक्तपादी, त्रिपादिका, कीटमाता।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हंसराज	हसपदी	हसराज	लाललाजा लुभद	गोयालेलता	कीटमाश्का	हंसपादि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
	हंसपादी	बरस्यावशा	परस्यावशां	A venustum Adiantum lunalatum	Trailing colnenia

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पिरुगायं	हिङ्गु	हिलतीत	अगुज़ा	Ferula alliacea. F assafoetida	Assafoetida

स्थान—हींगके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं। हींग दो प्रकारकी होतीहै एक हींग दूसरा हींगड़ा।

पहिचान-इसका झाड़ २, ४ फुट ऊंचा होताहै। इसकी जड़के प्रारम्भके भागकी मध्य रेखा प्रायः दो इंचकी होतीहै, इसका गोंद वसंतमें इकट्ठा किया जाता है।

प्रयोग—(१) हींग-उष्ण, पाचक, रोचक, तीक्ष्ण, सारक, लघु, चरपरी हृद्य, स्निग्ध, रस और विपाकमें चरपरी, दीपन, कृमिनाशक और पित्तवर्द्धकहै। पेटकी पीड़ा, शूल, विसूचिका और वांइटोंको मिटातीहै हींगको सेककर काममें लाना चाहिये (२) इसका नित्य सेवन करनेसे दुष्ट वायु आदिसे पैदा हुआ ज्वर नहीं आताहै (३) हींग-पुरुपार्थ वढानेवाली और निद्रालानेवालीहै (४) इसके फल उत्तेजकहैं (५) बच्चोंकी खांसी और गुजराती रोगमें हींगसे बड़ा उपकार होताहै (६) हींग और गुड़की गोली बनाके देनेसे अफारा मिटताहै (७) मंदाग्नि मिटानवाली औषधियोंमें सेकीहुई हींग मिलाई जातीहै (८) वमन करानेके लिये हींगका प्रयोग किया जाताहै (९) एरण्डके रसमें हींग डालके पिलाने से पेटके कीड़े मरतेहैं (१०) ललाट पर इसका लेप करनेसे आधाशीशी मिटतीहै (११) इसका मंजन करनेसे दांतोंका बिगड़ना बन्ध होजाताहै (१२) जिसके नारू अधिक निकला करतेहैं उसको २॥ रत्तीसे साढे सात रत्तीतक हींगकी गोली बनाके खिलातेहैं, या जलके साथ पिलातेहैं (१३) सोंठ, हींग और सैंधनमककी फक्की गर्मजलके साथ देनेसे अजीर्ण मिटताहै (१४) अफीम और दूसरे पदार्थोंके विषको उतारनेकेलिये हींगसे वमन करातेहैं (१५) हींगका जल बनाके सुंघानेसे आधाशीशी मिटतीहै (१६) हींग और अफीमकी गोली बिगड़े हुए दांतकी खोखलमें धरतेहैं (१७) विसूचिकाके प्रारम्भमें हींग, कपूर, कालीमिरच और अफीमकी गोलियां बनाके देतेहैं। परन्तु जब विषूचिकाके लक्षण

बहुत बढजावे तब बिना अफीमकी गोली देना चाहिये (१८) बच्चा होनेके पीछे गर्भाशयमें जो दुष्ट मल रहजाताहै उसको निकालनेकेलिये सेकीहुइ हींग लहसन और ताड़का गुड़, इनकी गोली बनाके प्रातःकाल नित्य देना चाहिये (१९) तिल्लीके रोगमें बहुत दिनोंतक विरेचनकी जो औषधियां दीजातीहैं उनकी चरपराहट मिटानेकेलिये उनमे हींग मिलादेतेहैं (२०) इसका अंजन करनेसे धुंध मिटतीहै (२१) इसके खानेसे बादी मिटतीहै (२२) सोंफके अर्कमें थोड़ी हींग मिलाकर संन्यासरोगवालेके कंठोंमें डालनेसे लाभ होताहै (२३) हींग गलेमें लटकानेसे मिरगी नहीं आतीहै (२४) हींग को सिरकेमें पीस, गर्म करके लेप करनेसे "गुहांजनी" बाफनीमें जो फुन्सी होतीहै, मिटजातीहै (२५) बालक होने के समय थोड़ी २ हींग खिलाने से प्रसव सुख से होजाताहै (२६) २ मासे हींगको २—३ बेरमें खिलानेसे अफीमका विष उतरताहै (२७) इसका धूंआ पिलानेसे हिचकी बन्द होतीहै (२८) इसका अंजन करनेसे कामला रोग मिटताहै (२९) हींग और उड़द के चूर्णका धूंआ पिलानेसे ५ प्रकारकी हिचकी बन्द होतीहै (३०) हींग और सैंधेनमककी तेल और गोमूत्रमें ओटाकर नाभी पर लेप करनेसे पीड़ायुक्त शूल मिटताहै (३१) शुद्ध हींगका घृतके साथ सेवन करनेसे मल्लकशूल मिटतीहै (३२) हींग और हरतालको नींबूके रसके साथ पीसकर लगानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (३३) हींगको सिरकेमें घोट गुन गुना करके लेप करनेसे नासूर मिटताहै (३४) हींगको मधुमें मिला जीरेके समान गोली बनाकर इन्द्रीके छिद्रमें रखनेसे वीर्य स्तंभन होताहै और अपने आप वीर्यका गिरना बन्ध होजाताहै (३५) हींगको जलमें पीसकर अग्नि दग्ध पर लगाना चाहिये (३६) २ मासे हींग और ४ नग बिदामकी मींगीको पीसकर पिलानेसे हिचकी बन्ध होतीहै (३७) ६ तोले मोठके आटेमें थोड़ी हींग मिलाकर पुल्टिस बांधनेसे नारू निकल जाताहै (३८) दो मासे हींग और दो मासे नोंनको सेरभर पानीमें ओटा आध पाव रखके पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै।

संख्या (५९९)

(मारवाड़ी) हींगड़ा-

Latin Ferula foetida F' Scorodosma.

स्थान—हींगड़ेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं।

इसका पोधा ४—५ फुट ऊंचा होताहै।

प्रयोग—(१) बांइटे मिटानेकेलिये हींगड़ेका तेल मनाके मर्दन करना चाहिये (२) हींगड़ा उत्तेजकहै और हींगकी ठौर काममें आताहै।

इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै। इसकी टहनीके भीतरका सफेद भाग शाकके काममें आताहै॥

संख्या (६००)

(सं०) नाड़ीहिंगु, हिंगुनाड़िका, जन्तुका, रामठी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
डीकामाली	डीकागाली	डीकागारी	डिकेमाली			चिनकारिंगुवे

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
डिक्कामल्लि	डिक्कामल्लि			Gardenia arborea gummifera	Dekamalli gum Gummy gardinia

स्थान—डीकामालीके वृक्ष मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें और सतपुड़ा पहाड़से दक्षिणकी ओरके देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसका वड़ा झाड़ होताहै उसके कांटे नहीं होतेहैं। इसके पुराने पत्ते खरदरे होजातेहैं इसकी कलियोंके राल जैसा पदार्थ लगताहै, वर्षाऋतुमें इसके नवीन पत्ते आने लगतेहैं इसकी छोटी डालियें खरदरी और कुछ लाल होतीहैं इसकी लकड़ी सफेद और कठोर होतीहै। इसका फल एक या डेढ इंच लम्बा होताहै, उसके ऊपर उठी हुई वहुतसी धारियां होतीहैं, इसकी गुलीमें ४—५ खाने होतेहैं।

फूलने फलनेका समय--फाल्गुन चैतमें इसके पुष्प लगतेहैं । डीकामाली एक वृक्षका गोंदहै ।

प्रयोग—(१) डीकामाली–चरपरी, उष्ण, तीक्ष्ण और दीपनहै कफ, वात, आनाह, मलस्तंभको मिटातीहै (२) डीकामालीको तेलमें पिघलाके ललाटपर लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (३) स्नायुक (नहरुवे) की पीड़ामें एक रतीसे एक मासे तक डीकामालीकी फकी देनी चाहिये (४) ३ मासे डीकामालीको ओटाके पिलानेसे पसीना आताहै (५) २ मासे डीकामाली और ३ मासे अरडूसेका क्वाथ करके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (६) बच्चोंके दांत आनेके समयमें उनके मसूड़ोंपर डीकामाली मलनेसे दांत जल्दी निकल जातेहैं (७) इसका काथ बनाके पिलानेसे बच्चोंकी आंतोंके कीड़े मर जातेहैं या निकल जातेहैं (८) इसके चूर्णको बच्चेकी गुदामें रखनेसे वहांके कीड़े मर जातेहैं (९) इसके क्वाथसे पुराने घावको धोनेसे उसके कीड़े मर जातेहैं (१०) मंदाग्निमें इसके चूर्णकी ४ मासेकी मात्रा देनी चाहिये (११) इसके चूर्णको काले नमकके साथ देनेसे अफारा उतरताहै (१२) इसको एरंडके तेलमें पिघलाके मर्दन करनेसे बांइटे और रगोंकी खिचावट मिटतीहै (१३) डीकामाली बहुत तेज होतीहै इसवास्ते इसकी मात्रा बहुत कम देना चाहिये। इसका क्वाथ पीनेसे बांइटे और पेटकी, बादीकी पीड़ा मिटतीहै (१४) इसका लेप करनेसे दुर्गंध युक्त हवाका असर नहीं होताहै (१५) स्त्रियोंके आवेशका रोग और बादीकी मंदाग्निके रोगोंमें इसका प्रयोग किया जाताहै (१६) बिगड़े हुए और जिनका चमड़ा शख्त होगया हो ऐसे घावों पर इसका लेप करतेहैं (१७) घाव पर मक्खी नहीं बैठतीहै । इसके लिये एक तोले डीकामालीको ३ तोले कड़वे तेलमें जला, छान उसकी पिचकारी देनेसे मूत्रकी जलन मिटतीहै (१८) इसका फल खानेके काममें आताहै ।

संख्या (६०१)

(सं०) हिंगुलम, दरदम, म्लेच्छम, रसोद्भवम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हींगलू	हिंगलू	हिंगलो	हिंगूल	हिंगुल	शिंगरफ	इंगलीकमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
जातिलिंग	हिंगुल्ल	जंजफर शंजरफ	शंगरफ़	Hydrargyri sulphuretum.	Cinnabar Redsulphuret of mercury Vermillion.

स्थान—पारे और गंधकके योगसे हींगलू बनताहै, यह तीन प्रकारका होताहै (१) चर्मार (२) शुकतुण्डक और हंसपाद, इनमें हंसपाद सबसे उत्तमहै और इसकी परीक्षा यह है कि यह बहुत कठोर नहीं होता, इसकी सींकें चुकटी से टूट जातीहैं, और तोलमें दूसरे हींगलूसे भारी होताहै ।

हिंगलू शोधनकी रीति–(१) इसके छोटे २ टुकड़े कर नींबूके रसमें भिगोके सुखा लेना चाहिये, ऐसे सात बेर करने से हींगलू शुद्ध हो जाताहै (२) इसी रीति से अद्रक के रसकी सात बेर भावना देनेसे शुद्ध हो जाता (३) सेर भर हिंगलू के छोटे २ टुकड़ोंको कपड़ेकी थैलीमें बन्धकर भेड़ आठ सेर दूधमें अधर लटकाके धीमी आंच देवे जब वह दूध छीज आधा रहजाय तब उस थैलीमेंसे निकाल उसे उष्ण जलसे धोडाले, फिर इसी रीतिसे आठ २ सेर दूधमें सातबेर पकानेसे हिंगलू शुद्ध होजाताहै, पीछे उस थैलीमेंसे हिंगलूके टुकड़ोंको निकाल केवल जलमें ओटाके साफ़ करलेवे इसलियेकि उनमेंसे दूधका भाग निकलजावे, नहीं तो कुछ दिनों पीछे उनमेंसे दूध और घीकी गंध आने लग जातीहै । ऐसे शुद्ध किया हुआ हिंगलू औषधिके काममें लानेसे कोई प्रकारका विकार नहीं करताहै (४) इसकी शक्ति बढानेकी यह रीतिहै कि हिङ्गलूके २ तोले भरके ५ टुकड़ोंको एक गाढे साफ़ कपड़ेमें सींकर बड़े बैंगनके बीचमें रखकर उस बैंगनपर कपड़ मिट्टी देके जंगली कंडोंकी इतनी आग देवे कि वह बैंगन अच्छी तरहसे पक जावे और ऊपरसे कुछ जलभी जावे, जब वह स्वांग शीतल हो जाय तब उस बैंगनमेंसे उस पोटलीको निकाल फिर दूसरे बैंगनमें धरकर उक्त रीतिसे आंच देवे ऐसे १०० बेर आंच देकर तैयार करलेवे जो इसकी शक्ति और भी अधिक बढानी

होवेतो उक्तरीतिसे उस पोटलीको एक २ तसतूंवेमें रख २ के १०० आंच दे-देवे। फिर उक्त रीतिसे कांदेमें रख २ के या जो एक कांदेमें नहीं मावेतो तीन चार कांदा की लुगदीमें रख २ के १०० आंच देदेवे। ऐसे सिद्ध किये हुए हिंगलूकी आधसे एक चांवल तक की मात्रा बहुत सावधानी और विचारके साथ देना चाहिये, यह अलग २ अनुपान से हरेक रोगको मिटाताहै ।

शुद्ध हिंगलूके गुण—यह कड़वा, कषेला और चरपरा होता है। नेत्र-रोग, हल्लास, कुष्ठ ज्वर, कामला, प्लीह, आमवात आदि बहुतसे रोग और वात, पित्त, कफको मिटाताहै। पुरुषार्थ और पाचनशक्ति बढाताहै (२) अशुद्ध हींगलूके दोष—विना शोधे हुए हिंगलू को खानेके काम में लाने से कुष्ठ, नपुंसकता, क्लम, भ्रम, मोह आदि कई रोग पैदा हो जातेहैं, इसलिये इसको बहुत अच्छी तरह शोधना चाहिये (३) शुद्ध किये हुए हंसराज हींगलुके १॥ मासे टुकड़ोंको चोतह कपड़ेमें सींकर उस पोटली को अलूणे आदपा व आटे की बाटी के बीच में रखकर, उसको मंद २ आंच पर सेक, उसमेंसे पोटलीको निकाल उस बाटीको खिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै और जैसे २ भूख बढतीजाय वैसही कुछ घृतकी मात्रा बढानी चाहिये (४) इस पोटलीको दूधके बीचमें लटका, उसके नीचे एक पहर तक बहुत मंद आंच दे, बस पोटलीको निकाल उस दूधको रोगीकी शक्तिके अनुसार १ से ४ सेरमें पिलानेसे मंदाग्नि और अतिसार मिटताहै। इस दूधमें हलदी बुरकाके पिला-नेसें श्वासरोग मिटताहै (६) चोपचीनीकी फकी देकर ऊपर यह दूध पिला-नेसे गठिया मिटतीहै (७) बादी मिटानेवाली औषधियोंमें इसको मिला अदरकके रसमें खरलकर मिरचके बराबर गोलियां बना रक्खें, रोगीकी शक्ति के अनुसार १ से ४ तक गोली देनेसे बादीके कई प्रकारके रोग मिटतेहैं (८) शुद्ध हिंगलू और शुद्ध बच्छनागको बराबरले धतूरेके रसमें पीस छोटी २ गो-लियां बनाके आधरतीसे १ रती तक देनेसे वात और कफ सम्बन्धी ज्वर छूटता है जो इससे तृषा और ऊष्मा अधिक बढजावे तो दूध पिलाना चाहिये (९) अलग २ अनुपानके साथ देनेसे इससे कई रोग मिटतेहैं शुद्ध हिंगलू और शुद्ध सोमल बराबर ले बांझ करलेकी गेलके रसमें खरलकर सुखा लेवे, ऐसे

तीन बेर खरलकर सुखाके बाजरेके समान गोलियां बनाकर ज्वरवालेको ज्वर आनेके एक घंटे पहिले रोगीके बलके अनुसार एक से चार गोली तक की मात्रा बूरेके साथमें देकर ऊपर कुछ स्निग्ध पदार्थ भोजन करादेवे यदि इससे ज्वर चढनेके पीछे या ज्वर चढे विनाही वमन होने लगजाय तो ४–५ वमन होनेके पीछे थोड़ा २ दूध पिलाना चाहिये।

संख्या (६०२)

(सं०) हिज्जलः, इज्जलः, निचुलः, अम्बुजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
परेल	इजल,हिजल	जलजांबवो	परल, परेल	हिजलगाछ		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Elatine verticellata.	

स्थान—इसके गुल्म नदी या तालाबके पास या भीतर होतेहैं इसकी डंडी लाल और पत्ते कनेरके पत्तों जैसे होतेहैं परन्तु वे लम्बाईमें उनसे कम होतेहैं। ये ऊपरसे साफ चिकने और नीचेसे खरदरे होतेहैं । इसके लाल पुष्पोंकी मंजिरी लगतीहै ।

गुण—(१) जलकनेर–चरपरा, उष्ण, कषेला और कड़वाहै। शोथ, मेद, प्रमेह, कफ, वायु, उदररोग, विष, भूत और ग्रहबाधाको मिटाताहै ।

संख्या (६०३)

(सं०) हिलमोचिका, विषघ्नी, शंखधरा, ब्राह्मी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
		बांब	बांब	हिंचेशाक		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Enhydra fluctuans E Heloncha.	

स्थान—यह आसाम. सिलहट और बंगालके पूर्वके भागकी (निपजाव) तर ज़मीनमें पैदा होतीहै।

प्रयोग—(१) हिलमोचिका-कड़वी, शीतल और सारकहै पित्तके और त्वचाके रोगोंको मिटातीहै (२) स्नायु पीड़ाको मिटानेवाले धातुओंके प्रयोगों में यह मिलाई जातीहै (३) इसके पत्तोंके स्वरसको गाय या बकरीके दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४) मस्तककी ऊष्मा कम करनेके लिये इसके पत्तोंको पीसकर लेप करतेहैं (५) इसके ताजे पत्तोंका रस कड़वा होताहै (६) मंदाग्नि और पित्तके विकारोंमें काम आताहै (७) इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै ये कुछ कड़वे होनेके कारणसे नीरोगता और बल बढ़ातेहैं (८) इसके रसमें मधु मिलाकर पीनेसे मसूरिका मिटतीहै।

(६०४)

...अः, चन्द्रः, मणिवरः।

मार...	...हटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
...	...रा	हीरक,हिरे	हीरा	

द्रावि...	...रसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	...मास		Diamond

स्थान—हिन्दुस्थानके तीनें भागमें हीरेकी खानहै दक्षिणके पूर्वके भागमें पिन्नेरसे सोन तक (२) मद्रास विभागमें कुछ डापा, करनूल और इल्लोरके पास परन्तु बहुत करके कृष्णा और गोदावरीकी तलहटीमें (३) छुटिया नागपुर और मध्य हिन्दुस्थानसे बुन्देलखण्ड तक।

हीरेको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि हीरेको कुलथ और कोदोंके क्काथमें दालायंत्रमें सात दिनतक स्वेदन करना चाहिये, अथवा हीरेको तपा २ के गधेके मूत्रमें २१ वेर बुझाना चाहिये ।

हीरेकी भस्म बनानेकी रीति-(१) हींग और सेंधे नमकको कुलथीके क्काथमें मिला, हीरेको २१ वेर गर्म कर २ के, उसमें बुझानेसे भस्म होजातीहै (२) मेंढेका सींग, सर्पकी हड्डी, कछुवेकी खोपड़ी, खरगोशके दांत और अ-मल वेत, इन सबको थूहरके दूधमें पीस, लुगदी बना, उसमें हीरेको रखकर, उसके धोकनीकी आंच देनेसे हीरेकी भस्म हो जातीहै ।

प्रयोग—(१) हीरा-षट् रसयुक्त और सर्वरोगनाशकहै । हीरेकी भस्मकी मात्रा आधी रती तककीहै। इसकी भस्मके सेवनसे शोष, क्षय भगंदर, प्रमेह, मेद, पाण्डु, उदररोग, शोथ आदि [illegible] रोग और वात पित्त और कफ के दोष मिटतेहैं । शरीरकी कान्ति, आयु, वीर्य और पुरुषार्थ बढताहै शरीर पुष्ट होताहै और जिस रोगकी जो औषधिहै उस रोगकी उस औषधि के साथमें हीरेकी भस्म देनेसे उसी रोग [illegible] मिटातीहै (२) खैरकी छालके साथ हीरेकी भस्मका सेवन करनेसे [illegible] मिटताहै (३) अडूसे के चूर्ण के साथ चटानेसे कफ और खांसी मि[illegible] ४) अद्रक के रस और मधुके साथ चटानेसे श्वास रोग मिटताहै (५ शक्करके साथ फक्की देने से पित्त और दाह मिटती है (६) चिरायते के क्काथ के साथ देनेसे ज्वर छूटताहै (७) गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै (८) मक्खनके साथ चटानेसे शोषरोग मिटताहै (९) इसकी भस्म और गोखरूके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै (१०) बिदारी कंदके चूर्णमें मिलाकर फक्की देनेसे बहुमूत्ररोग मिटताहै (११) पीपल और शहदके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१२) साटेकी जडके चूर्ण और मधुके साथ चटानेसे शोथरोग मिटताहै (१३) पुष्टाईकी औषधियोंके साथ खानेसे शरीर पुष्ट होताहै । (१४) अशुद्ध हीरेके सेवन करनेसे कुष्ठ, पसलीका दर्द पांडु, रोग, दाह, शरीरका भारीपन, राजयक्ष्मा आदि बहुतसे रोग होजातेहैं ।

संख्या (६०५)

(सं०) हेमसागरः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	जख्मेहयात			हेमसागर		सिगाजमूडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
गलैकल्ली	लूलाहडकन गिड		जाख्मेहयात	Bryophyllum calycinum Kalanchoe pinnata	

स्थान—हेमसागर हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण और तर भागोंमें तक और बंगालमें सब ठौर पैदा होताहै ।

पहिचान—इसके पत्ते मोटे और गिरदार होतेहैं, ... हैं, वहीं उनके किनारोंमेंसे बीज गिरके वृक्ष लग जातेहैं ...

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंका लेप करनेसे विगड़े ... हैं (२) पित्तशोथको मिटानेकेलिये ... पत्तोंका लेप ... लेपसे सूजन उतर जातीहै और ... का रंग बदलना रुक ... घाव भरनेकेलिये ... साधारण उपायहैं उनकी ... के पर ... बहुत शीघ्र भर देताहै (५) इसके ... ३ मासे से ... स्वरस पिघले हुए दुगुने मक्खनमें मिलाकर ... से अतिसार, ... और विषूचिका मिटतीहै । पथरीवालेको भी इतनीही मात्रा देनी ... (६) मोच और अग्निसे जले हुए व्रण और शरीरके ऊपरके ... इसके रसका लेप करना चाहिये (७) ताजे घाव और रगड़के ऊपर ... के रसका लेप करनेसे उनमेंसे रुधिर बहना बन्ध होजाताहै (८) चोटके ... घावपर इसके रसमें भिगोये हुए कपड़को बधा रखनेसे वह बहुत जल्दी भर-जाताहै । दूसरी औषधियोंसे इतना जल्दी नहीं भरताहै (९) जिस घावमें